

कबीर बानी

(एक सौ अट्ठाइस पदों का संकलन)

सम्पादन और अनुवाद
सरदार जा'फ़री

जिया प्रकाशन
गौतम अपार्टमेन्ट,
गौतम नगर, गुलमोहर पार्क,
नई दिल्ली-११००४९.

किमत रू. ४००/-

नाम: कबीर

जन्म: बनारस, सन् १३९८ ई० या सन् १४४० ई०

मृत्यु: मगहर, सन् १५१८ ई०



نام: کبیر

پیدائش: بنارس سنہ ۱۳۹۸ ع یا سنہ ۱۴۴۰ ع

انتقال: مگہر سنہ ۱۵۱۸ ع

کبیر بانی

ایک سو اٹھائیس منتخب نظمیں

مرتبہ

سردار جعفری

جیا پرکاشن

۵۰، گوتم اپارٹمنٹ
گوتم نگر، گل مہر پارک، نئی دہلی ۱۱۰۰۴۹

قیمت چار سو روپے

دیباچہ

بڑی شاعری کی یہ عجیب و غریب خصوصیت ہے کہ وہ اکثر و بیشتر اپنے خالق سے بے نیاز ہو جاتی ہے۔ پھر اس کے وجود سے شاعر کا وجود پہچانا جاتا ہے کیونکہ اس کی زندگی کے حالات گزرے ہوئے زمانے کے دھندلکے کے میں کھو جاتے ہیں اور واقعات افسانے کا لباس پہن لیتے ہیں۔

پرانی تاریخ نگاری چونکہ بادشاہوں، پروہتوں اور سورماؤں کے گرد گھومتی تھی اور انہیں کی داستان کو اپنا سرمایہ سمجھتی تھی اس لئے اس نے ہمیشہ باغیوں، شاعروں اور فنکاروں کو نظر انداز کیا اور صرف سزا و جزا کے افسانے باقی رہ گئے (کسی کا منہ موتیوں سے بھرا گیا اور کسی کی گستاخ زبان گدی سے کھینچ لی گئی) لیکن وقت کا انتقام بڑا سخت ہے۔ بادشاہوں کے کارنامے تاریخ کی کتابوں میں بند ہیں اور شاعروں کے کارنامے دلوں کے اندر درد اور مسرت کی لہریں بن کر اتر گئے ہیں۔ لکشمی اور سرسوتی کی باہمی رقابت میں جیت سرسوتی کی ہوئی اور گن لکشمی کے گائے گئے۔

یہ بات شاید پرانے تاریخ نگاروں کو نہیں معلوم تھی کہ تاریخ محض واقعہ نگاری نہیں بلکہ سماجی اور معاشی رشتوں کی تبدیلی کی داستان بھی ہے اور فکر و شعور کا سفر بھی۔ اس فضا میں آتے جاتے کردار پرچھائیوں کی طرح گھومتے رہتے ہیں اور اگر پرچھائیوں کا نام فراموش ہو جائے تو بھی کوئی فرق نہیں پڑتا۔ فکر و شعور کا سفر جاری رہتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ حالات و واقعات کا کبیر، سن اور تاریخ کا کبیر زندہ نہیں ہے لیکن فکر اور شعور کا کبیر، جذبے اور احساس کا کبیر، شعر اور نغمے کا کبیر زندہ ہے، ہر دوہا اُس کی ہستی ہے، ہر پد (نظم) اس کی ذات، ہر خیال اُس کی زبان، اور جب ہم اس کے بولے ہوئے لفظوں کو دہراتے ہیں تو کبیر کا ساز بجنے لگتا ہے، شاہی فرمان اور ڈنکوں کی آوازیں گونگی ہو جاتی ہیں اور کبیر کے دل سے نکلنے والی صوتِ سرمدی سے روح سرشار ہو جاتی ہے۔ پنڈت کا منتر اور مُلا

भूमिका

महान कविता की यह अनोखी विशेषता है कि बहुधा वह अपने रचयिता से असम्बद्ध हो जाती है। फिर उसके अस्तित्व से कवि का अस्तित्व पहचाना जाता है क्योंकि उसके जीवन के हालात बीते हुए समय के धुँधलके में खो जातें हैं और घटनाएँ कहानियों का रूप धारण कर लेती है।

पुरानी इतिहास लिखने की कला चूँकि बादशाहों, पुरोहितों और सूरमाओं के गिर्द घूमती थी और उन्हीं की गाथाओं को अपनी पूँजी समझती थी इसलिए उसने हमेशा विद्रोहियों, कवियों और कलाकारों की उपेक्षा की और सिर्फ़ दंड और पुरस्कार के क़िस्से बाक़ी रह गये (किसका मुँह मोतियों से भरा गया और किसकी गुस्ताख़ ज़बान गुद्दी से खींच ली गयी) लेकिन समय का प्रतिशोध बड़ा क्रूर होता है। बादशाहों के कारनामे इतिहास की किताबों में बंद हैं और कवियों के कारनामे दिलों के अदंर पीड़ा और उल्लास की लहरें बनकर उतर गये हैं। लक्ष्मी और सरस्वती की प्रतिद्वंद्विता में जीत सरस्वती की हुई और गुण लक्ष्मी के गाये गये।

यह बात शायद पुराने इतिहासकारों को नहीं मालूम थी कि इतिहास केवल घटनाओं का वर्णन नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक संबंधों के परिवर्तन की कहानी भी है और विचार और चेतना की प्रगति भी। इस वातावरण में आते जाते पात्र परछाइयों की तरह घूमते रहते हैं और अगर परछाइयों का नाम लोग भूल भी जायें तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। विचार और चेतना की प्रगति जारी रहती है। यही कारण है कि परिस्थितियों और घटनाओं का कबीर, सन् और तारीख़ का कबीर जिंदा नहीं है लेकिन विचार और चेतना का कबीर, भावनाओं और अनुभूतियों का कबीर, कविता और गीत का कबीर ज़िंदा है। हर दोहा उसका अस्तित्व है, हर पद उसका व्यक्तित्व, हर विचार उसकी ज़बान। और जब हम उसके बोले हुए शब्दोंको दोहराते हैं तो कबीर का साज़ बजने लगता है। शाही फ़रमान और डंकों की आवाज़ें गूँगी हो जाती हैं और कबीर के दिल से निकलनेवाले अनाहत नाद से आत्मा मस्त हो जाती है। पण्डित का मंत्र और मुल्ला की अज़ान आसमानों के सन्नाटे में गुम हो जाती है और कबीर की प्रेम-वाणी धरती के सीने में धड़कती रहती है।

کی اذان آسمانوں کے سناٹے میں گم ہو جاتی ہے اور کبیر کا حرف محبت دھرتی کے سینے میں دھڑکتا رہتا ہے.

یہ بات اہم نہیں ہے کہ کبیر داس جلاہے کے بیٹے تھے یا کسی برہمنی کے پیٹ سے پیدا ہوئے تھے اور جلاہے کے گھر میں پروزش پائی تھی* اہم یہ ہے کے راما نُج (بارہویں صدی) اور اُن کے سلسلۂ فکر کی ایک معنوی اولاد راما نند (چودہویں اور پندرہوں صدی) کے خیال سے کبیر کے خیال کا کیا رشتہ ہے ، بھگتی کے انتر گیان کا تصوف کے وجدان سے کیا تعلق ہے . ایران کے صوفی شعرا عطار ، رومی اور حافظ کی فکر نے ہندوستان کی فکر کو کس حد تک متاثر کیا ہے ، اُن کے درمیان کتنی مشترک قدریں ہیں اور اثرات کی یہ بہتی ہوئی گنگا جمنا کبیر کی شاعری میں کتنا حسین سنگم حاصل کرتی ہے . صرف اس طرح تفریق اور نفرت کی وہ دیواریں گرائی جاسکتی ہیں جنھیں کبیر نے ڈھا دیا تھا لیکن اُن کے بعد کی نسلوں نے پھر اونچا اُٹھا دیا . اس پر لڑنے مرنے والے کہ کبیر لنگی پہنتے تھے یا دھوتی باندھتے تھے یہ بھول جاتے ہیں کہ اصلیت لباس میں نہیں برہنگی میں ہے . جس نے معنی کے جسم سے لفظوں کے پردے اٹھا دئے ہوں اور رام اور رحیم کو ایک کر دکھایا ہو اس کو سوت اور کپاس کا لباس پہنانے کی کوشش اور اس لباس کی تفریق پر منافقت اور نفرت انگیزی کتنی مضحکہ خیز معلوم ہوتی ہے .

کبیر داس کی پیدائش اور موت کی تاریخوں کے بارے میں کچھ وثوق سے نہیں کہا جاسکتا . بس اتنی بات یقینی ہے کہ پندرھویں صدی

---

* کہا جاتا ہے کہ سوامی راما نند کا معتقد ایک برہمن اُن سے ملنے آیا تو اس کے ساتھ اس کی بیوہ بیٹی بھی تھی . لڑکی کے سلام کے جواب میں راما نند نے بیٹا پیدا ہونے کی دعا دی . یہ سن کر برہمن گھبرا گیا لیکن راما نند جی نے کہا کہ میرے الفاظ خالی نہیں جا سکتے . چنانچہ اس بیوہ برہمنی کے پیٹ سے کبیر پیدا ہوئے . ماں نے بد نامی کے ڈر سے بچے کو ایک تالاب کے کنارے پھینک دیا . اتفاق سے بنارس کا ایک مسلمان جولاہا اپنی بیوی نعیمہ کے ساتھ اُدھر سے گزرا . وہ دونوں اس بچے کو اُٹھا لائے اور اس کی پرورش اپنے بیٹے کی طرح کی جب قاضی سے نام رکھنے کی فرمائش کی تو فال میں کبیر کا لفظ نکلا . اس واقع کی صحت کے متعلق کوئی تاریخی شہادت پیش نہیں کی جا سکتی لیکن میرا خیال ہے کہ کبیر کی موت کے افسانے کی طرح (جس کا ذکر آگے آئے گا) یہ افسانہ بھی ان کے ہندو مسلم اتحاد کی تعلیم پر زور دیتا ہے .

महत्व इस बात का नहीं है कि कबीरदास जुलाहे के बेटे थे या किसी ब्राह्मणी के पेट से पैदा हुए थे और जुलाहे के घर में उनका लालन-पालन हुआ था।* महत्व इस बात का है कि रामानुज (बारहवीं शताब्दी) की विचार-धारा और रामानंद (चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी) के विचारों से जो उसी क्रम की एक कड़ी थे, कबीर के विचारों का क्या संबंध है। भक्ति के अंतर्ज्ञान का तसव्वुफ़ के 'विज्दान' से क्या संबंध है। ईरान के सूफ़ी शाइरों अत्तार, रूमी और हाफ़िज़ के विचारों ने हिंदुस्तान की विचारधारा को किस हद तक प्रभावित किया है। उनके मूल्यों में कितनी समानता है और इन प्रवाहों की बहती हुई गंगा जमुना का कबीर की कविता में कितना सुंदर संगम होता है। केवल इसी तरह भेद-भाव और घृणा की वे दीवारें गिरायी जा सकती हैं जिन्हें कबीर ने ढा दिया था लेकिन उनके बाद की पीढ़ियों ने फिर ऊँचा उठा दिया। इस पर लड़ने मरनेवाले कि कबीर लुंगी पहनते थे या धोती बाँधते थे, यह भूल जाते हैं कि वास्तविकता वस्त्रों में नहीं नग्नता में है। जिसने अर्थ के शरीर से शब्दों के परदे हटा दिये हों और रहीम को एक कर दिखाया हो उसको सूत और कपास के वस्त्र पहनाने की कोशिश और उस वस्त्र की भिन्नता पर मतभेद और घृणा फैलाना कितना हास्यास्पद मालूम होता है।

कबीरदास के जन्म और मृत्यु की तिथियों के बारे में विश्वास के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता। बस इतनी बात निश्चित है कि पंद्रहवीं शताब्दी कबीर की शताब्दी है। उनकी आयु का अनुमान एक सौ बीस साल का लगाया जाता है। उनके एक चेले धर्मदास का एक दोहा बताया जाता है जिसके अनु-

---

* कहा जाता है कि स्वामी रामानंद का भक्त एक ब्राह्मण उनसे मिलने आया तो उसके साथ उसकी विधवा बेटी भी थी। लड़की के प्रणाम के उत्तर में रामानंद ने उसे बेटा पैदा होने का आशीर्वाद दिया। यह सुनकर ब्राह्मण घबराया लेकिन रामानंदजी ने कहा कि मेरा वचन खाली नहीं जा सकता। इसलिए उस विधवा ब्राह्मणी के पेट से कबीर पैदा हुए। माँ ने बदनामी के डर से बच्चे को एक तालाब के किनारे फेंक दिया। संयोग से काशी का एक मुसल्मान जुलाहा अपनी बीवी नईमा के साथ उधर से गुज़रा। वे दोनों उस बच्चे को उठा लाये और उसका पालन-पोषण अपने बेटे की तरह किया। जब क़ाज़ी से नाम रखने को कहा तो कबीर नाम निकला। इस घटना के सच होने के बारे में कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं दिया जा सकता लेकिन मेरा विचार है कि कबीर की मृत्यु से संबंधित वृतांत की तरह (जिसका उल्लेख आगे आयेगा) यह क़िस्सा भी उनकी हिंदू-मुस्लिम एकता की शिक्षा पर ज़ोर देता है।

کبیر کی صدی ہے ۔ اُن کی عمر کا اندازہ ایک سو بیس سال کیا جاتا ہے ۔ اُن کے ایک چیلے دھرم داس سے ایک دوہا منسوب ہے جس کے اعتبار سے سم وت ۱۴۵۵ کے اختتام پر کبیر کی پیدائش کی تاریخ جیٹھ کی پورنیما کو سوموار کے دن نکلتی ہے ۔ اس بنیاد پر ۱۳۹۸ ء سالِ پیدائش قرار پاتا ہے (بعض لوگوں کے نزدیک سالِ پیدائش ۱۴۴۰ ء ہے ۔ دیکھیے ایلون انڈرہل کا دیباچہ ، کبیر کی نظموں کا انگریزی ترجمہ از ٹیگور) انتقال کا سال ۱۵۱۸ ء بھی کبیر پنتھیوں کے ایک مشہور دوہے کی بنیاد پر تسلیم کیا گیا ہے ۔

کبیر داس کا اپنا بیان ہے کہ وہ بنارس میں پیدا ہوئے اور مگہر (ضلع گورکھپور) میں وفات پائی « سکل جنم شیو پوری گنوایا ، مرتی بیر مگہر اُٹھ دھایا » — یعنی سارا جنم بنارس میں بیتا اور مرتے وقت مگہر چلا گیا) اس میں اہم نکتہ یہ ہے کہ مرتے وقت بھی کبیر نے اپنی انقلابی ادا نہیں چھوڑی ۔ جس طرح وہ انسانوں کی اونچ نیچ کے قائل نہیں تھے اُسی طرح وہ شہروں کی اونچ نیچ کو بھی پسند نہیں کرتے تھے ۔ عام ہندو عقیدہ یہ ہے کہ کاشی میں مرنے والے کی مکتی ہو جاتی ہے اور اس کے برعکس مگہر میں مرنے والا دوبارہ گدھے کا جنم لیتا ہے ۔ لیکن کبیر جن کو اپنی بھگتی پر پورا اعتماد تھا اس بات کو کب مان سکتے تھے ۔ اس لئے جب عمر کی اس منزل میں پہونچے جہاں موت قریب معلوم ہوئی تو وہ بنارس سے ترکِ وطن کرکے مگہر چلے گئے ۔ ملک کے کونے کونے سے لوگ موت کی تلاش میں بنارس آتے ہیں اور کبیر مرنے کے لئے بنارس سے یہ کہتے ہوئے چل دئیے :

کیا کاشی ، کیا اُوسر مگہر ، رام ہردے بس مورا
جو کاسی تن تجے کبیرا ، رامے کون ہنورا

(ترجمہ : کاشی ہو یا اجاڑ مگہر ، میرے لئے دونوں برابر ہیں کیونکہ میرے دل میں بھگوان بسا ہوا ہے ۔ اگر کبیر کی روح کاشی میں اس تن کو تج کر نجات حاصل کرے تو اس میں رام کا کونسا احسان ہے) اس لئے کبیر جو زندگی بھر کاشی کے باشندے تھے اور بادشاہوں کی طاقت اور تنگ نظر لوگوں کی نفرت بھی ان کو وہاں سے باہر نہ نکال سکی مرنے کے بعد اپنی مرضی سے مگہر کے باسی ہوگئے ۔

सार कबीर की जन्म-तिथि संवत १४५५ के अंत में जेठ की पूर्णिमा को सोमवार के दिन निकलती है। इस आधार पर १३९८ ई० उनके जन्म का वर्ष माना गया है। (कुछ लोग उनका जन्म १४४० ई० में मानते हैं। देखिये एलविन अंडरहिल की भूमिका, कबीर के पदों का टैगोर कृत अंग्रेजी अनुवाद)। उनकी मृत्यु का वर्ष १५१८ ई० भी कबीर पंथियों के एक प्रसिद्ध दोहे के आधार पर मान लिया गया है।

कबीरदास का अपना बयान है कि वह बनारस में पैदा हुए और मगहर (जिला गोरखपुर) में उनकी मृत्यु हुई। "सकल जनम शिवपुरी गँवाया, मरती बेर मगहर उठ धाया।" इसमें महत्व की बात यह है कि मरते समय भी कबीर ने अपना क्रांतिकारी स्वभाव नहीं छोड़ा। जिस तरह वह मनुष्यों के बीच ऊँच-नीच को नहीं मानते थे उसी तरह वह शहरों की ऊँच-नीच को भी पसंद नहीं करते थे। आम हिंदुओं का विश्वास है कि काशी में मरनेवाले को मुक्ति मिल जाती है और इसके विपरीत मगहर में मरनेवाला दोबारा गदहे का जन्म लेता है। लेकिन कबीर, जिनको अपनी भक्ति पर पूरा विश्वास था, इस बात को कब मान सकते थे। इसलिए जब वे अपने जीवन की उस अवस्था में पहुँचे जब मृत्यु निकट मालूम हुई तो वह अपनी जन्मभूमि बनारस छोड़ कर मगहर चले गये। देश के कोने-कोने से लोग मृत्यु की खोज में बनारस आते हैं और कबीर बनारस से यह कहते हुए चल दिये—

क्या काशी क्या ऊसर मगहर, राम हृदय बस मोर।
जो कासी तन तजै कबीरा, रामे कौन निहोरा

अर्थात काशी हो या उजाड़ मगहर, मेरे लिए दोनों बराबर हैं क्योंकि मेरे हृदय में राम (भगवान) बसा हुआ है। अगर कबीर की आत्मा काशी में इस तन को तजकर मुक्ति प्राप्त कर ले तो इस में राम का कौन-सा एहसान है। इसलिए कबीर जो जन्म भर काशी निवासी रहे थे और बादशाहों की ताक़त और संकीर्ण विचारों वाले लोगों की नफ़रत भी उनको वहां से बाहर न निकाल सकी मरने के बाद अपनी इच्छा से मगहर-वासी हो गये।

उनकी मृत्यु के बारे में उनके प्रशंसकों ने जो कहानी बनायी है वह कबीर के लिए जन-साधारण की सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है। उनकी शिक्षा का

ان کی موت کے گرد ان کے چاہنے والوں نے جس افسانے کی تخلیق کی ہے وہ کبیر کے لئے عوام کا سب سے بڑا خراج عقیدت ہے. ان کے تعلیم کا نچوڑ وہ خالص انسانی محبت ہے جو مذہب کی تفریق اور ذات پات کے جھگڑوں سے پاک ہے. کہا جاتا ہے کہ ان کے مرنے کے بعد ان کی لاش پر ہندوؤں اور مسلمانوں نے تلواریں کھینچ لیں. ہندو ان کی لاش کو جلانا چاہتے تھے اور مسلمان دفن کرنا چاہتے تھے، لیکن اس جھگڑے کا فیصلہ اس طرح ہوا کہ کبیر کی لاش پھولوں کے ایک ڈھیر میں تبدیل ہوگئی جسے دونوں فریقین نے برابر برابر بانٹ لیا اس طرح ہندو رسم بھی ادا ہوگئی اور مسلمان رسم بھی اور باہمی اختلاف ختم ہوگیا. اب مگھر میں املی کے ایک درخت کے نیچے کبیر کا مزار ہے اور بنارس میں ایک مٹھ ہے جو کبیر چورے کے نام سے مشہور ہے.

اپنی ذات کے لئے کبیر نے زیادہ تر جولاہے کا لفظ استعمال کیا ہے اور کبھی کبھی کوری اور کمینہ بھی کہا ہے. شمالی ہندوستان میں اب بھی ہندو بُنکر کوری کہلاتے ہیں اور نیچ سمجھے جانے کی وجہ سے انہیں کمین یا کمینہ کے لفظ سے یاد کیا جاتا ہے. (مسلم جولاہوں نے اپنے لئے مومن کے لفظ کا انتخاب کرلیا ہے جس کا کبیر کے عہد میں پتہ نہیں چلتا) اس سے یہ گمان ہوتا ہے کہ کبیر کے عہد کے آس پاس ہی کوریوں کی ذات کے ایک بہت بڑے حصے نے اسلام قبول کیا تھا.

کوریوں اور جولاہوں کی بستیاں پنجاب سے بنگال تک کے علاقے میں پھیلی ہوئی ہیں. پورے پورے قصبے ان سے آباد ہیں. شمالی ہندستان میں بہار اور بنگال تک ترکوں کی حکمرانی بارہویں صدی کے آخر میں پرتھوی راج کی شکست (۱۱۹۲ء) کے ساتھ پہونچی. ۱۱۹۹ء میں قطب الدین ایبک نے بنارس فتح کیا اور اس کے فوراً ہی بعد محمد بختیار نے بہار کو تہِ تیغ کیا اور نالندہ کی مشہور عالم یونیورسٹی کو خاک میں ملا دیا، بودھ بھکشوؤں کو قتل کردیا اور کتابوں کو آگ لگا دی. اس طرح بودھ دھرم جس کا زوال بہت پہلے سے شروع ہوگیا تھا اور آٹھویں صدی تک مکمل ہوچکا تھا، بارہویں صدی کے خاتمے پر تقریباً

सार वह शुद्ध मानव प्रेम है जो धर्म के भेदभाव और ज्ञात-पात के झगड़ों से मुक्त है। कहा जाता है कि उनके मरने के बाद उनके शव पर हिंदुओं और मुसलमानों ने तलवारें खींच लीं। हिंदू उनका शव जलाना चाहते थे और मुसलमान दफ़न करना चाहते थे। लेकिन इस झगड़े का फ़ैसला इस तरह हुआ कि कबीर का मृत शरीर फूलों का एक ढेर बन गया जिसे दोनों पक्षों ने बराबर-बराबर बांट लिया। इस तरह हिंदुओं का संस्कार भी पूरा हो गया और मुसलमानों की रस्म भी और आपस का मतभेद मिट गया। अब मगहर में इमली के एक पेड़ के नीचे कबीर की समाधि है बनारस में मठ है जो कबीर चौरा के नाम से मशहूर है।

अपनी जात के बारे में कबीर ने ज्यादातर जुलाहे के शब्द का प्रयोग किया है और कभी-कभी कोरी और कमीना भी कहा है। उत्तरी भारत में अब भी हिंदू बुनकर कोरी कहलाते हैं और नीच समझे जाने की वजह से उन्हें कमीन या कमीने की संज्ञा दी जाती है। (मुस्लिम जुलाहों ने अपने लिए मोमिन का शब्द चुन लिया है जिसका कबीर के युग में पता नहीं चलता।) इससे ऐसा लगता है कि कबीर के जीवनकाल के आस-पास ही कोरियों के एक बहुत बड़े वर्ग ने इस्लाम धर्म अंगीकार किया था।

कोरियों और जुलाहों की बस्तियाँ पंजाब से बंगाल तक के इलाक़े में फैली हुई है। पूरे-पूरे क़स्बे उनसे आबाद हैं। उत्तरी भारत में बिहार और बंगाल तक तुर्कों का शासन बारहवीं शताब्दी के अंत में पृथ्वीराज की हार (सन् ११९२ ई०) के साथ पहुँचा। ११९९ ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक ने बनारस पर विजय प्राप्त की और उसके फ़ौरन ही बाद मुहम्मद बख्तियार ने बिहार को अपने आधीन किया और नालंदा के विश्वविख्यात विश्वविद्यालय को तहस-नहस कर दिया, बौद्ध भिक्षुओं को क़त्ल कर दिया और किताबों को आग लगा दी। इस तरह बौद्ध धर्म जिसका ह्रास बहुत पहले से आरंभ हो गया था और आठवीं शताब्दी तक यह ह्रास पूरा हो चुका था, बारहवीं शताब्दी के अंत में लगभग बिल्कुल मिट गया। * और नालंदा के बचे-खुचे भिक्षु नेपाल और

* आठवीं शताब्दी तक शंकराचार्य की शताब्दी है। इस पर मतभेद है कि बौद्ध धम के ह्रास में और कारणों के अतिरिक्त शंकराचार्य का भी कुछ हाथ है या नहीं।

نیست و نابود ہوگیا* اور نالندہ کے بچے کھچے بھکشو نیپال اور تبت کی طرف بھاگ گئے ۔ (بودھ مذہب وہاں پہلے پہونچ چکا تھا) بودھ دھرم کے افسوسناک زوال کے بعد ہندستان کے نیچ ذات کے اچھوتوں کے لئے اسلام ہی ایک پناہ گاہ رہ گیا تھا (چنانچہ اس عہد میں مشرقی بنگال کے گاؤں کے گاؤں اپنا بودھ دھرم چھوڑ کر مسلمان ہوگئے) ترک حکمرانوں نے ، جو مسلمان سے بڑھ کر فاتح اور حکمران تھے ، اور اپنے طبقاتی مفاد کو مذہب پر ترجیح دیتے تھے ، اسلام پر ایمان لے آنے والے محکوموں کو برابری کا درجہ نہیں دیا* ۔ وہ اب بھی کوری سے جلاہے ہوجانے کے بعد کمینے ہی سمجھے جاتے تھے اس لئے ان کی آخری پناہ گاہیں بھگتی اور تصوف کی پریم نگریاں بن گئیں اور ان دونوں خدا پرست اور انسان دوست تحریکوں کا حسین امتزاج کبیر داس اور ان کی شاعری کی شکل میں ظاہر ہوا ۔

مفلسی تو ان کا پیدائشی حق اور باپ دادا کی میراث تھی مگر بھگتوں اور صوفیوں نے اسے ترک دنیا کے فلسفے کی شکل دے کر انقلابی بنا دیا ۔ ظاہری مذہب حکمرانوں کے ساتھ تھا جو مال دولت کے مالک تھے (وہ کبھی شمال مشرقی سرحد کے پہاڑوں کو عبور کرکے آتے تھے اور کبھی مقامی قلعوں سے اپنی فوجیں لے کر نکلتے تھے) اور باطنی

---

* آٹھویں صدی شنکر اچاریہ کی صدی ہے اس پر اختلاف رائے ہے کہ بودھ دھرم کے زوال میں اور اسباب کے علاوہ شنکر اچاریہ کا بھی کچھ حصہ ہے یا نہیں ۔

* وہ جسے اسلامی جمہوریت کہتے ہیں اس پر ابتدا میں عرب کی قبائلی جمہوریت کے اثرات تھے ۔ پیغمبر اسلام کی وفات کے تیس سال کے اندر عرب سماج جب قبائلی منزل سے نکل کر جاگیرداری عہد میں داخل ہوگیا اور جاگیرداری شہنشاہیت ۔اموی اور عباسی خلفا کی سلطنت کی شکل میں ظاہر ہوئی تو مذہبی جمہوریت جو خدا کے سامنے محمود اور ایاز کو ایک ہی صف میں کھڑا کر دیتی ہے معاشی جمہوریت کے ہم معنی بننے کی صلاحیت کھوچکی تھی ۔ یوں تو حاکم اور محکوم دونوں مسلمان تھے ، لیکن اسلام کے نام پر ایک طبقاتی نظام حکومت کررہا تھا ۔ جب حاکم اپنے محکوموں کو ان کا جمہوری حق نہیں دیتے تھے تو محکوم نئے فرقوں کی شکل میں اپنی تنظیم کرتے تھے اور یہ فرقے مذہبی لباس پہن کر ظاہر ہوتے تھے ، اسلام کی ابتدائی صدیوں میں یہ عمل بہت بڑے پیمانے پر پہلے ایران اور پھر پورے مشرق وسطی میں نظر آتا ہے اور صوفی تحریک کے سمجھنے میں مدد دیتا ہے ۔ ہندوستان میں جو مسلمان فاتح آئے وہ بھی اپنے ساتھ اسلامی جمہوریت کا تصور لے کر نہیں آئے تھے ، ان کے پاس ایک جاگیرداری شہنشاہیت کا تصور تھا جس میں حاکم اور محکوم کا فرق نمایاں تھا ، خاندان بزرگی اور شرافت پر زور تھا ۔ ہاں وہ جذباتی مقاصد کے لئے ضرور اسلام کا نام استعمال کرتے تھے ۔

तिब्बत की ओर भाग गये। (बौद्ध धर्म वहाँ पहले पहुँच चुका था।) बौद्ध धर्म के इस शोचनीय पराभव के बाद भारत के नीची ज्ञात के अछूतों के लिए इस्लाम की ही शरण रह गयी थी। इसलिए इस युग में पूर्वी बंगाल के गाँव के गाँव अपना बौद्ध धर्म छोड़कर मुसलमान हो गये। लेकिन तुर्क शासकों ने, जो मुसलमान से बढ़कर विजेता और शासक थे और अपने वर्ग-हितों को धर्म की तुलना में प्रधानता देते थे, इस्लाम पर ईमान ले आनेवाले शासितों को बराबरी का दर्जा नहीं दिया। * वे अब भी कोरी से जुलाहे हो जाने के बाद कमीने ही समझे जाते थे। इसलिए उनके आख़िरी आश्रय भक्ति और तसव्वुफ़ की प्रेम-नगरियाँ बन गयीं और इन दोनों ईश्वर-परायण और मानव-प्रेमी आंदोलनों का बहुत ही सुंदर समन्वय कबीरदास और उनकी कविता के रूप में प्रकट हुआ।

निर्धनता तो उनका जन्मसिद्ध अधिकार और अपने बाप-दादा से मिला हुआ उत्तराधिकार था, मगर भक्तों और सूफ़ियों ने उसे माया-त्याग का दार्शनिक रूप देकर क्रांतिकारी बना दिया। बाह्य धर्म शासकों के पक्ष में था जो सारी सम्पदा के स्वामी थे, (वे कभी उत्तर-पूर्वी सीमा के पहाड़ों को पार करके आते थे और कभी स्थानीय क़िलों से अपनी फ़ौजें लेकर निकलते थे) और मार्मिक धर्म अर्थात सूफ़ी-मत और भक्ति ने जनता का साथ दिया जो निर्धन और श्रमजीवी थी। (यह बात दिलचस्पी से ख़ाली नहीं है कि ज्यादातर सूफ़ी,

---

*वह जिसे इस्लामी लोकतंत्र कहते हैं उस पर आरंभ में अरब के क़बायली लोकतंत्र के प्रभाव थे। इस्लाम के पैग़ंबर के देहांत के तीस साल के अंदर अरब समाजने जब क़बायली अवस्था से निकलकर सामंती युग में प्रवेश किया और जागीरदारी राजतंत्र उमवी और अब्बासी खलीफ़ाओं की सल्तनत की शक्ल में ज़ाहिर हुई तो धार्मिक लोकतंत्र, जो ख़ुदा के सामने महमूद और अयाज़ को एक ही पाँत में खड़ा कर देता है, आर्थिक लोकतंत्र का पर्याय बनने की क्षमता खो चुका था। यों तो शासक और शासित दोनों ही मुसल्मान थे लेकिन इस्लाम के नाम पर एक वर्ग-व्यवस्था शासन कर रही थी। जब शासक शासितों को उनके लोकतांत्रिक अधिकार नहीं देते थे तो शासित नये सम्प्रदायों के रूप में संगठित होते थे और ये सम्प्रदाय धार्मिक रूप में प्रकट होते थे। इस्लाम की प्रारंभिक शताब्दियों में यह प्रक्रिया बहुत बड़े पैमाने पर पहले ईरान और फिर पूरे मध्य-पूर्व में दिखायी देती है और सूफ़ी आंदोलन को समझने में मदद देती है। भारत में जो मुसल्मान विजेता आये वे भी अपने साथ इस्लामी लोकतंत्र की कल्पना लेकर नहीं आये थे। उनके पास एक जागीरदारी राजतंत्र का विचार था जिसमें शासक और शासित का अंतर प्रत्यक्ष था, परिवार, बुज़ुर्गी और शराफ़त पर ज़ोर था। हाँ, वे भावनात्मक उद्देश्यों के लिए जरूर इस्लाम का नाम इस्तेमाल करते थे।

مذہب یعنی تصوف اور بھگتی نے عوام کا ساتھ دیا جو مفلس اور محنت کش تھے ۔ (یہ بات دلچسپی سے خالی نہیں ہے کہ زیادہ تر صوفی اور بھگت دستکاروں کے طبقے سے تعلق رکھتے تھے)۔ ظاہری مذہب کے ملا، قاضی، محتسب، پنڈت، پروہت وغیرہ بہت مہنگے تھے جو مذہبی رسوم کے جاننے والے تھے اور حکمرانوں کے اقتدار پر خدا اور بھگوان کی مرضی کی مہر لگاتے رہتے تھے ۔ (اونچ نیچ خدا کی دین ہے۔ بادشاہ زمین پر خدا کا سایہ ہے)۔ لیکن باطنی مذہب کے رہنما یا گرو فقیر اور بھکشو تھے ۔ اُن کے جسم پر گیروا لباس ہوتا تھا یا شاید وہ بھی نہیں ہوتا تھا، ہاتھ میں بھیک کے پیالے، دل میں غم کی قندیل اور ہونٹوں پر حرف محبت۔ وہ صاحب علم نہیں تھے صاحب اسرار تھے۔ عقل والے نہیں تھے، عشق والے تھے۔ اُن کے پاس نہ مندر تھے نہ مسجدیں، نہ اوقاف نہ جائدادیں۔ اُن کے پاس کتاب بھی نہیں تھی صرف دل تھا۔ وہ ہر انسان کو یہی بشارت دیتے تھے کہ خدا محبت ہے اور محبت خدا ہے۔ انسان کا عشق خدا کا عشق ہے۔ اور یہ تبلیغ و تلقین مفت تھی

طقباتی نفرت کے بغیر حکمراں حکومت نہیں کرسکتے تھے۔ لیکن بھگتوں اور صوفیوں نے اس طبقاتی نفرت کے مقابلے پر انسانی برادری اور محبت کا نصب العین رکھا۔ حکمرانوں کے لئے سماجی حیثیت کا معیار دنیاوی دولت تھی۔ بھگتوں اور صوفیوں کے لئے انسان کے اعلی درجے کا معیار بھگت پریم اور عشق حقیقی اور عشق مجازی تھا۔ مال اور دولت کی محبت اور جائدادوں کی بندشیں اس عشق میں کمی کرسکتی تھیں اس لئے ان بزرگوں نے ترک دنیا کو اپنی تعلیمات کا بنیادی جز بنایا۔ چنانچہ مولانا جلال الدین رومی نے دولت کو اس کلاہ سے تشبیہہ دی ہے جو گنجے کے سر کو چھپاتی ہے۔ خوبصورت زلفوں والے ننگے سر ہی اچھے لگتے ہیں۔ بازار میں بکنے والے غلاموں کے جسمانی حسن کو ظاہر کرنے کے لئے انہیں ننگا کردیا جاتا ہے۔ اُن کی خرید و فروخت کرنے والے امیر اپنے بیمار جسموں کو اطلس اور ریشم کی قباؤں میں چھپائے رکھتے ہیں۔

کبیر نے اپنی اس طبقاتی حیثیت کو کبھی فراموش انہیں کیا۔ چنانچہ ایک نظم (۱۰۹) میں جب مایا سولہ سنگار کرکے اور اپنی مست آنکھوں

संत और भक्त अनुयायी दस्तकारों के वर्ग से संबंध रखते थे। धर्म के बाह्य रुप के मुल्ला, क़ाज़ी, पंडित, पुरोहित आदि बहुत महँगे थे जो धार्मिक कर्मकांड के जाननेवाले थे और शासकों की सत्ता पर ख़ुदा और भगवान की स्वीकृति की मुहर लगाते रहते थे। (उँच-नीच ईश्वर की देन है। राजा पृथ्वी पर ईश्वर का रूप है) लेकिन धर्म के आंतरिक रूप के नेता या गुरु फ़क़िर और भिक्षु थे। उनके शरीर पर गेरुआ वस्त्र होता था या शायद वह भी नहीं होता था। हाथ में भीख के प्याले, दिल में पीड़ा की ज्योति और होंटों पर प्रेम के शब्द। वे विद्वान नहीं थे मर्मज्ञ थे। बुद्धिवाले नहीं थे प्रेमवाले थे। उनके पास न मंदिर थे न मस्जिदें, न बड़ी-बड़ी जायदादें। उनके पास 'किताब' भी नहीं थीं सिर्फ़ दिल था। वे हर मनुष्य को यही उपदेश देते रहते थे कि ईश्वर प्रेम है और प्रेम ईश्वर है। मनुष्य का प्रेम ईश्वर का प्रेम है। और यह शिक्षा और उपदेश वे मुफ़्त देते थे।

वर्ग-द्वेष के बिना शासक शासन नहीं कर सकते थे लेकिन भक्तों और सूफ़ियों ने इस वर्ग-द्वेष के मुक़ाबले पर इन्सानी बिरादरी, और मुहब्बत का लक्ष्य सामने रखा। शासकों के लिए सांसारिक समृद्धि ही सामाजिक प्रतिष्ठा की कसौटी थी। भक्तों और सूफ़ियों के लिए मनुष्य के उच्च स्थान का मापदंड भक्ति, प्रेम और इश्क़े-हक़ीक़ी (पारलौकिक प्रेम) इश्क़े-मजाज़ी (लौकिक प्रेम) था। धन दौलत का मोह और सम्पत्ति के बंधन इस प्रेम में कमी कर सकते थे इसलिए इन महापुरुषों ने माया-त्याग को अपनी शिक्षा का आधारभूत तत्व बनाया। इसलिए मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने दौलत की उपमा उस कुलाह से दी है जो गंजे के सर को छुपाती है; ख़ूबसूरत ज़ुल्फ़ोंवाले नंगे-सर ही अच्छे लगते हैं। बाज़ार में बिकनेवाले ग़ुलामों के शारीरिक सौंदर्य को प्रत्यक्ष देखने के लिए उनको नंगा कर दिया जाता है। उनको ख़रीदने-बेचनेवाले अमीर अपने बीमार जिस्मों को अतलस और रेशम की क़बाओं में छुपाये रखते हैं।

कबीर ने अपनी इस वर्ग-स्थिति को कभी नहीं भुलाया। इसलिए एक पद (पद १०९) में जब माया सोलह सिंगार करके और अपनी मस्त आँखों की लाल तलवार लेकर कवि के सामने आती है और उसे अपना भतार (पति) कहकर संबोधित करती है तो कवि बड़े व्यंग से कहता है कि "हमारी जात

کی لال تلوار لے کر شاعر کے سامنے آتی ہے اور اُسے اپنا بھتار (دولھا یا شوہر) کہہ کر مخاطب کرتی ہے تو شاعر بڑے طنز سے کہتا ہے کہ « ہماری ذات جلاہے کی ہے اور نام کبیر ہے. ہمیں تو کبھی کسی نے پوچھا نہیں، تم وہاں جاؤ جہاں تخت بچھے ہوئے ہیں. باغ آراستہ ہیں، اناج کے بورے بھرے ہوئے ہیں، ریشم کی بھر مار ہے، اگر اور صندل گھسا جارہا ہے. ہمارے پاس آکر کیا کروگی. ہم تو کمینوں کی ذات سے تعلق رکھتے ہیں. * ایک اور نظم (۱۱۰) میں انہوں نے مایا کو جو صاحب اقتدار طبقوں کے لالچ کی علامت ہے مہاٹھگنی کہا ہے جس کے ہونٹوں پر میٹھے بول ہیں اور ہاتھ میں پھانسی کا پھندا. ایک اور نظم میں مایا شکاری کے روپ میں ظاہر ہوتی ہے جو نہایت بیدردی کے ساتھ انسانوں کا شکار کھیل رہی ہے. اس کے وار سے کوئی نہیں بچ سکتا. « اودھو مایا تجی نہ جائے » (۵) کے ساتھ ملا کر اس نظم کو پڑھنے سے کبیر کا اصل مفہوم واضح ہوتا ہے.

کبیر کے یہاں مایا کے تصور کو سمجھنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ شنکر اچاریہ (آٹھویں صدی) کے ادویت واد اور اُن کے نقاد راما نج (۱۱۷۵ء نہایت ۱۲۵۰ء) کے وششت ادویت واد کے ایک نکتے کے باریک فرق کو ذہن نشین کرلیا جائے.

دونوں اُپنی شد کی اس تعلیم کو مانتے ہیں کہ سب کچھ برہمن ہے، (سروم کھل ودَم بْرہْم) اور وہی سب سے بڑی سچائی ہے. اور آتمن (روح = خودی) اود برھمن (ذات مطلق) ایک ہیں (آیَم آتما بْرَہْم) لیکن اس تعلیم کی تفسیر کے وقت دونوں الگ الگ راہیں

---

* ،، جات جلاہا نام کبیرا، اج ہوں پتجو ناہیں
تہاں جاہو جہاں پاٹ پٹمبر اگر چندن گھس لیناں
آئی ہمارے کیا کروگی، ہم تو جات کمیناں ،،

ان دو مصرعوں میں ،، پاٹ پٹمبر ،، کا لفظ سب سے زیادہ اہم ہے اور اس کے وہ تمام معنی ہیں جو اوپر دئے گئے ہیں

(A Dictionary of Urdu, Classical Hindi and English by PLATTS)

जुलाहे की है और नाम कबीर है। हमें तो कभी किसी ने पूछा नहीं। तुम वहाँ जाओ जहाँ तख्त बिछे हुए हैं, बाग़ सजे हुए हैं, अनाज के बोरे भरे हुए हैं, रेशम की भरमार है, अगर और चंदन घिसा जा रहा है। हमारे पास आकर क्या करोगी। हम तो कमीनों की ज़ात से संबंध रखते हैं।* एक और पद (११०) में उन्होंने माया को, जो सत्ताधारी वर्गों की लोलुपता का प्रतीक है, महा-ठगनी कहा है जिसके होंटों पर मीठे बोल हैं और हाथ में फाँसी का फंदा। एक और पद में माया शिकारी के रूप में प्रकट होती है जो बड़ी निर्ममता के साथ मनुष्य का शिकार खेल रही है। इसके वार से कोई नहीं बच सकता। "ऊधो, माया तजी न जाये" (पद ९) के साथ मिलाकर इस पद को पढ़ने से कबीर का वास्तविक अभिप्राय स्पष्ट होता है।

कबीर के यहाँ माया की कल्पना को समझने के लिए ज़रूरी है कि शंकराचार्य (८ वीं शताब्दी) के अद्वैतवाद और उनके टीकाकार रामानुज (सन् ११७९ ई० से १२९० ई० तक) के विशिष्टाद्वैतवाद के एक एक आधारभूत सूत्र के सूक्ष्म अंतर को ध्यान में रखना चाहिये।

दोनों उपनिषद की इस शिक्षा को मानते हैं कि सब कुछ ब्रह्म है (सर्वं खल्विदं ब्रह्म) और आत्मा और ब्रह्म एक हैं (अयं आत्मा ब्रह्म)। लेकिन इस सूत्र की व्याख्या करते समय दोनों अलग-अलग दिशाएँ अपनाते हैं। एक के यहाँ नीरस दार्शनिक विचारों की चमकदार तलवार महान व्यापक चिंतन की तेज़ी का पता देती है और दूसरे के यहाँ दिल की धड़कन अनादि और अनंत सत्य में मानव आत्मा की उष्णता पैदा कर देती है।

शंकराचार्य का कहना यह है कि चूँकि ब्रह्म ही सत्य है इसलिए माया (भौतिक जगत) का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। वह केवल मिथ्या है इसको उन्होंने अद्वैत कहा है (अर्थात एक होने का वह भाव जिसमें दो के भाव के

---

* "जात जुलाहा, नाम कबीरा अजहूँ पतीजौ नाहीं
तहाँ जाहु जहाँ पाट-पटम्बर, अगर चंदन घिस लीनां
आय हमारे कहा करौगी, हम तो जात कमीनां"

इन पंक्तियों में 'पाट-पटम्बर' का शब्द सबसे महत्वपूर्ण है और इसके वह तमाम अर्थ हैं जो ऊपर दिये हैं।

(A Dictionary of Urdu, Classical Hindi and English by PLATTS.)

اختیار کرتے ہیں ، ایک کے یہاں خشک فلسفے کی چمکدار تلوار ایک عظیم عالمگیر ذہن کی تیزی کا پتہ دیتی ہے اور دوسرے کے یہاں دل کی دھڑکن ازلی اور ابدی حقیقت میں انسانی روح کی حرارت پیدا کردیتی ہے۔

شنکر اچاریہ کا کہنا یہ ہے کہ چونکہ برھمن (ذات مطلق) ہی حقیقت ہے اس لئے مادی دنیا (مایا = سنسار) کی اپنی کوئی حقیقت نہیں۔ وہ صرف وہم و خیال (مِتھیا) ہے۔ اس کو انھوں نے اُدویت کہا ہے (یعنی وہ وحدت جس میں دوئی کی سمائی نہیں ہے) لیکن رامانج کا کہنا یہ ہے کہ برھمن (ذات مطلق) آتمن (روح = خودی) اور مایا (سنسار) الگ الگ پہچانے جاتے ہیں لیکن حقیقت میں الگ الگ نہیں ہیں۔ کیونکہ آتمن اور مایا دونوں برھمن کے وشیشن (صفات) ہیں۔ گویا شنکر اچاریہ صفات سے انکار کرتے ہیں اور رامانج صفات کو عین ذات مانتے ہیں۔ اس صورت میں برھمن (ذات مطلق) کی وحدت باقی رہتی ہے لیکن ساتھ ہی ساتھ آتمن (روح = خودی = فرد = جیو) کی حقیقت اور اصلیت بھی باقی رہتی ہے۔ اس کو وششت اَدوَیت کہا گیا ہے۔

شنکر اچاریہ کے یہاں وحدت میں کثرت کا سوال فلسفیانہ تاویلوں کا محتاج رہتا ہے اور رامانج کے یہاں شاعری اور نغمے کے دروازے کھول دیتا ہے اور نرگن کے آگے سرگن ناچنے لگتا ہے ، صفات ذات کا اشارہ بن جاتی ہیں اور انا الحق کا ساز بجنے لگتا ہے۔ شنکر اچاریہ کے یہاں خدا غیر ذاتی ہے اور رامانج کے یہاں ذاتی۔ اس لئے ایک کی بھگتی سرد اور خشک ہے اور دوسرے کی بھگتی گرم اور رنگین۔ وہاں شونیہ کا سکون ہے اور یہاں مایہ کا ہنگامہ جو سنت اور بھگت شاعروں کے یہاں بیتابی ، بیقراری اور سرشاری کا سنگیت بن جاتا ہے اور انہیں جلالالدین رومی اور حافظ شیرازی کے قریب لے آتا ہے۔ شنکر اچاریہ کے یہاں غیر ہندو افکار کی آمیزش ذرا مشکل ہے اور رامانج کی دھارا میں بہت سے چشمے مل سکتے ہیں۔ چنانچہ کبیر کے یہاں یہ آمیزش صاف نظر آتی ہے۔ (لیکن کبیر کو سو فیصدی راما نج کا چیلا سمجھنا صحیح نہیں ہے)۔

लिए कोई स्थान नहीं है)। लेकिन रामानुज का कहना यह है कि ब्रह्म, आत्मा और माया (संसार) अलग-अलग पहचाने जाते हैं लेकिन वास्तव में अलग-अलग नहीं हैं। क्योंकि आत्मा और माया दोनों ब्रह्म के विशेषण हैं। अर्थात शंकराचाय इन गुणों को स्वीकार नहीं करते और रामानुज सगुण को ही मानते हैं। इस दशा में ब्रह्म का एकत्व बाक़ी रहता है लेकिन साथ ही साथ आत्मा (जीव) की वास्तविकता और यथार्थता भी बाक़ी रहती है। इसको विशिष्टाद्वैत कहा गया है।

शंकराचार्य के यहाँ एकत्व में अनेकत्व के सवाल को व्याख्याओं की आवश्यकता पड़ती है और रामानुज के यहाँ वह कविता और गीत के द्वार खोल देता है और निर्गुण के आगे सगुण नाचने लगता है, गुण निर्गुण के द्योतक बन जाते हैं और अनलहक़ का साज बजने लगता है (बाजै सोहं तूर)। शंकराचार्य के यहाँ ईश्वर अवैयक्तिक है और रामानुज के यहाँ वैयक्तिक। इसलिए एक की भक्ति नीरस और शुष्क है और दूसरे की रसमय और रंगीन। वहाँ शून्य की निस्तब्धता है और यहाँ माया की हलचल जो संत और भक्त कवियों के यहाँ व्याकुलता, व्यग्रता और मादकता का संगीत बन जाती है और उन्हें जलालुद्दीन रूमी और हाफ़िज़ शीराज़ी के निकट ले आती है। शंकराचार्य के यहाँ ग़ैर-हिंदू विचारों का मिश्रण कठिन है और रामानुज की विचारधारा में बहुत-सी धाराएँ मिल सकती हैं। इसलिए कबीर के यहाँ यह मिश्रण स्पष्ट दिखायी देता है। (लेकिन कबीर को सौ फीसदी रामानुज का चेला समझना सही नहीं है।)

जीव और माया को ब्रह्म से अलग पहचानने के बाद जीव को तुच्छ और माया को व्यर्थ अथवा भ्रष्टाचारिणी नहीं माना जा सकता। इस प्रकार जीव के महत्व को स्वीकार करना व्यक्ति की महानता को स्वीकार करना है और वह व्यक्ति शूद्र भी हो सकता है और ब्राह्मण भी और मुसलमान भी। व्यक्ति का यह महत्व सामंती समाज के संबंधों पर अपना प्रभाव डालता है (जिसमें श्रेष्ठता का मापदंड धन और शक्ति को माना जाता था) और एक नये मानव प्रेम के संबंध स्थापित करता है। अब माया को तज देने का सवाल पैदा नहीं होता बल्कि उस पर विजय प्राप्त की जाती है, उसे बरता जाता है और कबीर के शब्दों में वह हरि-भक्तों की चेरी (दासी) बन जाती है। (पद १०९)

جیو اور مایا کو برہمن سے الگ پہچاننے کے بعد جیو کو حقیر اور مایا کو بیکار اور بدکار نہیں سمجھا جاسکتا. اس طرح جیو کی اہمیت کا اعتراف فرد کی عظمت کا اعتراف ہے اور وہ فرد شودر بھی ہوسکتا ہے اور براھمن بھی اور مسلمان بھی. فرد کی یہ اہمیت جاگیر دارانہ سماجی رشتوں پر اثر انداز ہوتی ہے (جس میں عظمت کی بنیاد دولت اور طاقت تھی) اور ایک نئی انسان دوستی کے رشتے قائم کرتی ہے. اب مایا کو تج دینے کا سوال پیدا نہیں ہوتا بلکہ اسے فتح کیا جاتا ہے، برتا جاتا ہے اور کبیر کے الفاظ میں وہ ہری بھگتوں کی چیری (کنیز) بن جاتی ہے. (نظم نمبر ۱۰۵)

کبیر کے یہاں ترک دنیا ہے لیکن اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ آدمی صرف اپنی ذات میں گم ہوجائے اور اپنی نجات کے لئے مراقبے میں کھوجائے، وہ خود شادی شدہ آدمی تھے اور صاحب اولاد تھے، کرگھے پر خود کپڑا بنتے تھے اور پھیری لگاکر اُسے بیچتے تھے اور اس کی آمدنی سے اپنا اور اپنے بال بچوں کا پیٹ پالتے تھے. ان کی مادی اور جسمانی محنت ان کے روحانی نغموں کی تخلیق میں حائل نہیں ہوتی تھی بلکہ شاید اُس میں مدد دیتی تھی اُن کو اس پر اصرار تھا کہ بھگوان اس دنیا میں ملتا ہے. نجات کا راستہ یہیں سے ہوکر گزرتا ہے (نظم ۴۰) اور مایا جو مہا ٹھگنی ہے اور بیدرد شکاری ہے بھگتوں کی کنیز بن سکتی ہے (نظم نمبر ۱۰۵) مایا تجی نہیں جاتی، تجی جا نہیں سکتی (نظم نمبر ۵) کیونکہ وہ کسی نہ کسی شکل میں باقی رہتی ہے. در اصل مایا پر فتح حاصل کی جاتی ہے. جس طرح پوجا پاٹ، نماز، روزہ، ظاہری عبادت سے صرف غرور (اہنکار) بڑھتا ہے لیکن بھگوان نہیں ملتا ویسے کپڑے اتار دینے سے یا اپنے پانچوں حواس کو قتل کردینے سے بھگوان نہیں ملتا اور نہ وہ پہاڑوں پر جا بیٹھنے اور جنگلوں میں کھو جانے سے ملتا ہے (مایا وہاں بھی پیچھا نہیں چھوڑتی) ہری (بھگوان) اس پر ریجھتے ہیں جس کے دل میں رحم ہے، جو متقی اور پرہیزگار ہے جو دنیا میں رہ کر دنیا سے اداس (بے نیاز) رہتا ہے اور ہر ذی حیات کو اپنی طرح جانتا ہے اسی کو وہ حی و قیوم ملتا ہے (نظم نمبر ٦٥). سائیں سے اس قسم کی لگن لگانا بہت مشکل ہے، اس کے لئے طبیعت کا انکسار، اور صبر و قناعت ضروری ہے اور رہن سہن میں پورا اترنا چاہیے

कबीर के यहाँ माया-त्याग है लेकिन उसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य केवल अपने आप में खोकर रह जाये और अपनी मुक्ति के लिए समाधि लगा ले। वह स्वयं विवाहित थे और उनके संतान भी थी। करघे पर खुद कपड़ा बुनते थे और फेरी लगाकर उसे बेचते थे और उसकी आमदनी से अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट पालते थे। उनका भौतिक और शारीरिक श्रम उनके आत्मा-संबंधी गीतों की रचना में बाधक नहीं होता था बल्कि शायद उसमें योग देता था। उनका आग्रह था कि भगवान इसी संसार में मिलता है। मुक्ति का मार्ग यहीं से होकर गुज़रता है (पद ४०) और माया, जो महा-ठगनी है, और क्रूर शिकारी है भक्तों की दासी बन सकती है (पद १०९)। माया तजी नहीं जाती, तजी जा नहीं सकती (पद ९)। क्योंकि वह किसी न किसी रूप में बाक़ी रहती है। असल में माया पर विजय प्राप्त की जाती है। जिस तरह पूजा-पाठ, नमाज़-रोज़ा, कर्मकांड से केवल अहंकार बढ़ता लेकिन भगवान नहीं मिलता, वैसे ही कपड़े उतार देने से या अपनी पाँचों इंद्रियों का दमन कर देने से भगवान नहीं मिलता। और न वह पहाड़ों पर जा बैठने और जंगलों में खो जाने से मिलता है। (माया वहाँ भी पीछा नहीं छोड़ती।)। हरि (भगवान) उस पर रीझते हैं जिसके हृदय में दया है, जो सदाचारी है, जो संसार में रहकर संसार से उदासीन रहता है और हर प्राणी को अपनी तरह जानता है, उसको वह अविनाशी मिलता है (पद ६९)। साईं से इस तरह की लगन लगाना बहुत कठिन है। इसके लिए स्वभाव में विनम्रता और संतोष आवश्यक है और रहन-सहन में पूरा उतरना चाहिये (पद ७०) और सारी बात को कबीर ने अंत में यह कहकर समाप्त कर दिया है कि देखो पांडे, बेकार के वाद-विवाद से कोई फ़ायदा नहीं है। सौ बातों की एक बात यह है कि इस शरीर के बिना शब्द, कलमा, नाम, अनाहत नाद कुछ भी संभव नहीं है। मनुष्य और सृष्टि सब मिट्टी है और गोविंद की शक्ति (माया) उसको बनाती-बिगाड़ती रहती है। हमारा शरीर एक मिट्टी का मंदिर है जिसमें हमने ज्ञान-ध्यान का दीपक जला रखा है और साँस का उजाला है जिससे सारा जग दिखायी देता है (पद १०४)।

(نظم نمبر ۷۰) اور ساری بات کو کبیر نے آخر میں یہ کہہ کر ختم کردیا ہے کہ دیکھو پانڈے جی فضول بحث مباحثے سے کوئی فائدہ نہیں ہے، سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ اس جسم کے بغیر شبد، کلمہ، نام، اناہت ناد کچھ ممکن نہیں ہے، انسان اور کائینات سب مٹی ہے اور گووند کی شکتی (مایا) اس کو بناتی بگاڑتی رہتی ہے۔ ہمارا جسم ایک مٹی کا مندر ہے جس میں ہم نے گیان دھیان کا دیپک جلا رکھا ہے اور سانس کا اجالا ہے جس سے سارا جگ دکھائی دیتا ہے (نظم نمبر ۱۱۳).

اس مٹی کی دنیا کا، جس کی ذمہ داریوں اور فرائض سے سبکدوش ہونا نجات کے لئے ضروری ہے، کبیر کے یہاں پورا احساس ہے اور غالباً بھگتی کا کوئی دوسرا شاعر اس شعور اور احساس میں کبیر کے قریب نہیں پہونچتا۔ اسلام میں انسان کی ذمہ داریاں دو حصوں میں تقسیم کی گئی ہیں، ایک حق اللہ ہے اور دوسرا حق العباد، یعنی ایک خدا کا حق اور دوسرا بندوں کا حق۔ عبادت خدا کا حق ہے اور سماجی ذمہ داریاں بندوں کا حق۔ خدا کے گنہگار کو جس نے حق عبادت ادا نہیں کیا، خدا معاف کرسکتا ہے لیکن بندوں کے گنہگار کو جس نے اپنے عزیز و اقارب، پڑوسی، ہم وطن اور اہل دنیا کا حق ادا نہیں کیا، اس کو خدا معاف نہیں کرتا، صرف بندے ہی معاف کرسکتے ہیں، اس کے بعد رحمت کے دروازے کھلیں گے، اس لئے کبیر نے دونوں حقوق کا ذکر کیا ہے:

سرگن کی سیوا کرو، نرگن کا کرو گیان
نرگن سرگن کے پرے، تہیں ہمارا دھیان

کبیر پنتھیوں نے کبیر کی پیدائش کو ان حسین و جمیل لفظوں میں بیان کیا ہے:

گھن گرجے، دامنی دمکے، بوندیں برسیں، جھرلاگ گئے
لہر تلاب میں کمل کھلے، تہاں بھانو پرگٹ بھئے

(ترجمہ: بادل گرج رہے تھے، بجلی چمک رہی تھی، بوندیں پڑ رہی تھیں، اور مینہ کی جھڑی لگی ہوئی تھی، اس طوفان میں جب کبیر سورج کی طرح ظاہر ہوئے تو لہر تالاب میں کنول کے پھول کھلے ہوئے تھے).

इस मट्टी की दुनिया का, जिसके दायित्वों और कर्त्तव्यों से उऋण होना मुक्ति के लिए जरूरी है, कबीर के यहाँ पूरा आभास मिलता है और शायद कोई दूसरा भक्त कवि इस चेतना और अनुभूति में कबीर के क़रीब नहीं पहुँचता।

इस्लाम में इन्सान की जिम्मेदारियों को दो हिस्सों में बाँटा गया है। एक खुदा का हक़ दूसरा बंदों का हक़। इबादत (उपासना) खुदा का हक़ है और सामाजिक जिम्मेदारियाँ बंदों का हक़। खुदा के गुनहगार को, जिसने हक़्क़े-इबादत अदा नहीं किया, खुदा माफ़ कर सकता है। लेकिन बंदों के गुनहगार को जिसने अपने सगे-संबंधियों, पड़ोसी, देशवासियों या इस संसार में रहनेवाले दूसरे इंसानों का हक़ अदा नहीं किया, उसको खुदा माफ़ नहीं करता। सिर्फ़ बंदे ही उसे माफ़ कर सकते हैं, उसके बाद रहमत के दरवाज़े खुलेंगे। इसलिए कबीर ने दोनों हक़्क़ों का ज़िक्र किया है—

सरगुन की सेवा करो, निरगुन का करो ज्ञान
निरगुन सरगुन के परे, तहीं हमारा ध्यान

कबीर पंथियों ने कबीर के जन्म का वर्णन इन सुंदर और अलंकारमय शब्दों में किया है—

घन गरजै, दामिनि दमकै, बूँदैं बरसैं, झर लाग गये
हर तलाब में कमल खिले, तहाँ भानु परगट भये

[अर्थात बादल गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी, बूँदें पड़ रही थीं, और मेंह की झड़ी लगी हुई थी। इस तूफ़ान में जब कबीर सूरज की तरह प्रकट हुए तो हर तालाब में कमल के फूल खिले हुए थे।]

संभव है कि इस दोहे के शब्द वस्तु-स्थिति का चित्रण करते हों, लेकिन अगर उन्हें आलंकारिक भाषा माना जाये तो ऐसा लगता है जैसे युद्धों की घन गरज में, हिंसा और विध्वंस की बिजलियों में जहाँ रक्त की वर्षा हो रही थी, कबीर के जन्म से अचानक सारा वातावरण शांतिमय हो गया और आकाश पर सूर्य निकल आया और तालाबों में कमल के फूल खिल गये। मध्य-युग के युद्ध-ग्रस्त भारत की पृष्ठभूमि में कबीर का यह व्यक्तित्व अतिरंजित नहीं मालूम होता।

اس دوہے کے الفاظ ممکن ہے کہ حقیقت ہی کی ترجمانی کرتے ہوں لیکن اگر انہیں استعارے کی زبان سمجھا جائے تو ایسا معلوم ہوتا جیسے جنگوں کی گھن گرج میں، قتل و غارت کی بجلیوں میں جہاں خون کی بارش ہو رہی تھی کبیر کی پیدائش (ظہور) سے یکایک منظر پر سکون ہوگیا اور آسمان پر سورج نکل آیا اور تالابوں میں کنول کے پھول کھل گئے. قرونِ وسطیٰ کے جنگ آلود ہندستان کے پس منظر میں کبیر کی یہ شخصیت مبالغہ آمیز نہیں معلوم ہوتی.

کبیر داس ایک مسلمان صوفی تھے جو ہندو بھگتی کی زبان میں بات کررہے تھے[1] چونکہ انھوں نے اپنے آپ کو بار بار جولاہا کہا ہے اسلئے یہ یقین کے ساتھ کہا جاسکتا ہے کہ انھوں نے اسلام کو ترک نہیں کیا تھا، لیکن اُن کی دھج ہندوؤں کی سی تھا. ماتھے پر تالک لگاتے تھے اور جسم پر جنیو پہنتے تھے اور پھر جرأت اتنی تھی کہ برھمنوں پر طنز کرتے تھے «تو بھامن میں کاسی کا جولہا، بوجھو مور گیانا[2]. ہندوستان کی پوری تاریخ میں اتحاد کے اتنے خوبصورت اور جذباتی مظہر کی مثال نہیں ہے. اس عہد میں جب ترک حکمرانوں کی تلوار ہندستان کے سر پر چمک رہی تھی اس مسلمان جولاہے کے حرفِ محبت میں کتنی کشش ہوگی جس نے اپنے آپ کو سر سے پانوں تک ہندوؤں کے رنگ میں رنگ لیا تھا اور یہ بھی یقین کیا جاسکتا ہے کہ کبیر سے آشنا ہونے کے بعد عام ہندو عام مسلمان سے نفرت نہیں کرسکتا تھا.

کبیر نے منصور کی طرح انا الحق نہیں کہا لیکن انا الحق کا سارا جذبہ ان مصرعوں میں موجود ہے « نرگن آگے سرگن ناچے باجے سوہنگ

---

۱ کافر عشقم، مسلمانی مرا درکار نیست ہر رگ جان تار گشتہ حاجت زنار نیست

(امیر خسرو)

(ترجمہ: میں وہ کافر ہوں جس نے عشق کو خدا مانا ہے، اب مجھے اسلام کی ضرورت نہیں، میری ایک ایک رگ تار بن گئی ہے، پھر میں جنیو پہن کر کیا کروں)

۲ یہ دلچسپ بات ہے کہ کبیر کا خاندان ہندو سے مسلمان ہوا تھا اور اقبال کا خاندان بھی. کبیر نے اپنے آپ کو مسلمان کہہ کر برھمن پر طنز کیا اور اقبال نے اپنے آپ کو برھمن کہہ کر مسلمانوں کے سامنے فخر و مباہات سے کام لیا. «برھمن زادۂ رمز آشنائے روم و تبریز است». کبیر نے اپنی شاعری میں ہندو تشبیہ اور استعارہ استعمال کیا اور اقبال نے اسلامی روایات سے اپنے تشبیہ اور استعارے لئے حالانکہ ان کے فلسفۂ خودی پر اپنشد اور ویدانت کا اچھا خاصا اثر ہے جس پر ابھی تک تحقیقی کام نہیں کیا گیا ہے.

कबीरदास एक मुसलमान सूफ़ी थे जो हिंदू भक्ति की भाषा में बात कर रहे थे। *चूँकि उन्होंने अपने आपको बार-बार जुलाहा कहा है इसलिए यह यक़ीन के साथ कहा जा सकता है कि उन्होंने इस्लाम का परित्याग नहीं किया था लेकिन उनकी वज हिंदुओं की सी थी। माथे पर तिलक लगाते थे, और शरीर पर जनेऊ पहनते थे और साहस तो इतना था कि ब्राह्मणों पर व्यंग करते थे। "तू बाम्हन मैं कासी का जुलहा, बूझौ मोर गियाना" † भारत के पूरे इतिहास में एकता के इतने सुंदर और भावपूर्ण प्रदर्शन का कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। उस युग में जब तुर्क शासकों की तलवार भारत के सरपर चमक रही थी इस मुसलमान जुलाहे के हर्फ़े-मुहब्बत (प्रेम-वाणी) में कितना आकर्षण होगा जिसने अपने आपको सर से पाँव तक भारत के रंग में रँग लिया था और यह भी यक़ीन किया जा सकता है कि कबीर से परिचित होने के बाद आम हिंदू आम मुसलमान से नफ़रत नहीं कर सकता था।

कबीर ने मंसूर की तरह अनलहक़ नहीं कहा लेकिन अनलहक़ का सारा भाव इन पंक्तियों में मौजूद है: "निरगुन आगे सरगुन नाचै, बाजै सुहंग तूरा" (पद २८) अर्थात निर्गुण के आगे सगुण नाच रहा है और अनलहक़ का साज बज रहा है। ‡ जब वह यह कहते हैं कि "उसके वुजूद में एक दुनिया के बाद दूसरी दुनिया तस्बीह के दीनों की तरह चल रही है" तो फिर यह कहने

---

* काफ़िरे-इश्क़म मुसल्मानी मरा दरकार नीस्त
हर रगे-जाँ तार गुश्ता हाजते-ज़ुन्नार नीस्त —खुसरो

[भावार्थ: मैं वह काफ़िर हूँ जिसने इश्क़ को खुदा माना है। अब मुझे इस्लाम की ज़रूरत नहीं। मेरी एक-एक नस तार बन गयी है, फिर मैं जनेऊ पहनकर क्या करूँगा।]

† दिलचस्प बात है कि कबीर का खानदान हिंदू से मुसलमान हुआ था और इक़बाल का खानदान भी। कबीर ने अपने आपको मुसल्मान कहकर ब्राह्मण पर व्यंग किया और इक़बाल ने अपने आपको ब्राह्मण कहकर मुसलमानों के सामने गर्व से काम लिया। "बरहमन-ज़ादा रम्ज़-आशना-ए-रूम-ओ-तब्रेज़ अस्त" कबीर ने अपनी कविता में हिंदू उपमाओं और अलंकारों का प्रयोग किया और इक़बाल ने इस्लामी परम्पराओं से अपनी उपमाएँ और अलंकार लिये हालांकि उनके 'खुदी' के फ़लसफ़े पर उपनिषद और वेदांत का अच्छा-खासा प्रभाव है जिस पर अभी तक कोई शोध-कार्य नहीं किया गया है।

‡ मौलाना जलालुद्दीन रूमी के नज़दीक अनलहक़ विनम्रता की आखिरी मंज़िल है। जिस तरह शहद में डूबी हुई मक्खी हिल नहीं सकती उसी तरह इस्तग़राक़ (तल्लीनता) के आलम में कोई सूफ़ी अनलअबद (मैं बंदा हूँ) कह नहीं सकता क्योंकि उसमें दुइ (द्वैताभास) है —एक खुदा और एक बंदा और यह ग़ुरूर की मंज़िल है, खुदा के वुजूद के सामने अपने वुजूद का

تورا » (نظم نمبر ۲۸) یعنی ذات کے سامنے صفات ناچ رہی ہیں اور انا الحق کا ساز بج رہا ہے[1]. جب وہ یہ کہتے ہیں کہ « اس کے وجود میں ایک دنیا کے بعد دوسری دنیا تسبیح کے دانوں کی طرح چل رہی ہے » (نظم نمبر ۱۴) . تو پھر یہ کہنے کی ضرورت باقی نہیں رہ جاتی کہ ساری کائینات اس کی تسبیح میں مشغول ہے اس طرح جب وہ عوام کی زبان میں یہ کہتے ہیں کہ « نراکار ، نرگن ابناسی ، کر واہی کو سنگ » (نظم نمبر ۲۹) تو یہ محسوس ہوتا ہے کہ ہندو پری بھاشا میں قل ھو اللہ احد کی تفسیر اسی طرح بیان کی جاسکتی ہے . کبھی کبھی اس درشن کے دیوانے « المست فقیر » کا نغمہ اسلامی فکر کی موجوں میں تبدیل ہوجاتا ہے « یا کریم ، بل حکمت تیری کھاک ایک صورت بُھتیری » یعنی « اے کریم میں تیری حکمت پر قرباں جاؤں ، ایک خاک سے اتنی ساری صورتیں بنا ڈالیں » . اور کبھی وہ اسلامی عقاید کی زمین سے اٹھ کر ویدانت کے شونیہ آکاش میں چلے جاتے ہیں جہاں ذات و صفات سے بھی شعور بلند ہوجاتا ہے ، پھر وہ کبھی کبھی اسلامی الفاظ استعمال کرتے ہیں اور ہندو اندازِ فکر اختیار کرلیتے ہیں مثلاً « نبی آنکھوں میں موجود ہے ، سیاہ اور سفید تلوں کے بیچ میں ایک تارا ہے جس میں لاکھوں سورج طلوع ہوتے ہیں » مگر اس ہزار رنگ انداز کے اندر شیوہ ، ایک ہی ہے جو ایک لفظ عشق میں سما جاتا ہے . باقی باتیں اس کی تفصیل اور تفسیر ہیں .

یہ بات متفقہ طور سے مانی جاتی ہے اور خود کبیر نے اس کا اعتراف کیا ہے کہ وہ ان پڑھ تھے . لیکن ان کی پیدائش اور موت کی طرح ان کی شاگردی کے متعلق بھی اختلاف رائے ہے . مسلم روایت انہیں ایک صوفی پیر تقی کا شاگرد قرار دیتی ہے لیکن اپنی نظموں میں کبیر نے راما نند کو گرو مان کر خراج عقیدت پیش کیا ہے .

---

۱ مولانا جلال الدین رومی کے نزدیک انا الحق انکسار کی آخری منزل ہے . جس طرح شہد میں ڈوبی ہوئی مکھی ہل نہیں سکتی اسی طرح استغراق کے عالم میں کوئی صوفی انا العبد (میں بندہ ہوں) نہیں کہہ سکتا . کیونکہ اس میں دوئی ہے ، ایک خدا اور ایک بندہ اور یہ غرور کی منزل ہے خدا کے وجود کے سامنے اپنے وجود کا اعلان ہے . (مثنوی کا انگریزی ترجمہ ، از نکلسن ، ساتویں جلد) لیکن یہ کہنے کا حق صرف اہل باطن کو ہے . اہل ظاہر کو نہیں کیوں کہ اس کی سزا موت ہے جسے اہل باطن جشن عروسی سمجھتے ہیں اور اہل ظاہر سزا کا نام دیتے ہیں .

की जरूरत बाक़ी नहीं रह जाती कि सारी सृष्टि उसकी माला फेरने में व्यस्त है। इसी तरह जब वह जन साधारण की भाषा में यह कहते हैं कि "निराकार, निरगुन, अविनासी, कर वाही को संग" (पद २९) तो ऐसा लगता है कि हिंदू परिभाषा में "क़ुल हू अल्लाह अहद" * की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है। कभी-कभी इस दर्शन के दीवाने "अलमस्त फ़क़ीर" का गीत इस्लामी चिंतन-धारा की लहरों में बदल जाता है। "या करीम, बलि हिकमत तेरी, खाक़ एक सूरत बहुतेरी" अर्थात ऐ करीम (दयानिधि) मैं तेरी हिकमत पर क़ुरबान जाऊँ, एक ख़ाक से इतनी सारी सूरतें बना डालीं।" और कभी वह इस्लामी आस्थाओं की भूमि से उठकर वेदांत के शून्य आकाश में चले जाते हैं, जहाँ निर्गुण और सगुण से भी चेतना ऊँची हो जाती है। फिर कभी-कभी वह इस्लामी शब्द इस्तेमाल करते हैं और हिंदू-पद्धति अपना लेते हैं, जैसे "नबी आँखों में मौजूद है, काले और सफ़ेद तिलों के बीच में एक तारा है जिसमें लाखों सूरज उदय होते हैं।" मगर इस हज़ार-रंग अंदाज़ के अंदर अभीष्ट एक ही है जो एक शब्द 'प्रेम' में समा जाता है, बाक़ी बातें उसकी व्याख्या हैं।

यह बात सर्वसम्मति से मानी जाती है और ख़ुद कबीर ने इसे स्वीकार किया है कि वह अनपढ़ थे। लेकिन उनके जन्म और मृत्यु की तरह उनकी शागिर्दी के बारे में भी मतभेद है। मुस्लिम परम्परा उन्हें एक सूफ़ी पीर तक़ी का शागिर्द ठहराती है लेकिन अपनी कविता में कबीर ने रामानंद को गुरु मानकर उनका सम्मान किया है।

पंद्रहवीं शताब्दी के बनारस में रामानंद की बड़ी ख्याति थी। वैसे तो वह हिंदू संत थे लेकिन उनकी गोष्ठी में हिंदू और मुसलमान दोनों शरीक होते थे। कबीर का लड़कपन था लेकिन उन्होंने भी रामानंद को ही अपना गुरु चुना। अब मुश्किल यह थी कि एक मुसलमान जुलाहे को वह अपना शिष्य

एलान है। (मसनवी का अंग्रेज़ी अनुवाद-निकल्सन कृत, सातवाँ खंड) लेकिन यह कहने का अधिकार सिर्फ़ अहले-बातिन (अंतर्ज्ञानी) को है, अहले-ज़ाहिर (कर्मकांडी) को नहीं क्योंकि इसकी सज़ा मौत है, जिसे अहले-बातिन ज़श्ने-उरूसी (विवाहोत्सव) समझते हैं और अहले-ज़ाहिर सज़ा कहते हैं।

*क़ुरान की आयत जिसका अर्थ है कि अल्लाह एक है।

پندرہویں صدی کے بنارس میں راما نند کی بڑی شہرت تھی. ویسے تو وہ ہندو سنت تھے لیکن اُن کی مجلس (گوشٹی) میں ہندو اور مسلمان دونوں شریک ہوتے تھے. کبیر کا لڑکپن تھا لیکن اُن کی نگاہ انتخاب بھی راما نند ہی پر پڑی. اب مشکل یہ تھی کہ ایک مسلمان جولاہے کو وہ اپنی شاگردی میں قبول کریں گے یا نہیں، کبیر نے اس کا حل جس طرح تلاش کیا وہ بہت دلچسپ ہے. راما نند روز صبح سویرے گنگا میں اشنان کرنے جاتے تھے، ایک روز صبح کے وقت جب ابھی اندھیرا تھا کبیر گنگا کے کنارے سیڑھیوں پر لیٹ گئے. تھوڑی دیر میں جب سوامی راما نند آئے تو اُن کا پیر کبیر کے سر پر پڑ گیا اور بیساختہ اُن کے منھ سے رام رام نکل گیا. کبیر خوش ہو گئے کہ منتر مل گیا اور اس دن سے اپنے آپ کو راما نند کا چیلا کہنے لگے. ہندو اور مسلمان دونوں نے شور مچایا لیکن کبیر کے ماتھے پر بل نہیں پڑا کیونکہ وہ بچپن سے اس کے عادی تھے. اُن کے غیر متعصب رویے کی وجہ سے ہندو لڑکے اُنہیں مسلمان اور مسلمان لڑکے ہندو سمجھ کر چھیڑتے اور ستاتے تھے:

زاہد تنگ نظر نے مجھے کافر جانا
اور کافر یہ سمجھتا ہے مسلماں ہوں میں
دیکھ اے چشم عدو مجھ کو حقارت سے نہ دیکھ
جس پہ فطرت کو بھی ہے ناز وہ انساں ہوں میں

(اقبال)

بہرحال راما نند نے کبیر کو اپنے حلقے میں لے لیا، بعض لوگوں کا خیال ہے کہ کبیر اُن کی صحبت میں ایک عرصے تک رہے لیکن بعض لوگ یہ رائے رکھتے ہیں کہ یہ صحبت بہت مختصر تھی اور اس کا ثبوت اس سے بھی ملتا ہے کہ کبیر کے تصورات پر راما نند کے اثرات آہستہ آہستہ دھندلے ہوتے چلے جاتے ہیں، یہ معلوم ہوتا ہے کہ جس طرح راما نند سے ملنے سے پہلے کبیر ادھر اُدھر گھومتے رہے اُسی طرح اُن کی شاگردی اختیار کرلینے کے بعد بھی دوسرے سنیاسیوں اور بھگتوں کے علاوہ مسلم صوفیا کی صحبت میں وقت گزارتے رہے. لیکن یہ یقینی بات ہے کہ کبیر کی مذہبی معلومات جو حیرت انگیز حد تک وافر ہیں سوامی راما نند کی گوشٹیوں (مجلسوں) کی بھی دین ہیں. اور یہ بھی

बनायेंगे या नहीं। कबीर ने दूसरा हल जिस तरह खोजा वह बहुत दिलचस्प है। रामानंद रोज सुबह-सवेरे गंगा में स्नान करने जाते थे। एक रोज सुबह के वक़्त जब अभी अँधेरा था कबीर गंगा के किनारे सीढ़ियों पर लेट गये। थोड़ी देर में जब स्वामी रामानंद आये तो उनका पैर कबीर के सर पर पड़ गया और अनायास उनके मुँह से 'राम-राम' निकल गया। कबीर ख़ुश हो गये कि मंत्र मिल गया और उस दिन से अपने आपको रामानंद का चेला कहने लगे। हिंदू और मुसलमान दोनों ने शोर मचाया लेकिन कबीर के माथे पर बल नहीं पड़ा क्योंकि वह बचपन से इसके आदी थे। उनके असाम्प्रदायिक रवैये की वजह से हिंदू लड़के उन्हें मुसलमान समझकर और मुसलमान लड़के हिंदू समझकर छेड़ते थे और सताते थे—

ज़ाहिदे-तंगनज़र ने मुझे काफ़िर जाना
और काफ़िर यह समझता है मुसल्माँ हूँ मैं
देख ऐ चश्मे-अदू, मुझको हिक़ारत से न देख
जिस पे क़ुदरत को भी है नाज़ वह इंसाँ हूँ मैं

(इक़बाल)

बहरहाल, रामानंद ने कबीर को अपने मंडल में ले लिया। कुछ लोगों का मत है कि कबीर उनकी सोहबत में एक अरसे तक रहे लेकिन कुछ लोग यह समझते हैं कि यह सोहबत बहुत कम दिन रही और इसका सबूत इससे भी मिलता है कि कबीर के विचारों पर रामानंद का प्रभाव धीरे-धीरे धुँधला होता चला जाता है। यह मालूम होता है कि रामानंद से मिलने से पहले और बाद भी कबीर इधर-उधर घूमते रहे और संन्यासियों और भक्तों के अलावा मुस्लिम सूफ़ियों की सोहबत में भी वक़्त गुज़ारते रहे। लेकिन यह यक़ीनी बात है कि कबीर का धार्मिक ज्ञान, जो आश्चर्यजनक हद तक व्यापक है, स्वामी रामानंद की गोष्ठियों की भी देन हैं। और यह भी कहा जा सकता है कि उन्होंने उन गोष्ठियों में भी भाग लिया जो सूफ़ियों और संतों के बीच होती थीं और जिनमें मर्मचिंतन और तत्व-विवेचन होता था। हिंदू धर्म के अलावा तसव्वुफ़ और इस्लाम के बारे में उनकी गहरी जानकारी और उनसे उनका गहरा लगाव यह अनुमान लगाने पर विवश कर देता है कि अनपढ़ रहने के बावजूद, जिसे उन्होंने स्वयं स्वीकार

کہا جا سکتا ہے کہ وہ اُن گوشٹیوں میں بھی شریک ہوئے جو مُسلم صوفیوں اور ہندو سنتوں کے درمیان ہوتی تھیں اور اسرار و رموز بیان کئے جاتے تھے۔ ہندو دھرم کے علاوہ تصوف اور اسلام سے اُن کی گہری واقفیت اور رغبت یہ قیاس آرائی کرنے پر مجبور کرتی ہے کہ ان پڑھ ہونے کے باوجود، جس کا انہوں نے خود اعتراف کیا ہے اُنہیں اچھی علمی صحبت ملی تھی۔ جھوسی کے شیخ تقی کی صحبت کا ذکر کبیر نے خود کیا ہے چاہے وہ اُن کے شاگرد بنے ہوں یا صرف ہم مجلس رہے ہوں۔

ڈاکٹر تارا چند اپنی انگریزی کتاب «تمدنِ ہند پر اسلامی اثرات» میں لکھتے ہیں: -

«کبیر کی تعلیمات کے اندازِ بیان کی صورت گری صوفی اولیاء اور شعرا نے کی۔ ہندی زبان میں تو اُنہیں کوئی پیش رو نہ ملا اس لئے وہ جن نمونوں کی پیروی کر سکتے تھے وہ مسلمانوں ہی سے مل سکتے تھے* مثلاً فرید الدین عطار کا پند نامہ۔ بابا فرید اور کبیر کی نظموں کے عنوانوں کے تقابل سے یہ امر با وضاحت معلوم ہوتا ہے۔ کبیر نے دوسرے صوفیا کے علاوہ جلال الدین رومی اور شیخ سعدی کا کلام بھی یقیناً سنا ہوگا کیونکہ ان کے کلام میں ان صوفی شعرا کی صدائے باز گشت سنائی دیتی ہے» (صفحہ ۲۴۷۔ اردو ترجمہ محمد مسعود احمد۔ مطبوعۂ مجلس ادب لاہور)

کبیر کی شاعری میں عربی اور فارسی کے سیکڑوں الفاظ ہیں جن میں سے کچھ تو اس وقت کی ہندی میں رائج ہوچکے تھے اور کچھ براہ راست صوفیانہ شاعری سے آئے ہیں۔ ترکِ دنیا سے انکار اور یوگ بھوگ دونوں کو گھریلو زندگی کا حصہ قرار دینا (نظم ۴۰) اسلامی

*کبیر سے پہلے ہندی زبان نے کوئی بڑا شاعر پیدا نہیں کیا۔ ملک محمد جائسی کی تاریخ پیدائش ۱۴۹۴ع ہے اور پدماوت کی ابتدا ۱۵۴۰ع میں شیر شاہ سوری کے عہد میں ہوئی جب کہ کبیر کا انتقال ۱۵۱۸ع میں ہوچکا تھا۔ اس لئے مسلم صوفیوں کے ذریعے سے کبیر کے پاس کئی سو برس کی فارسی روایت آئی۔ صوفی حلقوں میں رومی، سعدی، عطار اور حافظ کا کلام عام طور سے پڑھا جاتا تھا اور کبیر کی شاعری میں اُن کے اثرات کی شہادتیں موجود ہیں۔

किया है, उन्हें ज्ञानियों का सत्संग मिला था। झूसी के शेख तक़ी की सोहबत का जिक्र कबीर ने खुद किया है, चाहे वह उनके शागिर्द बने हों या उनके साथ सिर्फ़ उठते-बैठते रहे हों।

डाक्टर ताराचंद अपनी अंग्रेजी किताब "भारत की संस्कृति पर इस्लामी प्रभाव" में लिखते हैं :

"कबीर के उपदेशों की शैली की रचना सूफ़ी औलिया और शायरों ने की। हिंदी जबान में तो उन्हें कोई मार्गदर्शक न मिला इसलिए वह जिन नमूनों की पैरवी कर सकते थे वह मुसलमानों ही से मिल सकते थे, * जैसे फ़रीदुद्दीन अत्तार का "पंद-नामा"। बाबा फ़रीद और कबीर की नज़्मों के विषयों की तुलना करने से यह बात साफ़ दिखायी देती है। कबीर ने दूसरे सूफ़ियों के अलावा जलालुद्दीन रूमी और शेख सादी का कलाम भी जरूर सुना होगा क्योंकि उनके कलाम में इन सूफ़ी शायरों की प्रतिध्वनि सुनायी देती है।" (पृष्ठ २४७, मजलिसे-अदब, लाहौर द्वारा प्रकाशित मुहम्मद मसऊद अहमद के अनुवाद से)

कबीर की कविता में अरबी और फ़ारसी के सैकड़ों शब्द हैं जिनमें से कुछ तो उस समय की हिंदी में प्रचलित हो चुके थे और कुछ सीधे सूफ़ी शायरी से आये हैं। तर्के-दुनिया (संसारत्याग) से इंकार और योग और भोग दोनों को घरेलू जिंदगी का हिस्सा मानना (पद ४०) इस्लामी विचारधारा से परिचित होने का प्रमाण हैं। "फ़नाए-हस्ती (अस्तित्व का अंत) से कबीर का मक़सद यह था कि इंसान अपने हवास (इंद्रियों) और क़वा (शक्तियों) से निरंतर संघर्ष करता रहे।" (ताराचंद, पृष्ठ २६१)

कबीर ने इस संघर्ष को इन शानदार शब्दों में बयान किया है :

"तलवार हाथ में लेकर रणक्षेत्र में उतरो और उस वक़्त तक लड़ो जब

---

* कबीर से पहले हिंदी भाषा ने कोई बड़ा कवि पैदा नहीं किया। मलिक मुहम्मद जायसी की जन्मतिथि १४९४ ई० है और 'पद्मावत' का रचनाकाल १५४० ई० में शेरशाह सूरी के युग में हुआ जबकि कबीर की मृत्यु १५१८ ई० में हो चुकी थी। इसलिए मुस्लिम सूफ़ियों के ज़रिये से कबीर के पास कई सौ बरस की फ़ारसी परम्परा आयी। सूफ़ी क्षेत्रों में रूमी, सादी, अत्तार और हाफ़िज़ की रचनाएँ आम तौर पर पढ़ी जाती थीं और कबीर की कविता में उनके प्रभाव के प्रमाण मिलते हैं।

تصورات سے واقفیت کا ثبوت ہے۔ «فنائے ہستی سے کبیر کا مقصد یہ تھا کہ انسان اپنے حواس اور قویٰ سے مسلسل آمادۂ پیکار رہے۔»
(تارا چند صفحہ ۲٦۱)

کبیر نے اس پیکار کو ان شاندار الفاظ میں بیان کیا ہے :-

« شمشیر ہاتھ میں لے کر میدانِ جنگ میں اترو اور اس وقت تک لڑو جب تک جان میں جان ہے۔ دشمن کا سر کاٹ کر اُس کا کام تمام کردو۔ پھر مالک کے دربار میں آکر اپنا سر جھکا دو۔

« بہادر جنگ کے میدان کو دیکھ کر بھاگتے نہیں اور بھاگنے والے بہادر نہیں ہوتے۔ جسم و جان کے رن میں گھمسان کی لڑائی ہو رہی ہے۔ ہوس، غصہ، غرور اور لالچ مقابلے پر کھڑے ہوئے ہیں۔ صبر، قناعت اور صداقت کی بادشاہت میں شمشیر کا نام بلند ہو رہا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ جب کوئی سورما لڑائی کے لئے نکلتا ہے تو بزدلوں کی فوج پیٹھ دکھا کر بھاگ جاتی ہے۔

« صداقت کے متلاشی کی جد و جہد بہت کٹھن ہے۔ ستی اور سورما کے مقابلے میں اس کا عہدِ وفا زیادہ دشوار ہے، سورما کی لڑائی دو چار گھنٹے چلتی ہے، ستی کی جد و جہد ایک پل میں ختم ہو جاتی ہے، لیکن صداقت کا متلاشی دن رات جنگ کرتا ہے، اس کی لڑائی زندگی کے آخری لمحے تک جاری رہتی ہے »
(نظم ۳۷ بند ۲، ۳، ۴)

انسان کی اس باطنی جد و جہد کا انجام ان الفاظ میں بیان کیا گیا ہے کہ « جس کے دل میں رحم ہے، جو متقی اور پرہیزگار ہے، جو دنیا میں رہ کر دنیا سے اداس رہتا ہے اور دنیا کے ہر ذی حیات کو اپنی طرح جانتا ہے اس کو وہ لافانی (بھگوان) مل جاتا ہے،» (تارا چند صفحہ ۲ - ۲٦۱ کبیر نظم ٦۵)

ڈاکٹر تارا چند نے بہت سی مثالوں سے کبیر اور مسلم فلسفیوں مفکروں اور صوفی شاعروں کے خیالات کی مماثلت ثابت کی ہے اور آخر میں یہ نتیجہ نکالا ہے :

«اس طرح کبیر نے ایک آفاقی راہ والے مذہب کی طرف انسان کی توجہ پھیر دی، .... کوئی ہندو یا مسلمان اس مذہب سے پہلوتہی

तक जान में जान है। दुश्मन का सर काटकर उसका काम तमाम कर दो। फिर मालिक के दरबार में आकर अपना सर झुका दो।

''बहादुर लड़ाई के मैदान को देखकर भागते नहीं और भागनेवाले बहादुर नहीं होते। शरीर और प्राणों के रण में क्या घमासान की लड़ाई हो रही है। काम, क्रोध, मद, लोभ मुक़ाबले पर खड़े हुए हैं। संतोष, धीरज और सत्य के राज्य में तलवार का नाम ऊंचा हो रहा है। कबीर कहते है कि जब कोई सूरमा लड़ाई के लिए निकलता है तो कायरों की फ़ौज पीठ दिखाकर भाग जाती है।

''सत्य की खोज का संघर्ष बहुत कठिन है। सती और सूरमा के मुक़ाबले में उसका प्रण निभाना ज्यादा कठिन है। सूरमा की लड़ाई दो-चार घंटे चलती है। सती का संघर्ष एक क्षण में समाप्त हो जाता है। लेकिन सत्य की खोज करनेवाला दिन-रात संघर्ष करता है। उसकी लड़ाई जीवन के अंतिम क्षण तक जारी रहती है।'' (पद ३७, छंद २, ३, ४)

''मनुष्य के इस आंतरिक संघर्ष का वर्णन इन शब्दों में किया जा सकता है कि 'जिस हृदय में दया है, जो सदाचारी है, जो संसार में रहकर संसार से उदास रहता है और संसार के हर प्राणी को अपनी तरह जानता है उसको वह अविनाशी (भगवान) मिल जाता है।' '' (ताराचंद, पृष्ठ २६१-६२; कबीर का पद ६९।)

डाक्टर ताराचंद ने बहुत-सी मिसालों से कबीर और मुस्लिम दार्शनिकों, विचारकों और सूफ़ी शायरों के विचारों की समानता साबित की है और आख़िर में यह नतीजा निकाला है कि:

''इस तरह कबीर ने एक सांसारिक मार्गवाले धर्म की ओर मनुष्य का ध्यान मोड़ दिया। .... कोई हिंदू या मुसलमान उस धर्म से बच नहीं सकता। यह कबीर के जीवन-ध्येय का रचनात्मक पहलू था। लेकिन उनके ध्येय का ध्वंसात्मक पहलू भी है। नये रास्ते बनाने का काम उस झाड़-झंखाड़ को दूर किये बग़ैर, जिसने पुरानी पगडंडियों को ढक दिया था, असंभव था। यही वजह है कि कबीर ने बेधड़क क्रोध के साथ और जोरदार शब्दों में, धर्म के उस सारे बाहरी आडंबर पर, जिसने सत्य को छुपा दिया था, या हिंदुस्तान के सम्प्रदायों

نہیں کرسکتا تھا. یہ کبیر کے مشن کا تعمیری پہلو تھا. لیکن ان کے مشن کا تخریبی پہلو بھی ہے، نئے راستے کی تشکیل اس جھاڑ جھنکاڑ کو دور کئے بغیر، جس نے قدیم پگڈنڈیوں کو مسدود کر دیا تھا، ناممکن تھی. یہی وجہ ہے کبیر نے بیباکانہ غیظ و غضب اور پُر زور زبان میں ظواہر مذہب کے تمام ساز و سامان پر، جس نے صداقت کو چھپا دیا تھا، یا ہندستان کی جماعتوں کو ایک دوسرے سے جدا کر دیا تھا، حملہ کیا. اُن کے حملے سے نہ مسلمان بچے نہ ہندو» (تارا چند صفحہ ۲٦۷)

ظاہر ہے کہ اس مقام پر ہندو بھگتی اور مسلم تصوف کا سنگم ناگزیر تھا، اسی لئے بعض مقامات پر منصور کی انا الحق کی گونج کے علاوہ جس کا ذکر پہلے آچکا ہے کبیر کی تعلیمات پر رومی کے تصورات کا عکس بھی دکھائی دیتا ہے جسے انہوں نے ہندو بھگتی کے انداز سے پیش کیا ہے. وہی جاہ و جلال، وہی بیتابی اور بیقراری جو رومی کی غزلوں کی خصوصیت ہے کبیرکی شاعری کا جز و اعظم ہے، ہندو بھگتی کبیر کو مقام فنا کی سیر کراتی ہے جہاں عجزو انکسار، خضوع اور خشوع ہے اور مسلم تصوف مقام بقا پر پھونچا دیتا ہے جہاں قوت، عظمت، جلال اور جمال، بیباکی اور بلند آہنگی کے ڈنکے بج رہے ہیں، کبیر کے الفاظ میں آسمان گرج رہا ہے* اگر کبیر کے یہاں یہ تصور موجود ہے جو بھگتی اور تصوف دونوں جگہ مشترک ہے کہ قطرہ، یا حباب دریا میں محو ہوجاتا ہے، جیو، فرد، آتما جاکر وجود مطلق (برھمن) میں مل جاتی ہے تو دوسری طرف یہ تصور بھی موجود ہے جو رومی کی دین ہے کہ قطرہ، دریا کو پی لیتا ہے، آتمن برھمن کو جذب کر لیتی ہے. لیکن یہ دوسری بات اتنے صاف الفاظ میں نہیں کہی گئی ہے جس کی مثال رومی کا یہ شعر ہے:

به زیرِ کنگرۂ کبریاش مردانند
فرشته صید و پیمبر شکار ویزداں گیر

(ترجمہ: بام کبریائی کے سائے میں ایسے ہمت والے لوگ کھڑے ہیں

---

* تصوف میں سالک کو کئی مقامات سے گزرنا پڑتا ہے. انہیں میں ایک مقام بقا ہے اور ایک مقام فنا دونوں ایک دوسرے کے مقابل ہیں، فارسی میں رومی مقام بقا کے شاعر ہیں. جس طرح کوئی دوسرا صوفی شاعر رومی کے قریب نہیں پہونچتا اسی طرح کوئی دوسرا سنت شاعر کبیر کے قریب نہیں پہونچ پاتا.

को एक-दूसरे से अलग कर दिया था, हमला किया। उनके हमले से न मुसल्मान बचे न हिंदू।" (ताराचंद, पृष्ठ २६७)

ज़ाहिर है कि इस जगह पर हिंदू भक्ति और मुस्लिम तसव्वुफ़ का संगम अनिवार्य था। इसीलिए बाज़ जगहों पर मंसूर की अनलहक़ कि गूँज के अलावा, जिसका जिक्र पहले आ चुका है, कबीर की शिक्षाओं पर रूमी के विचारों का असर भी दिखायी देता है, जिसे उन्होंने हिंदू भक्ति के ढंग से पेश किया है। वही प्रताप, वही बेचैनी जो रूमी की ग़ज़लों की विशेषता है, कबीर की कविता की महानता का तत्त्व है। हिंदू भक्ति कबीर को मुक़ामे-फ़ना की सैर कराती है जहाँ इज्ज-ओ-इनकिसार (विनम्रता) ख़ुज़ूअ और ख़ुशुअ (विनय) है और मुस्लिम तसव्वुफ़ मुक़ामेबक़ा पर पहुँचा देता है जहाँ क़ूवत (शक्ति), अज़मत (महानता), जलाल और जमाल (प्रताप और सौंदर्य), बेबाकी और बुलंद-आहंगी (स्पष्टवादिता और उच्चस्वर) के डंके बज रहे हैं। कबीर के शब्दों में आसमान गरज रहा है। * अगर कबीर के यहाँ यह कल्पना मौजूद है जो भक्ति और तसव्वुफ़ दोनों जगह समान रूप से है कि बूँद या बुलबुला नदी में विलीन हो जाता है, जीव, व्यक्ति, आत्मा जाकर ब्रह्म में मिल जाती है तो दूसरी तरफ़ यह कल्पना भी मौजूद है जो रूमी की देन है की बूँद नदी को पी लेती है, आत्मा ब्रह्म को अपने अंदर समो लेती है। लेकिन यह दूसरी बात इतने साफ़ शब्दों में नहीं कही गयी है जिसकी मिसाल रूमी का यह शेर है—

ब जेरे-कुंगुरए-किब्रयाश मर्दानंद
फ़रिश्ता सैद ओ पयंबर शिकार ओ यज़दाँ गीर

[भावार्थ : बामे किब्रियाई (ब्रह्मस्थान) के साये में ऐसे हिम्मतवाले लोग खड़े है जो फ़रिश्ते और पैगंबर और खुदा को भी शिकार कर लेते हैं।]

या इक़बाल का यह शेर जो रूमी की प्रतिध्वनि है—

दर दश्ते-जुनूने-मन, जिब्रील ज़बूँ सैदे
यज़दाँ ब-कमंद आवुर, ऐ हिम्मते-मर्दाना

* तसव्वुफ़ में सालिक (पथिक) को कई मुक़ामात (अवस्थाओं) से गुज़रना पड़ता है। उनमें एक मुक़ामे-बक़ा (अविनाश) है और एक मुक़ामे-फ़ना (विनाश)। दोनों एक-दूसरे के सामने हैं। फ़ारसी में रूमी मुक़ामे-बक़ा के शायर हैं। जिस तरह दूसरा कोई सूफ़ी शायर रूमी के क़रीब नहीं पहुँचता उसी तरह कोई दूसरा संत कवि कबीर के क़रीब नहीं पहुँच पाता।

جو فرشتے اور پیمبر اور خدا کو بھی شکار کر لیتے ہیں)
یا اقبال کا یہ شعر جو رومی کی صدائے باز گشت ہے:

در دشتِ جنون من، جبریل زبوں صیدے
یزداں بکمند آور، اے ہمتِ مردانہ

(ترجمہ: میرے دشتِ جنوں میں جبریل ایک حقیر شکار ہے۔ اے ہمت مردانہ بڑھ کر خود یزداں پر کمند ڈال دے)
لیکن کبیر کا عام اندازہ یہ ہے:

نہ شبم نہ شب پرستم کہ حدیث خواب گویم
چو غلامِ آفتابم ہمہ آفتاب گویم

(ترجمہ: میں نہ تو رات ہوں نہ رات کا پجاری کہ خواب آور کہانیاں سناؤں۔ میں تو سورج کا غلام ہوں اور میرا ہر حرف سورج کی طرح روشن ہے)

یہ بھی مقام بقا ہے اور اس کی سب سے اچھی مثال کبیر کی اس نظم میں ملتی ہے جس کی ساری امیجری نور اور نغمے سے بنی ہے۔

«سورج، چاند اور تاروں کے چراغ جل رہے ہیں۔ پریم راگ بیراگ (بے نیازی) کے تال اور سُر پر بلند ہو رہا ہے۔ فضاؤں میں رات دن نوبت بج رہی ہے اور کبیر کہتے ہیں کہ میرا پریتم (محبوب) آسمانوں میں بجلی کی طرح چمک رہا ہے۔

«وہاں لمحے بھر کی اور پل بھر کی آرتی کہاں، سارا سنسار رات دن آرتی اُتارتا ہے اور گیت گاتا ہے۔ طبل اور نشان بج رہے ہیں۔ جھلمل جیوتی کی غیبی جھالر جگمگا رہی ہے۔ غیب کے گھنٹوں کی آواز آ رہی ہے۔

«کبیر کہتے ہیں کہ وہاں رات اور دن اپنے چراغوں کو گردش دے رہے ہیں۔ جگت کے تخت پر جگت کا مالک بیٹھا ہوا ہے۔ سارا سنسار کرمْ اور بھرمْ (کام اور مغالطے) میں مبتلا ہے۔ ایسے پریمی جو پریتم کو پہچانتے ہوں کم ہیں۔ اصلی عاشق وہ ہے جو اپنے دل میں پریم (نیاز) اور بیراگ (بے نیازی) کی لہروں کو اس طرح ملا لیتا ہے جیسے گنگا اور جمنا کے دھارے مل جاتے ہیں۔ اس کے دل میں یہ مقدس پانی ہمیشہ بہتا رہتا ہے تب کہیں جاکر جنم اور مرن، موت اور زندگی کا انت ہوتا ہے۔

[भावार्थ : मेरे दश्ते-जुनूँ (उन्माद के जंगल) में जिब्रील (एक फ़रिश्ता) एक तुच्छ शिकार है। ऐ हिम्मते-मर्दाना बढ़कर खुद यज़्दाँ (खुदा) पर कमंद डाल दे।]

लेकिन कबीर का आम अंदाज़ यह है—

न शबम, न शब-परस्तम कि हदीसे-ख्वाब गोयम
चू ग़ुलामे-आफ़्ताबम हमा आफ़्ताब गोयम

[भावार्थ : मैं न तो रात हूँ, न रात का पुजारी कि नींद लानेवाली कहानियाँ सुनाऊँ। मैं तो सूरज का ग़ुलाम हूँ और मेरा हर शब्द सूरज की तरह प्रकाशमान है।]

यह भी मुक़ामे-बक़ा है और इसकी सबसे अच्छी मिसाल कबीर के उस पद में मिलती है जिसका पूरा कल्पना-चित्र प्रकाश और संगीत के तत्त्वों से बना है—

"सूरज, चाँद और तारों के चिराग़ जल रहे हैं। प्रेम का राग वैराग्य के ताल और सुर पर गूँज रहा है। शून्य गगन में दिन-रात नौबत बज रही है और कबीर कहते हैं कि मेरा प्रीतम आकाश में बिजली की तरह चमक रहा है।

"वहाँ क्षण भर की और पल भर की आरती कहाँ। सारा संसार रात दिन आरती उतारता है और गीत गाता है। तबल और निशान बज रहे हैं। झिलमिल ज्योति की ग़ैबी (रहस्यमयी) झालर जगमगा रही है। ग़ैब के घंटों की आवाज़ आ रही है।

"कबीर कहते हैं कि वहाँ रात और दिन अपने चिराग़ों को गर्दिश दे रहे हैं। जगत के सिंहासन पर जगत का स्वामी बैठा हुआ है। सारा संसार कर्म और भ्रम में लीन है। ऐसे प्रेमी जो प्रीतम को पहचानते हों कम हैं। असली प्रेमी वह है जो अपने हृदय में प्रेम और वैराग्य की लहरों को इस तरह मिला लेता है जैसे गंगा और जमुना की धाराएँ मिल जाती हैं। उसके हृदय में यह पवित्र जल हमेशा बहता रहता है तब कहीं जाकर जन्म और मरण का अंत होता है।

"देखो अस्तित्व में क्या सुख है। इसका आनंद वही ले सकता है जो अस्तित्व को अनुभव कर सके। प्रेम की डोरियाँ हैं और सुख के सागर का झूला है जो पेंगें ले रहा है। शब्द वहाँ बादलों की तरह गरज रहे हैं। एक

«دیکھو وجود میں کیسا آرام ہے۔ اس کا لطف وہی اٹھاسکتا ہے جو وجود کو محسوس کرسکے۔ پریم کی ڈوریاں ہیں اور سکھ کے ساگر کا جھولا ہے جو پینگیں لے رہا ہے۔ لفظ وہاں بادلوں کی طرح گرج رہے ہیں۔ ایک عظیم الشان نغمہ بلند ہورہا ہے۔ وہاں بغیر پانی کے کنول کھلا ہوا دکھائی دیتا ہے اور کبیر کہتے ہیں کہ من کا بھونرا اس کا رس پی رہا ہے۔

«کائینات کے چکر کے دل میں کیسا حسین کنول کھلا ہوا ہے۔ اس کا لطف کچھ سنت ہی اٹھاسکتے ہیں۔ یہ نغمے (شبدؔ) کی گھٹائیں چاروں طرف چھائی ہوئی ہیں اور دل ایک بیکراں سمندر کی مسرت میں ڈوبا ہوا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس سُکھ ساگر میں اس طرح ڈوب جاؤ کہ زندگی اور موت کا بھرم (مغالطہ) باقی نہ رہ جائے۔

«دیکھو وہاں پانچوں لذتوں (شبد، سپرش، روپ، رس، گندھ) کی پیاس بجھ گئی ہے اور تینوں دکھوں (مادی، روحانی، ذہنی) کا بخار اُتر گیا ہے۔ یہ عقل و فہم سے بالا تر (اگم) کا کھیل ہے۔ دیکھو تمہارے وجود میں غیب کی چاندنی ہے۔ وہاں زندگی اور موت کی تالیاں مسلسل بج رہی ہیں۔ مسرت کی روشنی آسمانوں میں پھیلی ہوئی ہے۔ ایک ابدی نغمے کی جھنکار سنائی دے رہی ہے اور ترلوک محل (تینوں دنیاؤں کا ایوان) کے پریم باجے بج رہے ہیں۔

«زندگی اور موت کے درمیان کوئی فرق نہیں ہے۔ داہنا اور بایاں ہاتھ ایک ہی ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ یہاں محرم راز گونگا ہوجاتا ہے۔ یہ وہ صداقت ہے جو ویدوں اور کتابوں میں نہیں ملتی (صرف محسوس کی جاسکتی ہے)۔

«میں نے شونیہ کے (خلاؤں میں معلق) آسن پر بیٹھ کر سادھنا کے ناقابل بیان رس کا پیالا پیا۔ اب میں اسرار کا محرم ہوں اور وحدت کے راز کا سمجھنے والا۔ راہ کے بغیر چل کر میں اس شہر میں پہونچ گیا ہوں جہاں کوئی غم نہیں ہے۔ جگدیو کا رحم اور کرم آسانی سے نصیب ہوگیا ہے۔ میں نے دھیان دھر کے دیکھا تو وہ بغیر آنکھوں کے نظر آگیا جو لامحدود ہے۔ جسے لوگ نارسائی کی منزل کہتے ہیں۔ یہ مقام غموں سے آزاد ہے۔ یہاں پہونچنے کا کوئی راستہ نہیں ہے لیکن جس نے غم

शानदार संगीत उठ रहा है। वहाँ बिना पानी के कमल खिला हुआ दिखायी देता है और कबीर कहते हैं कि मन का भौंरा उसका रस पी रहा है।

"सृष्टि चक्र के हृदय में कैसा सुंदर कमल खिला हुआ है। इसका आनंद कुछ संत ही ले सकते हैं। शब्द की घटाएँ चारों ओर छायी हुई हैं और हृदय एक अथाह सागर के सुख में डूबा हुआ है। कबीर कहते हैं कि इस सुखसागर में इस तरह डूब जाओ कि जीवन और मृत्यु का भ्रम बाक़ी न रह जाये।

"देखो वहाँ पाँचों स्वादों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) की प्यास बुझ गयी है और तीनों दुखों (भौतिक, आत्मिक और मानसिक) का बुख़ार उतर गया है। यह बुद्धि और विवेक से परे का (अगम) खेल है। देखो, तुम्हारे अस्तित्व में ग़ैब की चाँदनी है वहाँ जीवन और मृत्यु की तालियाँ निरतंर बज रही हैं। आनंद की ज्योति आकाश में फैली हुई है। एक अमर संगीत की झंकार सुनायी दे रही है और त्रिलोक महल के प्रेम बाजे बज रहे हैं।

"जीवन और मृत्यु के बीच कोई अंतर नहीं है। दाहिना और बाँया हाथ एक ही है। कबीर कहते हैं कि यहाँ अंतर्ज्ञानी गूंगा हो जाता है। यह वह सत्य है जो वेदों और किताबों में नहीं मिलता (केवल अनुभव किया जा सकता है।)

"मैंने शून्य आसन पर बैठकर साधना के अवर्णनीय रस का प्याला पिया। अब मैं अंतर्ज्ञानी हूँ और एकत्व के मर्म को समझनेवाला। मार्ग के बिना चलकर मैं इस शहर में पहुँचे गया हूँ जहाँ कोई दुख नहीं है। जगदेव की कृपा और दया आसानी से प्राप्त हो गयी है। मैंने ध्यान धरकर देखा तो वह बिना आँखों के दिखायी दे गया जो असीम है, अनंत है, जिसे लोग अगम कहते हैं। यह स्थान दुखों से रहित है। यहाँ पहुँचने का कोई रास्ता नहीं है लेकिन जिसने दुख (ग़म) पाया वही बे-ग़म हो गया। यहाँ विचित्र शांति है। ज्ञानी वह है जिसने यह स्थान देखा है। ज्ञानी वह है जिसने इसका गीत गाया है।

"यही शाश्वत सत्य है मगर इसका सुख कैसे वर्णन किया जाये। जिसने यह सुख भोगा है वही इस स्वाद को जानता है। कबीर कहते हैं कि इस स्वाद का सुख पा लेने के बाद अज्ञानी ज्ञानी बन जाता है और ज्ञानी चुप हो जाता है।

پایا وہی بے غم ہوگیا . یہاں عجب آرام ہے ، دانش مند وہ ہے جس نے یہ مقام دیکھا ہے . دانش مند وہ ہے جس نے اس کا گیت گایا ہے .

« یہ حرف آخر ہے ، مگر اس کا مزا کیسے بیان کیا جائے . جس نے مزا چکھا ہے وہی اس لذت کو جانتا ہے . کبیر کہتے ہیں کہ اس سے لذت اندوز ہونے کے بعد جاہل دانش مند بن جاتا ہے اور دانش مند خاموش ہوجاتا ہے .

« اودھوت (جوگی) نشے میں چور ہے . گیان (علم) اور ویراگیہ (بے نیازی) کی تکمیل ہوگئی ہے . آتی جاتی سانس کا پریم پیالا اس نے پیا ہے سارا آکاش سنگیت سے بھرا ہوا ہے .

« انگلیوں کی مضراب کے بغیر تاروں سے نغمے نکل رہے ہیں . عیش اور غم کا کھیل جاری ہے . کبیر کہتے ہیں کہ جو کوئی اپنی زندگی کو زندگی کے سمندر میں ملا دیتا ہے اس کی روح مہا آنند میں ڈوب جاتی ہے .

« آٹھوں پہر کا متوالا پن ہے . آٹھوں پہر جام پر جام چل رہے ہیں . آٹھوں پہر سرمستی چھائی رہتی ہے . برَہْمَ کے جسم میں بھگت زندہ ہے .

« صرف سرور ہی سرور ہے . نہ دکھ ہے نہ کشمکش . وہاں میں نے بھرپور آنند دیکھا ہے . وہاں غلطی کی کوئی گنجائش نہیں ہے . کبیر کہتے ہیں کہ وہاں صرف وحدت کا جلوہ دکھائی دیتا ہے .

« میں نے اپنے وجود (جسم) میں کائینات کا ہنگامہ دیکھا ہے اور مجھے دنیاوی غلطیوں سے نجات مل گئی ہے . خارجی اور داخلی وجود سے ایک آسمان بن گیا ہے . محدود اور لا محدود متحد ہوگئے ہیں .

« میں دیدار کی شراب سے مست ہوگیا ہوں . تیرا نور بھرپور شکل میں ظاہر ہوتا ہے . گیان کی تھال میں پریم کا دیا جل رہا ہے . شونیہ کے آسن پر سادھنا کا ڈیرا ہے . کبیر کہتے ہیں کہ وہاں غلطیوں کا وجود نہیں . اور زندگی اور موت کی کشمکش ختم ہو چکی ہے . » (نظم نمبر ۱۷)

ڈاکٹر تارا چند نے اس نظم کے بعض حصوں کو معراج روحانی

"अवधूत (योगी) नशे में चूर है। ज्ञान और वैराग्य पूरा हो गया है। आती जाती साँस का प्रेम-प्याला इसने पिया है। सारा आकाश संगीत से भरा हुआ है।

"उंगलियों की मिज़राब के बग़ैर तारों से संगीत निकल रहा है। सुख-दुख का खेल जारी है। कबीर कहते हैं कि जो कोई अपने जीवन को जीवन-सागर में मिला देता है उसकी आत्मा महा-आनंद में डूब जाती है।

"आठों पहर का मतवालापन है। आठों पहर जाम पर जाम चल रहे हैं। आठों पहर सरमस्ती छायी रहती है। ब्रह्म के शरीर में भक्त जीवीत है।

"केवल मादकता ही मादकता है। न दुख है न खींचा-तानी। वहाँ मैं ने भरपूर आनंद देखा है, वहाँ ग़लती की कोई गुंजाइश नहीं है। कबीर कहते हैं कि वहाँ केवल एकत्व की छटा दिखायी देती है।

"मैं ने अपने शरीर में सृष्टि का कोलाहल देखा है और मुझे सांसारिक भूलों से मुक्ति मिल गयी है। आंतरिक और बाह्य अस्तित्व से एक आकाश बन गया है। सीमित और असीम मिलकर एक हो गये हैं।

"मैं दर्शन (दीदार) की मदिरा से मस्त हो गया हूँ। तेरी ज्योति भरपूर रूप में प्रकट होती है। ज्ञान की थाली में प्रेम का दिया जल रहा है। शून्य आसन पर साधना का डेरा है। कबीर कहते हैं कि वहाँ ग़लती का अस्तित्व नहीं और मृत्यु की खींचातानी खत्म हो चुकी है।" (पद १७)

डाक्टर ताराचंद ने इस पद के कुछ हिस्सों को मेराजे-रूहानी* कहा है जो शुद्धत: मुस्लिम विचार है। लेकिन इस पद में मुस्लिम और हिंदू विचारों का ऐसा समन्वय है कि दोनों के लिए स्वीकार्य हो सकता है। "वुजूद" और "ग़ैब" जैसे शब्दों के अलावा जो उस वक़्त की बोलचाल के शब्द नहीं हो सकते, कबीर ने गंगा और जमुना को "गंग" और "जमन" कहा है जो शुद्ध

---

*क़ुरान में आया है कि एक रात रसूल अल्लाह आस्मान पर तशरीफ़ ले गये। मुस्लिम आलिमों में अधिकांश यह मानते है कि यह शारीरिक अनुभव था। लेकिन कुछ आलिमों का खयाल है कि रसूल अल्लाह शारीरिक रूप में तशरीफ़ नहीं ले गये थे बल्कि यह एक रूहानी अनुभव था। इसलिए दो इस्तलाहें बन गयी हैं—मेराजे जिस्मानी और मेराजे रूहानी।

سے تعبیر کیا ہے جو خالص مسلم عقیدہ ہے*. لیکن اس نظم میں بھی مسلم اور ہندو فکر کی ایسی آمیزش ہے کہ دونوں کے لئے قابل قبول ہوسکتی ہے. «وجود» اور «غیب» جیسے الفاظ کے علاوہ جو اس وقت کی بول چال کے الفاظ نہیں ہو سکتے، کبیر نے گنگا اور جمنا کو «گنگ» اور «جمن» کہا ہے جو خالص فارسی تلفظ ہے، یہ براہ راست صوفی شاعروں کی روایت کی شہادت ہے. پھر «دیدارکی شراب» اور «عشق کا نور» بھی مسلم صوفی اثرات کا نتیجہ ہے، لیکن ان تصورات کے ساتھ جب کبیر «شونیہ» «تراوک محل» «کائینات چکر» «کنول کے پھول» «آرتی» اور «غیب کے گھنٹوں» کے تصورات کو ملا دیتے ہیں تو وہ اپنی ہندو وراثت کی نشان دہی کرتے ہیں.

چونکہ وحدانیت کے نا پیدا کنار سمندر کی لہریں اپنے الگ الگ نام نہیں رکھ سکتیں اس لئے کبیر نے ہندو یا مسلم نام اختیار کرنے سے انکار کر دیا:

ہندو کہو تو میں نہیں، موسلمان بھی نا ہیں
پانچ تتو کا پوتلا، گیبی کھیلے ماہیں

(ترجمہ: میں نہ ہندو ہوں نہ مسلمان، میں غیب کے کھیل میں پانچ عناصر کا ایک پتلا ہو.)

اس کے بعد خدا، الله، رام ہری، گوبند، سائیں، صاحب، سب الفاظ ہم معنی ہو جاتے ہیں اور ان پر لڑنے والے بیوقوف معلوم ہونے لگتے ہیں.

رومی نے اپنی مثنوی میں ایک حکایت بیان کی ہے، ایک شخص نے چار مختلف زبانیں بولنے والوں کو ایک درم دیا، ایرانی نے کہا کہ اس سے انگور خریدے جائیں. عرب نے کہا نہیں عنب، تُرک نے اَزم کا نام لیا اور چوتھے نے استافیل کا. اس پر چاروں لڑنے لگے. اس وقت اگر کوئی چاروں زبانوں کا جاننے والا موجود ہوتا تو وہ اُن بیوقوفوں کو بتاتا کہ سب ایک ہی چیز مانگ رہے ہیں. لڑائی صرف الفاظ پر ہو رہی ہے.

* قرآن میں آیا ہے کہ ایک رات رسول الله آسمان پر تشریف لے گئے مسلم عالموں کی اکثریت یہ مانتی ہے کہ یہ جسمانی تجربہ تھا۔ لیکن بعض عالموں کا یہ خیال ہے کہ رسول الله جسمانی طور سے تشریف نہیں لے گئے تھے بلکہ یہ ایک روحانی تجربہ تھا. اس لئے دو اصطلاحیں بن گئی ہیں. معراج جسمانی اور معراج روحانی.

फ़ारसी उच्चारण है। यह सीधे-सीधे सूफ़ी शायरी की परम्परा का प्रमाण है। फिर "दीदार की शराब" और "इश्क का नूर" भी मुस्लिम सूफ़ी प्रभावों का नतीजा है। लेकिन इन कल्पनाओं के साथ जब कबीर "शून्य," "तिरलोक महल," "चक्र," "कमल के फूल" "आरती" और "गैब के घंटों" की कल्पनाओं को मिला देते हैं तो वह अपनी हिंदू धरोहर का प्रमाण देते हैं।

चूँकि वहदानियत (अद्वैत) के अनंत सागर की लहरें अपने अलग-अलग नाम नहीं रख सकतीं इसलिए कबीर ने हिंदू या मुस्लिम नाम धारण करने से इंकार कर दिया—

हिंदू कहो तो मैं नहीं, मूसलमान भी नाहीं
पाँच तत्त्व का पूतला, गैबी खेले माहीं

अर्थात मैं न हिंदू हूँ न मुसलमान। मैं तो गैब के खेल के अंदर पाँच तत्त्व का पुतला हूँ।

इसके बाद खुदा, अल्लाह, राम, हरि, गोविंद, साईं, साहब सब शब्दों का एक ही अर्थ हो जाता है और इन पर लड़नेवाले मूर्ख मालूम होने लगते हैं।

रूमी ने अपनी मसनवी में एक हिकायत बयान की है। एक आदमी ने चार अलग-अलग भाषाएँ बोलनेवालों को एक दिरम दिया। ईरानी ने कहा कि इससे अंगूर खरीदे जायें। अरब ने कहा, नहीं इनब। तुर्क ने अजम का नाम लिया और चौथे ने इस्ताफ़ील का। इस पर चारों लड़ने लगे। उस वक़्त अगर कोई चारों भाषाओं का जाननेवाला मौजूद होता तो वह उन मूर्खों को बताता कि सब एक ही चीज माँग रहे हैं। लड़ाई सिर्फ़ शब्दों के अलग-अलग होने पर हो रही है।

इसी मसनवी में दूसरी जगह रूमी ने चिरागों और फलों की उपमा इस्तेमाल की है। अगर एक मकान में दस चिराग़ जमा कर दिये जायें तो हर एक की शक्ल दूसरे से अलग होगी। लेकिन जब रोशनी पर नज़र जायेगी तो कोई फ़र्क़ नहीं मालूम होगा। इसी तरह अगर सौ सेब और सौ बिही की गिनती की जाये तो सौ दिखायी देंगे लेकिन निचोड़ देने के बाद सब का रस एक हो जायेगा। वास्तव में अर्थ में गिनती और विभाजन संभव नहीं है। इसलिए यारों को यारों से मिल जाना चाहिये और सूरत को छोड़कर जो सरकश

اس مثنوی میں دوسری جگہ رومی نے چراغوں اور پھلوں کی تشبیہ استعمال کی ہے ، اگر ایک مکان میں دس چراغ جمع کردئے جائیں تو ہر ایک کی شکل دوسرے سے الگ ہوگی ، لیکن جب نور پر نظر جائے گی تو کوئی فرق نہیں معلوم ہوگا ۔ اسی طرح اگر سو سیب اور سو بہی کا شمار کیا جائے تو سو نظر آئے گا لیکن نچوڑ دینے کے بعد سب کا رس ایک ہوجائے گا ۔ در اصل معنی میں گنتی اور تقسیم ممکن نہیں ہے ، اس لئے یاروں کو یاروں سے مل جانا چاہئے اور صورت کو چھوڑ کر جو سرکش ہے معنی کو اختیار کرنا چاہئے (مثنوی دفتر اول)

یہی بات کبیر کہتے ہیں مگر وہ ان پڑھ ہونے کی وجہ سے رومی کی طرح عالم اور مفکر نہیں ہیں اس لئے وہ عالمانہ تشبیہیں استعمال نہیں کرتے بلکہ زمین کی گری پڑی تشبیہوں سے کام لیتے ہیں اور براہ راست حملہ کرتے ہیں

« دنیا کے دو مالک (جگدیش)* کہاں سے آئے ، تجھے اس بھرم میں کس نے مبتلا کردیا ہے ، اللہ ، رام ، رحیم الگ الگ کیسے ہوسکتے ہیں ۔ ایک سونے سے سب زیور بنائے گئے ہیں ۔ یہ سب ایک نماز ، ایک پوجا ، کہنے سننے کی باتیں ہیں ، ان کو اپنے وجود سے دور کردے ، وہی مہادیو ہے ، وہی محمد ، جو برھما ہے اسی کو آدم کہنا چاہئے ۔ کوئی ہندو کہلاتا ہے اور کوئی مسلمان لیکن رہتے ایک زمین پر ہیں ۔ ایک وید کی کتابیں پڑھتا ہے اور ایک خطبہ ، ایک مولانا کہلاتا ہے اور ایک پنڈت ، نام الگ الگ رکھ لئے ہیں ویسے برتن سب ایک ہی مٹی کے ہیں » (نظم ۱۲۶)

رومی نے اپنے اشعار کو یہ عنوان دیا ہے کہ « اس بیان میں کہ تمام پیغمبر برحق ہیں جیسا کہ قرآن کی آیت ہے کہ ہم اس کے پیغمبروں میں سے کسی میں تفریق نہیں کرتے » لیکن کبیر نے یہ عبارت لکھے بغیر اسی جذبے کی ترجمانی کی ہے ۔ « اگر ان کے کلام میں صوفیوں کی اصطلاحات سے زیادہ مطابقت نہیں پائی جاتی تو اس کی وجہ یہ نہیں کہ کبیر اُن خیالات سے کم آگاہ تھے بلکہ اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ عالم فاضل نہیں تھے ۔ اس لئے جب انہوں نے ان تصورات کو

---

* اصل عربی لفظ اللہ ہے ، ایرانیوں نے اس کا ترجمہ خدا کیا ، کبیر نے جگدیش اور رام کر دیا ، اگر خدا قابل قبول ہے تو جگدیش بھی قابل قبول ہوسکتا ہے ۔

(विद्रोही) है अर्थ को ग्रहण करना चाहिये। (मसनवी, खंड ९)

यही बात कबीर कहते हैं। मगर वह अनपढ़ होने की वजह से रूमी की तरह विद्वान और विचारक नहीं हैं इसलिए वह पांडित्यपूर्ण उपमाएँ इस्तेमाल नहीं करते, बल्कि ज़मीन की गिरी-पड़ी उपमाओं से काम लेते हैं और सीधा हमला करते हैं।

"दुनिया के दो मालिक (जगदीश)* कहाँ से आये? तुझे इस भ्रम में किसने डाल दिया है। अल्लाह, राम, रहीम अलग-अलग कैसे हो सकते हैं। एक सोने से सब गहने बनाये गये हैं। यह सब एक नमाज़, एक पूजा कहने सुनने की बातें हैं। इनको अपने अस्तित्व से दूर कर दे। वही महादेव है, वही मुहम्मद। जो ब्रह्मा है उसीको आदम कहना चाहिये। कोई हिंदू कहलाता है और कोई मुसलमान, लेकिन रहते एक ज़मीन पर हैं। एक वेद के ग्रंथ पढ़ता है और एक ख़ुत्बा। एक मौलाना कहलाता है और एक पंडित। नाम अलग-अलग रख लिए गये हैं, वैसे बरतन सब एक ही मिट्टी के हैं।" (पद १२६)

रूमी ने अपने अशआर के शीर्षक में लिखा है कि "इस बयान में कि तमाम पैग़ंबर बर-हक़ (अपनी जगह सच्चे) हैं जैसा कि क़ुरान की आयत है कि हम उसके पैग़ंबरों में से किसी में भेदभाव नहीं करते।" लेकिन कबीर ने यह बात लिखे बिना ही इसी विचार को व्यक्त किया है। "अगर उनकी काव्य-रचना में सूफ़ियों की शब्दावली से ज़्यादा समानता नहीं पायी जाती तो उसकी वजह यह नहीं कि कबीर उन विचारों से कम परिचित थे, बल्कि इसकी वजह यह है कि वह विद्वान नहीं थे। इसलिए जब उन्होंने इन विचारों को अपनाया तो फ़ारसी शेरों को पूरी तरह अपने मस्तिष्क में सुरक्षित न रख सके।" (ताराचंद, पृष्ठ २४९)

मुसलमान सूफ़ी रसूले-इस्लाम का नाम लेने में बहुत सतर्क हैं। उनका उसूल है कि "बा-ख़ुदा दीवाना बाश ओ बा-मुहम्मद होशियार" (ख़ुदा के साथ तो दीवानापन कर सकते हो लेकिन रसूल का नाम लेते वक़्त सावधान रहना चाहिये।) कबीर से पहले रूमी कुछ जगहों पर उन हदों से आगे निकल

---

*असल अरबी शब्द अल्लाह है। ईरानियों ने इसका अनुवाद ख़ुदा किया। कबीर ने जगदीश और राम कर दिया।

اپنایا تو فارسی شعروں کو مکمل طور سے اپنے ذہن میں محفوظ نہ رکھ سکے » . (تارا چند ، صفحہ ۲۴۹)

مسلمان صوفیا رسولِ اسلام کا نام لینے کے معاملے میں بہت محتاط ہیں . اُن کا یہ اصول ہے کہ « با خدا دیوانہ باش و با محمد ہوشیار » کبیر سے پہلے رومی بعض مقامات پر اُن حدوں سے تجاوز کرگئے ہیں جہاں تک جانے کی ہمت اُن سے کم تر درجے کے صوفی اور شاعر نہیں کرسکتے تھے . چنانچہ ایک غزل میں وہ بہت سے پیغمبروں کے نام لیتے ہیں اور پھر اشارے میں رسول‌اللہ کا ذکر کرکے یہ کہتے ہیں کہ رومی نے کوئی کفر کی بات نہیں کی ہے . یہاں صرف چند اشعار کافی ہوں گے :

ہر لحظہ بشکلی بت عیار برآمد دل بُرد و نہاں شد
ہر دم بلباسِ دگر آں یار برآمد گہ پیر و جواں شد
خود کوزہ و خود کوزہ گرو خود گلِ کوزہ خود رند سبو کش
خود بر سرِ آن کوزہ خریدار بر آمد بشکست و رواں شد
باالله کہ هم او بود کہ می آمد و می رفت ہر قرن کہ دیدی
تا عاقبت آن شکل عرب وار بر آمد دارائے جہاں شد
حقا کہ هم او بود کہ می گفت اناالحق در صوتِ الٰہی
منصور نہ بود او کہ بر آن دار بر آمد ناداں بگماں شد
این دم بہ نہان است بہ بیں گر تو بصیری از دیدۂ باطن
این ست کزو ایں همہ گفتار بر آمد در دیدہ بیاں شد
رومی سخن کفر نہ گفتست و نہ گوید منکر مشوید ش
کافر شدہ آن کس کہ بہ انکار بر آمد از دوزخیاں شد*

(ترجمہ :۔ اس چالاک محبوب نے طرح طرح کی شکلیں اختیار کی ہیں اور دل لے کے غائب ہوگیا۔ ہر بار دوسرا لباس بدل کر آیا۔ کبھی بوڑھا بنا اور کبھی جوان۔ وہ خود ہی کوزہ ہے ، خود ہی کوزہ گر اور خود ہی کوزے کی مٹی۔ اور خود ہی رند۔ پھر خود ہی اس کوزے کا خریدار بن کے آیا اور اسے توڑ کر چلتا بنا۔ قسم خدا کی وہ خود

* اس غزل کا دوسرا شعر فروزانفر کے مرتبہ دیوان شمس تبریزی (تہران ایڈیشن) میں نہیں ہے۔ مجھے بچپن سے یاد ہے اور افضل اقبال نے اپنی انگریزی کتاب Life and work of Rumi (لاہور ایڈیشن) میں بھی اس شعر کو اسی غزل کا حصہ قرار دیا ہے۔ میرے دریافت کرنے پر انھوں نے پروفیسر نکلسن کا حوالہ دیا۔

गये हैं जिन तक पहुँचने की हिम्मत उनसे कम दर्जे के सूफ़ी और शायर नहीं कर सकते थे। इसलिए एक ग़ज़ल में वह बहुत से पैग़ंबरों के नाम लेते हैं और फिर इशारे में रसूल-अल्लाह का जिक्र करके यह कहते हैं कि रूमी ने कोई कुफ़्र की बात नहीं की है। यहाँ सिर्फ़ चंद अशआर काफ़ी होंगे—

हर लहज़ा ब-शक्ले बुते-अय्यार बरामद दिल बुर्द ओ निहाँ शुद
हर दम ब-लिबासे दिगर आँ यार बरामद गह पीर ओ जवाँ शुद
खुद कूज़:ओ खुद कूज़:गर ओ खुद गिले-कूज़: खुद रिंदे-सुबूकश
खुद बर-सरे आँ कूज़:ख़रीदार बरामद बिश्कस्त ओ रवाँ शुद
बिल्लह कि हम ऊ बूद कि मी आमद ओ मी रफ़्त हर क़र्न कि दीदी
ता आक़बत आँ शक्ल अरबवार बरामद दाराए-जहाँ शुद
हक़्क़ा कि हम ऊ बूद कि मी गुफ़्त अनलहक़ दर सौते-इलाही
मंसूर न बूद ऊ कि बर आँ दार बरामद नादाँ ब-गुमाँ शुद
इन दम ब-निहानस्त बेबीं गर तू बसीरी अज़ दीदए-बातिन
ईनस्त कज़ू इन हमा गुफ़्तार बरामद दर दीद:बयाँ शुद
रूमी सुख़ने कुफ़्र न गुफ़्तस्त ओ न गोयद मुनकिर मश्वेद श
काफ़िर शुद: आँ कस कि ब इंकार बरामद अज़ दोज़ख़ियाँ शुद*

[भावार्थ : इस चालाक महबूब ने तरह-तरह के रूप धारण किये हैं और दिल लेके ग़ायब हो गया। हर बार दूसरा लिबास बदलकर आया। कभी बूढ़ा बना और कभी जवान। वह खुद ही कूज़ा (मिट्टी का प्याला) है, खुद ही कूज़ा बनानेवाला और खुद ही कूज़े की मिट्टी और खुद ही उसमें शराब पीनेवाला। फिर खुद ही उस कूज़े का ख़रीदार बनकर आया और उसे तोड़कर चलता बना। क़सम ख़ुदा की, वह खुद ही था जो हर ज़माने में आता रहा और जाता रहा, यहाँ तक कि आख़िरकार वह एक अरब की शक्ल में ज़ाहिर हुआ और दुनिया का शहंशाह बन गया। वही तो था जिसने ख़ुदा की आवाज़ में अनलहक़ कहा। वह जो फाँसी पर चढ़ा मंसूर नहीं था। सिर्फ़ नादानों को ग़लतफ़हमी हुई। इस

---

*इस ग़ज़ल का दूसरा शेर फ़रोज़ाँफ़र के संकलित दीवान शम्स तबरेज़ी (तेहरान संस्करण) में नहीं है। मुझे बचपन से याद है और अफ़ज़ल इक़बाल ने अपनी अंग्रेज़ी किताब Life and work of Rumi (लाहौर संस्करण) में भी इस शेर को इसी ग़ज़ल का हिस्सा क़रार दिया है। मेरे पूछने पर उन्होंने प्रोफ़ेसर निकल्सन का हवाला दिया।

ہی تھا جو ہر زمانے میں آتا رہا اور جاتا رہا ، یہاں تک کہ آخر کار وہ ایک عرب کی شکل میں ظاہر ہوا اور دنیا کا شہنشاہ بن گیا۔ وہی تو تھا جس نے خدا کی آواز میں اناالحق کہا۔ وہ جو دار پر چڑھا منصور نہیں تھا ، صرف نادانوں کو غلط فہمی ہوئی۔ اس وقت بھی دل کی آنکھ سے دیکھنے والے دیکھ سکتے ہیں ، ہر پردے میں وہی چھپا ہوا بول رہا ہے ، رومی نے کفر کی باتیں نہ تو کبھی کہی ہیں اور نہ کہتا ہے ، اس سے انکار نہ کرو۔ جس نے انکار کیا وہی کافر قرار پایا اور دوزخی ہوگیا)۔

وحدت تمام تضادوں کے خاتمے کا نام ہے۔ رومی کے الفاظ میں دودھ اور شکر مل کر ایک ہو جاتے ہیں ، عاشق ایک دوسرے سے مل جاتے ہیں۔ رات اور دن کے پردے اٹھ جاتے ہیں اور چاند اور سورج ہم آغوش ہوجاتے ہیں۔ عاشقوں اور معشوقوں کا رنگ سونے اور چاندی کی آمیزش کی طرح مل جاتا ہے اور رافضی یہ دیکھ کر انگشت بداندان رہ جاتا ہے کہ علی اور عمر ایک ہیں*۔

چنانچہ اس منزل پر بندے اور خدا کا تضاد بھی ختم ہو جاتا ہے۔ اسی لئے کبیر اپنی بعض نظموں میں دونوں کے لئے ایک سا انداز بیان اختیار کرتے ہیں۔

« ازل میں وہ اکیلا تھا ، اور اس کا اپنا وجود ہی اس کے لئے کافی تھا ، وہ جس کا نہ رنگ ہے نہ روپ ہے۔ وہ جو بے صفات ہے۔ نہ تو ابتدا تھی ، نہ ارتقا نہ انتہا ، نہ اندھیرا تھا ، نہ دھندلکا ، نہ اجالا نہ زمین تھی نہ ہوا تھی ، نہ آسمان۔ نہ آگ تھی نہ پانی۔ نہ گنگا جمنا اور سرسوتی کے دھارے تھے ، نہ سمندر تھا نہ موجیں۔ نہ گناہ تھا نہ ثواب ، نہ وید پُران تھے نہ قرآن »۔ (نظم ۸۱)

« نہ میں دھرمی ہوں نہ ادھرمی ، نہ میں قانون کا بندہ ہوں نہ خواہشوں کا غلام۔ نہ میں بولتا ہوں نہ سنتا ہوں۔ نہ میں عابد ہوں نہ معبود۔ نہ میں جبر کے قبضے میں ہوں نہ اختیار کے۔ نہ میرا کسی سے تعلق ہے ، نہ بے تعلق ہوں نہ میں کسی سے دور ہوں نہ کسی سے

---

* اقتباس از اشعار ،، مثنوی معنوی ،، بحوالہ ،، سوانح مولانا روم ،، شبلی نعمانی ۔ (مطبوعہ مجلس ترقی ادب۔ لاہور) صفحہ ۶۸ ، شیعوں کو رافضی کہتے ہیں جو حضرت عمر کی خلافت کو تسلیم نہیں کرتے ، آخر میں اس حقیقت کی طرف اشارہ ہے ۔

वक़्त भी दिल की आँखों से देखनेवाले देख सकते हैं कि परदे में वही छुपा हुआ बोल रहा है। रूमी ने कुफ़्र की बातें न तो कभी कही हैं और न कहता है। उससे इंकार न करो। जिसने इंकार किया वही काफ़िर क़रार पाया और दोज़खी हो गया।]

अद्वैत सारे विरोधों के अंत का नाम है। रूमी के शब्दों में दूध और शकर मिलकर एक हो जाते हैं। प्रेमी एक दूसरे से मिल जाते हैं। रात और दिन के परदे उठ जाते हैं और चाँद और सूरज गले मिल जाते हैं। आशिक़ों और माशूक़ों का रंग सोने और चाँदी के मिश्रण की तरह मिल जाता है और राफ़ज़ी यह देखकर दंग रह जाता है कि अली और उमर एक हैं।*

इस तरह इस मंजिल पर बंदे और ख़ुदा का विरोध भी मिट जाता है। इसीलिए कबीर अपने कुछ पदों में दोनों के लिए एक जैसी शैली अपनाते हैं—

"आदि में वह अकेला था और उसका अपना अस्तित्व ही उसके लिए काफ़ी था। वह जिसका न रंग है न रूप है। वह जो निर्गुण है। न आदि था, न विकास, न अंत। न अंधेरा था, न धुँधलका, न उजाला। न पृथ्वी थी, न वायु, न आकाश। न आग थी, न पानी। न गंगा, जमुना और सरस्वती की धाराएँ थीं। न समुद्र था, न लहरें, न पाप था, न पुण्य। न वेद-पुराण थे, न क़ुरान।" (पद ८१)

"न मैं धर्मी हूँ, न अधर्मी। न मैं नियमों का पाबंद हूँ, न वासनाओं का दास। न मैं बोलता हूँ न मैं सुनता हूँ। न मैं उपासक हूँ न उपास्य। न मैं बल के आधीन हूँ, न उन्मुक्तता के। न मेरा किसी से संबंध है, न संबंधहीन हूँ। न मैं किसी से दूर हूँ न किसी से पास। न हम नरक में जाते हैं, न स्वर्ग का रास्ता लेते हैं। सब काम हमने किये हैं लेकिन हर काम से उदासीन हैं। इस दर्शन के समझने वाले कम हैं लेकिन जिसने समझ लिया वह संतुष्ट हो गया। कबीर न तो किसी मत का प्रवर्तक है न किसी मत का मिटानेवाला।" (पद ७९)

---

* शिबली नोमानी की किताब "मौलाना रूमी की जीवनी" से उद्धृत। शियों को राफ़ज़ी कहते हैं जो हज़रत उमर को खलीफ़ा नहीं मानते।

قریب۔ نہ ہم جہنم جاتے ہیں نہ جنت کا راستہ لیتے ہیں۔ سب کام ہم نے کئے ہیں لیکن ہر کام سے بے نیاز ہیں، اس فلسفے کے سمجھنے والے کم ہیں، لیکن جس نے سمجھ لیا وہ مطمئن ہوگیا، کبیر نہ تو کسی مت کا بانی ہے نہ کسی مت کا مٹانے والا»۔ (نظم ۷۹)

اس کے بعد کبیر کی طرح یہ بھی کہا جا سکتا ہے کہ وحدت کے کثرت میں تبدیل ہونے اور تخلیق کائینات سے پہلے جب وشنو اور شیو کا بھی وجود نہیں تھا میں ذات مطلق (بْرَہْمْ) کے عشق میں مبتلا تھا یعنی اس کے ساتھ ایک تھا (نظم نمبر ۲۹) اور رومی کی طرح یہ بھی دعویٰ کیا جا سکتا ہے کہ سب کچھ میں ہوں کعبہ بھی میں ہوں، کعبے کے بتکدے میں بیٹھنے والا ہر بت بھی میں ہی ہوں اور انجیل اور زبور اور قرآن بھی میں ہوں* اس لئے کہ:

در عشق نہ جسمم و نہ جانم   چیزے عجبم نہ این نہ آنم
آفزون ز زمان و دز زمانم   بیرون ز مکان و در مکانم
ہر جاکہ روم خراب عشقم   من کعبۂ و بتکدہ نہ دانم
ہم سایۂ آفتاب ذاتم   ہم موج محیطِ بیکرانم

(ترجمہ: عشق میں نہ میں جسم ہوں نہ جان، نہ یہ ہوں نہ وہ۔ وقت سے بڑا ہوں اور وقت کے پیمانے میں سمایا ہوا ہوں۔ مکان (Space) سے بالا ہوں اور مکان میں موجود ہوں۔ جہاں بھی جاؤں میں عشق کا متوالا ہوں۔ میں کعبہ اور بتکدہ کچھ بھی نہیں جانتا۔ میں آفتاب ذات (بْرَہْمْ) کا نور ہوں اور ناپیدا کنار سمندر کی موج)۔

ان عاشقوں کی ایک ہی منزل ہے، منزل کبریا۔ کبیر کے الفاظ میں «نشانہ آسمان کی اوٹ میں ہے۔ داہنی طرف سورج ہے، بائیں طرف چاند اور نشانہ بیچ میں چھپا ہوا ہے۔ تن کی کمان ہے اور عشق کی ڈوری اور میں نے شبد (صوت سرمدی) کا تیر تان لیا ہے»۔ (نظم نمبر ۱۲۲) اور رومی کے الفاظ میں:

از کمانِ شوق تیر معرفت   راست کردہ بر نشان انداختیم

---

* قاب قوسین و تدلی یا دنیٰ ہر سہ ہم   بلکہ انجیل و زبور و مصحف و قرآن منم
عزی و لات و چلیپا، ہبل و طاعوت و صنم   کعبۂ و سعی و صفا و مذبح و قربان منم
رومی

इसके बाद कबीर की तरह यह भी कहा जा सकता है कि एकत्व के अनेकत्व में बदल जाने और सृष्टि की रचना से पहले, जब विष्णु और शिव का भी अस्तित्व नहीं था, मैं ब्रह्म के प्रेम में लीन था, अर्थात उसके साथ एक था। (पद २९)

और रूमी की तरह यह भी दावा किया जा सकता है कि सब कुछ मैं हूँ—काबा भी मैं हूँ, काबे के बुतख़ाने में बैठनेवाला हर बुत भी मैं ही हूँ और इंजील और ज़बूर और क़ुरान भी मैं हूँ। इसलिए कि—

दर इश्क़ न जिस्मम ओ न जानम
चीज़े-अजबम न ईं न आनम
अफ़ज़ूँ ज़े ज़मात ओ दर ज़मानम
बेरूँ ज़े मकान ओ दर मकानम
हर जा कि रवम ख़राबे-इश्क़म
मन काब : ओ बुतकद : न दानम
हम सायए-आफ़ताबे ज़ातम
हम मौजे-मुहीते-बेकरानम

[भावार्थ: इश्क़ में न मैं जिस्म हूँ न जान। न यह हूँ न वह। काल से बड़ा हूँ और काल के पैमाने में समाया हुआ हूँ। देश से ऊपर हूँ और देश में समाया हुआ हूँ। जहाँ भी जाऊँ मैं इश्क़ का ही मतवाला हूँ। मैं काबा और बुतख़ाना कुछ भी नहीं जानता। मैं अफ़ताबे-ज़ात (ब्रह्म) का नूर हूँ और अनंत सागर की लहर।]

इन आशिक़ों की एक ही मंज़िल है—मंज़िले-किब्रिया (ब्रह्म)। कबीर के शब्दों में "निशाना आसमान की ओट में है। दाहिनी तरफ़ सूरज है, बाँयीं तरफ़ चाँद और निशाना बीच में छुपा हुआ है। तन की कमान है और इश्क़ की डोरी और मैंने शब्द का तीर तान लिया है।" (पद १२२)

और रूमी के शब्दों में—

रास्त कर्द : बर निशान अंदाख़्तेम
अज़ कमाने-शौक़ तीरे-मारिफ़त

[भावार्थ: शौक़ की कमान में मारिफ़त (ब्रह्म-ज्ञान) के तीर को सीधा करके मैंने निशाने पर मार दिया है।]

(ترجمہ : شوق کی کمان میں معرفت کے تیر کو سیدھا کرکے میں نے نشانے پر مار دیا ہے)

اس مقام پر کبیر کی آواز رومی اور دوسرے عظیم صوفی اور سنت شاعروں کی آواز کی طرح صرف وحدانیت کے جذبے سے سرشار ہے (نظم نمبر ۸۱ ، ۸۲ ، ۸۳ ، ۹۴ ، ۹۶) اور اس سرشاری کے عالم میں کسی ظاہری رسم یا ظاہری عبادت کی گنجائش نہیں ہے* ، وہ وحدت میں خلل ڈالتی ہے . اور جس کو اس عالم میں عبادت کے رسوم سوچنے کی فرصت مل گئی وہ صحیح معنوں میں سرشار نہیں ہے ، اس لئے وہ یا تو دکھاوے میں مبتلا ہوجاتا ہے یا عبادت کے فرق پر اور رسموں کی ظاہری شکلوں پر لڑتا جھگڑتا ہے جس کی وجہ سے خدا کی مخلوق میں اختلاف پیدا ہوتا ہے اور نفاق کے دروازے کھلتے ہیں :

« دیکھو سادھو ، ساری دنیا پاگل ہوگئی ہے . سچی بات کہو تو مارنے کو دوڑتے ہیں لیکن جھوٹ پر ساری دنیا کا ایمان ہے . ہندو رام کا نام لیتا ہے اور مسلمان رحمان کا اور دونوں آپس میں لڑے مرتے ہیں لیکن حقیقت سے کوئی واقف نہیں . مجھے دھرم اور اس کے قوانین کے ماننے والے بہت ملے جو ہر صبح اشنان کرتے ہیں اور آتما کو چھوڑ کر پتھر کی پوجا کرتے ہیں . اُن کا علم اور عرفان جھوٹا ہے .... میں نے پیر اور مرید بہت دیکھے ہیں جو کتاب اور قرآن پڑھتے رہے ہیں . وہ قبر دکھا کر لوگوں کو مرید بناتے ہیں . ظاہر ہے کہ انھوں نے خدا کو نہیں پہچانا ہے » (نظم نمبر ۱۱۷)

« اللہ دین کا اول اصول ہے اور اس نے زبردستی کی ہدایت نہیں فرمائی ہے †.. تمہارے پیر و مرشد کون ہیں اور کہاں سے آئے ہیں . روزے رکھنے ، نماز گزارنے ، اور کلمہ پڑھنے سے جنت نہیں ملتی . کاش

---

* دونوں ٹکڑے قرآن کی آیتوں سے لئے گئے ہیں .

† "Permit me not henceforward to know thee thus imperfectly through these messengers.... Free me henceforward from dependence upon oratories, images and pictures which purport to represent thee, upon the beauties of nature which reveal thee, and even upon words which speak of thee. It is for thee alone, for thyself, that I yearn. Therefore surrender thou thyself now completely."

(St. John of Cross by—A Peers, P-48)

Quoted by Bankey Bihari. , "Sufis, mystics and yogis of India"

इस जगह पर कबीर की आवाज रूमी और दूसरे महान सूफ़ी और संत कवियों की आवाज की तरह सिर्फ़ वहदानियत (अद्वैत) के भाव से परिपूर्ण है (पद ८१, ८२, ८३, ९४, ९६) और इस परिपूर्णता के वातावरण में किसी जाहिरी रस्म या जाहिरी पूजा-पाठ की गुंजाइश नहीं है।* वह एकत्व में विघ्न डालती है। और जिसको इस अवस्था में पूजा-पाठ की विधियाँ सोचने का समय मिल गया वह सही मानों में परिपूर्ण नहीं है। इसलिए वह या तो दिखावे में फँस जाता है, उपासना के अंतर पर और रस्मों के बाहरी रूपों पर लड़ता झगड़ता है जिसकी वजह से ईश्वर के बनाये हुए प्राणियों में मतभेद पैदा होता है और विरोध के दरवाजे खुलते हैं।

"देखो साधु, सारी दुनिया पागल हो गयी है। सच्ची बात कहो तो मारने को दौड़ते हैं, लेकिन झूठ पर सारी दुनिया का ईमान है हिंदू राम का नाम लेता है और मुसल्मान रहमान का और दोनों आपस में लड़े-मरते हैं लेकिन सत्य से कोई परिचित नहीं। मुझे धर्म और उसके नियमों को माननेवाले बहुत मिले जो हर सुबह स्नान करते हैं और आत्मा को छोड़कर पत्थर की पूजा करते हैं। उनका ज्ञान झूठा हैं।.... मैंने पीर और मुरीद बहुत देखे हैं जो किताब और क़ुरान पढ़ते रहते हैं। वे क़ब्र दिखाकर लोगों को मुरीद बनाते हैं। जाहिर है कि उन्होंने खुदा को नहीं पहचाना है।" (पद ११७)

"अल्लाह दीन का पहला उसूल है और उसने जबर्दस्ती की हिदायत नहीं दी है।† तुम्हारे पीर और मुर्शिद कौन हैं और कहाँ से आये हैं। रोजे रखने, नमाज गुजारने और कलमा पढ़ने से जन्नत नहीं मिलती। काश कोई यह बात जाने कि एक दिल में सत्तर काबे हैं। अपने महबूब को पहचानो,

---

*"Permit me not henceforward to know thee thus imperfectly through these messengers.... Free me henceforward from dependence upon oratories, images and pictures which purport to represent thee, upon the beauties of nature which reveal thee, and even upon words which speak of thee. It is for thee alone, for thyself, that I yearn. Therefore surrender thou thyself now completely."

(St. John of Cross—by A. Peers, P-48)

Quoted by Bankey Bihari, "Sufis, mystics and yogis of India"

† ये दोनों टुकड़े क़ुरान की आयतों से लिये गये हैं।

کوئی یہ بات جانے کہ ایک دل میں ستر کعبے ہیں۔ اپنے محبوب کو پہچانو، اور دل میں رحم پیدا کرو اور مال و متاع کو حقیر سمجھو۔ بہشت تو تب ملتی ہے جب سائیں کو اپنے پاس محسوس کریں»۔ (نظم نمبر ۱۱۸)

«اے سادھو یہ پانڈے بڑے مشاق قصائی ہیں۔۔۔۔ ان کے دل میں ذرا بھی رحم نہیں۔ اشنان کر کے اور تلک لگاکر بیٹھتے ہیں اور بڑی باقاعدگی سے دیوتا کی پوجا کرتے ہیں۔ یہ اپنی آتما کو ایک پل میں مار دیتے ہیں اور خون کی ندی بہا دیتے ہیں۔ یہ بہت مقدس ہیں اور اونچے خاندان کے ہیں۔۔۔۔ لوگوں کا پاپ کاٹنے کے لئے یہ کتھا سناتے ہیں اور کام اُن سے بہت نیچے کرواتے ہیں۔ میں نے دونوں کو ایک ساتھ ڈوبتے دیکھا ہے»۔ (نظم نمبر ۱۱۲)

مالا، لکڑ، ٹھاکر، پتھر، تیرتھ، سگرے پانی
راما کرشنا مرتے دیکھے، چاروں وید کہانی

کنکر پتھر جوڑ کے، مسجد لئی بنائے
وا چڑھ ملا بانگ دے، کا بہرو بھیو کھدائے

اور اس سب سے کبیر نے ایک ہی نتیجہ نکالا تھا:

پوتھی پڑھ پڑھ جگ موا، پنڈت بھیا نہ کوئے
ڈھائی اچھر پریم کے پڑھے سو پنڈت ہوئے

اس میں دلچسپ نکتہ یہ ہے کہ دیوناگری میں جب «پریم» لکھا جاتا ہے تو اس میں صرف ڈھائی حرف ہوتے ہیں۔

ظاہری مذہب سے بغاوت اور باطنی مذہب کی تبلیغ کا انقلابی پہلو یہ تھا کہ اس نے قرون وسطیٰ کے انسان کو خود داری، عزت نفس اور خود اعتمادی عطا کی اور انسانوں کو انسانوں سے محبت کرنا سکھایا* سنتوں اور صوفیوں کے پاس اتنی طاقت تو نہیں تھی کہ وہ اس ظلم اور بدکاری کے خلاف لڑ سکتے جن کا مرکز شاہی دربار اور امیروں کے محل تھے۔ اس لئے انہوں نے ان کی طرف سے انتہائی حقارت کے ساتھ منہ پھر لیا۔ اور صبرو قناعت کی تعلیم دی، قناعت کا مقصد ترک

* "Tasavvuf was one of the strongest forces making for active benevolence and service to mankind in the past. Its leading exponents (continued)

और दिल में रहम पैदा करो और माल-मताअ को तुच्छ समझो। बिहिश्त तो तब मिलती है जब साईं को अपने पास महसूस करें।" (पद ११८)

"ऐ साधु, ये पाँडे बड़े निपुण क़साई हैं।.... इनके दिल में ज़रा भी रहम नहीं। स्नान करके और तिलक लगाके बैठते हैं और बड़ी बाक़ायदगी से देवता की पूजा करते हैं। ये अपनी आत्मा को एक पल में मार देते हैं और ख़ून की नदी बहा देते हैं। ये बहुत पवित्र हैं और ऊँचे कुल के हैं।.... लोगों का पाप काटने के लिए ये कथा सुनाते हैं और काम उनसे बहुत नीच करवाते हैं। मैंने दोनों को एक साथ डूबते देखा है।" (पद ११२)

माला, लक्कड़, ठाकुर पत्थर, तीरथ, सगरे पानी
रामा, कृष्णा मरते देखे, चारों वेद कहानी
कंकर-पत्थर जोड़के मस्जिद लई बनाय
वा चढ़ मुल्ला बाँग दे, का बहिरो गयो खुदाय

और इस सब से कबीर ने एक ही नतीजा निकाला था—

पोथी पढ़-पढ़ जग मुवा, पंडित भया न कोय
ढाई अच्छर प्रेम के पढ़ै सो पंडित होय

इसमें दिलचस्प नुक्ता यह है कि देवनागरी में जब 'प्रेम' लिखा जाता है तो उसमें सिर्फ़ ढाई अक्षर होते हैं।

दिखावटी धर्म से विद्रोह और वास्तविक धर्म के प्रचार का क्रांतिकारी पहलू यह था कि उसने मध्ययुग के मनुष्य को आत्म-प्रतिष्ठा, आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास दिया और मनुष्य को मनुष्य से प्रेम करना सिखाया। संतों और सूफ़ियों के पास इतनी ताक़त तो नहीं थी कि वे उस अन्याय और अत्याचार के ख़िलाफ़ लड़ सकते जिनका केंद्र शाही दरबार और अमीरों के महल थे। इसलिए उन्होंने उनकी तरफ़ से बड़े तिरस्कार के साथ मुँह फेर लिया * और

* "Tasavvuf was one of the strongest forces making for active benevolence and service to mankind in the past. Its leading exponents e.g. Rumi, Hafiz, Attar and Jami were the master spirits of their times. The ethical system they preached is the highest we can concieve. They believed that virtue is its own reward, and condemned the calculating goodness of the selfish clergy whose piety and devotion were motivated by the desire of reward in the hereafter. More important
(continued)

دنیا نہیں تھا بلکہ بادشاہوں درباریوں اور امیروں سے بے نیاز ہو کر تجارت اور جسمانی محنت سے روزی کمانا تھا، جس کا نمونہ کبیر نے پیش کیا ہے، اس زمانے میں تجارت کو شاہی ملازمت کے مقابلے میں حقیر سمجھا جاتا تھا. اس لئے تجارت اور دست کاری کی آمدنی پر قناعت کرنا اور صبر و شکر کی زندگی گزارنا ہی سب سے بڑی قناعت تھی (شبلی نعمانی شعر العجم)

اور یہ قرون وسطیٰ سے جدید صنعتی اور تجارتی عہد کی طرف پہلا قدم تھا، اس لئے تصوف اور بھگتی نے جاگیرداری نظام کی فکری بنیادوں کو ہلا دیا.

کبیر کی تعلیمات نے عام ہندو اور مسلمانوں کو اپنا گرویدہ بنا لیا لیکن تنگ نظروں کی آنکھوں میں کانٹے کی طرح کھٹکتے رہے، اس لئے انہوں نے کبیر کے خلاف ہنگامہ برپا کر دیا. اور بادشاہ وقت سکندر لودی تک شکایت پہونچی یہ تو پتہ نہیں چلتا کہ سکندر لودی نے کبیر کو سزا دی یا معاف کر دیا لیکن یہ ضرور ہوا کہ کبیر نے کچھ عرصے کے لئے بنارس چھوڑ دیا، اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ان کی تعلیمات دور دور تک پھیل گئیں.

ڈاکٹر تارا چند کے الفاظ میں کبیر « پہلا شخص ہے جس نے ایک مرکزی مذہب، ایک بیچ کی راہ کا بیباکانہ آگے آ کر اعلان کیا، اس کا نعرہ پورے ہندوستان میں گونج اٹھا اور سیکڑوں مقامات سے اس کی آواز بازگشت سنی گئی .... کبیر کے پیرو ان مذہب کی تعداد اتنی اہمیت نہیں رکھتی جتنا کہ کبیر کا وہ اثر جو پنجاب، گجرات، اور

---

e.g. Rumi, Hafiz, Attar and Jami were the masters pirits of their times. The ethical system they preached is the highest we can conceive. They believed that virtue is its own reward, and condemned the calculating goodness of the selfish clergy whose piety and devotion were motivated by the desire of reward in the hereafter. More important still, Tasavvuf gave self respect to mankind. During the middle ages when man had been reduced to the position of an abject slave by despotism, it was mysticism alone that glorified him as divine in origin and gave him hope and confidence. The greatest service of Tasavvuf was that it was the only tolerant system in a world from which toleracne had been ruthlessly outlawed".

("A History of Urdu Literature" by Mohammad Sadiq. Oxford University Press, Page 9)

संतोष और धीरज का उपदेश दिया। संतोष का अर्थ वैराग्य नहीं था बल्कि बादशाहों, दरबारियों और अमीरों से विमुख होकर व्यापार और शारीरिक श्रम से रोज़ी कमाना था जिसका आदर्श कबीर ने पेश किया है। उस युग में व्यापार को राज-सेवा के मुक़ाबले में तुच्छ समझा जाता था। इसलिए व्यापार और शिल्प की आमदनी पर संतोष करना और ईश्वर का उपकार मानते हुए जीवन व्यतीत करना ही सबसे बड़ा संतोष था। (शिबली नौमानी, शेर-उल-अजम)

और यह मध्य-युग से औद्योगिक और व्यापारिक युग की तरफ़ पहला क़दम था। इसलिए तसव्वुफ़ और भक्ति ने सामंती व्यवस्था के वैचारिक आधार को हिला दिया।

कबीर की शिक्षाओं ने आम हिंदुओं और मुसल्मानों को मुग्ध कर लिया लेकिन संकीर्ण दृष्टिवाले लोगों की आँखों में वे काँटे की तरह खटकते रहे। इसलिए उन्होंने कबीर के ख़िलाफ़ हंगामा खड़ा कर दिया और उस समय के बादशाह सिकंदर लोदी तक उनकी शिकायत पहुँची। यह तो पता नहीं चलता कि सिकंदर लोदी ने कबीर को सज़ा दी या माफ़ कर दिया लेकिन यह ज़रूर हुआ कि कबीर ने कुछ अरसे के लिए बनारस छोड़ दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि उनकी शिक्षाएँ दूर-दूर तक फैल गयीं।

डाक्टर ताराचंद के शब्दों में "कबीर पहला व्यक्ति है जिसने एक केंद्रीय धर्म, एक मध्य मार्ग का निस्संकोच आगे आकर एलान किया। उसका नारा पूरे हिंदुस्तान में गूँज उठा और सैकड़ों जगहों से उसकी प्रतिध्वनि सुनी गयी।.... कबीर के धर्मानुयायियों की संख्या उतना महत्व नहीं रखती जितना कि कबीर का वह असर जो पंजाब, गुजरात और बंगाल तक फैल गया और मुग़ल-काल में बढ़ता गया।" (भारतीय संस्कृति पर इस्लामी प्रभाव, पृष्ठ २७०)

---

still, Tasavvuf gave self respect to mankind. During the middle ages when man had been reduced to the position of an abject slave by despotism, it was mysticism alone that glorified him as divine in origin and gave him hope and confidence. The greatest service of Tasavvuf was that it was the only tolerant system in a world from which tolerance had been ruthlessly outlawed."

("A History of Urdu Literature" by Monammad Sadiq. Oxford University Press, Page 9)

بنگال تک پھیل گیا اور دور مغلیہ میں بڑھتا گیا» (تمدن ہند پر اسلامی اثرات» صفحہ ۲۷۰)

دوسرے صوفیوں اور سنتوں کی تعلیمات کے ساتھ مل کر کبیر کی تعلیمات اور تصورات شمالی ہندستان کی تقریباً تمام زبانوں کے ادب میں سرایت کر گئے ، اُن کے براہ راست اثرات کا سراغ گرو نانک کی تعلیمات میں بھی ملتا ہے اور آج کے عہد میں ٹیگور کے تصورات میں بھی. کسی شاعر کو اس سے بڑا خراج تحسین اور کیا مل سکتا ہے.

ہمیں آج بھی کبیر کی رہنمائی کی ضرورت ہے. اس روشنی کی ضرورت ہے جو اس سنت صوفی کے دل سے پیدا ہوئی تھی. آج دنیا آزاد ہو رہی ہے سائنس کی بے پناہ ترقی نے انسان کا اقتدار بڑھا دیا ہے ، صنعتوں نے اس کے دست و بازو کی طاقت میں اضافہ کر دیا ہے. انسان ستاروں پر کمندیں پھینک رہا ہے ، پھر بھی حقیر ہے ، مصیبت زدہ ہے ، درد مند ہے ، وہ رنگوں میں بٹا ہوا ہے ، قوموں میں تقسیم ہے ، اس کے درمیان مذاہب کی دیواریں کھڑی ہوئی ہیں. فرقہ وارانہ نفرتیں ہیں ، طبقاتی کشمکش کی تلواریں کھنچی ہوئی ہیں بادشاہوں اور حکمرانوں کی جگہ بیوروکریسی لے رہی ہے ، دلوں کے اندر اندھیرے ہیں. چھوٹی چھوٹی خودغرضیاں اور رعونتیں ہیں جو انسان کو انسان کا دشمن بنا رہی ہے. جب وہ حکومت ، شہنشاہیت اور اقتدار سے آزاد ہوتا ہے تو خود اپنی بدی کا غلام بن جاتا ہے. اس لئے اس کو ایک نئے یقین ، نئے ایمان اور نئی محبت کی ضرورت ہے جو اتنی ہی پرانی ہے جتنی کبیر کی آواز اور اس کی صدائے باز گشت اس عہد کی نئی آواز بن کر سنائی دیتی ہے :

غلامی میں نہ کام آتی ہیں شمشیریں نہ تدبیریں
جو ہو ذوق یقیں پیدا تو کٹ جاتی ہیں زنجیریں
کوئی اندازہ کرسکتا ہے اس کے زور بازو کا
نگاہ مرد مومن سے بدل جاتی ہیں تقدیریں
ولایت ، پادشاہی ، علم اشیا کی جہانگیری
یہ سب کیا ہیں ، فقط اک نکتۂ ایماں کی تفسیریں

दूसरे सूफ़ियों और सन्तों की शिक्षाओं के साथ मिलकर कबीर की शिक्षाएँ और विचार उत्तरी भारत की लगभग सभी भाषाओं के साहित्य का अंग बन गये। उनके प्रत्यक्ष प्रभाव का संकेत गुरू नानक की शिक्षाओं में भी मिलता है और आधुनिक युग में टैगोर के विचारों में भी। किसी कवि को इससे बड़ी श्रद्धांजलि क्या मिल सकती है।

हमें आज भी कबीर के नेतृत्व की जरूरत है, उस रोशनी की जरूरत है जो इस संत सूफ़ी के दिल से पैदा हुई थी। आज दुनिया आजाद हो रही है। विज्ञान की असाधारण प्रगति ने मनुष्य का प्रभुत्व बढ़ा दिया है। उद्योगों ने उसके बाहुबल में वृद्धि कर दी है। मनुष्य सितारों पर कमंदें फेंक रहा है। फिर भी वह तुच्छ है, संकटग्रस्त है, दुःखी है। वह रंगों में बँटा हुआ है, जातियों में विभाजित है। उसके बीच धर्मों की दीवारें खड़ी हुई हैं। साम्प्रदायिक द्वेष हैं, वर्ग-संघर्ष की तलवारें खिंची हुई हैं। बादशाहों और शासकों का स्थान नौकरशाही ले रही है। दिलों के अंदर अँधेरे हैं। छोटे-छोटे स्वार्थ और दंभ हैं जो मनुष्य को मनुष्य का शत्रु बना रहे हैं। जब वह शासन, शहंशाहियत और प्रभुत्व से मुक्त होता है तो खुद अपनी बदी का गुलाम बन जाता है। इसलिए उसको एक नये विश्वास, नयी आस्था और नये प्रेम की आवश्यकता है जो उतना ही पुराना है जितनी कबीर की आवाज और उसकी प्रतिध्वनि इस युग की नयी आवाज बनकर सुनायी देती है—

गुलामी में न काम आती हैं शमशीरें न तदबीरें
जो हो जौक़े-यक़ीं पैदा तो कट जाती हैं जंजीरें
कोई अंदाजा कर सकता है इसके जोरे-बाजू का
निगाहे-मर्दे-मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें
विलायत, पादशाही, इल्मे-अशया की जहाँगीरी
ये सब क्या हैं फ़क़त इक नुक्तए ईमाँ की तफ़सीरें
बराहीमी नजर पैदा मगर मुश्किल से होती है
हवस छुप-छुपके सीने में बना लेती है तस्वीरें
तमीजे-बंदः-ओ आक़ा फ़सादे-आदमीयत है
हजर ऐ चीरादस्ताँ, सख़्त हैं फ़ितरत की ताजीरें
हक़ीक़त एक है हर शै की ख़ाकी हो कि नूरी हो

براہیمی نظر پیـــدا مگر مشکل سے ہوتی ہے
ہوس چھپ چھپ کے سینے میں بنا لیتی ہے تصویریں
تمـــیز بنـــدۂ و آقـــا فساد آدمیت ہے
حذر اے چیرہ دستاں سخت ہیں فطرت کی تعزیریں
حقیقت ایک ہے ہر شے کی خاکی ہو کہ نوری ہو
لہو خورشید کا ٹپکے اگر ذرے کا دل چیریں
یقیں محکم، عمل پیہم، محبت فاتح عالم
جہادِ زندگانی میں ہیں، یہ مردوں کی شمشیریں
اقبال

یہ کبیر کی رومی کی، غرض تمام سنتوں اور صوفیوں کی تعلیمات کی نئی تفسیر ہے جو ایک نئی انسانیت کی بشارت لئے ہوئے ہے.

سردار جعفری

بمبئی
اگست ۱۹۶۵ ء

लहू ख़ुरशीद का टपके अगर ज़र्रे का दिल चीरें
यक़ीं मुहकम, अमल पैहम, मुहब्बत फ़ातहे-आलम
जिहादे-ज़िंदगानी में हैं, ये मरदों की शमशीरें

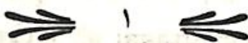
—इक़बाल

[भावार्थ : गुलामी में न तलवारें काम आती हैं न तदबीरें, लेकिन अगर आदमी में आस्था हो तो हर ज़ंजीर कट जाती है। संत के बाहुबल का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उस की निगाह से भाग्य बदल जाते हैं। संत होना, बादशाह होना या विज्ञान का प्रभुत्व ये सब आस्था की व्याख्याओं के अलावा कुछ भी नहीं हैं। इब्राहीम पैग़ंबर, जिनके बाप मूर्तियाँ बनाकर उनकी पूजा करते थे लेकिन जिन्होंने ख़ुद एक अनदेखे ख़ुदा की उपासना पर ज़ोर दिया, उनकी ऐसी निगाह मुश्किल से मिलती है क्योंकि हवस (वासना) चुपके-चुपके दिल में नाना रूप धारण करती रहती है। स्वामी और दास का अंतर मानवता को कलंकित करता है। इसलिए अत्याचारियों डरो कि प्रकृति का दंड बहुत कड़ा है। कोई चीज़ ख़ाक की बनी हो या नूर की, हर चीज़ की वास्तविकता एक ही है अगर ज़र्रे का दिल चीरें तो उसमें से सूरज का ख़ून टपकेगा। दृढ़ संकल्प, निरंतर सक्रियता, और विश्वविजयी प्रेम, ये जीवन-संघर्ष में वीरों की तलवारें हैं।]

यह कबीर की, रूमी की, ग़रज़ तमाम सूफ़ियों और संतों की शिक्षाओं की व्याख्या है जिसमें एक नयी मानवता की रूपरेखा निहित है।

बम्बई

अगस्त १९६९ सरदार जाफ़री



موکوں کہاں ڈھوڑھے بندے. میں تو تیرے پاس میں
نا میں دیول، نا میں مسجد، نا کعبے کیلاس میں
نا تو کون کریا کرم میں، نہیں یوگ بَیراگ میں
کھوجی ہوئے تو تُرتے مِلیھوں پل بھر کی تالاس میں
کہیں کبیر سُنو بھائی سادھو، سب سوانسوں کی سوانس میں

اے بندے تو مجھے کہاں ڈھونڈھتا پھر رہا ہے، میں تو تیرے پاس ہی ہوں. نہ میں مندر میں ہوں، نہ مسجد میں، نہ کعبے اور کیلاش میں نہ کسی ظاہری عبادت میں، نہ یوگ بیراگ میں، اگر سچے دل سے کھوجنے والا ہو، تو پل بھر کی تلاش میں مل جاؤں گا. کبیر کہتے ہیں بھائی سادھو سنو، وہ تو ہر سانس میں موجود ہے.



मोकों कहाँ ढूढ़े बन्दे, मैं तो तेरे पासमें ।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलासमें ।
ना तो कौन क्रिया-कर्ममें, नहीं योग बैरागमें ।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भरकी तालासमें ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वाँसोंकी स्वाँसमें ॥

ऐ बंदे, तू मुझे कहाँ ढूँढता फिर रहा है, मैं तो तेरे पास ही हूँ। न मैं मंदिर में मिलूँगा न मस्जिद में, न काबे और कैलाश में, न पूजा-पाठ में, न योग-बैराग में। सच्चे मन से खोजनेवाला हो तो उसे मैं पल भर की तलाश में मिल जाऊँगा। कबीर कहते हैं, भाई साधु सुनो, वह तो हर साँस में मौजूद है।


۲

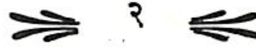
سنتن جات نہ پوچھو نرگنیاں
سادھ براہمن، سادھ چھتری، سادھے جاتی بنیاں
سادھن ماں چھتیس کوم ہے، ٹیڑھی تور پچھنیاں
سادھے ناؤ، سادھے دھوبی، سادھ جات ہے بریاں
سادھن ماں ریداس سنت ہیں سپچ رشی سوبھنگیاں
ہندو ترک دُئی دین بنے ہیں، کچھو نہیں پہچنیاں

اے نادانو! سنتوں کی ذات کیا پوچھتے ہو، (بھگوان کو ڈھونڈھنے والے) سادھو برہمن بھی ہیں اور چھتری بھی اور بنیے بھی. سادھوؤں میں چھتیس ذاتیں اس کو تلاش کررہی ہیں، تمہارا سوال کتنا احمقانہ ہے. نائی، دھوبی، بڑھئی سب ہی سادھو ہیں. انہیں میں سنت ریداس ہیں اور انہیں میں سپچ رشی جنھیں لوگ بھنگی سمجھتے ہیں. خواہ ہندو اور مسلمان دو مذہب بن گئے ہیں. حقیقت یہ ہے کہ ان میں کوئی فرق نہیں.


۳

سادھو بھائی، جیوت ہی کرو آسا
جیوت سمجھے، جیوت بوجھے، جیوت مکتی نواسا
جیوت کرم کی پھانس نہ کاٹی، موئے مکتی کی آسا
تن چھوٹے جیو ملن کہت ہے، سو سب جھوٹی آسا
اب ہوں ملا تو تب ہوں ملے گا، نہیں تو جم پر باسا
ست گہے ست گرو کو چینہیں، ست نام وسواسا
کہیں کبیر سادھن ہتکاری، ہم سادھن کے داسا

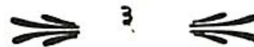
میرے بھائی، جب تک زندہ ہو تب تک امید رکھو. سمجھ بوجھ زندگی کے ساتھ ہے. نجات بھی زندگی ہی میں ممکن ہے. اگر تم نے زندگی میں اپنے بندھن نہیں توڑے (کرم کا پھندا نہیں کاٹا) تو مرنے کے بعد نجات کی کیا امید رکھتے ہو. یہ ایک خیال خام ہے کہ روح تن سے نکل کر بھگوان سے مل جائے گی. اگر وہ اب ملا تو تب بھی ملے گا، نہیں تو موت کی نگری میں بسنا پڑے گا. ست (صداقت) کو آج گرفت میں لاؤ، ست گرو کو آج پہچانو، ست نام پر آج یقین کرو.



२

सन्तन जात न पूछो निरगुनियाँ ।
साध ब्राहमन साध छत्तरी, साधै जाती बनियाँ ।
साधनमाँ छत्तीस कौम है, टेढ़ी तोर पुछनियाँ ।
साधै नाऊ साधै धोबी, साध जाति है बरियाँ ।
साधनमाँ रैदास सन्त हैं, सुपच ऋषि सो भँगियाँ ।
हिन्दु-तुर्क दुइ दीन बने हैं, कछू नहीं पहचनियाँ ॥

ऐ नादानो, संतों की जाति क्या पूछते हो । (भगवान के भक्त) साधु ब्राह्मण भी हैं और क्षत्रिय भी और बनिये भी । साधुओं में छत्तीस जाति के लोग हैं जो उसे खोज रहे हैं । तुम्हारा यह सवाल कितना गलत है । नाई, धोबी, बढ़ई सभी जातियों में साधु हो चुके हैं। उन्हीं में संत रैदास हुए हैं और उन्हीं में श्वपच सुदर्शन जैसे ऋषि जिन्हें भंगी कहा गया है । बेकार में हिंदू और मुसलमान दो धर्म बन गये हैं, जिनमें कोई अंतर नहीं है ।

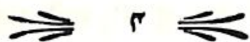


३

साधो भाई, जीवत ही करो आसा ।
जीवत समझे जीवत बूझे, जीवत मुक्तिनिवासा ।
जीवत करमकी फाँस न काटी, मुये मुक्तिकी आसा ।
तन छूटे जिव मिलन कहत है, सो सब झूठी आसा ।
अबहुँ मिला तो तबहुँ मिलेगा, नहिं तो जमपुरबासा ।
सत्त गहे सतगुरुको चीन्हें, सत्त-नाम विस्वासा ।
कहैं कबीर साधन हितकारी, हम साधनके दासा ॥

मेरे भाई, जब तक जिंदा रहो तब तक (ईश्वर के पाने की) आशा रखो । समझ-बूझ जीवन के साथ है । मुक्ति भी जीवन में ही संभव है । अगर तुमने अपने जीवन में अपने बंधन नहीं तोड़े (करम का फंदा नहीं काटा) तो मरने के बाद मुक्ति पाने की क्या आशा रखते हो । यह भ्रम हैं कि आत्मा शरीर से निकलकर भगवान में मिल जायगी । अगर वह अब मिल गया तो तब भी मिलेगा, नहीं तो तुम्हें यमपुरी में ही रहना पड़ेगा । सत्य को आज पकड़ो, सतगुरु को आज पहचानो, सत्-नाम

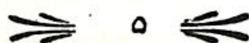
کبیر کہتے ہیں کہ ہم تو تلاش اور جستجو کے جذبے کے غلام ہیں کیونکہ آخر میں یہی جذبہ کام آتا ہے ۔



۴

باگوں نا جا رے نا جا ، تیری کایا میں گل جار
سہس کنول پر بیٹھ کے ، تو دیکھے روپ اپار

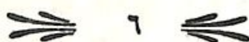
ارے باغوں میں کیا مارا مارا پھر رہا ہے ، خود تیرے وجود میں گلزار ہے ، ہزار پنکھڑیوں کے کنول (دل) پر بیٹھ کر تو حسنِ مطلق کا لامتناہی جلوہ دیکھ سکتا ہے ۔



۵

اودھو مایا تجی نہ جائی
گرہ تج کے بستر باندھا ، بستر تج کے پھیری
کام تجے تیں کرودھ نہ جائی ، کرودھ تجے تیں لوبھا
لوبھ تجے اہنکار نہ جائی ، مان بڑائی سوبھا
من بیراگی مایا تیاگی ، شبد میں سرت سمائی
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو ، یہ گم برلے پائی

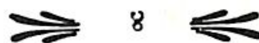
اودھو ، مایا کو تج دینا کتنا مشکل ہے ، گھر کو چھوڑ کر جوگیا بھیس بنایا ، اسے بھی چھوڑا تو پھیری کے فقیر بن گئے ، خواہشوں سے نجات حاصل کی تو غصہ باقی رہ گیا ، اور غصے کو چھوڑا تو لالچ نے آگھیرا ، لالچ کو تج دیا تو غرور نے سر اٹھایا ، جب مایا کو تیاگ کر من بیراگی ہوجاتا ہے تب بھی لفظوں کا پھیر باقی رہتا ہے (یعنی شاستروں میں الجھا رہتا ہے) سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ : نجات کا راستہ (گم = رہس = بھید) کم ہی لوگوں کو مل سکتا ہے



۶

چندا جھلکے یہی گھٹ ماہیں — اندھی آنکھن سوجھے ناہیں
یہی گھٹ چندا یہی گھٹ سور — یہی گھٹ گاجے اَن حد تور
یہ گھٹ باجے طبل نسان — بہرا شبد سنے نہیں کان
جب لگ میری میری کرے — تب لگ کاج ایکو نہیں سرے

पर आज आस्था रखो। कबीर कहते हैं कि हम तो साधना के दास हैं क्योंकि अंत में साधना ही काम आती है।



बागों ना जा रे ना जा, तेरी कायामें गुलजार।
सहस-कँवलपर बैठके तू देखे रूप अपार॥

अरे, बागों में क्या मारा-मारा फिर रहा है। तेरी अपनी काया (अस्तित्व) में गुलज़ार (उपवन, वाटिका) है। हज़ार पंखड़ियों वाले कमल पर बैठकर तू (ईश्वर का) अपरम्पार रूप देख सकता है।



अवधू, माया तजी न जाई।
गिरह तजके बस्तर बाँधा, बस्तर तजके फेरी॥
काम तजेतें क्रोध न जाई, क्रोध तजेतें लोभा।
लोभ तजे अहँकार न जाई, मान-बड़ाई-सोभा॥
मन बैरागी माया त्यागी, शब्दमें सुरत समाई।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह गम बिरले पाई।

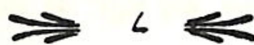
अवधू! माया को तज देना कितना मुश्किल है। घर को छोड़कर जोगिया वेश धारण किया। उसे भी छोड़ा तो फेरी के फ़क़ीर बन गये। काम (कामनाओं) से छुटकारा पाया तो क्रोध बाकी रह गया और क्रोध को छोड़ा तो लोभ ने आ घेरा। लोभ को तज दिया तो अहंकार ने सर उठाया। जब माया को त्यागकर मन बैरागी हो जाता है तब भी शब्दों का फेर बाक़ी रह जाता है (यानी शास्त्रों में उलझा रहता है) कबीर कहते हैं, भाई साधु सुनो, मुक्ति का रास्ता कम ही लोगों को मिल सका है।



चंदा झलकै यहि घटमाहीं। अंधी आँखन सूझै नाहीं॥
यहि घट चंदा यहि घट सूर। यहि घट गाजै अनहद तूर॥
यहि घट बाजै तबल-निसान। बहिरा शब्द सुनै नहि कान॥
जब लग मेरी मेरी करै। तब लग काज एकौ नहिं सरै॥

جب میری ممتا مرجائے تب لگ پربھو کاج سنوارے آئے
گیان کے کارن کرم کمائے ہوئے گیان تب کرم نسائے
پھل کارن پھولے بن رائے پھل لاگے پر پھول سکھائے
مرگا پاس کستوری باس آپ نہ کھوجے کھوجے گھاس

اس گھٹ (وجود) میں چاند جھلکتا ہے لیکن اندھی آنکھوں کو دکھائی نہیں دیتا، اسی گھٹ میں چاند ہے اور اسی گھٹ میں سورج اور اسی گھٹ میں ابدیت کا ساز چھڑا ہوا ہے، اس گھٹ میں نقارے بج رہے ہیں لیکن بہرے کانوں کو کچھ سنائی نہیں دیتا۔ جب تک آدمی میری میری کرتا رہتا ہے کوئی کام نہیں بنتا، جب ممتا مرجاتی ہے تب پربھو آکر کام سنوارتے ہیں، عمل کا مقصد صرف علم (عرفان) ہے لیکن جب علم (عرفان) آجاتا ہے تو عمل بیکار ہوجاتا ہے، جیسے پھول پھل پیدا کرنے کے لئے کھلتا ہے، پھل آنے کے بعد پھول مرجھا جاتا ہے، مشک خود ہرن کے نافے میں ہوتا ہے (جس کی خوشبو اسے بے قرار رکھتی ہے) لیکن وہ اس کو اپنے جسم کے بجائے گھاس میں تلاش کرتا ہے۔



سادھو برہم الکھ لکھایا
جب آپ آپ درسایا
بیج مدھ جیوں برچھا درسے، برچھا مدھے چھایا
جیوں نبھ مدھے سن دیکھئے، سن اننت آکارا
نہ اچھرتے اچھر تیسے، اچھر چھر بستارا
جیوں ربی مدھے کرن دیکھئے، کرن مدھ پرکاسا
پرماتم میں جیو برہم اِم، جیو مدھ تِم سوانسا
سوانسا مدھے شبد دیکھئے، ارتھ شبد کے مانہیں
برہم تے جیو، جیوتے من یوں، نیارا ملا سدا ہی
آپ ہی برچھ بیج انکورا، آپ پھول پھل چھایا
آپ ہی سور کرن پرکاسا، آپ برہم جیو مایا
اننتا کار سن نبھ آپے، سوانس شبد ارتھایا
نہ اچھر اچھر چھر آپے من جیو برہم سمایا

जब मेरी ममता मर जाय । तब लग प्रभु काज सँवारै आय ॥
ज्ञानके कारन करम कमाय । होय ज्ञान तब करम नसाय ॥
फल कारन फूलै बनराय । फल लागे पर फूल सुखाय ॥
मृगा पास कस्तूरी बास । आप न खोजै खोजै घास ॥

इसी घट (शरीर) में चाँद झलकता है लेकिन अंधी आँखों को दिखायी नहीं देता। इसी घट में चाँद है और इसी घट में सूरज और इसी घट में अनहद तूर (अनाहत ध्वनि) सुनायी देता है। इसी घट में ढोल और डंके बज रहे हैं लेकिन बहरे कानों को कुछ सुनायी नहीं देता। जब तक आदमी मेरी मेरी करता रहता है तब तक कोई काम नहीं बनता। जब यह अहंकार मिट जाता है तब भगवान स्वयं आकर हर काम को सँवार देते हैं। कर्म का उद्देश्य केवल ज्ञान है लेकिन ज्ञान के आते ही कर्म बेकार हो जाता है, जैसे फूल फल पैदा करने के लिए खिलता है लेकिन यही फल लगने के बाद फूल मुरझा जाता है। कस्तूरी हिरन की नभि में होती है लेकिन वह उसे अपने शरीर के बजाय घास में खोजता फिरता है।



७

साधो, ब्रह्म अलख लखाया।
जब आप आप दरसाया।
बीज-मद्ध ज्यों बृच्छा दरसै, बृच्छा मद्धे छाया ॥
ज्यों नभ-मद्धे सुन्न देखिये, सुन्न अनन्त आकाश।
निःअच्छरते अच्छर तैसे, अच्छर छर बिस्तारा।
ज्यों रबि-मद्धे किरन देखिये, किरन मद्ध परकासा।
परमातममें जीव ब्रह्म इमि, जीव-मद्ध तिमि स्वाँसा ॥
स्वाँसा-मद्धे शब्द देखिये, अर्थ शब्दके माहीं।
ब्रह्मते जीव जीवते मन यों, न्यारा मिला सदा ही ॥
आपहि बृच्छ बीज अंकूरा, आप फूल-फल छाया।
आपहि सूर किरन परकासा, आप ब्रह्म जिउ माया ॥
अनन्ताकार सुन्न नभ आपै, स्वाँस शब्द अरथाया।
निःअच्छर अच्छर छर आपै, मन जीव ब्रह्म समाया ॥

آتم میں پرماتم درسے ، پرماتم میں جھائیں
جھائیں میں پرچھائیں درسے لکھے کبیرا سائیں

سادھو ، جب برہم نے اپنے آپ کو ظاہر کیا تو غیب کو شہود کر دکھایا . جیسے بیج میں درخت دکھائی دیتا ہے اور درخت میں سایا ، جیسے آسمان میں خلا (سن = شونیہ) دکھائی دیتا ہے اور خلا میں ان گنت شکلیں ، اسی طرح لا محدود کی پشت سے لا محدود نکلتا ہے (وراء الورا) اور لامحدود کے دل سے نکل کر محدود پھیل جاتا ہے ، جیسے سورج میں کرن نظر آتی ہے اور کرن میں روشنی ویسے ہی پرماتما میں جیو اور جیو میں سانس اور سانس میں لفظ اور لفظ میں معنی جھلکتے ہیں . برہم میں جیو ہے اور جیو میں برہم ، دونوں الگ الگ ہیں اور دونوں ایک ہیں ، وہ خود ہی بیج ہے خود ہی پیڑ ہے خود ہی کونپل خود ہی پھول پھل اور سایہ ، وہ خود ہی سورج ہے ، خود ہی کرن ہے ، خود ہی روشنی . خود ہی برہم ہے ، خود ہی جیو ہے خود ہی مایا . وہ خود ہی خلا کی وسعتِ بیکران ہے ، خود ہی آسمان ، خود ہی سانس ، خود ہی لفظ ، خود ہی معنی . وہ خود ہی حد ہے اور خود ہی بےحد اور خود ہی حد اور بےحد سے باہر . وہ وجود مطلق ہے ، وہ برہم اور جیو کے اندر عقل کل ہے ، آتما میں پرماتما دکھائی دیتا ہے اور پرماتما میں جھائیں (جھلک) جھائیں میں پرچھائیں دکھائی دیتی ہے اور کبیر سائیں اس نظارے میں محو ہے . (بعض ہندی پنڈتوں کا خیال ہے کہ یہ کبیر کا پد (نظم) نہیں ہے)

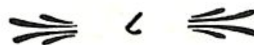


اِس گھٹ انتر باگ بگیچے ، اِسی میں سرجن ہارا
اِس گھٹ انتر سات سمندر ، اِسی میں نو لکھ تارا
اِس گھٹ انتر پارس موتی ، اسی میں پرکھن ہارا
اِس گھٹ انتر اَن حد گرجے ، اسی میں اُٹھت پُھہارا
کہت کبیر سنو بھائی سادھو ، اسی میں سائیں ہمارا

اسی گھٹ (وجود) کے اندر باغ کھلے ہوئے ہیں اور اسی میں باغبان (سرجن ہار = خالق) ہے . اسی گھٹ میں سات سمندر ہیں اور اسی میں نولاکھ تارے . اسی گھٹ میں پارس اور موتی ہیں اور اسی میں پرکھنے والے .

आतममें परमातम दरसै परमातममें झाँई ।
झाँईमें परछाईं दरसै, लखै कबीरा साँई ॥

साधु, जब ब्रह्म ने अपने आपको प्रकट किया तो हमें वह सब भी दिखायी देने लगा जो हम अपनी आँखों से नहीं देख सकते। जैसे बीज में वृक्ष दिखायी देता है और वृक्ष में छाया, जैसे आकाश में शून्य दिखायी देता है और शून्य मैं अनन्त आकार, उसी तरह अक्षर (अविनाशी, असीमित) के गर्भ से अक्षर निकलता है और अक्षर के गर्भ से निकलकर क्षर (सीमित) फैल जाता है। जैसे सूरज में किरण दिखायी देती है और किरण में प्रकाश उसी तरह परमात्मा में जीव और जीव में साँस और साँस में शब्द और शब्द में अर्थ झलकते हैं। ब्रह्म में जीव है और जीव में ब्रह्म। दोनों अलग अलग हैं और दोनों एक हैं। वह स्वयं बीज है, स्वयं ही वृक्ष है और स्वयं ही अंकुर, फूल-फल और छाया है। वह स्वयं ही सूरज है, स्वयं ही किरण है और स्वयं ही रोशनी। वह स्वयं ही ब्रह्म है, स्वयं ही जीव है और स्वयं ही माया। वह स्वयं ही शून्य का अनंत विस्तार है, स्वयं ही आकाश है, स्वयं ही सांस है, स्वयं ही शब्द है और स्वयं ही अर्थ। वह स्वयं ही क्षर है और स्वयं ही अक्षर और स्वयं ही क्षर-अक्षर से परे है। वह ब्रह्म और जीव के अंदर समाया हुआ मन है। आत्मा में परमात्मा दिखायी देता है परमात्मा में झांई ; इसी झांई में परछाईं दिखायी देती है और कबीर इसी को देखने में लीन हैं।



इस घट अन्तर बाग-बगीचे, इसीमें सिरजनहारा।
इस घट अन्तर सात समुन्दर, इसीमें नौ लख तारा।
इस घट अन्तर पारस मोती, इसीमें परखनहारा।
इस घट अन्तर अनहद गरजै, इसीमें उठत फुहारा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, इसीमें साँई हमारा।

इसी घट में बाग़-बगीचे खिले हैं और इसी में उनका सृजनहार है। इसी घट में सात समुद्र हैं और इसी में नौ लाख तारे। इसी में पारस और मोती हैं और इसी में परखने वाले। इसी घट में अनाहत नाद गूंज रहा है और इसी में

اسی گھٹ میں لا محدود ابدیت گرج رہی ہے اور اسی سے فوارے پھوٹ رہے ہیں۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ اسی گھٹ میں ہمارا مالک (سائیں) ہے۔

۹

ایسا لو نہیں تیسا لو، میں کیہہ بِدھی کتھوں گنبھیرا لو
بھیتر کہوں تو جگ مے لاجے، باہر کہوں تو جھوٹھا لو
باہر بھیتر سکل نرنتر، چت اچت دوؤ پیٹھا لو
درشٹ نہ مُشٹ پرگٹ اگوچر، باتن کہا نہ جائی لو

آہ میں حرف راز کو کیسے ادا کروں۔ کیسے کہوں کہ وہ ایسا ہے یا ویسا ہے، اگر میں کہوں کہ وہ میرے اندر ہے تو سارا جگ شرما جائے اور اگر یہ کہوں کہ وہ مجھسے باہر ہے تو بات جھوٹی ہوجائیگی۔ اندر اور باہر کی شکلیں ایک دوسرے سے الگ نہیں کی جاسکتیں۔ شعور اور لا شعور اس کے دو رخ ہیں، نہ تو وہ نظر میں سماتا ہے نہ گرفت میں آتا ہے، نہ ظاہر ہے نہ پنہاں۔ وہ کیا ہے یہ کہنے کے لئے الفاظ نہیں ہیں۔

۱۰

توہیں موری لگن لگائے رے پھکروا
سووت ہی میں اپنے مندر میں
سبدن مار جگائے رے پھکروا
بوڑت ہی بھو کے ساگر میں
بہیاں پکر سمجھائے رے پھکروا
ایکے بچن، بچن نہیں دُوجا
تم موسیں بند چھڑائے رے پھکروا
کہے کبیر سنو بھائی سادھو
پرانن پران لگائے رے پھکروا

تونے ہی مجھے اپنے عشق میں مبتلا کیا ہے اے فقیر، میں تو اپنے مندر میں سو رہی تھی اے فقیر، تیرے لفظوں کے تازیانے نے مجھے جگا دیا، میں دنیا کے ساگر میں ڈوب رہی تھی اے فقیر، تونے میرا بازو پکڑ کر

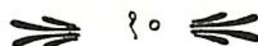
फुहारें फूट रही हैं। कबीर कहते हैं, सुनो भाई साधु इसी घट में हमारा साँईं (स्वामी) है।



९

ऐसा लो नहिं तैसा लो, मैं कहि बिधि कथौं गँभीरा लो।
भीतर कहूँ तो जगमय लाजै, बाहर कहूँ तो झूठा लो॥
बाहर-भीतर सकल निरन्तर, चित्त अचित दोउ पीठा लो।
दृष्टि न मुष्टि परगट अगोचर, बातन कहा न जाई लो॥

मैं इस गंभीर रहस्य का कैसे वर्णन करूँ, कैसे कहूँ कि वह ऐसा है या वैसा है। अगर मैं कहूँ कि वह मेरे अंदर है तो सारा जग शरमा जाये, और अगर यह कहूँ कि वह मुझसे बाहर है तो बात झूठी हो जायेगी। अंदर और बाहर की शक्लें एक दूसरे से अलग नहीं की जा सकतीं। चित्त और अचित्त (चेतन और अचेतन) उसके दो पक्ष हैं। न वह दिखायी देता है न हाथ से पकड़ा जा सकता है; न वह प्रगट है न अगोचर (अप्रत्यक्ष)। वह क्या है, यह बताने के लिए शब्द नहीं हैं।

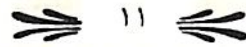


१०

तोहिं मोरि लगन लगाये रे फकिरवा।
सोवत ही मैं अपने मन्दिरमें,
सब्दन मारि जगाये रे फकिरवा।
बूड़त ही भवके सागरमें
बहियाँ पकरि समुझाये रे फकिरवा।
एकै बचन बचन नहिं दूजा
तुम मोसे बंद छुड़ाये रे फकिरवा।
कहै कबीर सुनो भाई साधो,
प्रानन प्रान लगाये रे फकिरवा।

तूने ही मुझमें अपनी यह लगन लगायी है, ऐ फ़क़ीर। मैं तो अपने मंदिर में सो रही थी, ऐ फ़क़ीर तेरे शब्दों की चोट ने मुझे जगा दिया। मैं इस भव-सागर में डूब रही थी, ऐ फ़क़ीर तूने मेरी बाँह पकड़कर मुझे बाहर

مجھے باہر نکال لیا. بات ایک ہی ہے اے فقیر، تونے مجھے سارے بندھنوں سے چھٹکارا دلا دیا. سنو بھئی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ تونے میرے دل سے اپنا دل ملا دیا ہے اے فقیر.


۱۱

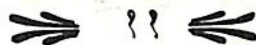
نس دن کھیلت رہی سکھیئں سنگ
موہ بڑا ڈر لاگے
مورے صاحب کی اونچی اٹریا
چڑھت میں جیرا کانپے
جو سُکھ چہے تو لجّا تیاگے
پیا سے ہل مل لاگے
گھونگھٹ کھول انگ بھر بھینٹے
نین آرتی ساجے
کہیں کبیر سنو سکھی موری
پریم ہوئے سو جانے
نج پریتم کی آس نہیں ہے
نابک کاجر پارے

میں تو دن رات اپنی سکھیوں کے ساتھ کھیلتی تھی اور اب مجھے ڈر لگ رہا ہے. میرے صاحب کی اٹاری اونچی ہے اور اس پر چڑھتے ہوئے جی کانپتا ہے. (لیکن عشق کا تقاضا کچھ اور ہی ہے) وصل کی لذت کے لئے شرم اور حجاب کو چھوڑنا ہی پڑے گا. میں اپنے محبوب (پریتم) سے گھل مل جاؤں گی. گھونگھٹ اُٹھ جائے گا، جسم ہم آغوش ہوجائے گا اور آنکھیں آرتی اتاریں گی. سنو میری سکھی کبیر کہتے ہیں کہ جس نے عشق کیا ہو وہی اس کی لذت کو جانے، جسے اپنے پریتم سے ملنے کی آس ہی نہ ہو وہ کاجل پار کے کیا کرے گی. (کاجل پارنا ظاہری رسوم ہیں، اصل حقیقت وصال ہے).


۱۲

ہنسا کرو پُراتن بات
کون دیس سے آیا ہنساہ اُترنا کون گھاٹ

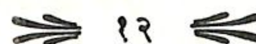
निकाल लिया। बात एक ही है, ऐ फ़क़ीर, तूने मुझे सारे बंधनों से छुटकारा दिला दिया। कबीर कहते हैं, सुनो भाई साधु, तूने मेरे दिल से अपना दिल मिला दिया है, ऐ फ़क़ीर।



११

निस-दिन खेलत रही सखियन सँग,
मोहि बड़ा डर लागे।
मोरे साहबकी ऊँची अटरिया,
चढ़तमें जियरा काँपे॥
जो सुख चहै तो लज्जा त्यागे,
पियासे हिलमिल लागे॥
घूँघट खोल अंग भर भेंटे,
नैन आरती साजे॥
कहैं कबीर सुनो सखि मोरी,
प्रेम होय सो जाने।
निज प्रीतम की आस नहीं है,
नाहक काजर पारे॥

मैं तो दिन-रात अपनी सखियों के साथ खेलती थी और अब मुझे बड़ा डर लग रहा है। मेरे साहब की अटारी बहुत ऊंची है और उस पर चढ़ते हुए जी काँपता है। (लेकिन प्रेम का तक़ाज़ा कुछ और ही है) सुख (प्रणय सुख) के लिए लाज छोड़नी होगी, मैं पिया से घुल-मिल जाऊंगी, घूँघट हटाकर उसे अंग भरकर लिपटा लूँगी और आँखें आरती उतारेंगी। सुनो मेरी सखी, कबीर कहते हैं, कि जिसने प्रेम किया हो वही इस सुख को जाने, जिसे अपने प्रियतम से मिलने की आस ही न हो वह काजल पारके क्या करेगी। (काजल पारना दिखावटी रीत है वास्तव में प्रणय सुख असलीचीज है)



१२

हंसा करो पुरातन बात।
कौन देससे आया हंसा, उतरना कौन घाट।

کہاں ہنسا بِسرام کیا ہے، کہاں لگائے آس
اب ہیں ہنسا چیت سبیرا، چلو ہمارے ساتھ
سنسے سوک وہاں نئیں ویاپے، نہیں کال کے تراس
یہاں مدن بن پھول رہے ہیں، آوے سوہم باس
من بھنورا جیہوں اُرجھ رہے ہیں، سکھ کی نا ابھلاس

اے ہنس اپنی پرانی کہانی سناؤ، تم کس دیس سے آئے ہو اے ہنس اور کس گھاٹ اتروگے. تم کہاں آرام کروگے اے ہنس اور تمہیں کس کی تلاش ہے. اب بھی چیت جاؤ ابھی سویرا ہے اے ہنس، آؤ ہمارے ساتھ چلو. ایک ایسی جگہ جہاں غموں کا نام نہیں، شک اور دکھ کا نشان نہیں، موت کا خوف نہیں، وہاں مدن بن پھول رہا ہے (عشق کی بہار چھائی ہوئی ہے) اور انا الحق کی سہانی خوشبو پھیلی ہوئی ہے. من کا بھونرا مستی میں گونج رہا ہے. اس کے بعد کسی اور سکھ کی آرزو نہیں ہے.

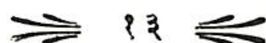
۱۳

ان گڑھیا دیوا، کون کرے تیری سیوا
گڑھے دیو کو سب کوئی پوجے، نت ہی لاوے سیوا
پورن برہم اکھنڈت سوامی تاکو نہ جانے بھیوا
دس اوتار نرنجن کہیے سو اپنا نا ہوئی
یہ تو اپنی کرنی بھوگیں، کرتا اور ہی کوئی
جوگی جتی تپی سنیاسی، آپ آپ میں لڑیاں
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، راگ لکھے سوتریاں

ان گڑھ دیوتا تجھے مورتی کا روپ نہیں دیا جاسکتا، تیری سیوا کون کرے گا، ہر ایک اپنے ہاتھوں کے بنائے ہوئے دیوتا کو پوجتا اور اس کی خدمت کرتا ہے. مگر وہ جو مکمل ہے، جو برہم ہے، جو ناقابل تقسیم ہے اس کا نام کوئی نہیں لیتا. یہ لوگ دس اوتاروں کو مانتے ہیں جو من سے گڑھے گئے ہیں لیکن کوئی اوتار وجودِ مطلق نہیں ہے. یہ تو اپنی کرنی بھوگ رہے ہیں، کرنیوالا تو اور ہی کوئی ہے. جوگی، تپسی اور سنیاسی آپس میں لڑ رہے ہیں. سنو بھائی کبیر کہتے ہیں کہ جس نے پریم (راگ = رام) کو دیکھا ہے اسی کی نجات ہے.

कहाँ हंसा बिसराम किया है, कहाँ लगाये आस ॥
अबहीं हंसा चेत सबेरा, चलो हमारे साथ ।
संसय-सोक वहाँ नहिं व्यापै नहीं कालकै त्रास ॥
हिआँ मदन-बन फूल रहे हैं, आवे सोहं बास ।
मन भौंरा जिहँ अरुझ रहे हैं, सुखकी ना अभिलास ॥

ऐ हंस, अपनी पुरानी कहानी सुनाओ । तुम किस देश से आये हो, ऐ हंस, और किस घाट उतरोगे । तुम कहाँ आराम करोगे, ऐ हंस, और तुम्हें किसकी खोज है । अभी सवेरा है, ऐ हंस अब भी चेत जाओ और हमारे साथ चलो । एक ऐसी जगह है जहाँ शोक और संशय का नाम नहीं है, मौत का डर नहीं है । वहाँ कामदेव का वन फूल रहा है और ब्रह्म के साथ जीव की अभिन्नता की सुगंध फैली हुई है; वहाँ मन का भँवरा मस्ती में गुंजन कर रहा है । इसके बाद किसी और सुख की अभिलाषा नहीं है ।



१३

अनगढ़िया देवा, कौन करै तेरी सेवा ।
गढ़े देव को सब कोई पूजै, नित ही लावै सेवा ।
पूरन ब्रह्म अखंडित स्वामी, ताको न जानै भेवा ।
दस औतार निरंजन कहिए, सो अपना ना होई ।
यह तो अपनी करनी भोगैं, कर्ता और हि कोई ।
जोगी जती तपी संन्यासी, आप आपमें लड़ियाँ ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, राग लखै सो तरियाँ ॥

अनगढ़ देवता, तुझे मूर्ती का रूप नहीं दिया जा सकता, तेरी सेवा कौन करेगा । हर एक अपने हाथों से बनाये हुए देवता को पूजता है और उसकी सेवा करता है, लेकिन वह जो पूर्ण है, जो ब्रह्म है, जो अखंडित है उसका नाम कोई नहीं लेता । ये लोग दस अवतारों को मानते हैं जो मन से गढ़े गये हैं, लेकिन कोई अवतार निरंजन (ईश्वर) नहीं है । ये तो अपनी-अपनी करनी भोग रहे हैं करनेवाला तो और ही कोई है । जोगी, तपस्वी और संन्यासी सब आपस में लड़ रहे हैं । कबीर कहते हैं, सुनो भाई, जिसने प्रेम (राग) को देखा है वह तर गया है ।

۱۴

دریاؤ کی لہر دریاؤ ہے جی
دریاؤ اور لہر میں بھن کویم
اٹھے تو نیر ہے بیٹھے تو نیر ہے
کہو جو دوسرا کس طرح ہویم
اسی کا پھیر کے نام لہر دھرا
لہر کے کہے کیا نیر کھویم
جگت ہی پھیر جب جگت پر برہم میں
گیان کر دیکھ مال گویم

دریا کی موج بھی دریا ہے۔ دریا اور موج میں کوئی فرق نہیں۔ لہر اٹھے تو بھی پانی ہے، بیٹھے تو بھی پانی ہے۔ پھر یہ بتاؤ کہ بھید کہاں ہے۔ پانی کا نام بدل کر لہر رکھ دیا تو کیا پانی کھو گیا۔ دل کی آنکھیں ہوں تو دیکھو کہ برھم کے وجود میں ایک دنیا کے بعد دوسری دنیا اس طرح چل رہی ہے جیسے جپ مالا (تسبیح) کے دانے چل رہے ہوں۔

۱۵

جہاں کھیلت بسنت رتُ راج
جہاں انہد باجا بجے باج
چہُوں دس جوت کی بہے دھار
برلا جن کوئی اُترے پار
کوٹی کرشن جہاں جوڑیں ہاتھ
کوٹی وشنو جہاں ناویں ماتھ
کوٹن برھمّا پڑھیں پُران
کوٹی مہیش دھریں جہاں دھیان
کوٹی سرسوتی جہاں دھرے راگ
کوٹی اندر جہاں گگن لاگ
سُر گندھرو مُنی گنے نا جائیں
جہاں صاحب پرگٹے آئے
چوبا چندن اور ابیر
پُہپ واس رس رہیو گنبھیر

१४

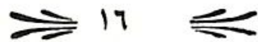
दरियावकी लहर दरियाव है जी
दरियाव और लहरमें भिन्न कोयम् ।
उठे तो नीर है बैठे तो नीर है
कहो जो दूसरा किस तरह होयम् ॥
उसीका फेरके नाम लहर धरा
लहरके कहे क्या नीर खोयम् ।
जक्त ही फेर जब जक्त परब्रह्ममें
ज्ञान कर देख माल गोयम् ॥

दरिया की लहर भी दरिया है, दरिया और उसकी लहर में कोई अंतर नहीं। लहर उठे तो भी पानी है, बैठे तो भी पानी है, फिर यह बताओ कि भेद कहाँ है। पानी का नाम बदलकर लहर रख दिया तो क्या पानी खो गया? मन की आँखें हों तो देखो, ब्रह्म के अस्तित्व में एक जगत के बाद दूसरे जगत का क्रम इस तरह चल रहा है जैसे जप की माला के दाने चल रहे हों।

१९

जहाँ खेलत बसन्त रितुराज
जहाँ अनहद बाजा बजै बाज ।
चहुँदिसि जोतिकी बहै धार
बिरला जन कोई उतरै पार ।
कोटि कृष्ण जहँ जोड़ें हाथ
कोटि विष्णु जहँ नावैं माथ ।
कोटिन ब्रह्मा पढ़ें पुरान
कोटि महेश धरैं जहँ ध्यान ।
कोटि सरस्वती जहँ धरैं राग
कोटि इन्द्र जहँ गगन लाग ।
सुर-गंधर्व-मुनि गनै न जायँ
जहँ साहब प्रगटे आय आय ।
चोवा चन्दन और अबीर
पुहप-बास रस रह्यो गँभीर ।

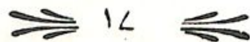
جہاں بسنت یعنی رُت کا راجہ کھیل رہا ہے ، جہاں ابدیت کا ساز بج رہا ہے ، چاروں طرف نور کی ندیاں بہہ رہی ہیں ، بہت کم لوگ اس کے پار اتر سکتے ہیں ۔ جہاں کروڑوں کرشن ہاتھ جوڑے کھڑے ہیں ، کروڑوں وشنو سجدے میں محو ہیں ، کروڑوں برہما پران پڑھ رہے ہیں ، کروڑوں مہیش گیان میں گم ہیں ، کروڑوں سرسوتیاں وینا بجانے میں مصروف ہیں ، کروڑوں اندر آسمانوں میں پھیلے ہوئے ہیں ، دیوتا گندھرو (ناچنے والے) اور مُنی ان گنت ہیں ، وہاں میرے صاحب نے اپنے اپ کو بے نقاب کیا ہے اور کائینات صندل ، عبیر اور پھولوں کی خوشبو میں بسی ہوئی ہے ۔



۱٦

جہاں چیت اچیت کھنبھ دَووُ من رچیا ہے ہنڈور
تہاں جھولیں جیو جہان ، جہاں کتہوں نہیں تھر ٹھور
اور چند ، سور دَووُ جھولیں ناہیں پاوے اَنْت
چوراسی لچھ جیو جھولیں ، جھولیں روی ، سسی دھائے
کوٹن کلْپ جُگ بیتیا ، آنے نہ کبہوں ہائے
دھرنی آکاسہُ دَووُ جھولیں ، جھولیں پونہوں نیر
دھر دیہہ ہری آپہوں جھولیں جو لکھیں داس کبیر

جہاں شعور اور لا شعور دو ستون ہیں وہاں من کا ہنڈولا ہل رہا ہے ۔ وہاں سارے جیو ، سارے جہان جھول رہے ہیں ۔ چاند اور سورج پینگ لے رہے ہیں ، جس کا کوئی انت نہیں ہے ۔ چوراسی لاکھ قالبوں میں بھٹکنے والے جیو جھول رہے ہیں ۔ کروڑوں عہد اور دور گزر رہے ہیں لیکن اُن کے منہ سے ہائے نہیں نکلتی ۔ زمین اور آسمان اور ہوا اور پانی سب جھول رہے ہیں ۔ خود ہری (وشنو) بار بار اوتار لے کر پینگیں بڑھا رہے ہیں اور اس تماشے کو داس کبیر دیکھ رہے ہیں ۔



۱۷

(۱) گرہ چندرْ تپن جوت برت ہے
سُرَت راگ نرَت تار باجے
نَو بتیا گُھرت ہے ، رین دن سُن ْمیں
کہیں کبیر پیو گگن گاجے

जहाँ ऋतुराज बसंत खेल रहा है, जहाँ अनहद बाजा बज रहा है, चारों ओर प्रकाश की नदियाँ बह रही हैं, बहुत कम लोग उसके पार उतर सकते हैं; करोड़ों कृष्ण जहाँ हाथ जोड़े खड़े हैं, करोड़ों विष्णु जहाँ माथा टेकते हैं, करोड़ों ब्रह्मा पुराण पढ़ रहे हैं, करोड़ों महेश जहाँ ध्यान में लीन हैं, करोड़ों सरस्वतियाँ अपनी वीणा बजाने में मगन हैं, करोड़ों इंद्र जहाँ आकाश में फैले हुए हैं, जहाँ अनगिनत देवता, गंधर्व और मुनि हैं, वहाँ मेरे साहब ने अपने आपको प्रगट किया है और सारी सृष्टि में चंदन, अबीर और फूलों की सुगंध बसी हुई है।

≥ १६ ≤

जहँ चेत-अचेत खंब दोउ मन रच्या है हिंडोर।
तहँ झूलैं जीव जहान, जहँ कतहुँ नहिं थिर ठौर॥
और चन्द-सूर दोऊ झूलै नाहीं पावै अन्त।
चौरासी लच्छहु जिव झूलैं झूलैं रवि-ससि धाय।
कोटिन कल्प जुग बीतिया आने न कबहुँ हाय।
धरनी अकासहु दोऊ झूलैं झूलैं पवनहुँ नीर।
धरि देह हरि आपहुँ झूलैं जो लखहीं दास कबीर।

जहाँ चेतन और अचेतन दो खंबे हैं वहाँ मन का हिंडोला हिल रहा है। वहाँ सारे जीव और सारे जहान झूल रहे हैं। चाँद और सूरज पेंग ले रहे हैं, जिसका कोई अंत नहीं है। चौरासी लाख योनियों में भटकने वाले जीव झूल रहे हैं और चाँद-सूरज भाग-भागकर झूल रहे हैं। करोड़ों युग और कल्प बीत रहे हैं लेकिन उनके मुँह से कभी हाय नहीं निकलती। पृथ्वी और आकाश और हवा और पानी सब झूल रहे हैं। स्वयं हरि (विष्णु) बार बार अवतार लेकर पेंगें बढ़ा रहे हैं और इस तमाशे को कबीरदास देख रहे हैं।

≥ १७ ≤

(१) ग्रह चंद्र तपन जोत बरत है
सुरत राग निरत तार बाजै।
नौबतिया घुरत है रैन दिन सुन्नमें
– कहैं कबीर पिउ गगन गाजै॥

سورج، چاند اور تاروں کے چراغ جل رہے ہیں۔ پریم کا راگ بیراگ (بے تعلقی) کے تال اور سر پر بلند ہو رہا ہے۔ فضاؤں میں رات دن نوبت بج رہی ہے، اور کبیر کہتے ہیں کہ میرا پریتم آسمانوں میں بجلی کی طرح چمک رہا ہے۔

(۲) چھن اور پلک کی آرتی کون سی
رَین دن آرتی وِشو گاوے
گھرت نسّان تہاں گیب کی جھالرا
گیب کی گھنٹ کا ناد آوے

وہاں لمحے بھر کی اور پل بھر کی آرتی کہاں۔ سارا سنسار رات دن آرتی اتارتا ہے اور گیت گاتا ہے۔ طبل اور نشان بج رہے ہیں، جھلمل جیوتی کی غیبی جھالر جگمگا رہی ہے، غیب کے گھنٹوں کی آواز آرہی ہے۔

(۳) کہیں کبیر تہاں رین دن آرتی
جگت کے تکھت پر جگت سائیں
کرم او بھرم سنسار سب کرت ہے
پیو کی پرکھ کوئی پریمی جانے
سُرت او نرت دھار من میں پکڑکر
گنگ اور جمن کے گھاٹ آنے
نیر نرمل تہاں رین دن جھرت ہے
جنم او مرن تب انت پائی

کبیر کہتے ہیں کہ وہاں رات اور دن اپنے چراغوں کو گردش دے رہے ہیں۔ جگت کے تخت پر جگت کا مالک بیٹھا ہوا ہے۔ سارا سنسار کرم اور بھرم (کام اور غلطی) میں مبتلا ہے۔ ایسے پریمی کم ہیں جو پریتم کو پہچانتے ہوں۔ اصلی عاشق وہ ہے جو اپنے دل میں پریم (تعلق) اور بیراگ (بے تعلقی) کی لہروں کو اس طرح ملا لیتا ہے جیسے گنگا اور جمنا کے دھارے مل جاتے ہیں۔ اس کے دل میں یہ مقدس پانی ہمیشہ بہتا رہتا ہے تب کہیں جاکر جنم اور مرن، موت اور زندگی کا انت ہوتا ہے۔

(۴) دیکھ ووجود میں عجب بسرام ہے
ہوئے موجود تو سہی پاوے

सूरज, चाँद और सितारों के दीपक बुझ रहे हैं। प्रेम का राग वैराग्य के ताल और सुर पर ऊँचा उठ रहा है। शून्य में दिन-रात नौबत बज रही है। और, कबीर कहते हैं, मेरा प्रीतम आकाश में बिजली की तरह चमक रहा है।

(२) क्षण और पलककी आरती कौनसी
रैन-दिन आरती विस्व गावै।
घुरत निस्सान तहँ गैबकी झालरा
गैबकी घंटका नाद आवै।

वहाँ क्षण भर की और पल भर की आरती कहाँ, वहाँ तो सारा संसार रात-दिन आरती उतारता है और गीत गाता है। झिलमिलाती हुई गैब की (रहस्यमयी, दैवी) झालर जगमगा रही है, गैब के घंटों की आवाज़ आ रही है।

(३) कहें कबीर तहँ रैन-दिन आरती
जगत के तख्तपर जगत साईं ॥
कर्म और भर्म संसार सब करत है
पीवकी परख कोई प्रेमी जानै ॥
सुरत औ' निरत धार मनमें पकड़ कर
गंग और जमन के घाट आनै ॥
नीर निर्मल तहाँ रैन-दिन झरत है
जनम औ' मरन तब अन्त पाई ॥

कबीर कहते हैं कि वहाँ दिन और रात अपने दीपकों से आरती उतारते हैं और जगत के तख्त पर जगत का स्वामी बैठा हुआ है। सारा संसार कर्म और भ्रम में फँसा हुआ है, ऐसे प्रेमी कम हैं जो प्रीतम को पहचानते हों। असली प्रेमी वह है जो अपने हृदय में प्रेम और वैराग्य की लहरों को इस तरह मिला लेता है जैसे गंगा और जमुना के धारे मिल जाते हैं। यह निर्मल पानी हमेशा बहता रहता है तब कहीं जाकर जन्म और मरण का अंत होता है।

(४) देख वोजूदमें अजब बिसराम है
होय मौजूद तो सही पावै।

سُرت کی ڈور سُکھ سِند کا جھولنا
گھوَر کی سور تہاں ناد گاوے
نیر ون کنول تہاں دیکھ اتِ پھولیا
کہیں کبیر من بھنور چھاوے

دیکھ وجود میں کیسا آرام ہے. اس کا لطف وہی اٹھا سکتا ہے جو وجود کو محسوس کرسکے. پریم کی ڈوریاں ہیں اور سکھ کے ساگر کا جھولا ہے جو پینگیں لے رہا ہے، لفظ وہاں بادلوں کی طرح گرج رہے ہیں، ایک عظیم الشان نغمہ بلند ہورہا ہے، وہاں بغیر پانی کے کنول کھلا ہوا دکھائی دیتا ہے اور کبیر کہتے ہیں کہ من کا بھونرا اس کا رس پی رہا ہے.

(۵) چکّر کے بیچ میں کنول ات پُھولیا تاس ُ کا سُکھ کوئی سنت جانے
شبد کی گھور چھوں اور تہاں ہوت ہے، اسیم سمندر کی سکھ مانے
کہیں کبیر یوں ڈوب سُکھ سندھ میں، جنم اور مرن کا بھرم بھانے

کائینات کے چکّر کے دل میں کیسا حسین کنول کھلا ہوا ہے، اس کا لطف کچھ سنت ہی اٹھاسکتے ہیں (جن کی روحیں پاک ہیں) نغمے (شبد = لفظ) کی گھٹائیں چاروں طرف چھائی ہوئی ہیں اور دل ایک بیکراں سمندر کی مسرت میں ڈوبا ہوا ہے. کبیر کہتے ہیں کہ اس سُکھ ساگر میں اس طرح ڈوب جاؤ کہ زندگی اور موت کا بھرم باقی نہ رہ جائے.

(٦) پانچ کی پیاس تہاں دیکھ پوری بھئی، تین کی تاپ تہاں لگے ناہیں
کہے کبیر یہ اگم کا کھیل ہے گیب کا چاندنا دیکھ ماہیں
جنم مرن جہاں تاری پرت ہے، ہوت آنند تہاں گگن گاجے
اُٹھت جھنکار تہاں ناد ان حد گُھرے ترلوک محل کے پریم باجے

دیکھو وہاں پانچوں لذتوں (شبد، سپرش. روپ. رس، گندھ) کی پیاس بجھ گئی ہے اور تینوں دکھوں (مادی، روحانی، ذہنی) کا بخار اتر گیا ہے. یہ عقل و فہم سے بالاتر (اگم) کا کھیل ہے. دیکھو تمہارے وجود میں غیب کی چاندنی ہے. وہاں زندگی اور موت کی تالیاں مسلسل بج رہی ہیں، مسرت کی روشنی آسمانوں میں پھیلی ہوئی ہے، ایک ابدی نغمے کی جھنکار سنائی دے رہی ہے اور تراوک محل (تین دنیاؤں کا ایوان) کے پریم باجے بج رہے ہیں.

—

सुरतकी डोर सुख-सिधका झूलना
घोरकी सोर तँह नाद गावै ।
नीर-विन कँवल तहँ देख अति फूलिया
कहैं कबीर मन भँवर छावै ।

देख अस्तित्व (वजूद) में कैसा आराम है । इसका आनंद वही उठा सकता है जो अस्तित्व को अनुभव कर सके । प्रेम की डोरियाँ हैं और सुख के सागर का झूला है जो पेंगें ले रहा है । शब्द वहाँ बादलों की तरह गरज रहे हैं, एक भव्य गीत (नाद) गूँज रहा है । वहाँ बिना पानी के कमल खिला हुआ दिखायी देता है और कबीर कहते हैं कि मन का भँवरा उसका रस पी रहा है ।

(५) चक्रके बीजमें कँवल अति फ़लिया तासुका सुक्ख कोइ सन्त जानै ।
शब्दकी घोर चहुँ ओर तहँ होत है असीम समुंदरकी सुक्ख मानै ।
कहै कबीर यों डूब सुख-सिंधमें जन्म और मरनका भर्म भानै ।

सृष्टि के चक्र के बीच में कैसा सुंदर कमल खिला हुआ है । इसका आनंद कुछ संत ही उठा सकते हैं (जिनकी आत्मा पवित्र है), शब्द की घटाएँ चारों ओर छायी हुई हैं और दिल एक अथाह सागर के सुख में डूबा हुआ है। कबीर कहते हैं कि इस सुख-सागर में इस तरह डूब जाओ कि जिंदगी और मौत का भ्रम बाक़ी न रह जाये ।

(६) पाँचकी प्यास तहँ देख पूरी भई तीन की ताप तहँ लगै नाहीं ।
कहै कबीर यह अगमका खेल है गैबका चाँदना देख माहीं ।
जनम-मरन जहाँ तारी परत है होत आनंद तहँ गगन गाजै ।
उठत झनकार तहँ नाद अनहद घुरै तिरलोक-महलके प्रेम बाजै ।

देखो वहाँ पाँचों विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) की प्यास बुझ गयी है और तीनों दुखों का ताप उतर गया है । यह अगम का खेल है । देखो, तुम्हारे अस्तित्व में ग़ैब की चाँदनी है । वहाँ ज़िंदगी और मौत की तालियाँ दिन-रात बज रही हैं । आनंद की ध्वनियों से आकाश गूंज उठा है, अन्हद नाद की झंकार सुनायी दे रही है और तीनों लोक के प्रेम के बाजे बज रहे हैं ।

(۷) چندر تپن کوٹِ دیپ برت ہے، تور باجے تہاں سنت جھولے
پیار جھنکار تہاں نور برست رہے، رس پیوے تہاں بھگت جھولے

چاند اور سورج کے کروڑوں چراغ جل رہے ہیں نقارے بج رہے ہیں اور عاشق (سنت) پینگ بڑھا رہا ہے۔ پریم کا گیت گونج رہا ہے، نور برس رہا ہے، اور پجاری (بھگت) بھگتی کا رس پی کر جھوم رہا ہے۔

(۸) جنم مرن بیچ دیکھہ انتر نہیں
دَچھہ اور بام یوں ایک آہیں
کہیں کبیر یا سین گونگا تئیں
وید کتیب کی گمّ ناہیں

زندگی اور موت کے درمیان کوئی فرق نہیں ہے۔ داہنا اور بایاں ہاتھ ایک ہی ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ یہاں محرم راز گونگا ہوجاتا ہے۔ یہ وہ صداقت ہے جو ویدوں اور کتابوں میں نہیں ملتی (صرف محسوس کی جاسکتی ہے)۔

(۹) آدھر آسن کیا اگم پیالا پیا
جوگ کی مول جگ جُگتی پائی
پنتھہ بن جائے چل سہر بیگم پرے
دَیا جگدیو کی سہج آئی
دھیان دھر دیکھیا، نین بن پیکھیا
اگم اگادھہ سب کہت گائی
سہر بیگم پُرا گمّ کو نالہے
ہوئے بیگمؔ جو گمّ پاوے
گُنا کی گمؔ نا عجب بسرام ہے
سین جو لکھے سوئی سین گاوے

میں نے شونیہ کے (خلاؤں میں معلق) آسن پر بیٹھ کر سادھنا کے ناقابلِ بیان رس کا پیالہ پیا۔ اب میں اسرار کا محرم ہوں اور وحدت کے راز کا سمجھنے والا ہوں۔ راہ کے بغیر چل کر میں اُس شہر میں پہونچ گیا ہوں جہاں کوئی غم نہیں ہے۔ (بیگم پورا = بے غم پور) جگدیو کا رحم اور کرم آسانی سے نصیب ہوگیا ہے۔ میں نے دھیان دھر کے دیکھا تو وہ بغیر آنکھوں کے نظر آگیا جو لامحدود ہے، جسے لوگ

(७) चन्द्र-तपन कोटि दीप बरत हैं तूर बाजै तहाँ सन्त झूलै ।
प्यार झनकार तहँ नूर बरसत रहै रस पीवै तहँ भक्त झूलै ।

चाँद और सूरज के करोड़ों दीप जल रहे हैं, नक़्क़ारे बज रहे हैं और संत (प्रेमी) पेंग बढ़ा रहे है । प्रेम का गीत गूंज रहा हैं, नूर (दैवी ज्योति) बरस रहा है और भक्त भक्ति का रस पीकर झूम रहा है ।

(८) जनम-मरन बीच देख अन्तर नहीं
दच्छ और बाम यूं एक आहीं ।
कहें कबीर या सैन गूंगातई
वेद कत्तेबकी गम्म नाहीं ॥

जीवन और मृत्यु के बीच कोई अंतर नहीं है । दाहिना और बायाँ हाथ एक ही हैं । कबीर कहते हैं कि यहाँ बड़े से बड़ा मर्मज्ञानी भी गूँगा हो जाता है । यह वह सच्चाई है जो वेदों और किताबों में नहीं मिलती (केवल अनुभव की जाती है ।

(९) अधर आसन किया अगम प्याला पिया
जोगकी मूल जग जुगुति पाई ।
पंथ बिन जाय चल सहर बेगमपुरे
दया जगदेवकी सहज आई ।
ध्यान धर देखिया नैन-बिन पेखिया
अगम अगाध सब कहत गाई ।
सहर बेगमपुरा गम्मको ना लहै ।
होय बेगम्म जो गम्म पावै ।
गुनाकी गम्म ना अजब बिसराम है
सैन जो लखै सोइ सैन गावै ।

मैंने शून्य के आसन पर बैठकर अगम का प्याला पिया । अब मैं मर्मज्ञानी हूँ और राह के बिना चलकर मैं उस शहर में पहुँच गया हूँ जहाँ कोई दुख नहीं है । जगदेव की कृपा दृष्टि सहज ही मिल गयी है । मैंने ध्यान धरके देखा तो वह बिना आँखों के नजर आगया जिसे सब लोग अगम और अगाधी कहते हैं । यह स्थान दु:खों से मुक्त है । यहाँ पहुँचने का कोई रास्ता नहीं है

نا رسائی کی منزل کہتے ہیں ۔ یہ مقام غموں سے آزاد ہے ۔ یہاں پہونچنے کا کوئی راستہ نہیں ہے لیکن جس نے غم پایا وہی بے غم ہوگیا ۔ یہاں عجب آرام ہے ۔ دانش مند وہ ہے جس نے یہ مقام دیکھا ہے ۔ دانش مند وہ ہے جس نے اس کا گیت گایا ہے ۔

(۱۰) مکھہ بانی تکو سواد کیسے کہے
سواد پاوے سوئی سکھہ مانے
کہیں کبیر یا سین گونگا تئیں
ہوئے گونگا جوئی سین جانے

یہ حرف آخر ہے ، مگر اس کا مزا کیسے بیان کیا جائے ۔ جس نے مزا چکھا ہے وہی اس لذت کو جانتا ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس سے لذت اندوز ہونے کے بعد جاہل دانش مند بن جاتا ہے اور دانش مند خاموش ہوجاتا ہے ۔

(۱۱) چھکیاں اَوُدھوت مستان ماتا رہے
گیان وَیراگیہ سُدھ لیا پورا
سوانس اُسوانس کا پریم پیالا پیا
گگن گرجے تہاں بجے تورا

اَوُدھوت (جوگی) نشے میں چور ہے ۔ گیان (علم) اور ویراگیہ (بے تعلقی) کی تکمیل ہوگئی ہے ۔ آتی جاتی سانس کا پریم پیالا اس نے پیا ہے ۔ سارا آکاش سنگیت سے بھرا ہوا ہے ۔

(۱۲) بن کر تانتیا ناد گاتا رہے
جتن جرنا لیا سدا کھیلے
کہے کبیر پران سندھ میں ملاوے
پرم سُکھ دھام تہاں پران میلے

انگلیوں کی مضراب کے بغیر تاروں سے نغمے نکل رہے ہیں ۔ عیش اور غم کا کھیل جاری ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ جو کوئی اپنی زندگی کو زندگی کے سمندر میں ملا دیتا ہے اس کی روح مہا آنند میں ڈوب جاتی ہے ۔

(۱۳) آٹھوں پہر متوال لاگی رہے
آٹھوں پہر کی چھاک پیوے

लेकिन जिसने ग़म पाया वही बे-ग़म हो गया यहाँ अजब आराम है । जिसने यह स्थान देखा है वही ज्ञानी है, ज्ञानी वही है जिसने उसका गीत गाया है।

(१०) मुक्ख बानी तिको स्वाद कैसे कहै
स्वाद पावै सोइ सुक्ख मानै ।
कहैं कबीर या सैन गूंगातंई
होय गूंगा जोई सैन जाने ।

यह परम सत्य है लेकिन इसका सुख वर्णन कैसे किया जाय । जिसने इसका आनंद लिया है वही इस स्वाद को जानता है । कबीर कहते हैं कि इसका स्वाद लेने के बाद अज्ञानी ज्ञानी बन जाता है और ज्ञानी चुप हो जाता है ।

(११) छक्याँ अवधूत मस्तान माता रहै
ज्ञान-वैराग्य सुधि लिया पूरा ।
स्वाँस-उस्वाँसका प्रेम प्याला पिया
गगन गरजै तहाँ बजै तूरा ॥

अवधूत (जोगी) नशे में चूर है । ज्ञान और वैराग्य अपनी चरमावस्था को पहुंच गये हैं। आती-जाती साँस का प्रेम-प्याला उसने पिया है। सारा आकाश संगीत से भरा हुआ है ।

(१२) बिन कर ताँतिया नाद गाता रहै
जतन जरना लिया सदा खेलै ।
कहै कबीर प्रान प्रान-सिंधमें मिलावै
परम सुखधाम तहँ प्रान मेलै ॥

बिना हाथ और वीणा (तंत्री) के नाद गूँज रहा है । सुख और दुख का खेल जारी है । कबीर कहते हैं कि जो कोई अपनी जिंदगी को जिंदगी के समुद्र में मिला देता है उसकी आतमा महा आनंद में लीन हो जाती है ।

(१३) आठहू पहर मतवाल लागी रहै
आठहू पहरकी छाक पीवै ।

آٹھوں پہر مستان ماتا رہے
برہم کے دیہہ میں بھگت جیوے

آٹھوں پہر کا متوالا پن ہے، آٹھوں پہر جام پر جام چل رہے ہیں آٹھوں پہر سر مستی چھائی رہتی ہے، برہم کے جسم میں بھگت زندہ ہے۔

(۱۴) سانچ ہی کہت اور سانچ ہی گہت ہے
کانچ کوں تیاگ کر سانچ لاگا
کہیں کبیر یوں بھگت نربھئے ہوا
جنم اور مرن کا بھرم بھاگا

سچ ہی کہتا ہے اور سچ ہی کو اپناتا ہے۔ جھوٹی چمک دمک کو چھوڑ کر سچ ہی کا ساتھ دیتا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس طرح بھگت نڈر ہوجاتا ہے تو زندگی اور موت کا بھرم باقی نہیں رہتا۔

(۱۵) گگن گرجے تہاں سدا پاوس جھرے
ہوت جھنکار نت بجت تورا
گگن کے بھون میں گیب کا چاندنا
اُدے اور استت کا ناؤں ناہیں
دوس اور رین تہاں نیک نہیں پائیے
پریم، پرکاس کے سندھ ماہیں

وہاں گگن گرجتا ہے اور نور کی جھڑی لگی رہتی ہے۔ تاروں میں جھنکار ہوتی ہے اور نقارے بجتے ہیں۔ عرش کے محل میں غیب کی چاندنی پھیلتی ہے۔ طلوع اور غروب کا نام بھی نہیں ہے۔ عشق کا نور (ظہور) ایک سمندر ہے جس میں دن اور رات کا وجود نہیں۔

(۱۶) سدا آنند دُکھ دند ویاپے نہیں
پورنا نند بھرپور دیکھا
بھرم اور بھرانت تہاں نیک نہیں پائیے
کہیں کبیر رس ایک پیکھا

صرف سرور ہی سرور ہے۔ نہ دکھ ہے نہ کشمکش۔ وہاں میں نے بھرپور آنند دیکھا ہے۔ وہاں غلطی کی کوئی گنجائش نہیں ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ وہاں صرف وحدت کا جلوہ دکھائی دیتا ہے۔

आठहू पहर मस्तान माता रहै
ब्रह्मके देहमें भक्त जीवै ।

आठों पहर का मतवालापन है, आठों पहर जाम पर जाम चल रहे हैं । आठों पहर सरमस्ती छायी रहती है । ब्रह्म के शरीर में भक्त जीवित है ।

(१४) साँच ही कहत और साँच ही गहत है
काँचकूँ त्यागकर साँच लागा ।
कहैं कबीर यूं भक्त निर्भय हुआ
जन्म और मरनका भर्म भागा ।

सच ही कहता है और सच ही को अपनाता है । झूठी चमक-दमक को छोड़ कर सच ही का साथ देता है । कबीर कहते हैं कि इस तरह भक्त निडर हो जाता है तो जीवन-मरण का भ्रम बाकी नहीं रहता ।

(१५) गगन गरज तहाँ सदा पावस झरै
होत झनकार नित बजत तूरा ।
गगनके भवनमें गैबका चाँदना
उदय और अस्तका नाँव नाहीं ।
दिवस और रैन तहँ नेक नहिं पाइये
प्रेम, परकासके सिंधमाहीं ॥

वहाँ आकाश गूँजता है और नूर (ज्योति) की वर्षा होती रहती है, तारों में झंकार होती है और नक्कारे बजते हैं । गगन के महल में गैब की चाँदनी (दिव्य ज्योति) फैली हुई है, उदय और अस्त का नाम भी नहीं है । प्रेम का प्रकाश एक सागर है जिसमें दिन और रात का नाम नहीं ।

(१६) सदा आनंद दुग-दन्द व्यापै नहीं
पूरनानंद भरपूर देखो ।
भर्म और भ्रांति तहँ नेक नहिं पाइये
कहैं कबीर रस एव पेखा ॥

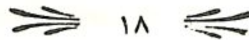
केवल आनंद ही आनंद है, न दुख है न द्वंद्व । वहाँ मैंने भरपूर आनंद देखा है । वहाँ भ्रम की कोई गुंजाइश नहीं है । कबीर कहते हैं कि वहाँ सिर्फ़ एक रस दिखायी देता है ।

(۱۷) کھیل برھمانڈ کا پنڈ میں دیکھیا
جگت کی بھرمنا دور بھاگی
باہرا بھیترا ایک آکاس وت
دھریا میں آدھر بھرپور لاگی

میں نے اپنے وجود (جسم) میں کائنات کا ہنگامہ دیکھا ہے اور مجھے دنیاوی غلطیوں سے نجات مل گئی ہے، خارجی اور داخلی وجود سے ایک آسمان بن گیا ہے، محدود اور لامحدود متحد ہوگئے ہیں۔

(۱۸) دیکھ دیدار مستان میں ہوئے رہیا
سکل بھرپور ہے نور تیرا
گیان کا تھال اور پریم دیپک اہے
اُدھر آسن کیا اگم ڈیرا
کہیں کبیر تہاں بھرم بھاسے نہیں
جنم اور مرن کا مٹا پھیرا

میں دیدار کی شراب سے مست ہوگیا ہوں، تیرا نور بھرپور شکل میں ظاہر ہوتا ہے۔ گیان کی تھال میں پریم کا دیا جل رہا ہے۔ شونیہ کے آسن پر سادھنا کا ڈیرا ہے۔ کبیر کہتے ہیں وہاں غلطی کا وجود نہیں اور زندگی اور موت کی کشمکش ختم ہوچکی ہے۔



مدھ اکاس آپ جہاں بیٹھے، جوت سبد اُجیارا ہو
سیت سروپ راگ جہاں پھولے، سائیں کرت بہارا ہو
کوٹن چندر سور چھپ جیہیں، ایک روم اُجیارا ہو
وہی پار ایک نگر بستُ ہے، برست امرت دھارا ہو
کہیں کبیر سنو دھرم داسا، لکھو پُرش دربارا ہو

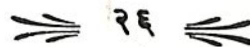
وسط آسمان میں جہاں خود بھگوان براجماں ہیں۔ چمکتے دمکتے لفظوں کا اجالا ہے (صوت سرمدی کا نور پھیلا ہوا ہے) جہاں سفید راگ پھول کی طرح کھل رہا ہے۔ مالک کے وجود کی بہار ہے۔ اس کے ایک روئیں کی روشنی کے سامنے کروڑوں چاند سورج ماند پڑجاتے ہیں۔ اُس پار ایک نگر بسا ہوا ہے جہاں ہر وقت امرت کی دھار برس رہی ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اے دھرم داس آؤ اور میرے مالک کا دربار دیکھو

(१७) खेल ब्रह्माण्डका पिंडमें देखिया
जगतकी भरमना दूर भागी।
बाहरा-भीतरा एक आकासवत
घरियामें अधर भरपूर लागी ॥

मैंने अपने पिंड (शरीर) में ब्रह्माण्ड का खेल देखा है और मुझे इस संसार के भ्रमों से मुक्ति मिल गयी है। बहिर्मुखी और अंतर्मुखी प्रवृतियाँ मिलकर एक आकाश बन गयी हैं। सीमित और असीम दोनों एक हो गये हैं।

(१८) देख दीदार मस्तान मैं होय रह्या
सकल भरपूर है नूर तेरा।
ज्ञानका थाल और प्रेम दीपक अहै
अधर आसन किया अगम डेरा।
कहैं कबीर तहँ भर्म भासे नहीं
जनम और मरनका मिटा फेरा ॥

मैं दीदार (दर्शन) की शराब से मस्त हो गया हूँ। तेरा नूर (ज्योति) भरपूर प्रकट हुआ है। ज्ञान की थाली में प्रेम का दीपक जल रहा है। शून्य के आसन पर साधना का डेरा है। कबीर कहते हैं कि वहाँ भ्रम का अस्तित्व नहीं है और जीवन-मरण का चक्कर खत्म हो चुका है।



मद्ध अकास आप जहँ बैठे, जोत सब्द उजियारा हो।
सेत सरूप राग जहँ फूलै, साईं करत बिहारा हो।
कोटिन चन्द-सूर छिप जैहैं, एक रोम उजियारा हो।
वही पार एक नगर बसतु है, बरसत अमृत-धारा हो।
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, लखो पुरुष दरबारा हो।

बीच आकाश में जहाँ स्वयं भगवान विराजमान हैं, ज्योति-सम शब्द का उजाला है, जहाँ उज्जवल राग फूलों की तरह खिल रहा है, जहाँ प्रभु विहार करते हैं। उसके एक रोम के प्रकाश के आगे करोड़ों चाँद-सूरज की रोशनी मंद पड़ जाती है। उस पार एक नगर बसा हुआ है जहाँ हर समय अमृत की धार बरस रही है। कबीर कहते हैं कि, ऐ धर्म के पुजारियो, आओ और मेरे प्रभु का दरबार देखो।

(۱۷) کھیل برھمانڈ کا پنڈ میں دیکھیا

جگت کی بھرمنا دور بھاگی

باہرا بھیترا ایک آکاس وت

دھریا میں آدھر بھرپور لاگی

میں نے اپنے وجود (جسم) میں کائنات کا ہنگامہ دیکھا ہے اور مجھے دنیاوی غلطیوں سے نجات مل گئی ہے، خارجی اور داخلی وجود سے ایک آسمان بن گیا ہے، محدود اور لا محدود متحد ہوگئے ہیں۔

(۱۸) دیکھ دیدار مستان میں ہوئے رہیا

سکل بھرپور ہے نور تیرا

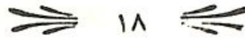
گیان کا تھال اور پریم دیپک اہے

آدھر آسن کیا اگم ڈیرا

کہیں کبیر تہاں بھرم بھاسے نہیں

جنم اور مرن کا مٹا پھیرا

میں دیدار کی شراب سے مست ہوگیا ہوں، تیرا نور بھرپور شکل میں ظاہر ہوتا ہے۔ گیان کی تھال میں پریم کا دیا جل رہا ہے۔ شونیہ کے آسن پر سادھنا کا ڈیرا ہے۔ کبیر کہتے ہیں وہاں غلطی کا وجود نہیں اور زندگی اور موت کی کشمکش ختم ہوچکی ہے۔



مدّھ اکاس آپ جہاں بیٹھے، جوت سبد اُجیارا ہو

سیت سروپ راگ جہاں پھولے، سائیں کرت بہارا ہو

کوٹن چندر سور چھپ جیہیں، ایک روم اُجیارا ہو

وہی پار ایک نگر بست ہے، برست امرت دھارا ہو

کہیں کبیر سنو دھرم داسا، لکھو پرش دربارا ہو

وسط آسمان میں جہاں خود بھگوان براجماں ہیں۔ چمکتے دمکتے لفظوں کا اجالا ہے (صوت سرمدی کا نور پھیلا ہوا ہے) جہاں سفید راگ پھول کی طرح کھل رہا ہے۔ مالک کے وجود کی بہار ہے۔ اس کے ایک روئیں کی روشنی کے سامنے کروڑوں چاند سورج ماند پڑجاتے ہیں۔ اُس پار ایک نگر بسا ہوا ہے جہاں ہر وقت امرت کی دھار برس رہی ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اے دھرم داس آؤ اور میرے مالک کا دربار دیکھو

(१७) खेल ब्रह्माण्डका पिंडमें देखिया
जगतकी भरमना दूर भागी।
बाहरा-भीतरा एक आकासवत
धरियामें अधर भरपूर लागी ॥

मैंने अपने पिंड (शरीर) में ब्रह्माण्ड का खेल देखा है और मुझे इस संसार के भ्रमों से मुक्ति मिल गयी है। बहिर्मुखी और अंतर्मुखी प्रवृतियाँ मिलकर एक आकाश बन गयी हैं। सीमित और असीम दोनों एक हो गये हैं।

(१८) देख दीदार मस्तान मैं होय रह्या
सकल भरपूर है नूर तेरा।
ज्ञानका थाल और प्रेम दीपक अहै
अधर आसन किया अगम डेरा।
कहैं कबीर तहँ भर्म भासे नहीं
जनम और मरनका मिटा फेरा ॥

मैं दीदार (दर्शन) की शराब से मस्त हो गया हूँ। तेरा नूर (ज्योति) भरपूर प्रकट हुआ है। ज्ञान की थाली में प्रेम का दीपक जल रहा है। शून्य के आसन पर साधना का डेरा है। कबीर कहते हैं कि वहाँ भ्रम का अस्तित्व नहीं है और जीवन-मरण का चक्कर खत्म हो चुका है।

२६

मद्ध अकास आप जहँ बैठे, जोत सब्द उजियारा हो।
सेत सरूप राग जहँ फूलै, साईं करत बिहारा हो।
कोटिन चन्द-सूर छिप जैहैं, एक रोम उजियारा हो।
वही पार एक नगर बसतु है, बरसत अमृत-धारा हो।
कहैं कबीर सुनो ध्रमदासा, लखो पुरुष दरबारा हो।

बीच आकाश में जहाँ स्वयं भगवान विराजमान हैं, ज्योति-सम शब्द का उजाला है, जहाँ उज्जवल राग फूलों की तरह खिल रहा है, जहाँ प्रभु विहार करते हैं। उसके एक रोम के प्रकाश के आगे करोड़ों चाँद-सूरज की रोशनी मंद पड़ जाती है। उस पार एक नगर बसा हुआ है जहाँ हर समय अमृत की धार बरस रही है। कबीर कहते हैं कि, ऐ धर्म के पुजारियो, आओ और मेरे प्रभु का दरबार देखो।

۱۹

پرماتم گُرو نکٹ وِراجیں
جاگ جاگ من میرے
دھائے کے پیتم چرنن لاگے
سائیں کھڑا سِر تیرے
جُگن جُگن تو نہ سووت بیتا
اجھو نہ جاگ سبیرے

دیکھ پرماتما روپی گرو تیرے پاس ہی ہے اے میرے من اب تو جاگ جا۔ دوڑ کے پریتم کے پیر چھولے دیکھ تیرا سائیں تیرے سر پر کھڑا ہوا ہے۔ تجھے سوتے سوتے جُگ بیت گئے کیا آج کی صبح بھی تو نیند سے بیدار نہیں ہوگا۔

۲۰

من تو پار اُتر کہاں جیہو
آگے پنتھی پنتھ نہ کوئی، کوچ مُکام نہ پیہو
نہیں تہاں نیر، ناؤ نہیں کھیوٹ، نا گُن کھینچن ہارا
دھرنی گگن کلپ کچھُ ناہیں، نا کچھُ وار نہ پارا
نہیں تن، نہیں من، نہیں اپن پوسن میں سدھ نہ پیہو
بلی وان ہوئے پیٹھو گھٹ میں، واہیں ٹھور یں ہوئیہو
بارہ بار بچار دیکھ من، انت کہوں مت جیہو
کہیں کبیر سب چھاڑِ کلپنا، جیوں کے تیو ٹھہریہو

اے میرے دل تو پار اُتر کر کہاں جائے گا۔ تیرے سامنے نہ تو کوئی رہرو ہے نہ راہ۔ نہ کوچ ہے نہ مقام۔ وہاں نہ تو پانی ہے، نہ کوئی ناؤ، نہ کھیون ہارا۔ ناؤ کے باندھنے کے لئے رسی بھی نہیں ہے اور کوئی اسے کنارے کھینچنے والا بھی نہیں ہے۔ زمین، آسمان، وقت (زمان و مکان) سب ناپید ہیں۔ آر پار کچھ نہیں۔ نہ تن ہے نہ من نہ کوئی مقام جہاں روح کی پیاس بجھ سکے۔ شونیہ کے سناٹے اور خلا میں کچھ بھی تو نہیں ہے۔ ہمت سے کام لے اور اپنے گھٹ میں داخل ہوجا (دیکھیے نظم نمبر ٦) وہیں کوئی ٹھور ٹھکانہ ملے گا۔ خوب سوچ لے

१९

परमातम गुरु निकट विराजैं
जाग जाग मन मेरे।
धायके पीतम चरनन लागै
साईं खड़ा सिर तेरे।
जुगन जुगन तोंहिं सोवत बीता
अजहु न जाग सबेरे।

देख, परमात्मा-रूपी गुरु तेरे पास ही है। ऐ मेरे मन, अब तू जाग जा, दौड़ कर प्रीतम के पैर छू ले। देख, तेरा साईं तेरे सिरहाने खड़ा हुआ है। तुझे सोते सोते युग बीत गये। क्या आज की सुबह भी तेरी नींद नहीं खुलेगी।

२०

मन, तू पार उतर कहँ जैहौ।
आगे पंथी पंथ न कोई, कूच-मुकाम न पैहौ।
नहिं तहँ नीर, नाव नहिं खेवट, ना गुन खैंचनहारा।
धरनी-गगन-कल्प कछु नाहीं, ना कछु वार न पारा।
नहिं तन, नहिं मन, नहीं अपनपौ सुन्नमें सुद्ध न पैहौ।
बलीवान होय पैठो घटमें, वाहीं ठौरै होइहौ।
बार हि बार बिचार देख मन, अंत कहूँ मत जैहौ।
कहैं कबीर सब छाड़ि कलपना, ज्योंके त्यों ठहरैहौ॥

ऐ मेरे दिल, तू पार उतर कर कहाँ जायेगा। तेरे सामने न तो कोई राही है न कोई राह। न कूच है न पड़ाव। वहाँ न तो पानी है, न कोई नाव, न खेवनहारा। नाव को बाँधने के लिए रस्सी भी नहीं है और कोई उसे किनारे खींचने वाला भी नहीं है। पृथ्वी, आकाश, कल्प (काल) कुछ भी नहीं है। आर पार कुछ नहीं है — न तन है न मन, न कोई ऐसी जगह जहाँ आत्मा की प्यास बुझ सके। शून्य के निर्जन विस्तार में कुछ भी तो नहीं है। हिम्मत से काम ले और अपने घट में प्रवेश कर (देखिये पद ६) वहीं कोई ठौर

اے دل. کہیں اور نہ جانا. کبیر کہتے ہیں کہ تخیل اور تصور کو چھوڑ چھاڑ کر اپنے وجود میں محو ہوجا.

۲۱

گھر گھر دیپک برے، لکھے نہیں، اندھ ہے
لکھت لکھت لکھی پرے کٹے جم پھند ہے
کہن سنن کچھ ناہی، نہیں کچھ کرن ہے
جیتے جی مر رہے، بہوری نہیں مرن ہے
جوگی پڑے بیوگ، کہیں گھر دور ہے
پاسہی بست ہجور، تو چڑھت کھجور ہے
بامہن دچھا دیتا، گھر گھر گھال ہے
مور سجیون پاس، تو پاہن پال ہے
ایسن صاحب کبیر سلونا آپ ہے
نہیں جوگ نہیں جاپ، پن نہیں پاپ ہے

گھر گھر چراغ جل رہا ہے (ہر فرد کے اندر بھگوان کی جوت ہے) اندھی آنکھوں کو دکھائی نہیں دیتا. لیکن دیکھنے کی کوشش ہو تو ایک دن آنکھیں کھل جائیں گی اور موت کے پھندے کٹ جائیں گے. کہنے، سننے اور کرنے کو کچھ بھی نہیں. جو جیتے جی مر گیا (جس نے آرزو کو ترک کردیا) وہ دو بارہ نہیں مرے گا (« سراپا آرزو ہونے نے بندہ کردیا ہم کو. و گر نہ ہم خدا تھے گر دلِ بے مدعا ہوتے » میر) جو جوگی بھگوان کو نہ پاکر ہجر کی تنہائی (بیوگ) میں پڑا رہتا ہے وہ کہتا ہے کہ گھر دور ہے. حضور (بھگوان) تو پاس ہی موجود ہیں (رگِ جاں سے زیادہ قریب ہیں) اور تو کھجور کے پیڑ پر چڑھ کے تلاش کر رہا ہے. برھمن گھر گھر جاکر منتر سکھاتا ہے اور لوگوں کو چوپٹ کرتا ہے. آب حیات کی دھار (سجیون = سنجیون) تو وجود کے اندر بہ رہی ہے اور تو پتھر کو پوج رہا ہے. کبیر اپنا صاحب تو ایسا سلونا (حسین و جمیل) ہے کہ اس کے سامنے جوگ، جاپ، پن اور پاپ سب فضول ہیں (اس کو حاصل کرنے کے لئے عبادت، تسبیح، عذاب اور ثواب کسی چیز کی ضرورت نہیں ہے)

ठिकाना मिलेगा। अच्छी तरह सोच ले, ऐ मन, कहीं और न जाना। कबीर कहते हैं कि कल्पना को छोड़-छाड़ कर अपने अस्तित्व में लीन हो जा।

२१

घर घर दीपक बरै, लखै नहिं अन्ध है।
लखत लखत लखि परै, कटै जम फन्द है।
कहन-सुनन कछु नाहिं, नहीं कछु करन है॥
जीते जी मरि रहै, बहुरि नहिं मरन है॥
जोगी पड़े बियोग, कहैं घर दूर है।
पासहि बसत हजूर, तू चढ़त खजूर है॥
बाम्हन दिच्छा देता घर घर घालि है।
मूर सजीवन पास, तू पाहन पालि है॥
ऐसन साहब कबीर सलोना आप है।
नहीं जोग नहीं जाप पुन्न नहीं पाप है॥

घर घर दीप जल रहा है (हर व्यक्ति के अंदर भगवान की ज्योति है) लेकिन अंधी आँखों को दिखायी नहीं देता। देखने की कोशिश हो तो एक दम आँखें खुल जायेंगी और मौत के फंदे कट जायेंगे। कहने-सुनने और करने को कुछ नहीं है। जो जीते जी मर गया (जिसने कामनाओं को त्याग दिया) वह दुबारा नहीं मरेगा। जो योगी भगवान को न अपनाकर वियोग में पड़ा रहता है वह कहता है कि घर दूर है। हुजूर (भगवान) तो पास ही मौजूद हैं और तू खजूर के पेड़ पर चढ़कर ढूंढ रहा है। ब्राह्मण घर घर जाकर मंत्र सिखाता है और लोगों को चौपट करता है। संजीवनी धारा तो तेरे अंदर बह रही है और तू पत्थर को पूज रहा है। कबीर, अपना साहब (प्रभु) तो ऐसा सलोना है कि उसके सामने योग, जप-तप, पुण्य और पाप सब बेकार हैं।

۲۲

سادھو ، سوست گرو مونہی بھاوے
ست پریم کا بھر بھر پیالا ، آپ پیوے مونہی پیاوے
پردہ دور کرے آنکھن کا ، برھم درس دکھلاوے
جس درسن میں سب لوک درسے ، ان حد سبد سناوے
ایکہی سب سکھ دکھ دکھلاوے سبد میں سُرت سماوے
کہیں کبیر تاکو بھئے ناہیں ، نربھئے پد پرساوے

سادھو ، مجھے تو وہ سچا گرو محبوب ہے جو سچائی کے پیالے بھر بھر کر خود بھی پیتا ہے اور مجھے بھی پلاتا ہے . وہ آنکھوں کے پردے اٹھا دیتا ہے اور برھم کا جلوہ دکھا دیتا ہے . برھم کے جلوے میں ساری دنیاؤں کے جلوے نظر آتے ہیں اور لافانی اور ابدی نغمہ سنائی دیتا ہے . وہاں رنج اور خوشی ایک ہوجاتے ہیں اور ہر لفظ عشق سے سرشار ہوجاتا ہے . کبیر کہتے ہیں کہ جس کو راہ دکھانے والا ایسا گرو مل جائے اسے کوئی خوف نہیں ہے .

۲۳

تمر سانجھ کا گہرا آوے ، چھاوے پریم من تن میں
پچھم دس کی کھڑکی کھولو ڈوبہُ پریم گگن میں
چیت کنول دل رس پیو رے ، لہر لیہُ یا تن میں
سنکھ گھنٹ سہنائی باجے ، سوبھا سندھ محل میں
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو ، امر صاحب لکھ گھٹ میں

شام کے سائے گہرے ہورہے ہیں اور پریم تن من پر چھا گیا ہے . پچھم کی کھڑکی کھول دو اور پریم گگن میں ڈوب جاؤ . دل کے کنول کا رس پیو اور لہروں کو اپنے جسم میں جذب کرلو . سمندر کی طرح لہریں لیتے ہوئے حسن کے محل میں شنکھ گھنٹے اور شہنائیاں بج رہی ہیں ، بھائی سادھو سنو کبیر کہتے ہیں کہ لافانی مالک (امر صاحب) ہمارے گھٹ (جسم) کے اندر ہے اسے وہیں دیکھو .

≽ २२ ≼

साधो, सो सतगुरु मोंहि भावै ।
सत्त प्रेमका भर भर प्याला, आप पिवै मोंहि प्यावै ।
परदा दूर करै आँखिनका, ब्रह्म दरस दिखलावै ।
जिस दरसनमें सब लोक दरसै, अनहद सब्द सुनावै ।
एकहि सब सुख-दुख दिखलावै, सब्दमें सुरत समावै ।
कहैं कबीर ताकों भय नाहीं, निर्भय पद परसावै ।

साधु, मुझे तो वह सच्चा गुरु प्यारा है जो सच्चाई के प्याले भर भर कर खुद भी पीता है और मुझे भी पिलाता है। वह आँखों के परदे उठा देता है और ब्रह्म के दर्शन करा देता है। ब्रह्म के दर्शन में सभी लोकोंके दर्शन हों जाते हैं और अनहद शब्द सुनायी देता है। वहाँ दुख-सुख एक हो जाते हैं और हर शब्द प्रेम-रस से भर जाता है। कबीर कहते हैं कि जिसको मार्ग दिखानेवाला ऐसा गुरु मिल जाये उसे कोई ग़म नहीं।

≽ २३ ≼

तिंविर साँझका गहिरा आवै, छावै प्रेम मन-तनमें ।
पच्छिम दिसकी खिड़की खोलो, डूबहु प्रेम-गगनमें ।
चेत-कँवल-दल रस पीयो रे, लहर लेहु या तनमें ।
संख घंट सहनाई बाजै, सोभा-सिंध महलमें ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अमर साहब लख घटमें ।

संध्याकाल की परछाइयाँ गहरी हो रही हैं और प्रेम तन-मन पर छा गया है। पश्चिम की खिड़की खोल दो और प्रेम-गगन में डूब जाओ। मन के कमल का रस पियो और लहरों को अपने शरीर में समो लो। समुद्र की तरह लहरें लेते हुए शोभा (रूप) के महल में शंख, घंटे और शहनाइयाँ बज रही हैं। भाई साधु सुनो, कबीर कहते हैं, कि अमर साहब (प्रभु) हमारे घट (शरीर) में है, उसे वहीं देखो।

۲۴

جس سے رہن اپار جگت میں، سو پریتم مجھے پیارا ہو
جیسے پُرئن رہِ جل بھیتر، جلہی میں کرت پسارا ہو
واکے پانی پترؔ نہ لاگے، ڈھلکِ چلے جس پارہ ہو
جیسے ستی چڑھے اِگن پر، پریم وچن نا ٹارا ہو
آپ جرے اورنِ کو جارے، راکھے پریم مرجادا ہو
بَھوٗ ساگر اک ندی اگم ہے، احد اگاہ دھارا ہو
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، بِرلے اترے پارا ہو

مجھے وہ پریتم پیارا ہے جو اس جگت میں مجھے ہم کنار کرکے بے کنار بنادے۔ جیسے کنول کا پتا پانی میں رہتا ہے، پانی ہی میں اپنی ہتھیلی پھیلاتا ہے، لیکن پانی اُسے بھگو نہیں سکتا اور پارے کی طرح ڈھلک جاتا ہے (اسی طرح میں سنسار میں رہ کر سنسار کے موہ میں نہیں مبتلا ہوتا) جیسے ستی محبت کے عہد و پیمان کو نہیں توڑتی اور آگ میں کود جاتی ہے، خود جلتی ہے اوروں کو جلاتی ہے (غمناک کرتی ہے) لیکن عشق کی لاج رکھ لیتی ہے (میں سنسار کی آگ میں جلتا ہوں) دنیا کا سمندر بہت گہرا اور بیکراں ہے۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ کم ہی لوگ اسے پار کرکے دوسرے ساحل تک پہونچ سکتے ہیں۔

۲۵

ہری نے اپنا آپ چھپایا
ہری نے نپھیج کر دکھرایا
ہری نے مجھے کٹھن بِچ گھیری
ہری نے کُبدھا کاٹی میری
ہری نے سُکھ دکھ بتلائے
ہری نے سب دُند مٹائے
ایسے ہری پہ تن من واروں
پر اِنہی تجوں ہری نہیں بِساروں

ہری نے اپنے وجود کو چھپایا اور پھر نہایت نفاست سے ظاہر کیا (وہ کائینات کے حسن کی شکل میں ظاہر ہوا) ہری نے مجھے کٹھنائی

२४

जिससे रहनि अपार जगतमें, सो प्रीतम मुझे पियारा हो।
जैसे पुरइन रहि जल-भीतर, जलहिमें करत पसारा हो।
वाके पानी पत्र न लागै, ढलकि चलै जस पारा हो।
जैसे सती चढ़े अगिनपर, प्रेम-वचन ना टारा हो।
आप जरै औरनिको जारै, राखै प्रेम-मरजादा हो।
भवसागर इक नदी अगम है, अहद अगाह धारा हो।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बिरले उतरे पारा हो।

मुझे वह प्रीतम प्यारा है जो इस संसार में अनंत काल तक इस तरह रखे, जैसे कमल का पत्ता पानी में रहता है, पानी ही में अपनी हथेली फैलाता है लेकिन पानी उसे भिगो नहीं सकता और पारे की तरह ढलक जाता है (इसी तरह मैं संसार में रहकर संसार के मोह में नहीं फँसता)। जैसे सती प्रेम-वचन नहीं तोड़ती और आग में कूद जाती है, खुद जलती है औरों को जलाती है (शोक में डुबोती है) लेकिन प्रेम की मर्यादा रख लेती है (मैं वैसे ही संसार की आग में जलता हूँ)। संसार का सागर बहुत गहरा और अथाह है। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि कम ही लोग इसे पार करके दूसरे किनारे तक पहुँच सकते हैं।

२५

हरिने अपना आप छिपाया।
हरिने नफीज कर दिखराया॥
हरिने मुझे कठिन बिच घेरी।
हरिने दुबिधा काटी मेरी॥
हरिने सुख-दुख बतलाये।
हरिने सब दुंद मिटाये॥
ऐसे हरिपै तन-मन वारूँ,
प्राणहिं तजूँ हरि नहीं बिसारूँ॥

हरि ने अपने अस्तित्व को छुपाया और फिर बड़े सुचारु रूप से (नफीज = नफ़ीस) उसे प्रकट किया (वह सृष्टि के सौंदर्य के रूप में सामने आया। हरि ने मुझे

میں پھنسا دیا ہے اور پھر ہری نے ہی شک اور شبہ کی زنجیریں کاٹ دی ہیں۔ ہری نے سکھ اور دکھ دونوں دیئے ہیں اور ہری ہی نے کشمکش کو مٹایا ہے۔ ایسے ہری پر میں اپنا تن من نثار کردوں گا۔ جان دے سکتا ہوں لیکن ہری کو بھول نہیں سکتا۔

٢٦

اونکار سبے کوئی سرجے ، راگ سروپی انگ
نراکار نرگُن اَبِناسی ، کرواہی کو سنگ
نام نرنجن ، نینن مدّھے ، نانا روپ دھرنت
نرنکار نرگُن ابِناسی اپار اتھاہ انگ
مہاَ سکّھ مگن ہوئی ناچے ، اپجے انگ ترنگ
من اور تن تھِر نہ رہتُ ہے ، مہاسکھ کے سنگ
سب چیتن سب انند سب ہیں دکھ گھنت
کہاں آدِ کہاں انت آپ سُکّھ بچ دھرنت

اوم نے سب کی تخلیق کی ہے جو خود نغمے کی طرح ہے۔ وہ جسم سے بے نیاز ہے (نراکار) اور صفات سے پاک (نرگن) ہے وہ لا یموت (ابناسی) ہے۔ نام نرنجن ہے لیکن نظروں میں طرح طرح کے روپ دھار کے سماتا ہے۔ وہ لا محدود ہے ، لا متناہی ہے ، لا زوال ہے ، وہ مہا سکھ ، مہا آنند (انتہائی سرور) کے عالم میں ناچتا ہے تو بے شمار جسم موج در موج پیدا ہوجاتے ہیں۔ (انگ انگ میں ترنگ اٹھتی ہے) اس مہا سکھ اور مہا آنند کے ساتھ مل کر تن اور من اپنے آپ کو سنبھال نہیں پاتے۔ شعور اور احساس ، عیش اور غم اس سے سرشار ہیں۔ (ہر انگ میں حس و حرکت ہے ، ہر انگ سکھ اور دردکو محسوس کرتا ہے) اس کی کوئی ابتدا نہیں ہے ، کوئی انتہا نہیں ہے۔ وہ اپنے انبساط کے اندر سے جھلک رہا ہے۔

(نوٹ: اس نظم میں لفظوں کا جو حسن اور نشہ ہے وہ ترجمے میں نقل کرنا ناممکن ہے۔ پہلے چار مصرعوں کو بار بار پڑھئے تو ان کی لذت خود بخود محسوس ہونے لگے گی)۔

कठिनाई में फँसा दिया है और फिर हरि ने ही मेरी दुबिधा दूर की है । हरि ने सुख और दुख दोनों दिये हैं और हरि ने ही सारे द्वंद्व दूर किये हैं । ऐसे हरि पर मैं अपना तन-मन न्योछावर कर दूँगा । मैं अपना प्राण दे सकता हूँ लेकिन हरि को भूल नहीं सकता ।



ओंकार सबै कोई सिरजै, रागस्वरूपी अंग ।
निराकार निर्गुन अबिनासी, कर वाहीको संग ॥
नाम निरंजन नैनन-मद्धे, नाना रूप धरंत ।
निरंकार निर्गुन अबिनासी, अपार अथाह अंग ॥
महासुक्ख मगन होई नाचै, उपजै अंग तरंग ।
मन और तन थिर न रहतु है, महा सुक्खके संग ॥
सब चेतन सब अनन्द सब हैं दुःख गहन्त ।
कहाँ आदि कँह अन्त आप सुक्ख बिच धरंत ॥

आकोंर ने, जो स्वयं राग-स्वरूप है, सब का सृजन किया है । वह निरंकार, निर्गुण और अनिवाशी है । उसका नाम निरंजन है लेकिन आँखों में तरह-तरह के रूप धरकर समाता है । वह निरंकार है, निर्गुण है, अविनाशी है, उसका अंग (आकार) आपार और अथाह है । वह महासुख में मगन होकर नाचता है तो अंग-अंग तरंगित हो उठता है । उस महासुख के साथ मिलकर तन और मन स्थिर नहीं रह पाते । (उसका) हर अंग चेतन है और सुख-दुख को अनुभव करता है । उसका न कोई आदि है न कोई अंत । वह अपने ही आनंद के अंदर से झलक रहा है ।

۲۷

ست گرو سوئی دیا کر دینہا
تاتے ان جنہار میں چینہا
بن پگ چلنا بن پر اڑنا۔ بنا چونچ کا چگنا
بن نینن کا دیکھن پیکھن، بن سرون کا سننا
چند نہ سور دوس نہیں رجنی، تہاں سرت لولائی
بنا ان امرت رس بھوجن، بن جل ترشا بجھائی
جہاں ہرس تہاں پورن سکھ ہے، یہ سکھ کاسوں کہنا
کہے کبیر بل بل ست گرو کی، دھن سش کا لہنا

یہ میرے ست گرو (سچے مالک) کی مہربانی ہے کہ میں نے عقل و فہم سے بالاتر کا عرفان حاصل کیا ہے۔ اس عرفان کا کیا کہنا جس میں بغیر پیروں کے چلتے ہیں، بغیر پروں کے اڑتے ہیں، بغیر چونچ کے چگتے ہیں، بغیر آنکھوں کے دیکھتے ہیں، بغیر کانوں کے سنتے ہیں۔ میرا عشق مجھے وہاں لے آیا ہے جہاں نہ چاند ہے نہ سورج، نہ دن ہے نہ رات۔ اناج نہیں ہے لیکن امرت رس کا بھوجن مل رہا ہے، پانی نہیں ہے لیکن پیاس بجھ رہی ہے۔ جہاں انبساط ہے وہیں مکمل سکون ہے اور یہ آنند ناقابل بیان ہے، کبیر کہتے ہیں کہ ایسے گرو کے قربان جائیے۔ اس کے چیلے (سش = شاگرد) کی قسمت مبارک ہے۔

۲۸

نرگن آگے سرگن ناچے
باجے سوہنگ تورا
چیلا کے پاؤں گروجی لاگے
یہی اچمبھا پورا

ذات کے سامنے صفات ناچ رہی ہیں۔ اناالحق کا ساز بج رہا ہے۔ سب سے بڑے اچنبھے کی بات یہ ہے کہ گرو چیلے کے قدم چھو رہا ہے۔

२७

सतगुरु सोई दया करि दीन्हा ।
ताते अन-चिन्हार मैं चीन्हा ॥
बिना पग चलना बिन पर उड़ना, बिना चूँचका चुगना ।
बिन नैननका देखन-पेखन, बिन सरवन का सुनना ।
चंद न सूर दिवस नहिं रजनी, तहाँ सुरत लौ लाई ।
बिना अन्न अंमृत-रस-भोजन, बिन जल तृषा बुझाई ।
जहाँ हरस तँह पूरन सुख है, यह सुख कासौं कहना ।
कहै कबीर बल बल सतगुरुकी, धन्न सिष्यका लहना ।

यह मेरे सद्गुरु की कृपा है कि मैंने उसे पहचान लिया जिसे पहचाना नहीं जा सकता । इस ज्ञान का क्या कहना जिसमें बिना पैरों के चलते हैं, बिना परों के उड़ते हैं, बिना चोंच के चुगते हैं, बिना आँखों के देखते हैं, बिना कानों के सुनते हैं । मेरा प्रेम मुझे वहाँ ले आया है जहाँ न चाँद है, न सूरज, न दिन है न रात । अनाज नहीं है लेकिन अमृत रस का भोजन मिल रहा है, पानी नहीं है लेकिन प्यास बुझ रही है । जहाँ आनंद है वहीं पूर्ण शांति है और यह आनंद अवर्णनीय है । कबीर कहते हैं कि ऐसे गुरु की बलिहारी । उसके शिष्ट का भाग्य सराहनीय है ।

२८

निरगुन आगे सरगुन नाचै,
बाजै सोहँग तूरा ।
चेलाके पावँ गुरुजी लागैं,
यही अचम्भा पूरा ॥

निर्गुण के आगे सगुण नाच रहे हैं । सोऽहं तूर (अनहद नाद) बज रहा है । सबसे बड़े अचंभे की बात यह है कि गुरु चेले के पैर छू रहा है ।

۲۹

پرشن

کبیر کب سے بھئے بیراگی
تمری سُرتِ کہاں کو لاگی

اُتر

بِی چترا کا میلا ناہیں ، نہیں گرو نہیں چیلا
سکل پسارا جن دن ناہیں ، جہہ دن پُرش اکیلا
گورکھہ ہم تب کے اہیں بیراگی
ہمری سُرت برھم سوں لاگی
برھما نہیں جب ٹوپی دینہی ، بِشن نہیں جب ٹیکا
سو شکتی کے جنمے ناہیں تبے جوگ ہم سیکھا
کاسی میں ہم پرگٹ بھئے ہیں ، راما نند چیتائے
پیاس احد کی ساتھہ ہم لائے ، ملن کرن کو آئے
سہجے سہجے میلا ہوئیگا ، جاگی بھگتِ اُتنگا
کہیں کبیر ، سنو ہو گورکھہ ، چلو گیت کے سنگا

سوال : کبیر تم کب سے بیراگی ہوئے . تم کس کے عشق میں مبتلا ہو .
جواب : جب وچتر کا میلا نہیں لگا تھا ، جب وحدت میں کثرت کے جلوے دکھانے والے نے اپنا کھیل نہیں شروع کیا تھا ، جب گرو اور چیلے کی تفریق نہیں تھی ، جب زمین اور آسمان (سکل = سنسار) کا پھیلاؤ نہیں تھا ، جب پرش (ذات مطلق) تنہا تھا ، اے گورکھہ ناتھہ کبیر تب ہی سے بیراگی ہیں تب ہی سے ہم برھم کے عشق میں مبتلا ہیں . ہم نے یوگ اس وقت سیکھا تھا جب برھما کے سر پر تاج نہیں تھا ، (تخلیق کائینات کا حق نہیں پایا تھا) . جب وشنو کے ماتھے پر ٹیکا نہیں تھا (دنیا کو پالنے کا ادھیکار نہیں ملا تھا) جب شو کی شکتی پیدا نہیں ہوئی تھی . ہم کاشی (بنارس) میں ظاہر ہوئے اور راما نند نے ہمیں شعور کی روشنی عطا کی . احدیت کی پیاس (لا محدود کو حاصل کرنے کا شوق) اور اُس سے ملنے کی تڑپ ہم ساتھہ لائے تھے . اس سادہ سے ہم سادگی ہی کے ساتھہ مل سکیں گے اور بھگتی (محبت) کا طوفان امنڈ آئے گا . اے گورکھہ ناتھہ سنو کبیر کہتے ہیں کہ اس کے سنگیت کی آواز کے ساتھہ ساتھہ بڑھے چلو .

२९

प्रश्न

कबीर, कबसे भये बैरागी।
तुम्हरी सुरति कहाँको लागी॥

उत्तर

बइचित्राका मेला नाहीं, नहीं गुरू नहीं चेला।
सकल पसारा जिन दिन नाहीं, जिहि दिन पुरुष अकेला॥
गोरख, हम तबके अहैं बैरागी।
हमारी सुरति ब्रह्मसों लागी।
ब्रम्हा नहिं जब टोपी दीन्ही, बिस्नु नहिं जब टीका।
सिव-शक्तीकै जनमै नाहीं, तबै जोग हम सीखा॥
कासीमें हम प्रगट भये हैं, रामानंद चेताये।
प्यास अहदकी साथ हम लाये, मिलन-करनको आये॥
सहजै सहजै मेला होइगा, जागी भक्ति उतंगा।
कहैं कबीर सुनो हो गोरख, चलो गीतके संगा॥

सवाल : कबीर तुम कब से बैरागी हुए ? तुम किस के प्रेम में लीन हो ?

जवाब : जब वैचित्र्य का मेला नहीं लगा था, जब एकता में अनेकता दिखानेवाले ने अपना खेल शुरू नहीं किया था, जब गुरु और चेले का अंतर नहीं था, जब पृथ्वी और आकाश का विस्तार नहीं था, जब पुरुष (परमात्मा) अकेला था, ऐ गोरखनाथ, कबीर तभी से बैरागी हैं। तभी से हम ब्रह्म के प्रेम में लीन हैं। हम ने योग उस समय सीखा जब ब्रह्म के सर पर ताज नहीं था, जब विष्णु का राजतिलक नहीं हुआ था, जब शिव की शक्ति पैदा नहीं हुई थी। हम काशी में प्रगट हुए और रामानंद ने हमें ज्ञान दिया। अनंत (अहद) की प्यास और उस से मिलने की तड़प हम साथ लाये थे। बड़ी आसानी से हमारा उसका मिलन हो गया, और भक्ति का सागर उमड़ पड़ा। कबीर कहते हैं कि ऐ गोरखनाथ सुनो, उसके गीत के साथ-साथ बढ़े चलो।

۳۰

یاتـرور میں ایک پکھیرو ، بھوگ سرس وہ ڈولے رے
واکی سندھ لکھے نہیں کوئی ، کون بھاؤ سوں بولے رے
دُرم ڈار تہاں اتِ گھن چھایا ، پنچھی بسیرا لیئی رے
آوے سانجھ ، اُڑ جائے سبیرا ، مَـرم نہ کاہو دیئی رے
سو پنچھی مونہی کوئی نہ بتاوے ، جو بولے گھٹ مانہی رے
ابرن بَرن روپ ناہیں ریکھا ، بیٹھا پریم کے چھانہی رے
اگم اپار نرنتر باسا ، آوت جـاوت نہ دیسا رے
کہے کبیر ، سنو بھائی سادھو ، یہ کچھ اگم کہانی رے
یا پنچھی کے کون ٹھور ہے ، بوجھو پنڈت گیانی رے

اس پیڑ پر ایک چڑیا ہے جو میٹھا رس پی کر جھوم رہی ہے ۔ کوئی نہیں جانتا کہ وہ کہاں ہے ۔ کسی کو نہیں معلوم کہ اس کے گیت کا کیا راز ہے ۔ جہاں ڈالیوں کا سایہ سب سے زیادہ گہرا ہے وہیں اس چڑیا کا بسیرا ہے ۔ وہ شام کو آتی ہے اور صبح اڑ جاتی ہے اور اپنا راز کسی پر ظاہر نہیں کرتی ۔ کوئی نہیں بتاتا کہ وہ کون سی چڑیا ہے جو میرے وجود (گھٹ = جسم) میں بول رہی ہے ۔ وہ نـہ تو رنگین ہے نہ بے رنگ ، اس کی شکل ہے نہ صورت ۔ وہ پریم کی چھانوں میں بیٹھی ہوئی ہے ۔ لا محدود اور بیکراں ابدیت اس کا نشیمن ہے ۔ اُسے آتے جاتے کوئی نہیں دیکھتا ۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ یہ بڑی پر اسرار (اگم) کہانی ہے ۔ اس پنچھی کا ٹھکانا کہاں ہے اسے کوئی گیان والا بوجھ سکے تو بوجھے ۔

۳۱

نس دن سالَـے گھـاؤ ، نیند آوے نہیں
پیا ملن کی آس نیہر بھاوے نہیں
کُھل گئے گگن کواڑ ، مندر اُجیار بَھیو
بَھیو ہے پُرش سے بھینٹ ، تن من وار دیو

ایک زخم ہے کہ رات دن ٹیک رہا ہے ۔ درد سے نیند نہیں آتی ۔ محبوب سے ملنے کے لئے دل بیقرار ہے ۔ ماں باپ کا گھر اب اچھا

३०

या तरिवरमें एक पखेरू, भोग सरस वह डोलै रे।
वाकी संध लखैं नहीं कोई, कौन भावसों बोलै रे।
दुर्म्म-डार तहँ अति घन छाया, पंछी बसेरा लेई रे।
आवै साँझ उड़ि जाय सबेरा, मरम न काहू देई रे।
सों पंछी मोंहि कोई न बतावै, जो बोले घटमाँही रे।
अबरन-बरन रूप नाहिं रेखा, बैठा प्रेमके छाँही रे।
अगम अपार निरन्तर बासा, आवत-जात न दीसा रे।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह कुछ अगम कहानी रे।
या पंछीके कौन ठौर है, बूझो पंडित ज्ञानी रे।

इस पेड़ पर एक चिड़िया है जो मीठा रस पीकर झूम रही है। कोई नहीं जानता कि वह कौन है, किसी को नहीं मालूम कि उसके गीत का क्या रहस्य है। जहाँ डालियों की छाया सब से घनी है वहीं इस चिड़िया का बसेरा है। वह शाम को आती है और सुबह उड़ जाती है और अपना भेद किसी पर खुलने नहीं देती। कोई नहीं बताता कि वह कौनसी चिड़िया है जो मेरे घट (शरीर) में बोल रही है। वह न तो रंगीन है न बेरंग, न उसका कोई रूप है, वह प्रेम की छाँव में बैठी है। अगम और अपार विस्तार में निरंतर उसका वास है, उसे आते-जाते कोई नहीं देखता। कबीर कहते हैं कि सुनो भाई साधु, यह बड़ी रहस्यमयी कहानी है। इस पंछी का ठिकाना कहाँ है इसे कोई ज्ञानी पंडित ही बूझ सके तो बूझे।

३१

निस-दिन सालै घाव, नींद आवै नहीं।
पिया-मिलन की आस, नैहर भावै नहीं॥
खुल गये गगन-किवाड़, मन्दिर उजियार भयो।
भयो है पुरुषसे भेट तन-मन वार दयो॥

एक घाव है जो रात-दिन रिसता रहता है। दर्द से नींद नहीं आती। पिया से मिलने केलिए दिल तड़प रहा है। माँ-बाप का घर अब अच्छा नहीं लगता।

نہیں لگتا۔ آسمان کے دروازے کھل گئے ہیں اور (ابدیت کا) مندر روشنی سے جگمگا رہا ہے۔ محبوب (پُرش = ذات واحد، عین ذات) سے ملاقات ہوئی اور میں نے اپنا تن من اُس پر وار دیا۔

۳۲

ناچُ رے میرے من متّ ہوئے
پریم کو راگ بجائے رین دن، شبد سنے سب کوئی
راہُ کیتُ نوگرہ ناچے، جنْم جنم آنند ہوئی
گِری، سمندر، دھرتی ناچے، لوک ناچے ہنس روئی
چھاپا تلک لگائی بانس چڑھ، ہورہا جگ سے نیارا
سہس کلا کر، من من میرو ناچے، ریجھے سِرجن ہارا

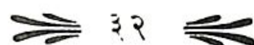
اے میرے دل آج مست ہوکر ناچ۔ رات دن پریم کا راگ بج رہا ہے اور ہر شخص اس کے میٹھے بول سن رہا ہے۔ راہو، کیتو اور دوسرے ستارے (موت اور زندگی) سب جنم جنم کی سرمستی کے ساتھ ناچ رہے ہیں۔ پہاڑ، سمندر، زمین سب اس ناچ میں مبتلا ہیں۔ اور انسانوں کی دنیا کبھی ہنس کر ناچتی ہے اور کبھی روکر۔ صرف چھاپا تلک لگانے والے بانس پر چڑھ کر یہ سمجھ رہے ہیں کہ وہ جگ سے الگ تھلگ (اس ناچ سے بے نیاز) ہیں۔ میرا دل ہزار انداز سے ناچ رہا ہے اور اس کے ناچ پر خود خالق کائینات (سِرجن ہارا) ریجھ گیا ہے۔

۳۳

من مست ہوا تب کیوں بولے
ہیرا پایو، گانٹھ گٹھیایو، بار بار واکو کیوں کھولے
ہلکی تھی تب چڑھی تراجو، پوری بھئی تب کیوں تولے
سُرت کلاری بھئی متواری، مدوا پی گئی بن تولے
ہنسا پائے مان سروور، تال تلیّا کیوں ڈولے
تیرا صاحب ہے گھر ماہیں، باہر نینا کیوں کھولے
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو۔ صاحب مل گئے تِل اولے

من مست ہوگیا تو اب بولنے کی کیا ضرورت ہے۔ جب ہیرا مل گیا اور اسے گانٹھ میں باندھ لیا تو بار بار کھول کر دیکھنے سے کیا فائدہ۔

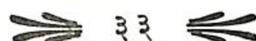
गगन (शून्य) का द्वार खुल गया है और (अनंत का) मन्दिर प्रकाश से जगमगा उठा है। पुरुष (परमात्मा) से मेरा मिलन हो गया है और मैंने अपना तन-मन उस पर वार दिया है।



३२

नाचु रे मेरे मन मत्त होय।
प्रेमको राग बजाय रैन-दिन शब्द सुने सब कोइ।
राहु-केतु नवग्रह नाचै जन्म जन्म आनंद होइ।
गिरी-समुन्दर धरती नाचै, लोक नाचै हँस-रोइ।
छापा तिलक लगाइ बाँस चढ़, हो रहा जगसे न्यारा।
सहस कला कर मन मेरो नाचै, रीझै सिरजनहारा॥

ऐ मेरे मन, आज मस्त होकर नाच। रात-दिन प्रेम का राग बज रहा है और हर आदमी उसके मीठे बोल सुन रहा है। राहु-केतु और नौ ग्रह जन्म-जन्मांतर के हर्षोल्लास के साथ नाच रहे हैं। पृथ्वी, पर्वत और समुद्र सब नाच रहे हैं और मनुष्य का यह संसार कभी हँसकर नाचता है कभी रोकर। केवल छापा और तिलक लगानेवाले बाँस पर चढ़ कर यह समझ रहे हैं कि वे संसार से (सृष्टि के इस नृत्य से) अलग हैं। मेरा मन हजार कलाओं के साथ नाच रहा है और उसके नाच पर स्वयं सृष्टि का रचयिता रीझ गया है।

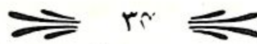


३३

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले।
हीरा पायो गाँठ गठियायो, बार बार वाको क्यों खोले।
हलकी थी तब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोले।
सुरत-कलारी भई मतवारी, मदवा पी गई बिन तोले॥
हंसा पाये मानसरोवर, ताल तलैया क्यों डोले।
तेरा साहब है घरमाहीं, बाहर नैना क्यों खोले।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहब मिल गये तिल ओले॥

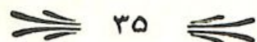
मन मस्त हो गया तो अब बोलने की क्या जरूरत है। जब हीरा मिल गया और उसे गाँठ में बाँध लिया तो बार-बार उसे खोलकर देखने से क्या फ़ायदा।

ترازو ہلکی تھی تو اس کا پلاّ اوپر تھا۔ اب ترازو بھری ہوئی ہے تو تولنا بیکار ہے۔ پریم کی ماری شراب بیچنے والی ایسی متوالی ہوئی کہ بغیر ناپے تولے ساری شراب چڑھا گئی۔ ہنس کو مان سرووَر جھیل مل گئی ہے تو پھر وہ چھوٹے چھوٹے تالابوں کا چکر کیوں لگائے۔ جب تیرا مالک (صاحب) گھر ہی میں ہے تو باہر آنکھیں کھولنے سے کیا ملے گا۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ میرے صاحب جو تل کی اوٹ میں چھپے ہوئے تھے مجھے مل گئے ہیں۔ (میں عین ذات سے مل گیا ہوں۔)



موں ہی توں ہی لاگی، کیسے چھوٹے
جیسے کمل پتر جل باسا
ایسے تم صاحب، ہم داسا
جیسے چکور تکت نس چندا
ایسے تم صاحب، ہم بندا
موں ہی توں ہی آد انت بن آئی
اب کیسے لگن دُرائی
کہیں کبیر ہمرا من لاگا
جیسے سرِتا سندھ سمائی

میرا اور تیرا عشق کیسے ختم ہوسکتا ہے۔ جیسے پانی پر کنول کا پتا تیرتا ہے ویسے تم صاحب (معبود) ہو اور ہم غلام ہیں۔ جیسے رات کے وقت چکور چاند کو پیار بھری نظروں سے دیکھتا ہے ویسے تم مالک ہو اور ہم بندے ہیں۔ میرا اور تمہارا عشق ازل سے ابد تک پھیلا ہوا ہے۔ یہ کیسے ختم ہوسکتا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ جیسے ندی سمندر میں جا ملتی ہے ہمارا دل تم سے لگ گیا ہے۔



بالم آؤ ہمارے گیہہ رے
تم بن دکھیا دیہہ رے
سب کوئی کہے تمہاری ناری، موکوں لاگت لاج رے
دل سے نہیں دل لگایا، تب لگ کیسا سنیہہ رے

जब तराजू हलकी थी तो उसका पलड़ा ऊपर था। अब तराजू भरी हुई है तो तोलना बेकार है। प्रेम की मारी शराब बेचनेवाली ऐसी मस्त हुई कि बिना नापे-तोले सारी शराब पी गयी। हंस को मानसरोवर झील मिल गयी है तो वह छोटे-छोटे तालाबों का चक्कर क्यों लगाये। जब तेरा मालिक (साहब) घर ही में है तो बाहर आँखें खोलने से क्या मिलेगा। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि मेरा साहब (प्रभु) जो तिल की ओट में छुपा हुआ है मुझे मिल गया है।

३४

मोंहि तोंहि लागी कैसे छूटे।
जैसे कमलपत्र जल बासा,
ऐसे तुम साहिब हम दासा॥
जैसे चकोर तकत निस चंदा,
ऐसे तुम साहिब हम बंदा॥
मोंहि-तोंहि आदि-अन्त बन आई,
अब कैसे लगन दुराई॥
कहैं कबीर हमरा मन लागा,
जैसे सरिता सिंध समाई॥

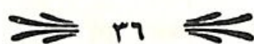
मेरा और तेरा प्रेम कैसे खत्म हो सकता है। जैसे पानी पर कमल का पत्ता काँपता है वैसे तुम साहब (इष्टदेव) हो और मैं तुम्हारा दास हूँ। जैसे रात को चकोर चाँद को प्यार-भरी दृष्टि से देखता है वैसे ही तुम मालिक हो और मैं बंदा हूँ। मेरा और तुम्हारा प्रेम तो आदिकाल से चला आ रहा है और अंतकाल तक रहेगा। यह कैसे खत्म हो सकता है। कबीर कहते हैं कि जैसे नदी समुद्र में जा मिलती है हमारा दिल तुमसे लग गया है।

३५

बालम, आवो हमारे गेह रे।
तुम बिन दुखिया देह रे।
सब कोई कहे तुम्हारी नारी, मोकों लागत लाज रे।
दिलसे नहीं दिल लगाया, तब लग कैसा सनेह रे।

اَنّ نہ بھاوے نیند نہ آوے ۔ گِرہ بن دھرے نہ دھیر رے
کا من کو ہے بالم پیارا ، جیوں پیاسے کو نیر رے
ہے کوئی ایسا پر اُپکاری پِو سوں کہے سنائے رے
اب تو بے حال کبیر بھیو ہے ، بِن دیکھے جِو جائے رے

بالم ہمارے گھر آؤ۔ تم بن تن من دکھیا ہیں۔ سب لوگ مجھے تمہاری دلہن کہتے ہیں اور مجھے لاج آتی ہے۔ دل سے دل تو لگایا نہیں ہے، پھر یہ کیسا پیار ہے۔ کھانا پینا بھاتا نہیں، نیند آتی نہیں، دل ہے کہ بیقرار ہے۔ گھر میں ویرانے میں کہیں بھی تسکین نہیں ملتی۔ دلہن کو اپنا بالم پیارا ہے جیسے پیاسے کو پانی۔ ہے کوئی ایسا سخی جو پیا تک میرا سندیسہ پہونچا دے اور کہے کہ کبیر بے حال ہورہا ہے۔ بن دیکھے اس کی جان جا رہی ہے (دیدار کے لئے بیچین ہے)۔

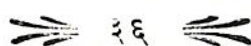


جاگ پیاری اب کا سووے
رین گئی دن کاہے کو کھووے
جِن جاگا تِن مانک پایا
تیں بوری سب سوئے گنوایا
پیے تیرے چَتُر ، تو مورکھ ناری
کبھوں نہ پی کی سیج سنواری
تَیں بوری بوراپن کینہی
بھر جوبن پی اپن نہ چینہی
جاگ دیکھ ، پی سیج نہ تیرے
توہ چھانڑِ اُٹھ گئے سبیرے
کہیں کبیر سُوئی دُھن جاگے
شبد بان اُر انتر لاگے

جاگ پیاری۔ اب کیا سوتی ہے رات ختم ہوگئی اب دن کیوں کھو رہی ہے۔ جاگنے والوں نے ہیرے موتی سمیٹ لیے۔ تونے اے پگلی سوکر سب کچھ گنوا دیا۔ تیرے پیا سمجھدار (چَترُ) ہیں اور تو مورکھ ناری (بیوقوف عورت) ہے۔ تونے کبھی اپنے پیا کی سیج نہیں سنواری۔ ارے پگلی تونے کیا غلطی کی ہے۔ بھرا جوبن لے کر بھی اپنے پیا کو

अन्न न भावै नींद न आवैं, गृह-बन धरै न धीर रे।
कामिनको है बालम प्यारा, ज्यों प्यासको नीर रे।
है कोई ऐसा पर-उपकारी, पिवसों कहै सुनाय रे।
अब तो बेहाल कबीर भयो है, बिन देखे जिव जाय रे ॥

बालम हमारे घर आओ। तुम्हारे बिना मेरा तन-मन दुःखी है। सब लोग मुझे तुम्हारी दुल्हन (नारी) कहते हैं और मुझे लाज आती है। दिल से दिल तो लगाया ही नहीं है फिर यह कैसा प्रेम है। खाना-पीना भाता नहीं, नींद आती नहीं। दिल है कि बेचैन है, घर में बन में कहीं भी चैन नहीं मिलता। प्रेमिका (कामिनी) को अपना बालम प्यारा है जैसे प्यासे को पानी। है कोई ऐसा परोपकारी जो पिया तक मेरा संदेश पहुँचा दे और कहे कि कबीर बेहाल हो रहा है, तुम्हें देखे बिना अब उसकी जान जा रही है।



जाग पियारी अब का सोवैं।
रैन गई दिन काहेको खोवैं ॥
जिन जागा तिन मानिक पाया।
तैं बौरी सब सोय गँवाया।
पिये तेरे चतुर तू मूरख नारी।
कबहुँ न पियकी सेज सँवारी ॥
तैं बौरी बौरापन कीन्ही।
भर-जोबन पिय अपन न चीन्ही ॥
जाग देख पिय सेज न तेरे।
तोहि छाँड़ि उठि गये सबेरे ॥
कहैं कबीर सोई धुन जागै।
शब्द-बान उर अन्तर लागै ॥

जाग, प्यारी, अब क्या सोती है। रात खत्म हो गयी अब दिन को क्यों खो रही है। जागने वालों ने हीरे-मोती समेट लिये। तूने, ऐ पगली, सोकर सब कुछ गँवा दिया। तेरे पिया समझदार (चतुर) हैं और तू मूर्ख नारी है तू ने कभी अपने पिया की सेज नहीं सँवारी। अरे पगली, तू ने क्या ग़लती की है। भरा यौवन लेकर भी अपने पिया को नहीं पहचान सकी। आँख खोलकर

نہیں پہچان سکی آنکھ کھول کے دیکھ ۔ تیری سیج پر پیا نہیں ہیں ۔ وہ تجھے چھوڑ کر سویرے ہی سویرے چلے گئے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ صرف وہ جاگ رہی ہے جس کا دل پیا کے شبد بان (لفظوں کے تیر) سے زخمی ہے ۔

۳۷

(۱) سور پرکاس تہاں رین کہاں پائیے
رین پرکاس نہیں سور بھاسے
گیان پرکاس اگیان کہاں پائیے
ہوئے گیان تہاں گیان ناسے
کام بلوان تہاں پریم کہاں پائیے
پریم جہاں ہوئے تہاں کام ناہیں
کہے کبیر یہ ستّ وچار ہے
سمجھ وچار کر دیکھ مانہی

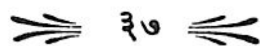
جہاں سورج کی روشنی پھیلی ہوئی ہے وہاں رات کہاں ملے گی ۔ اور جہاں رات کا اندھیرا ہے وہاں سورج نہیں دکھائی دے گا ۔ گیان (علم ، عرفان) کی روشنی میں اگیان (جہل) کہاں ملے گا ۔ اور جہل کے اندھیرے میں عرفان کا نور نہیں نظر آئے گا ۔ جہاں ہوس کا زور ہے وہاں عشق کا پتہ نہیں اور جہاں عشق ہے وہاں ہوس کا وجود نہیں ۔ کبیر کہتے ہیں کہ سچا وچار یہی ہے ۔

(۲) پکڑ سمسیر سنگرام میں پیسئے
دیہہ پرجنت کر جُدہ بھائی
کاٹ سر بیریاں داب جہاں کا تہاں
آئے دربار میں ، سیس نوائی

شمشیر ہاتھ میں لے کر میدانِ جنگ (سنگرام) میں اترو اور اس وقت تک لڑو جب تک جان میں جان ہے ۔ دشمن کا سر کاٹ کر اس کا کام تمام کرو ۔ پھر مالک کے دربار میں آ کر اپنا سر جھکا دو ۔

(۳) سُور سنگرام کو دیکھ بھاگے نہیں
دیکھ بھاگے سوئی سور ناہیں
کام اور کرودھ مد ، لوبھ سے جوجھنا

देख। तेरी सेज पर पिया नहीं हैं। वह तुझे छोड़कर सवेरे ही सवेरे चले गये। कबीर कहते हैं कि सिर्फ़ वह जाग रही है जिसका दिल पिया के शब्द-बाण से घायल है।



३७

(१) सूर-परकास, तहँ रैन कहँ पाइये
रैन-परकास नहिं सूर भासै।
ज्ञान-परकास अज्ञान कहँ पाइये
होय अज्ञान तहँ ज्ञान नासै।
काम बलवान तहँ प्रेम कहँ पाइये
प्रेम जहाँ होय तहँ काम नाहीं।
कहै कबीर यह सत्त विचार है
समझ विचार कर देख माँहीं।

जहाँ सूरज की रोशनी फैली हुई है वहाँ रात कहाँ मिलेगी और जहाँ रात का अँधेरा है वहाँ सूरज नहीं दिखायी देगा। ज्ञान की रोशनी में अज्ञान कहाँ मिलेगा और अज्ञान के अँधेरे में ज्ञान की ज्योति नहीं दिखायी देगी। जहाँ वासना प्रबल है वहाँ प्रेम का पता नहीं और जहाँ प्रेम है वहाँ वासना का अस्तित्व नहीं। कबीर कहते हैं कि सच्चा विचार यही है।

(२) पकड़ समसेर संग्राममैं पैसिये
देह-परजन्त कर जुद्ध भाई।
काट सिर बैरियाँ दाब जहँका तहाँ
आय दरबारमें सीस नवाई॥

तलवार हाथ में लेकर रणक्षेत्र में उतरो और तब तक लड़ते रहो जब तक जान में जान है। दुश्मन का सर काट कर उसका काम तमाम करो, फिर मालिक के दरबार में आकर अपना सर झुका दो।

(३) सूर संग्रामको देख भागै नहीं,
देख भागै सोई सूर नाहीं।
काम और क्रोध मद लोभसे जूझना,

مچا گھمسان تن کھیت مانہیں
سیل اور سانچ، سنتوش ساہی بھئے
نام سمسیر تہاں کھوب باجے
کہے کبیر کوئی جوجھے سورما
کایراں بھیڑ تہاں ترت بھاجے

بہادر جنگ کے میدان کو دیکھ کر بھاگتے نہیں اور بھاگنے والے بہادر نہیں ہوتے۔ جسم و جان کے رن میں کیا گھمسان کی لڑائی ہو رہی ہے۔ ہوس، غصہ، غرور اور لالچ مقابلے پر کھڑے ہوئے ہیں۔ صبر، قناعت اور صداقت کی بادشاہت میں شمشیر کا نام بلند ہوجاتا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ جب کوئی سورما لڑائی کے لئے نکلتا ہے تو بزدلوں کی فوج پیٹھ دکھاکر بھاگ جاتی ہے۔

(۴) سادھ کو کھیل تو بکٹ بینڑا متی
ستی اور سور کی چال آگے
سور گھمسان ہے پلک دو چار کا
ستی گھمسان پل ایک لاگے
سادھ سنگرام ہے رین دن جوجھنا
دیہہ پر جنت کا کام بھائی

صداقت کے متلاشی کی جد و جہد بڑی کٹھن ہے۔ ستی اور سورما کے مقابلے میں اس کا عہد وفا زیادہ دشوار ہے۔ سورما کی لڑائی دو چار گھنٹے چلتی ہے، ستی کی جد و جہد ایک پل میں ختم ہوجاتی ہے۔ لیکن صداقت کا متلاشی دن رات جنگ کرتا ہے۔ اس کی لڑائی زندگی کے آخری لمحے تک جاری رہتی ہے۔

۳۸

بھرم کا تالا لگا محل رے، پریم کی کنجی لگاؤ
کپٹ کوڑیا کھول کے رے، یہ بدھ پی کو جگاؤ
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، پھر نہ لگے اس داؤ

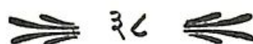
دل کے محل میں وہم و گمان کا قفل لگا ہوا ہے۔ اس میں پریم کی کنجی لگاؤ اور کواڑ کھول کر سوئے ہوئے محبوب کو جگالو۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ ایسا موقع پھر ہاتھ نہیں آئے گا۔

मचा घमसान तन-खेत माँहीं।
सील और साँच सन्तोष साही भये,
नाम समसेर तहाँ खूब बाजे।
कहै कबीर कोई जूझिहै सूरमा
कायँग भीड़ तहँ तुर्त भाजे॥

वीर रणक्षेत्र को देखकर घबराते नहीं और भागनेवाले बहादुर नहीं होते। शरीर और प्राण के संग्राम में क्या घमासान लड़ाई हो रही है। काम, क्रोध, मद और लोभ मुक़ाबले पर खड़े हुए हैं। धीरज, संतोष और सत्य के राज्य में तलवार का नाम ऊंचा होजाता है। कबीर कहते हैं कि जब कोई सूरमा लड़ाई के लिए निकलता है तो कायरों की सेना पीठ दिखाकर भाग जाती है।

(४) साधको खेल तो बिकट बेंड़ा मती
सती और सूरकी चाल आगे।
सूर घमसान है पलक दो चारका
सती घमसान पल एक लागै।
साध संग्राम है रैन-दिन जूझना
देह परजन्तका काम भाई॥

सत्य की खोज करनेवाले का संघर्ष बहुत कठिन होता है। सती और सूरमा की तुलना में इसका वचन निभाना ज्यादा कठिन होता है। सूरमा की लड़ाई दो-चार घंटे चलती है, सती का संघर्ष एक पल में समाप्त हो जाता है, परंतु सत्य को खोजने वाला दिन-रात संघर्ष करता है। उसकी लड़ाई जीवन के अंतिम क्षण तक चलती रहती है।



भ्रमका ताला लगा महल रे, प्रेमकी कुंजी लगाव।
कपट-किवड़िया खोलके रे, यहि बिधिपियको जगाव॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, फिर न लगै अस दाव॥

हृदय के महल में भ्रम का ताला पड़ा हुआ है। इसमें प्रेम की कुंजी लगाओ और किवाड़ खोलकर सोते हुए पिया को जगा लो। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि ऐसा मौक़ा फिर हाथ नहीं आयेगा।

۳۹

سادھو یہ تن ٹھاٹھ تنبورے کا

اینچت تار ، مرورت کھونٹی ، نکست راگ ہجورے کا

ٹوٹے تار ، بکھر گئی کھونٹی ، ہوگیا دُھورم دھورے کا

کہے کبیر سنو بھائی سادھو ، اگم پنتھ کوئی سُورے کا

سادھو یہ تن تنبورے کا ٹھاٹھ ہے . جب کھونٹی مروڑی جاتی ہے اور تار کھینچتے ہیں تو حضوری کا نغمہ باہر نکلتا ہے . اگر کھونٹی ٹوٹ جائے اور تار بکھر جائیں تو یہ دھول کا ساز دھول میں مل جائے گا . سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ اس میں سے صرف برھما سُر باہر نکال سکتے ہیں .

۴۰

اودھو ، بھولے کو گھر لاوے

سو جن ہم کو بھاوے

گھر میں جوگ ، بھوگ گھر ہی میں ، گھر تج بن نہیں جاوے

گھر میں جُکت ، مُکت گھر ہی میں ، جو گُر الکھ لکھاوے

سہج سُن میں رہے سمانا ، سہج سمادھ لگاوے

اُتمن رہے ، برہم کو چینہے ، پرم تتو کو دھیاوے

سُرت نِرت سوں میلا کر کے ، ان حد ناد بجاوے

گھر میں بست ، بست بھی گھر ہے ، گھر ہی بستُ ملاوے

کہیں کبیرا سنو ہو سادھو ، جیوں کا تیوں ٹھہراوے

اودھو ، ہم کو وہ پیارا ہے جو بھولے بھٹکے کو گھر واپس لاتا ہے جو گھر چھوڑ کر جنگل میں پناہ نہیں لیتا کیونکہ گھر ہی میں وصال محبوب ہے اور گھر ہی میں زندگی کا لطف . جو آن دیکھے کو دکھاتا ہے . گھر ہی میں پابندیاں اور بندشیں ہیں اور گھر ہی میں نجات اور مکتی . جو آسانی سے شونیہ (مکمل خاموشی ، برھم) میں سما جائے اور آسانی سے سمادھی لگالے . جو ہر چیز سے بے نیاز ہوکر برھم کو پہچانے اور اصل حقیقت کو محسوس کرے جو پریم اور بیراگ کو ملا کر صوت سرمدی کا ساز چھیڑے . کبیر کہتے ہیں کہ گھر میں

३९

साधो, यह तन ठाठ तँबूरेका ।
ऐंचत तार मरोरत खूँटी, निकसत राग हजूरेका ॥
टूटे तार बिखर गई खूँटी, हो गया धूरम-धूरेका ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अगम पंथ कोई सूरेका॥

साधु, यह तन-तंबूरे का ठाठ है । जब खूँटी मरोड़ी जाती है और तार खिंचते हैं तो हुजूरी (भक्ति) का गीत बाहर निकलता है । अगर खूँटी टूट जाये और तार बिखर जायें तो यह धूल का साज धूल में मिल जायेगा । सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि इसमें से केवल ब्रह्म ही सुर बाहर निकाल सकते हैं ।

४०

अवधू, भूलेको घर लावै ।
सो जन हमको भावै ॥
घरमें जोग भोग घरहीमें, घर तज बन नहिं जावै ।
घरमें जुक्त मुक्त घरहीमें, जो गुरु अलख लखावै ।
सहज सुन्नमें रहै समाना, सहज समाधि लगावै ।
उन्मुनि रहै ब्रह्मको चीन्है, परम तत्वको ध्यावै ।
सुरत-निरतसों मेला करके, अनहद नाद बजावै ।
घरमें बसत बस्तु भी घर है, घर ही बस्तु मिलावै ।
कहैं कबीरा सुनो हो साधू, ज्योंका त्यों ठहरावै ॥

ऊधो, हमको तो बस वह प्यारा है जो भूले-भटके को घर वापस लाता है । हमें वह प्यारा है जो घर छोड़कर जंगल में बसेरा नहीं करता । क्योंकि घर ही में प्रिय का मिलन है और घर ही में जीवन का आनंद है । हमें वह प्यारा है जो अनदेखे को दिखा देता है । घर ही में पाबंदियाँ और बंधन हैं और घर ही में मुक्ति । हमें वह प्यारा है जो आसानी से शून्य में समा जाये और आसानी से समाधि लगा ले । जो हर चीज से विरक्त होकर ब्रह्म को पहचाने और सत्य को अनुभव करे । जो प्रेम और वैराग्य को मिलाकर अनहद राग

سب کچھ ہے . حقیقت گھر ہی میں ہے اور گھر ہی میں وہ حقیقت مل سکتی ہے .

۴۱

سنتو سہج سمادھ بھلی
سائیں تے ملن بھیو جا دِن تیں ، سُرت نہ انت چلی
آنکھ نہ موندون . کان نہ رُوندھوں ، کایا کشٹ نہ دھاروں
کھلے نین میں ہنس ہنس دیکھوں ، سندر روپ نہاروں
کہوں سو نام سُنوں سو سُمرن ، جو کچھ کروں سو پوجا
گرہ اُدیان ایک سم دیکھوں ، بھاؤ مٹاؤں دوجا
جہاں جہاں جاؤں ، سوئی پرکرما ، جو کچھ کروں سو سیوا
جب سوؤں تب کروں دنڈوت ، پوجوں اور نہ دیوا
شبد نرنتر منوا راتا ، ملِن بچن کا تیاگی
اوٹھت بیٹھت کبہوں نہ بسرے ایسی تاری لاگی
کہیں کبیر یہ اُنمُن رہنی . سو پرگٹ کر گائی
سکھ دُکھ کے اک پرے پرم سکھ تیہی میں رہا سمائی

سنتو سہج سمادھی ہی بھلی ہے . جب سے محبوب مل گیا ہے میں نے کسی اور سے لو نہیں لگائی ہے . نہ آنکھ بند کرتا ہوں نہ کان ، نہ جسم کو تکلیف پہنچاتا ہوں . کھلی آنکھوں سے ہنس ہنس کر اس کے حسن کا جلوہ دیکھتا ہوں . جو بولتا ہوں وہ نام ہے ، جو سنتا ہوں وہ تسبیح ، جو کرتا ہوں وہ عبادت . میرے لئے گھر اور گلستان ایک سا ہے ، دوئی باقی نہیں ہے . میں جہاں بھی جاؤں وہ طوافِ شوق ہے اور جو کچھ کروں وہی اس کی خدمت ہے . میری نیند میرا سجدہ ہے ، میں کسی اور دیوتا کی پوجا نہیں کرتا . دل مسلسل اس کے نام کا گیت گاتا ہے اور کوئی ناپاک لفظ زبان پر نہیں آتا ، اٹھتے بیٹھتے ، اس کی یاد تازہ رہتی ہے اور ساز کی لے ٹوٹنے نہیں پاتی . کبیر کہتے ہیں کہ میں نے اپنے دل کی دیوانگی کو ظاہر کردیا ہے . میں انبساط کی اس منزل میں ہوں جہاں دکھ اور سکھ دونوں بے معنی ہیں .

छेड़े। कबीर कहते हैं कि घर ही सब कुछ है। सत्य घर ही में है और घर ही में वह सत्य मिल सकता है।

४१

सन्तो, सहज समाधि भली।
साँईते मिलन भयो जा दिनतें, सुरत न अन्त चली॥
आँख न मूँदूँ कान न रूँधूँ, काया कष्ट न धारूँ।
खुले नैन मैं हँस हँस देखूँ, सुन्दर रूप निहारूँ॥
कहूँ सो नाम सुनूँ सो सुमिरन, जो कुछ करूँ सो पूजा।
गिरह-उद्यान एकसम देखूँ, भाव मिटाऊँ दूजा॥
जहँ जहँ जाऊँ सोई परिकरमा, जो कछु करूँ सो सेवा।
जब सोऊँ तब करूँ दण्डवत, पूजूँ और न देवा॥
शब्द निरन्तर मनुआ राता, मलिन बचनका त्यागी।
ऊठत-बैठत कबहुँ न बिसरै, ऐसी तारी लागी।
कहैं कबीर यह उन्मुनि रहनी, सो परगट कर गाई।
सुख-दुखके इक परे परम सुख, तेहिमें रहा समाई॥

संतो, सहज समाधि ही भली है। जबसे साईं से मिलन हो गया है तबसे मैंने किसी और से लौ नहीं लगायी है। न आँख बंद करता हूँ न कान, और न शरीर को कष्ट पहुँचाता हूँ। खुली आँखों से हँस-हँसकर उसका सुंदर रूप देखता हूँ। जो बोलता हूँ वह नाम है, जो सुनता हूँ वही सुमिरन है, जो करता हूँ वह पूजा है। मेरे लिए घर और उद्यान सब समान है, मेरे लिए उनमें कोई अंतर बाक़ी नहीं है। मैं जहाँ भी जाऊँ वही मेरे लिए परिक्रमा है और जो कुछ करूँ वही उसकी सेवा है। जब मैं सोता हूँ तब वही मेरी दंडवत है, मैं किसी और देवता की पूजा नहीं करता। मेरा मन निरंतर उसी के गीत गाता है और कोई कुशब्द मेरी जबान पर नहीं आता। उठते-बैठते उसकी याद ताजा रहती है और इस राग का क्रम टूटने नहीं पाता। कबीर कहते हैं कि मेरे हृदय में जो उन्माद था उसे मैंने प्रगट कर दिया है। मैं परम सुख की उस अवस्था में पहुँच गया हूँ जो सुख और दुख दोनों से परे है।

سب کچھ ہے۔ حقیقت گھر ہی میں ہے اور گھر ہی میں وہ حقیقت مل سکتی ہے۔

۴۱

سنتو سہج سمادھی بھلی
سائیں تے ملن بھیو جا دن تیں، سُرت نہ انت چلی
آنکھ نہ موندوں، کان نہ رُوندھوں، کایا کشٹ نہ دھاروں
کھلے نین میں ہنس ہنس دیکھوں، سندر روپ نہاروں
کہوں سو نام سُنوں سو سُمرن، جو کچھ کروں سو پوجا
گرہ اُدّیان ایک سم دیکھوں، بھاؤ مٹاؤں دوجا
جہاں جہاں جاؤں، سوئی پر کرما، جو کچھ کروں سو سیوا
جب سوؤں تب کروں دنڈوت، پوجوں اور نہ دیوا
شبد نرنتر منوا راتا، ملِن بچن کا تیاگی
اوٹھت بیٹھت کبہوں نہ بسرے ایسی تاری لاگی
کہیں کبیر یہ اُنمُن رہنی۔ سو پرگٹ کر گائی
سکھ دُکھ کے اک پرے پرم سکھ تیہی میں رہا سمائی

سنتو سہج سمادھی ہی بھلی ہے۔ جب سے محبوب مل گیا ہے میں نے کسی اور سے لو نہیں لگائی ہے۔ نہ آنکھ بند کرتا ہوں نہ کان، نہ جسم کو تکلیف پہنچاتا ہوں۔ کھلی آنکھوں سے ہنس ہنس کر اس کے حسن کا جلوہ دیکھتا ہوں۔ جو بولتا ہوں وہ نام ہے، جو سنتا ہوں وہ تسبیح، جو کرتا ہوں وہ عبادت۔ میرے لئے گھر اور گلستان ایک سا ہے، دوئی باقی نہیں ہے۔ میں جہاں بھی جاؤں وہ طواف شوق ہے اور جو کچھ کروں وہی اس کی خدمت ہے۔ میری نیند میرا سجدہ ہے، میں کسی اور دیوتا کی پوجا نہیں کرتا۔ دل مسلسل اس کے نام کا گیت گاتا ہے اور کوئی ناپاک لفظ زبان پر نہیں آتا، اٹھتے بیٹھتے، اس کی یاد تازہ رہتی ہے اور ساز کی لے ٹوٹنے نہیں پاتی۔ کبیر کہتے ہیں کہ میں نے اپنے دل کی دیوانگی کو ظاہر کردیا ہے۔ میں انبساط کی اس منزل میں ہوں جہاں دکھ اور سکھ دونوں بے معنی ہیں۔

۴۲

تیرتھ میں تو سب پانی ہے ، ہووے اہیں کچھ۔ انہانے دیکھا
پرتما سکل تو جڑ ہیں بھائی، بولیں نہیں بولائے دیکھا
پُران کُران سبے بات ہے . یا گھٹ کا پردہ کھول دیکھا
اُنبھو کی بات کبیر کہیں یہ . سب ہے جھوٹی پول دیکھا

تیرتھ میں تو سب پانی ہی پانی ہے . میں نے نہا کے دیکھا ہے اس سے کچھ بھی نہیں ہوگا. ساری مورتیاں بے جان ہیں . میں نے آواز دے کے دیکھا ہے کوئی جواب نہیں ملتا. پُران اور قرآن سب لفظ ہی لفظ ہیں . میں اپنے وجود کا پردہ اٹھاکر دیکھ چکا ہوں. کبیر تو صرف تجربے کی بات کرتے ہیں (انبھو = تجربہ ، گیان = عرفان) باقی سب جھوٹی باتیں ہیں . میں نے ان کی پول دیکھ لی ہے .

۴۳

پانی بچ مین پیاسی
مونہی سُن سُن آوے ہانسی
گھر میں وستُ نجر نہیں آوت
بن بن پھرت اُداسی
آتم گیان بنا جگ جُھونٹھا
کیا متھرا کیا کاسی

پانی میں مچھلی پیاسی ہے . یہ سن کر مجھے ہنسی آجاتی ہے . گھر ہی میں رکھی ہوئی چیز نظر نہیں آئی (اور اس کی تلاش میں) جنگل جنگل اداس پھر رہے ہیں. اگر آتم گیان (خود شناسی ، عرفانِ روح) نہ ہو تو چاہے متھرا جاؤ چاہے کاشی یہ دنیا جھوٹی ہی نظر آئے گی. (بھگوان تیرتھ استھانوں میں نہیں ہے انسان کے وجود میں ہے)

۴۴

گگن مٹھ گیب نسان آڑے
چندر ہار چندوا جہاں ٹانگے ، مُکتا مانک مڑھے
مہما تاسُ دیکھ من تھِر کر ، روِ سس جوت جرے
کہیں کبیر پئے جوئی جن ، ماتا پھرت مرے

४२

तीरथमें तो सब पानी है, होवे नहीं कछु अन्हाय देखा ।
प्रतिमा सकल तो जड़ हैं भाई, बोलें नहीं बोलाय देखा ।
पुरान-कोरान सबै बात है, या घटका परदा खोल देखा ।
अनुभवकी बात कबीर कहैं यह, सब है झूठी पोल देखा ॥

तीर्थों में तो सब पानी ही पानी है। मैंने वहाँ नहाकर देखा है, उससे कुछ भी नहीं होता। सारी मूर्तियाँ जड़ (निर्जीव) हैं, मैंने आवाज़ देकर देखा है, कोई जवाब नहीं मिलता। पुराण और क़ुरान में शब्द ही शब्द हैं। मैं अपने घट (शरीर) का परदा उठाकर देख चुका हूँ। कबीर तो अपने अनुभव की बात कहते हैं, बाक़ी सब झूठी बातें हैं, मैंने इनकी पोल देख ली है।

४३

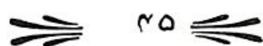
पानी बिच मीन पियासी ।
मोहिं सुन सुन आवै हाँसी ॥
घरमें वस्तु नजर नहिं आवत
बन बन फिरत उदासी ।
आतमज्ञान बिना जग झूठा
क्या मथुरा क्या कासी ।

पानी में मछली प्यासी है, यह सुनकर मुझे हँसी आती है। घर ही में रखी हुई चीज दिखायी नहीं दी और उसकी खोज में जंगल जंगल परेशान फिर रहे हैं। अगर आत्म-ज्ञान न हो तो चाहे मथुरा जाओ चाहे काशी, यह दुनिया झूठी ही दिखायी देगी।

४४

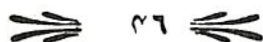
गगन मठ गैब निसान उड़े ।
चन्द्रहार चँदवा जहँ टाँगे, मुक्ता-मानिक मढ़े ।
महिमा तासु देख मन थिरकर, रवि-ससि जोत जरे ।
कहैं कबीर पियै जोई जन, माता फिरत मरे ।

آسمان کے مندر پر غیب کا پرچم لہرا رہا ہے جس کو چاند نے چندر ہار اور ستاروں نے جواہرات سے سجا دیا ہے. اس عظیم نظارے کو دیکھ کر روح و دل کا سکون حاصل کرو جس میں چاند اور سورج روشن ہیں. کبیر کہتے ہیں کہ جس نے یہ شراب پی لی وہ مست ہوگیا.



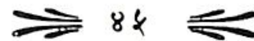
سادھو، کو ہے کہاں سے آیو
تیہی کے من دھوں کہاں بست ہے، کو دھوں ناچ نچایو
پاوک سرو انگ کاٹھہی میں، کو دھوں ڈہک جگایو
ہوگیا کھاک تیج پُنِ واکو، کہو دھوں کہاں سمایو
اہے اپار پار کچھُ ناہیں، ست گُرو جنہیں لکھایو
کہیں کبیر جیہی سوجھ بوجھ جس، تیہٖ تس آج سنایو

سادھو تم کون ہو، کہاں سے آئے ہو؟ وہ ارفع اور اعلیٰ کہاں بستا ہے اور وہ کائینات کو کیسا ناچ نچا رہا ہے. آگ لکڑی میں چھپی ہوتی ہے. پھر اسے کون جگا دیتا ہے. جب لکڑی جل کر خاک ہوجاتی ہے تو آگ کہاں چلی جاتی ہے. جنہوں نے ست گرو کو دیکھ لیا ہے اُن کے لئے پار اپار (محدود لا محدود) کچھ بھی نہیں. کبیر کہتے ہیں کہ جس کی سوجھ بوجھ جیسی ہوتی ہے اس کو ویسی ہی بات میں نے آج سنائی ہے.



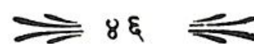
سادھو سہجے کایا سودھو
جیسے بٹ کا بیج تاہی میں پتر پھول پھل چھایا
کایا مدّھے بیج براجے، بیجا مدھے کایا
اگنِ پوَن پانی پرتھی نبھ، تا بن ملے ناہیں
کاجی پنڈت کرو نرنئے کو نہ آپا ماہیں
جل بھر کُمبھ جلے بچ دھریا، باہر بھیتر سوئی
اُن کو نام کہن کو ناہیں. دوجا دھوکھا ہوئی
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، ستّیہ شبد نِج سارا
آپا مدّھیں آپے بولے آپے سرجن ہارا

आकाश के मंदिर पर गैब का (अद्भुत) झंडा लहरा रहा है जिसे चंद्रमा ने चंद्रहार और सितारों ने माणिक-मोतियों से सजा दिया है। इसकी महिमा देखकर मन को स्थिर करो, जिसमें चाँद और सूरज की रोशनी है। कबीर कहते हैं कि जिसने यह शराब पी ली वह मस्त हो गया।



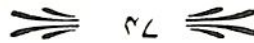
साधो, को है कहँसें आयो।
तेहिके मन धौं कहाँ बसत है, को धौं नाच नचायो॥
पावक सर्व अंग काठहिमें, को धौं डहक जगायो।
हो गया खाक तेज पुनि वाको, कहु धौं कहाँ समायो॥
अहै अपार पार कछु नाहीं, सतगुरु जिन्है लखायो।
कहैं कबीर जेहि सूझ-बूझ जस, तेई तस आज सुनायो॥

साधु, तुम कौन हो, कहाँ से आये हो? वह सर्वशक्तिमान कहाँ बसता है और वह सृष्टि को कैसा नाच नचा रहा है। आग लकड़ी के हर हिस्से में छुपी हुई है फिर उसे कौन जगा देता है। जब लकड़ी जलकर राख होजाती है तो आग कहाँ चली जाती है। जिनको सत्गुरु के दर्शन हो गये हैं उनके लिए पार-अपार कुछ नहीं है। कबीर कहते हैं कि जिसकी सूझ-बूझ जैसी है उसको वैसी ही बात मैंने आज सुनायी है।



साधो, सहजै काया सोधो।
जैसे बटका बीज ताहिमें पत्र-फूल-फल-छाया।
काया-मद्धे बीज बिराजे, बीजा मद्धे काया।
अग्नि-पवन-पानी-पिरथी-नभ, ता-बिन मिलै नाहीं।
काजी पंडित करो निरनय को न आपा माहीं।
जल-भर कुंभ जलै बिच धरिया, बाहर-भीतर सोई।
उनको नाम कहनको नाहीं, दूजा धोखा होई।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सत्य-शब्द निज सारा।
आपा-मद्धें आपै बोलै, आपै सिरजनहारा।

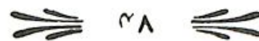
سادھو جسم کی پاکیزگی بہت آسان ہے۔ جیسے پیڑ کے بیج میں پھول، پتیاں، پھل اور سایہ چھپا ہے ویسے ہی جسم کے اندر بیج ہے اور بیج کے اندر جسم۔ اس کے بغیر آگ، ہوا، پانی، زمین، آسمان، کچھ نہیں مل سکتا۔ قاضی اور پنڈت ذرا غور کریں کہ آپ (وجود) کے اندر کیا نہیں ہے۔ پانی سے بھرا گھڑا پانی میں رکھا ہے۔ اس کے اندر بھی پانی ہے اور باہر بھی پانی۔ اس کو کوئی نام دینا غلطی ہے۔ اس سے دوئی کا دھوکا ہوتا ہے۔ بھائی سادھو سنو کبیر کہتے ہیں کہ صرف صداقت ہی اصل روح ہے۔ اپنے وجود کے اندر وہ خود ہی بول رہا ہے وہ جو خود وجود ہے اور خود خالق ہے۔



۴۷

ترور ایک مُول بن ٹھاڑھا ۔ بن پھولے پھل لاگے
ساکھا پترْ کچھو نہیں تاکے ۔ سکل کمل دل گاجے
چڑھ ترور دو پنچھی بولے، ایک گرو ایک چیلا
چیلا رہا سو رس چُن کھایا، گرو نرنتر کھیلا
پنچھی کے کھوج اگم پر گٹ، کہیں کبیر بڑی بھاری
سب ہی مورت بیچ امورت، مورت کی بَلہاری

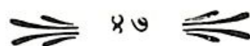
ایک درخت ہے کہ بغیر جڑ کے کھڑا ہوا ہے اور بغیر پھول کے پھل دے رہا ہے۔ اس میں شاخیں ہیں نہ پتیاں۔ وہ سارے کا سارا کنول ہے۔ اس پر بیٹھے ہوئے دو پنچھی بول رہے ہیں۔ ایک گرو اور ایک چیلا۔ چیلا چن چن کے رسیلے پھل کھا رہا ہے اور گرو خوش ہوکر دیکھ رہا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس کا سمجھنا دشوار ہے کہ پنچھی تلاش کی حدوں سے باہر ہے پھر بھی صاف دکھائی دے رہا ہے۔ ہر مورت (شکل) کے اندر امورت (بے شکل) ہے۔ ہر مورت پر قربان جائیے۔



۴۸

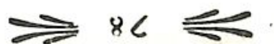
چلت منسا اچل کینھی، من ہوا رنگی
تنسو میں نہ تنو درسا، سنگ میں سنگی
بندھ تے نربندھ کینہا، توڑ سب تنگی
کہیں کبیر اگم گم کییا، پریم رنگ رنگی

साधु, काया को शुद्ध करना बहुत आसान है। जैसे बरगद के बीज में पत्ते, फूल, फल, छाया सभी कुछ छुपा है वैसे ही शरीर के अंदर बीज है और बीज के अंदर शरीर। उसके बिना आग, हवा, पानी, पृथ्वी, आकाश कुछ भी नहीं मिल सकता। क़ाज़ी और पंडित ज़रा विचार करें कि आपे में (आत्मा में) क्या नहीं है। पानी से भरा घड़ा पानी में रखा है। उसके अंदर भी पानी है और बाहर भी पानी। उसको कोई नाम देना ग़लती है क्योंकि इससे यह भ्रम हो सकता है कि वह मुझसे भिन्न है। कबीर कहते हैं कि केवल सत्य शब्द ही असल आत्मा है। अपने अस्तित्व में वह आप ही बोल रहा है, वह जो स्वयं अस्तित्व है, स्वयं ही सृजनहार भी है।



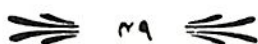
तरवर एक मूल बिन ठाढ़ा, बिन फूले फल लागे।
साखा-पत्र कछू नहिं ताके, सकल कमल-दल गाजे।
चढ़ तरवर दो पंछी बोले, एक गुरू एक चेला।
चेला रहा सो रस चुन खाया, गुरू निरन्तर खेला॥
पंछीके खोज अगम परगट, कहैं कबीर बड़ी भारी।
सब ही मूरत बीज अमूरत, मूरतकी बलिहारी॥

एक पेड़ है जो बिना जड़ के खड़ा है, और बिना फ़ूल लगे ही फल दे रहा है। उसमें न डालें हैं न पत्तियाँ। उसमें बस कमल की पंखड़ियाँ ही पंखड़ियाँ हैं। इस पेड़ पर बैठे हुए दो पक्षी बोल रहे हैं — एक गुरु और एक चेला। चेला चुन-चुनकर रसीले फल खा रहा है और गुरु खुश होकर देख रहा है। कबीर कहते हैं कि उसका समझना बहुत कठिन है क्योंकि पंछी खोज की सीमा से बाहर है फिर भी साफ़ दिखायी दे रहा है। हर मूरत (साकार) के अंदर अमूरत (निराकार) है। हर मूरत की बलिहारी है।



चलत मनसा अचल कीन्ही, मन हुआ रंगी।
तत्वमें निहतत्व दरसा, संगमें संगी॥
बंधते निर्बन्ध कीन्हा, तोड़ सब तंगी।
कहैं कबीर अगम गम कीया, प्रेम रंग रंगी॥

میں نے اپنی بے چین روح کا سکون حاصل کرلیا ہے اور اب میرا دل ایسے رنگ میں ڈوب گیا ہے کہ میں نے تتو (= ساکار = شکل) میں نہ تتو (= نراکار = بے شکل) کو دیکھ لیا ہے اور وصال میں محبوب کو حاصل کرلیا ہے میں علائق کی بندشوں سے آزاد ہوگیا ہوں اور میں نے تنگ حدوں کو توڑ دیا ہے . کبیر کہتے ہیں کہ میں نے ناقابل حصول کو حاصل کرلیا ہے اور میرا دل محبت کے رنگوں سے رنگین ہوگیا ہے .



جو دیسے سو تو ہے ناہیں، ہے سو کہا نہ جائی
بن دیکھے پرتیت نہ آوے، کہے نہ کو پتیانا
سمجھا ہوئے تو شبدے چینہے۔ اچرج ہوئے ایانا
کوئی دھیاوے نراکار کو، کوئی دھیاوے آکارا
یا ودھ اس دونوں تیں نیارا، جانے جانن ہارا
وہ راگ تو لکھا نہ جائی، ماترا لگے نہ کانا
کہیں کبیر سو پڑھے نہ پرلے، سرت نرت جی جانا

جو دکھائی دیتا ہے وہ ہے نہیں اور جو ہے وہ بیان سے باہر ہے . بغیر دیکھے یقین نہیں آتا اور جو بیان کیا جائے وہ قابل اعتبار نہیں . صرف عارف لفظوں کو پہچان سکتا ہے اور جسے عرفاں نہیں وہ حیران ہے کوئی تو نراکار (بے شکل) کا دھیان کرتا ہے اور کوئی آکار (شکل) کا لیکن صرف جاننے والے (عارف) یہ جانتے ہیں کہ برھم دونوں سے پرے ہے . وہ راگ ہے جو آنکھوں سے دیکھا نہیں جاسکتا اور اس کی ماترائیں (آوازیں، زیر و بم) کانوں کو سنائی نہیں دیتیں . کبیر کہتے ہیں کہ جس نے پریم اور بیراگ دونوں کو اپنا لیا ہے اسے موت سے نجات مل گئی .



مُرلی بجت اکھنڈ سداسے، تہاں پریم جھنکارا ہے
پریم حد تجی جب بھائی، ست لوک کی حد پن آئی

मैंने अपने चंचल मन को स्थिर कर लिया है। मेरे मन पर ऐसा रंग चढ़ गया है कि मैंने तत्त्व (साकार) में निःतत्त्व (निराकार) को देखा है और मिलन में अपना इष्ट प्राप्त कर लिया है। सारी सीमाओं को तोड़कर मैंने बंधनों से अपने आपको मुक्त कर लिया है। कबीर कहते हैं कि मैंने अगम को गम कर लिया है और मेरा मन प्रेम के रंग में रंग गया है।



जो दीसै सो तो है नाहीं, है सो कहा न जाई।
बिन देखै परतीत न आवै, कहै न को पतियाना।
समझा होय तो शब्दै चीन्है, अचरज होय अयाना।
कोई ध्यावै निराकारको, कोई ध्यावै आकारा।
या विधि इस दोनोंतें न्यारा, जानै जाननहारा।
वह राग तो लखा न जाई, मात्रा लगै न काना।
कहै कबीर सो पढ़ै न परलय, सुरत-निरत जिन जाना॥

जो दिखायी देता है वह है नहीं और जो है वह बयान से बाहर है। बिना देखे विश्वास नहीं होता और जैसा उसका वर्णन किया जाता है वह विश्वास करने योग्य नहीं है। जिसे ज्ञान हो वही शब्दों को पहचान सकता है और जो अज्ञानी है वह हैरान है। कोई तो निराकार का ध्यान करता है और कोई साकार का लेकिन केवल ज्ञानी ही जानते हैं कि ब्रह्म इन दोनों से भिन्न है। वह राग है जो आँखों से देखा नहीं जासकता क्योंकि उसमें शब्दों की तरह मात्रा (पाई) और बिंदियाँ आदि नहीं लगायी जातीं। कबीर कहते हैं कि जिसने प्रेम और वैराग दोनों को अपना लिया है उसे प्रलय का कोई भय नहीं।



मुरली बजत अखंड सदासे, तहाँ प्रेम झनकारा है।
प्रेम-हद तजी जब भाई, सत्त लोककी हद पुनि आई।

انہت سگندھ مہا ادھکائی، جاکو وار نہ پارا ہے
کوٹ بھان راگ کو روپا، بین ست دھن بجے انوپا

ابدیت کا ساز ہمیشہ سے بج رہا ہے اور عشق اس کی جھنکار ہے. جب انسان عشق کی تمام حدوں سے باہر آ جاتا ہے تب عالم صداقت (ست لوک) کی حدوں میں داخل ہوتا ہے. خوشبو کا پھیلتا ہوا دامن بے کنار ہے. اُس کا کوئی اور چھور نہیں ہے، یہ راگ کروڑوں آفتابوں کی شکل اختیار کر رہا ہے. صداقت کی وینا کی دُھن نرالی ہے.

۵۱

سکھیو، ہم ہُوں بھئی بلماسی
آیو جوبن برہ ستایو. اب میں گیان گلی اُٹھلاتی
گیان گلی میں کھبر مل گئے. ہمیں ملی پیا کی پاتی
واپاتی میں اگم سندیسا، اب ہم مرنے کو نہ ڈراتی
کہت کبیر سنو بھائی پیارے، برپائے اَبناسی

سکھیو میں اپنے بالم سے ملنے کے لئے بیقرار ہوں. جوبن چڑھ رہا ہے اور جدائی ستا رہی ہے. میں گیان کی گلی میں اٹھلاتی پھر رہی ہوں. مجھے گیان کی گلی میں اس کی خبر مل گئی ہے. بالم کا پتر میرے نام آیا ہے اور اس میں ایک ایسا سندیسہ ہے جسے میں کہہ نہیں سکتی مگر اب مرنے سے ڈر نہیں لگتا. پیارے بھائی سنو کبیر کہتے ہیں کہ مجھے لا فانی پریتم (بر = شوہر) ملا ہے.

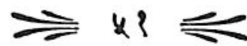
۵۲

سائیں بن درد کریجے ہوئے
دن نہیں چین رات نہیں نندیا، کاہے کہوں دُکھ ہوئے
آدھی رتیاں پچھلے پہرواَ، سائیں بنا ترس رہی سوئے
کہت کبیر سنو بھائی پیارے، سائیں ملے سُکھ ہوئے

سائیں (محبوب) نہیں ہے تو کلیجے میں درد اٹھتا ہے. دن کو چین نہیں، رات کو نیند نہیں، آخر میں اپنا دکھ کس سے کہوں. آدھی رات ہو یا پچھلا پہر محبوب کے بغیر ایک نیند کے لئے ترس رہی ہوں. سنو پیارے بھائی کبیر کہتے ہیں کہ محبوب ملے تو چین آئے.

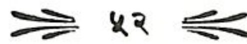
उठत सुगंध महा अधिकाई, जाको वार न पारा है ।
कोटि भान रागको रूपा, बीन सत-धुन बजै अनूपा ॥

यह मुरली सदा से निरंतर बज रही है, और प्रेम इसकी ध्वनि है । जब मनुष्य प्रेम की सीमाओं से पार निकल जाता है तो सत्यलोक की सीमा आती है । वहाँ सुगंध का अपार विस्तार है । यह राग करोड़ों सूर्यों का रूप धारण कर रहा है । वीणा पर सत्य की अनुपम धुन बज रही है ।



सखियो, हमहूँ भई बलमासी ।
आयो जोबन बिरह सतायो, अब मैं ज्ञान गली अठिलाती ।
ज्ञान-गलीमें खबर मिल गये, हमें मिली पियाकी पाती ।
वा पातीमें अगम सँदेसा, अब हम मरनेको न डराती ।
कहत कबीर सुनो भाई प्यारे, बर पाये अबिनासी ।

सखियो, मैं अपने बालम से मिलने को बेचैन हूँ । यौवन आया है और विरह सता रहा है । मैं ज्ञान की गली में इठलाती फिर रही हूँ । ज्ञान की गली में मुझे उसकी खबर मिल गयी है । बालम का पत्र मेरे नाम आया है और उसमें एक ऐसा संदेसा है जिसे मैं कह नहीं सकती (अगम) मगर अब मरने से डर नहीं लगता । प्यारे भाई सुनो, कबीर कहते हैं कि मुझे अविनाशी पति मिल गया है ।



साईं बिन दरद करेजे होय ।
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया, कासे कहूँ दुख होय ।
आधी रतियाँ पिछले पहरवा, साईं बिना तरस रही सोय ।
कहत कबीर सुनो भाई प्यारे, साई मिले सुख होय ॥

सांई (स्वामी) नहीं है तो कलेजे में पीड़ा होती है । दिन को चैन नहीं, रात को नींद नहीं, आखिर मैं अपना दुःख किससे कहूँ । आधी रात हो या पिछला पहर अपने साईं के बिना मैं एक नींद के लिए तरस रही हूँ । सुनो प्यारे भाई, कबीर कहते हैं कि साईं (प्रेमी) मिले तो चैन आये ।

۵۳

کون مرلی شبد سن آنند بھیو
جوت برے بن باتی
بنا مول کے کمل پرگٹ بھیو
پھلو پھلت بھانت بھانتی
جیسے چکور چندرما چتوے
جیسے چاترک سوانتی
تیسے سنت سرت کے ہوکے
ہو گئے جنم سنگھاتی

یہ کیسی مرلی بج رہی ہے میں جسے سن کر سرشار ہوگیا ہوں. بتی نہیں ہے لیکن چراغ جل رہا ہے. جڑ نہیں ہے لیکن کنول کھل رہا ہے. رنگ برنگے پھول ہنس رہے ہیں. جیسے چکور چاند کو لگاتار تکتا رہتا ہے اور چاتک (پپیہا) سواتی کی ایک بوند کی امید لگائے رہتا ہے اسی طرح اس کے پریم (سرت) میں میرا سنتوں سے عمر بھر کا ساتھ ہوگیا ہے.

۵۴

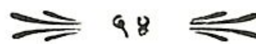
سنتا نہیں دھن کی کھبر. انہد کا باجا باجتا
رس مند مندر باجتا، باہر سنے تو کیا ہوا
اک پریم رس چاکھا نہیں، عملی ہوا تو کیا ہوا
کاجی کتابیں کھوجتا، کرتا نصیحت اور کو
محرم نہیں اس حال سے، کاجی ہوا تو کیا ہوا
جوگی دگمبر سیوڑا، کپڑا رنگے رنگ لال سے
واقف نہیں اس رنگ سے، کپڑا رنگے سے کیا ہوا
مندر جھروکھا راوٹی، گل چمن میں رہتے سدا
کہتے کبیرا ہیں صحیح، ہردم میں صاحب رم رہا

ابدیت کا ساز بج رہا ہے لیکن تجھے اس کی دھن کی خبر نہیں ہے. مسرت کا یہ نغمہ خود مندر (وجود = گھٹ) کے اندر گونج رہا ہے. اس کو مندر کے باہر آکر سننے سے کیا فائدہ. اگر پریم رس نہیں



कौन मुरली-शब्द सुन आनन्द भयो
जोत बरे बिन बाती।
बिना मूलके कमल प्रगट भयो।
फुलवा फुलत भाँति भाँति।
जैसे चकोर चन्द्रमा चितवै
जैसे चातृक स्वाँती।
तैसे संत सुरतके होके
हो गये जनम सँवाती ॥

यह कौनसी मुरली बज रही है जिसे सुनकर मैं आनंद-विभोर होगया। बत्ती नहीं है लेकिन ज्योति जल रही है। जड़ नहीं है लेकिन कमल खिल रहा है। रंग-बिरंगे फूल हँस रहे हैं। जैसे चकोर चंद्रमा को देखता है और चातक स्वाति की बूँद की आस लगाये रहता है वैसे ही उससे प्रेम (सुरत) हो जाने पर मेरा संतों से जनम-भर का साथ हो गया।



सुनता नहीं धुनकी खबर, अनहद का बाजा बाजता।
रस मंद मंदिर बाजता, बाहर सुने तो क्या हुआ।
इक प्रेम-रस चाखा नहीं, अमलो हुआ तो क्या हुआ ॥
काजी किताबें खोजता, करता नसीहत औरको।
महरम नहीं उस हालसे, काजी हुआ तो क्या हुआ ॥
जोगी दिगंबर सेवड़ा, कपड़ा रंगे रंग लालसे।
वाकिफ नहीं उस रंगसे, कपड़ा रँगेसे क्या हुआ ॥
मन्दिर-झरोखा-रावटी, गुल चमनमें रहते सदा।
कहते कबीरा हैं सही हर-दममें साहिब रम रहा ॥

अनहद नाद हो रहा है लेकिन तुझे उसकी धुन की खबर नहीं है। मधुर संगीत स्वयं मंदिर के अंदर गूँज रहा है उसे मंदिर से बाहर आकर सुनने से क्या फ़ायदा। अगर तूने प्रेम रस नहीं चखा है तो और सारे नशे करने से

چکھا ہے۔ (عشق کا جام نہیں پیا ہے) تو اوپری عمل (روزہ، نماز پوجا پاٹ) سے کچھ نہیں ہوسکتا۔ قاضی کتابیں ڈھونڈھتا پھرتا ہے، اوروں کو نصیحت کرتا ہے لیکن وہ محرم راز نہیں ہے تو صرف قاضی ہونے سے کیا فائدہ، جوگی اپنے کپڑے لال رنگ سے رنگتے ہیں لیکن اگر وہ محبت کے رنگ سے واقف نہیں تو کپڑے رنگنے سے کیا ہوگا۔ مندر میں بیٹھنا، جھروکوں میں جھانکنا، پھولوں کے باغ میں سیر کرنا بے سود ہے۔ کبیر صحیح کہتے ہیں کہ صاحب (بھگوان، برھم) تو ہر سانس میں رچا اور بسا ہوا ہے۔

٥٥

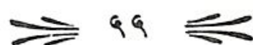
بھکتی کا مارگ جھینارے
اچاہ نہیں چاہنا، چرنن لو لینارے
سادھن کے رس دھار میں، رہے نس دن بھینارے
راگ میں سُرت ایسے بسے۔ جیسے جل مینارے
سائیں سیون میں دیت سر، کچھ بلم نہ کینارے
کہیں کبیر مت بھکتی کا، پرگٹ کر دینارے

بھکت (جویائے حق) کا راستہ باریک ہے۔ وہاں چاہنا اور نہ چاہنا بیکار ہے۔ صرف مالک کے قدموں پر نثار ہوجانا ہی سب کچھ ہے۔ وہاں بھکت اپنی سادھنا کی رس دھار میں ہر وقت ڈوبا رہتا ہے۔ اس کے راگ میں محبت ایسی رچی اور بسی ہوئی ہے جیسے مچھلی پانی میں تیرتی ہے۔ وہ سائیں (حق) کی سیوا میں اپنا سر دے دیتا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ میں نے اس بھگتی کے راز کو ظاہر کر دیا ہے۔

٥٦

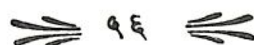
بھائی، کوئی ست گرو سنت کہاوے
نینن الکھ لکھاوے
پران پوجیہ کریاتے نیارا، سہج سمادھ سکھاوے
دوار نہ روندھے پون نہ روکے، نہیں بھو کھنڈ تجاوے
یہ من جائے یہاں لگ جب ہی پرماتم درساوے
کرم کرے نہ کرم رہے جو، ایسی جگت لکھاوے

क्या फ़ायदा । क़ाज़ी किताबें ढूँढता फिरता है, दूसरों को नसीहत करता है, लेकिन अगर वह मर्म को नहीं जानता तो केवल क़ाज़ी होने से क्या फ़ायदा है । योगी अपने कपड़े लाल रंग से रंगते हैं लेकिन अगर वह उस (प्रेम के) रंग से परिचित नहीं है तो कपड़े रंगने से क्या होगा । मंदिर में बैठना, झरोखों में झाँकना, अटारियों पर ध्यान लगाना और बाग़-बग़ीचों में सैर करना बेकार है । कबीर सच ही कहते हैं कि साहब (भगवान, ब्रह्म) तो हर साँस में रमा हुआ है ।



भक्तिका मारग झीना रे ।
नहिं अचाह नहिं चाहना, चरनन लौ लीना रे ।
साधनके रस-धारमें, रहे निस-दिन भीना रे ।
रागमें स्रुत ऐसे बसे, जैसे जल मीना रे ।
साँई सेवनमें देत सिर, कुछ बिलम न कीना रे ।
कहैं कबीर मत भक्तिका, परगट कर दीना रे ।

भक्ति का मार्ग बहुत सूक्ष्म (झीना) है । वहाँ चाहना और न चाहना बेकार है, केवल (प्रभु के) चरणों से लौ लगायी जाती है । वहाँ भक्त अपनी साधना की रस-धार में हर वक़्त डूबा रहता है । उसके राग में प्रेम ऐसा रचा-बसा है जैसे मछली पानी में रहती है । वह साईं की सेवा में बिना किसी संकोच के तन-मन अर्पित कर देता है । कबीर कहते हैं कि मैंने इन शब्दों में भक्ति के मत को व्यक्त कर दिया है ।



भाई, कोई सतगुरु सन्त कहावै ।
नैनन अलख लखावै ॥
प्राण पूज्य किरियाते न्यारा, सहज समाध सिखावै ।
द्वार न रूँधै पवन न रोके, नहि भवखण्ड तजावै ।
यह मन जाय यहाँ लग जब ही परमातम दरसावै ।
करम करै निःकरम रहै जो, ऐसी जुगत लखावै ।

چکھا ہے ۔ (عشق کا جام نہیں پیا ہے) تو اوپری عمل (روزہ ، نماز پوجا پاٹ) سے کچھ نہیں ہوسکتا ۔ قاضی کتابیں ڈھونڈھتا پھرتا ہے ، اوروں کو نصیحت کرتا ہے لیکن وہ محرم راز نہیں ہے تو صرف قاضی ہونے سے کیا فائدہ ، جوگی اپنے کپڑے لال رنگ سے رنگتے ہیں لیکن اگر وہ محبت کے رنگ سے واقف نہیں تو کپڑے رنگنے سے کیا ہوگا ۔ مندر میں بیٹھنا ، جھروکوں میں جھانکنا ، پھولوں کے باغ میں سیر کرنا بے سود ہے ۔ کبیر صحیح کہتے ہیں کہ صاحب (بھگوان ، برھم) تو ہر سانس میں رچا اور بسا ہوا ہے ۔

۵۵

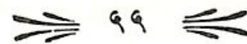
بھگتِ کا مارگ جھینارے
اچاہ نہیں چاہنا ، چرنن لو لینارے
سادھن کے رس دھار میں ، رہے نِس دن بھینارے
راگ میں سُرت ایسے بسے ، جیسے جل مینارے
سائیں سیون میں دیت سِر ، کچھ بلم نہ کینارے
کہیں کبیر مت بھگتی کا ، پرگٹ کر دینارے

بھگت (جویائے حق) کا راستہ باریک ہے ۔ وہاں چاہنا اور نہ چاہنا بیکار ہے ۔ صرف مالک کے قدموں پر نثار ہوجانا ہی سب کچھ ہے ۔ وہاں بھگت اپنی سادھنا کی رس دھار میں ہر وقت ڈوبا رہتا ہے ۔ اس کے راگ میں محبت ایسی رچی اور بسی ہوتی ہے جیسے مچھلی پانی میں تیرتی ہے ۔ وہ سائیں (حق) کی سیوا میں اپنا سر دے دیتا ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ میں نے اس بھگتی کے راز کو ظاہر کر دیا ہے ۔

۵٦

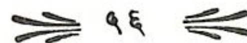
بھائی ، کوئی ست گرو سنت کہاوے
نینن الکھ لکھاوے
پران پوجیہ کریاتے نیارا ، سہج سمادھ سکھاوے
دُوار نہ رُوندھے پون نہ روکے ، نہیں بھَو کھنڈ تجاوے
یہ من جائے یہاں لگ جب ہی پرماتم درساوے
کرم کرے نہ کرم رہے جو ، ایسی جُگت لکھاوے

क्या फ़ायदा। क़ाज़ी किताबें ढूँढता फिरता है, दूसरों को नसीहत करता है, लेकिन अगर वह मर्म को नहीं जानता तो केवल क़ाज़ी होने से क्या फ़ायदा है। योगी अपने कपड़े लाल रंग से रंगते हैं लेकिन अगर वह उस (प्रेम के) रंग से परिचित नहीं है तो कपड़े रंगने से क्या होगा। मंदिर में बैठना, झरोखों में झाँकना, अटारियों पर ध्यान लगाना और बाग़-बग़ीचों में सैर करना बेकार है। कबीर सच ही कहते हैं कि साहब (भगवान, ब्रह्म) तो हर साँस में रमा हुआ है।


९९

भक्तिका मारग झीना रे।
नहिं अचाह नहिं चाहना, चरनन लौ लीना रे।
साधनके रस-धारमें, रहे निस-दिन भीना रे।
रागमें स्रुत ऐसे बसे, जैसे जल मीना रे।
साँई सेवनमें देत सिर, कुछ बिलम न कीना रे।
कहैं कबीर मत भक्तिका, परगट कर दीना रे।

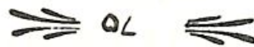
भक्ति का मार्ग बहुत सूक्ष्म (झीना) है। वहाँ चाहना और न चाहना बेकार है, केवल (प्रभु के) चरणों से लौ लगायी जाती है। वहाँ भक्त अपनी साधना की रस-धार में हर वक़्त डूबा रहता है। उसके राग में प्रेम ऐसा रचा-बसा है जैसे मछली पानी में रहती है। वह साईं की सेवा में बिना किसी संकोच के तन-मन अर्पित कर देता है। कबीर कहते हैं कि मैंने इन शब्दों में भक्ति के मत को व्यक्त कर दिया है।


९६

भाई, कोई सतगुरु सन्त कहावै।
नैनन अलख लखावै॥
प्राण पूज्य किरियाते न्यारा, सहज समाध सिखावै।
द्वार न रूँधै पवन न रोके, नहि भवखण्ड तजावै।
यह मन जाय यहाँ लग जब ही परमातम दरसावै।
करम करै निःकरम रहै जो, ऐसी जुगत लखावै।

سدا ولاس تراس نہیں تن میں، بھوگ میں جوگ جگاوے
دھرتی، پانی، آکاش، پون میں، ادھر منڈیا چھاوے
سُن سِکھر کے سار سِلا پر، آسن اچل جماوے
بھیتر رہا سو باہر دیکھے، دوجا درشٹ نہ آوے

بھائی ست گرو سنت (اصلی سادھو) وہ ہے جو آنکھوں کو نہ دکھائی دینے والے کا نظارہ کراتا ہے۔ جو ظاہری پوجا پاٹ سے بے نیاز کر کے سہج سمادھی سکھاتا ہے۔ دروازے بند کر کے نہیں بیٹھتا، سانس روکنے کی مشق نہیں کرتا، دنیا کو تج دینے کا سبق نہیں دیتا۔ من جب اس منزل پر پہونچتا ہے تب ہی پرماتما کا درشن ہوتا ہے۔ وہ گرو ایسا راستہ دکھاتا ہے جس میں عمل کرنے کے بعد بھی انسان نتیجے سے بے نیاز رہتا ہے۔ وہاں لذت ہی لذت ہے اور تن کی تکلیف نہیں ہے۔ دنیا کی نعمتوں کا لطف بھی ہے اور بھگوان سے لو لگانے کا مزا بھی۔ دھرتی ہو یا پانی، آکاش ہو یا ہوا، ہر جگہ معبود کا اصل مقام ہے۔ وہ شونیہ (آسمان = خلا) کی چوٹی پر، حقیقت کی چٹان پر، اپنا آسن جماتا ہے۔ جو اندر ہے وہی باہر ہے۔ دوسرا کوئی نظارہ نہیں ہے۔



سادھو شبد سادھنا کیجے
جے ہی شبد تے پرگٹ بھئے سب، سوئی شبد گہہ لیجے
شبد گرو شبد سُن سِکھ بھئے، شبد سو برلا بوجھے
سوئی شِشّ سوئی گرو مہاتم، جیہیں انترگت سوجھے
شبدے وید پُران کہت ہیں، شبدے سب ٹھہراوے
شبدے سُر مُنی سنت کہت ہیں، شبد بھید نہیں پاوے
شبدے سُن سُن بھیش دھرت ہیں، شبدے کہے انُراگی
شٹ درشن سب شبد کہت ہیں، شبد کہے بیراگی
شبدے کایا جگ اُتپانی، شبدے کیر پسارا
کہیں کبیر جہاں شبد ہوت ہے، بھون بھید ہے نیارا

سادھو، شبد سادھنا کرو (لفظ پر ریاض کرو) جس شبد سے سب کچھ ظاہر ہوا ہے (تخلیق کائنات ہوئی ہے) اسی شبد کو حاصل کرلو۔ شبد ہی گرو ہے جسے سن کر ہم چیلے بنے ہیں اور اس شبد کے

सदा विलास त्रास नहिं तनमें, भोगमें जोग जगावै,
धरती-पानी आकाश-पवनमें अधर मँडैया छावै।
सुन्न सिखरके सार सिलापर, आसन अचल जमावै।
भीतर रहा सौ बाहर देखै, दूजा दृष्टि न आवै।

भाई, सद्‌गुरु संत वही है जो आँखों को न दिखायी देनेवाले का दर्शन कराता है। जो बाहरी पूजा-पाठ से मुक्त करके सहज समाधि सिखाता है। दरवाजे बंद करके नहीं बैठता, साँस रोकने का अभ्यास नहीं करता, संसार को त्याग देने का उपदेश नहीं देता। मन जब इस अवस्था में पहुँच जाता है तभी परमात्मा का दर्शन होता है। वह गुरु ऐसा मार्ग दिखाता है जिसमें मनुष्य कर्म करने के बाद भी निष्कर्म रहता है। वहाँ विलास ही विलास है और तन को त्रास नहीं देना पड़ता, वहाँ भोग के साथ ही जोग भी है। धरती हो या पानी, आकाश हो या हवा, हर जगह उसका वास है। वह शून्य के शिखर पर सार-शिला पर अपना अचल आसन जमाता है। जो आत्मा में है वही बाहर दिखायी देता है, दूसरा कोई दिखायी नहीं देता।



साधो, शब्द-साधना कीजै।
जे ही शब्दते प्रकट भये सब, सोई शब्द गहि लीजै॥
शब्द गुरु शब्द सुन सिख भये, शब्द सो बिरला बूझै।
सोई शिष्य सोई गुरु महातम, जेहिं अन्तर-गति सूझै॥
शब्दै वेद-पुरान कहत हैं, शब्दै सब ठहरावै।
शब्दै सुर-मुनि-सन्त कहत हैं, शब्द-भेद नहिं पावै॥
शब्दै सुन सुन भेष धरत हैं, शब्दै कहै अनुरागी।
षट्-दर्शन सब शब्द कहत हैं, शब्द कहे बैरागी॥
शब्दै काया जग उतपानी, शब्दै केरि पसारा।
कहैं कबीर जहँ शब्द होत है, भवन भेद है न्यारा॥

साधु, शब्द-साधना करो; जिस शब्द से सब कुछ उत्पन्न हुआ है उसी शब्द को ग्रहण करो। शब्द ही गुरु है जिसे सुनकर हम शिष्य बने हैं और इस शब्द के समझनेवाले बहुत कम लोग हैं। जो अन्तर-गति को जानता है वही

سمجھنے والے بہت کم لوگ ہیں۔ جو دل کی کیفیت (مرم = رازِ دروں) جانتا ہے وہی چیلا ہے اور وہی گرو۔ وید اور پُران بھی شبد ہی کا ذکر کرتے ہیں۔ اور شبد ہی سے یہ دنیا قائم ہے۔ رشی اور مُنی سب شبد ہی بول رہے ہیں لیکن شبد کا بھید نہیں ملتا۔ شبد ہی سُن سن کر آدمی فقیر بنتا ہے اور شبد ہی کہہ کر وہ محبوب سے لو لگاتا ہے۔ چھ فلسفے شبد ہی کا بیان کر رہے ہیں اور بیراگ لینے والے بھی شبد ہی کو دہراتے ہیں۔ شبد ہی سے دنیا کا ظہور ہوا ہے اور یہ کائینات شبد ہی کا پھیلاؤ ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ جہاں شبد ہے وہیں زندگی اور کائینات کا عجیب و غریب راز مضمر ہے۔

۵۸

پی لے پیالا، ہو متوالا
پیالا نام امی رس کا رے
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو
نکھ سکھ پُور رہا وِش کا رے

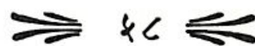
پیالا پی کے متوالا ہو جا۔ یہ وہ پیالا ہے جس میں اس کے نام کا امرت چھلک رہا ہے۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ تم نے سر سے پاؤں تک اپنے وجود کو زہر سے کیوں بھر رکھا ہے

۵۹

کھسم نہ چینہے باوری، کا کرت بڑائی
بانن لگن نہ ہوئیں گے، چھوڑو چترائی
ساکھی شبد سندیش پڑھ مت بھولو بھائی
سار پریم کچھ اور ہے، کھوجا سو پائی

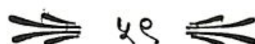
اپنے خسم کو تو پہچانتی نہیں ہے باؤلی، اپنی بڑائی کیا کر رہی ہے۔ یہ چالاکی چھوڑو۔ خالی باتیں بنانے سے محبوب ہاتھ نہیں آئے گا۔ اس پر مت اتراؤ کہ تم نے لفظوں کا پیغام (شبد سندیس) سنا ہے، (کتابیں پڑھی ہیں) یہ کچھ اور ہی چیز ہے۔ جو اس کو تلاش کرتا ہے وہی اس کو پاتا ہے۔

असली शिष्य और महात्मा गुरु है। वेदों और पुराणों में भी शब्द का उल्लेख है और शब्द ही इस सृष्टि का आधार है। ऋषि-मुनि सब शब्द ही बोल रहे हैं, लेकिन शब्द का भेद नहीं मिलता। शब्द ही सुन-सुनकर आदमी (फ़क़ीर का) भेष धारण करता है और इसी शब्द के सहारे वह अनुरागी बनता है। षट्दर्शन में भी शब्द का ही वर्णन है और बैराग लेनेवाले भी शब्द ही को दोहराते हैं। शब्द ही से सृष्टि की रचना हुई है और यह सृष्टि शब्द ही का फैलाव है। कबीर कहते हैं कि जहाँ शब्द है वहाँ जीवन और सृष्टि का रहस्य निहित है।



पीले प्याला हो मतवाला
प्याला नाम अमीरसका रे।
कहैं कबीर सुनो-साधो
नख सिख पूर रहा विषका रे।

प्याला पीकर मतवाला हो जा। यह वह प्याला है जिस में उसके नाम का अमृत छलक रहा है। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि तुमने सिर से पैर तक अपने अस्तित्व को विष से भर रखा है।



खसम न चीन्हैं बावरी, का करत बड़ाई।
बातन लगन न होयँगे, छोड़ौ चतुराई।
साखी शब्द संदेश पढ़ि, मत भूलो भाई।
सार-प्रेम कछु और है, खोजा सो पाई॥

बावली, अपने पति को तो पहचानती नहीं है, अपनी बड़ाई क्या कर रही है। यह चालाकी छोड़ दे, खाली बातें बनाने से प्रियतम हाथ नहीं आयेगा। इस पर मत इतराओ कि तुमने शब्दों का संदेश सुना है (किताबें पढ़ी हैं)। यह प्रेम कुछ और ही चीज है, जो इसे सच्चे मन से खोजता है वही इसे पाता है।

≽ ٦٠ ≼

سُکھ سِندھ کی سیر کا سُواد تب پانی ہے
چاہ کا چوترا بھول جاوے
بیج کے مانہی جیوں بیج وِستار یوں
چاہ کے مانہی سب روگ آوے

سُکھ ساگر کی سیر کا مزا تو تب ملے گا جب آرزو کے چبوترے پر (آرام سے) بیٹھنے کا خیال فراموش ہوجائے گا۔ جیسے بیج کے اندر بیج کا پھیلاؤ (درخت) چھپا ہوا ہے اسی طرح آرزو کے اندر ساری بیماریوں، ساری تکلیفوں کی جڑ ہے۔

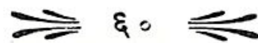
≽ ٦١ ≼

سُکھ ساگر میں آئے کے، مت جا رے پیاسا
اج ہُوں سمجھ نَر باورے، جم کرت نِراسا
نِرمل نیر بھرے تیرے آگے، پی لے سوانسو سوانسا
مرِگ ترِشنا جل چھانڑ باورے، کرو سُدھا رس آسا
دُھرو پرہلاد سُشکدیو پیا، اور پیا رَیداسا
پریمہی سنت سدا متوالا۔ ایک پریم کی آسا
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو مٹ گئی بھے کی باسا

ارے سکھ ساگر میں آکر پیاسا واپس مت جا، اے بیوقوف (باوْرے = باؤلے = پاگل) اب بھی ہوش میں آجا موت تیرا پیچھا کر رہی ہے۔ تیرے سامنے صاف شفاف پانی لہریں لے رہا ہے ہر سانس کے ساتھ اسے پی جا۔ سراب کو ترک کر دے اور آب حیات (سُدھا رس = بھگوان سے پریم) کی پیاس پیدا کر۔ یہ پانی دھرو، پرہلاد، سُشکدیو، رائے داس سب نے پیا ہے۔ تمام سنت سادھو پریم ہی کے متوالے ہیں اور پریم ہی کے پیاسے، سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ اب خوف کا آشیانہ اجڑ گیا ہے،

≽ ٦٢ ≼

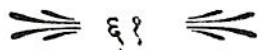
ستی کو کون سکھاوتا ہے
سنگ سوامی کے تن جارنا جی



६०

सुखसिंधकी सैरका स्वाद तब पाइ है।
चाहका चौतरा भूल जावै।
बीजके मांहि ज्यों बीज-विस्तार यों
चाहके मांहि सब रोग आवै॥

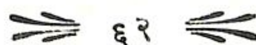
सुख के सागर की सैर का मज़ा तो तब मिलेगा जब कामना (चाह) के चबूतरे पर (आराम से) बैठने का विचार तू भूल जायेगा। जैसे बीज के अंदर बीज का विस्तार (पेड़) छुपा हुआ है उसी तरह कामना के अंदर सारी बीमारियों, सारी तकलीफ़ों की जड़ है।



६१

सुखसागरमें आयके मत जारे प्यासा।
अजहुं समझ नर बावरे, जम करत निरासा॥
निर्मल नीर भरे तेरे आगे, पी ले स्वाँसो स्वाँस।
मृगतृस्ना-जल छाँड़ बावरे, करो सुधारस-आसा॥
ध्रू प्रहलाद-शुकदेव पिया, और पिया रैदासा।
प्रेमहि संत सदा मतवाला, एक प्रेमकी आसा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मिट गई भय की बासा

सु-खसागर में आकर प्यासा वापस मत जा। ऐ बावले, अब भी समझ ले, तू निराश क्यों होता है। तेरे सामने निर्मल जल भरा है, हर साँस के साथ उसे पी जा। मृगतृष्णा के जल को छोड़ दे, पगले, और सुधा-रस (भगवान से प्रेम) की प्यास पैदा कर। यह रस ध्रुव, प्रल्हाद, शुकदेव, रैदास सबने पिया है। सभी साधु-संत प्रेम ही के मतवाले हैं और प्रेम ही के प्यासे। कबीर कहते हैं कि सुनो भाई साधु, अब भय का वास मिट गया।



६२

सतीको कौन सिखावता है,
सँग स्वामीके तन जारना जी।

پریم کو کون سکھاوتا ہے
تیاگ مانہی بھوگ کا پاوناجی

اپنے سوامی کے ساتھ آگ میں جلنا ستی کو کون سکھاتا ہے۔ عشق کو کون سکھاتا ہے کہ ترک ہی میں لذت ہے (ہجر ہی میں وصال ہے)

٦٣

ارے من، دھیرج کاہے نہ دھرے
پُس، پنچھی، جیو، کیٹ، پتنگا، سب کی سُدھ کرے
گربھ باس میں کھبر لیتُ ہے باہر کیوں بسرے
من تو ہسن سے صاحب کے بھٹکت کاہے پھرے
پریتم چھانڑ اور کو دھارے، کارج اک نہ سرے

ارے میرے من دھیرج کیوں نہیں دھرتا (صبر اور قناعت کیوں نہیں کرتا) وہ جو جانوروں، چڑیوں، کیڑوں اور پتنگوں تک کی خبر گیری کرتا ہے، جس نے ماں کے پیٹ میں تیری نگہبانی کی ہے، پیدا ہونے کے بعد تجھے کیوں بھولے گا۔ اے میرے من تو اپنے صاحب کی مسکراہٹ کو چھوڑ کر کہاں بھٹکتا پھر رہا ہے۔ اپنے محبوب کو چھوڑ کر کسی اور کا دھیان کر رہا ہے۔ اس طرح تو ایک بھی کام نہیں بنے گا۔

٦٤

سائیں سے لگن کٹھن ہے بھائی
جیسے پپیہا پیاسا بوند کا، پیا پیا رٹ لائی
پیا سے پران تڑپھے دن راتی، اور نیر نا بھائی
جیسے مرگا شبد سنیہی، شبد سنن کو جائی
شبد اور پران دان دے، تنکو نانہہ ڈرائی
جیسے ستی چڑھی ست اوپر، پیار کی راہ من بھائی
پاوک دیکھ ڈرے وہ ناہیں، ہنست بیٹھے سدا مائیں
چھوڑو تن اپنے کی آسا، نربھے وھے گُن گائی
کہت کبیر سنو بھائی سادھو، ناہیں تو جنم نسائی

بھائی سائیں سے لگن لگانا بہت دشوار ہے۔ جیسے سواتی کی بوند کا پیاسا پپیہا پیا پیا کی رٹ لگاتا ہے اور اس کی پیاسی روح دن رات

प्रेमको कौन सिखावता है,

त्यागमाँहि भोगका पावना जी।

अपने स्वामी के साथ चिता में जल जाना सती को कौन सिखाता है। प्रेम को कौन सिखाता है कि त्याग ही में भोग (सुख) है।

६३

अरे मन धीरज काहे न धरै।
पसु-पंछी जीव कीट-पतंगा सबकी सुध्द करै।
गर्भ-बासमें खबर लेतु है बाहर क्यों बिसरै।
मन तू हसनसे साहेबके भटकत काहे फिरै।
प्रीतम छाँड़ और को धारै, कारज इक न सरै॥

अरे मेरे मन, धीरज क्यों नहीं धरता। वह जो जानवरों, पक्षियों, कीड़ों-मकोड़ों तक की रखवाली करता है, जिसने माँ के पेट में तेरी रक्षा की है, पैदा होने के बाद तुझे क्यों भूल जायेगा। ऐ मेरे मन, तू अपने साहब (प्रभु) की मुस्कराहट को छोड़कर कहाँ भटकता फिर रहा है, अपने प्रियतम को छोड़कर और किसका ध्यान कर रहा है। इस तरह तो कोई काम नहीं बनेगा।

६४

सांईसे लगन कठिन है भाई।
जैसे पपीहा प्यासा बूँदका, पिया पिया रट लाई।
प्यासे प्राण तड़फै दिन-राती, और नीर ना भाई।
जैसे मिरगा शब्द-सनेही, शब्द सुननको जाई।
शब्द सुनै और प्रानदान दे, तनिको नाहिं डराई।
जैसे सती चढ़ी सत-ऊपर, पिया की राह मन भाई।
पावक देख डरे वह नाहीं, हँसत बैठे सदा मांई।
छोड़ो तन अपनेकी आसा, निर्भय है गुन गाई।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, नाहिं तो जनम नसाई॥

भाई, साई (प्रभु) से लगन लगाना बहुत कठिन काम है। जैसे स्वाति की बूँद का प्यासा पपीहा पिया पिया की रट लगाता है और उसकी प्यासी आत्मा

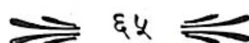
تڑپتی ہے لیکن دوسرا پانی اُسے پسند نہیں آتا، جیسے سنگیت کا عاشق ہرن سنگیت سننے چلا جاتا ہے اور سنگیت سنتے سنتے جان دے دیتا ہے لیکن ڈر کر پیچھے نہیں ہٹتا، جیسے ستی اپنے شوہر کی لاش کے ساتھ جلنے کو بیٹھ جاتی ہے، آگ کو دیکھ کر ڈرتی نہیں، اسی طرح تم بھی اپنے جسم کی فکر چھوڑکر بے خوف ہوکر اس کے گن گاؤ. سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ نہیں تو تمہاری زندگی بیکار ہے۔

٦٥

جب میں بھولا رے بھائی
میرے ست گرو جُگت لکھائی
کریا کرم اچار چھانڑا، چھانڑا نیرتھ کا نہانا
سگری دنیا بھئی سیانی، میں ہی اک بورانا
نا میں جانوں سیوا بندگی، نا میں گھنٹا بجائی
نا میں مورت دھری سنگھاسن، نا میں پُہپ چڑھائی
نا ہری ریجھے جپ تپ کینہیں، نا کایا کے جارے
نا ہری ریجھے دھوتی چھانڑے، نا پانچوں کے مارے
دیا راکھ دھرم کو پالے، جگ سوں رہے اُداسی
اپنا سا جو سب کو جانے، تاہ ملے اوناسی
سہے کشبد باد کو تیاگے، چھانڑے گرو گُمانا
ست نام تاہی کو ملیہے، کہے کبیر سجانا

میرے بھائی، مجھ سے جب بھول ہوئی تو میرے ست گرو نے میری رہنمائی کی. میں نے ظاہری عبادت کو ترک کردیا، تیرتھ اشنان بھی چھوڑ دیا. ساری دنیا سیانی ہوگئی، ایک میں ہی دیوانہ قرار پایا. نہ تو میں بندگی جانتا ہوں، نہ گھنٹا بجاتا ہوں، نہ میں سنگھاسن پر مورت بٹھاتا ہوں اور نہ اس پر پھول چڑھاتا ہوں. جاپ اور تپسیا کرنے سے ہری نہیں ریجھتا اور نہ جسم کو جلانے سے راضی ہوتا ہے. کپڑے اتار دینے سے اور پانچوں حواس کو قتل کردینے سے ہری کی خوشنودی حاصل نہیں ہوتی. جس کے دل میں رحم ہے، جو متقی اور پرہیزگار ہے، جو دنیا میں رہ کر دنیا سے اداس رہتا ہے، اور دنیا کے ہر ذی حیات کو اپنی طرح جانتا ہے، اس کو لا فانی (بھگوان) ملتا ہے. ست گرو

दिन-रात तड़पती है लेकिन दूसरा कोई पानी उसे अच्छा नहीं लगता। जैसे संगीत का प्रेमी मृग संगीत सुनने चला जाता है और संगीत सुनते-सुनते जान दे देता है और डरकर पीछे नहीं हटता, जैसे सती अपने पति की लाश के साथ चिता पर चढ़ जाती है, आग को देखकर डरती नहीं है, उसी तरह तुम भी अपने तन की आशा छोड़कर निडर होकर (प्रभु के) गुण गाओ। कबीर कहते हैं, सुनो भाई साधु, नहीं तो तुम्हारा जीवन व्यर्थ है।



मैं जब भूला रे भाई,
मेरे सतगुरू जुगत लखाई।
किरिया-करम-अचार छाँड़ा, छाँड़ा तीरथका न्हाना।
सगरी दुनिया भइ सयानी, मैं ही इक बौराना।
ना मैं जानूँ सेवा-बंदगी, ना मैं घंटा बजाई।
ना मैं मूरत धरी सिंघासन, ना मैं पुहुप चढ़ाई।
ना हरि रीझै जप तप कीन्हें, ना कायाके जारे।
ना हरि रीझै धोती छाँड़े, ना पाँचोंके मारे।
दया राखि धरमको पालै, जगसों रहे उदासी।
अपना-सा जिव सबको जानै, ताहि मिलै अविनासी।
सहै कुशब्द बादको त्यागै, छाँड़ै गर्व-गुमाना।
सत्त नाम ताहीको मिलिहै कहै कबीर सुजाना॥

मेरे भाई, मुझसे जब भूल हुइ तो मेरे सत्गुरु ने मुझे मार्ग दिखाया। मैं ने पूजा-पाठ सब छोड़ दिया, तीर्थों में जाकर नहाना छोड़ दिया। सारी दुनिया सयानी होगयी, एक मैं ही दीवाना ठहराया गया। न तो मैं सेवा-उपासना जानता हूँ, न घंटा बजाता हूँ, न मैं सिंहासन पर मूर्ति की स्थापना करता हूँ और न उस पर फूल चढ़ाता हूँ। जप-तप करने से हरि नहीं रीझता और न शरीर को कष्ट देने से प्रसन्न होता है। नंगे रहने से और पाँचों इंद्रियों का दमन करने से भी हरि प्रसन्न नहीं होता। जो हृदय में दया रखकर धर्म का पालन करता है, जो संसार के माय-मोह से उदासीन रहता है और हर जीव को अपनी तरह मानता है, केवल उसी को भगवान मिलता है। सुजान कबीर

اُسی کو ملتے ہیں۔ کبیر دانشمند ہیں اور کہتے ہیں کہ ست نام صرف اس کو ملتا ہے جو گالیاں کھا لیتا ہے اور غرور کو ترک کر دیتا ہے۔

۶۶

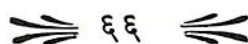
من نا رنگائے رنگائے جوگی کپڑا
آسن مار مندر میں بیٹھے
برہم چھاڑ پوجن لاگے پتھرا
کنوا پھڑائے جٹوا بڑھولے
داڑھی بڑھائے جوگی ہوئی گیلے بکرا
جنگل جائے جوگی دھنیا رمولے
کام جرائے جوگی ہوئے گیلے ہجرا
متھوا منڑائے جوگی کپڑا رنگولے
گیتا بانچ کے ہوئے گیلے لبرا
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو
جم درو جوا باندھل جیبے پکڑا

جوگی کے من میں تو پریم کا رنگ ہے نہیں۔ اس نے صرف کپڑے رنگوالیے ہیں۔ آسن مار کر مندر میں بیٹھ گیا ہے اور برہم کو چھوڑ کر پتھر کی پوجا کر رہا ہے۔ اس نے اپنے کان چیر کر کنڈل پہن لئے ہیں، بال لمبے کر لئے ہیں اور داڑھی بڑھا کر بکرا بن گیا ہے۔ جوگی جنگل میں جاکر دھونی رما رہا ہے اور خواہشوں کو مار کر ہجڑا ہو گیا ہے۔ سر منڈا کر جوگی نے کپڑے رنگ لئے ہیں اور گیتا پڑھ کر باتیں بنا رہا ہے۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ اس طرح تو ہاتھ پاؤں باندھ کر موت کے دروازے پر ڈال دیا جائے گا۔

۶۷

نا جانے صاحب کیسا ہے
مُلا ہو کر بانگ جو دیوے،
کیا تیرا صاحب بہرا ہے
کیڑی کے پگ نیور باجے
سو بھی صاحب سُنتا ہے

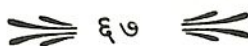
कहते हैं कि सत्य-नाम उसी को मिलता है जो दूसरे की कड़वी बात भी बर्दाश्त कर लेता है , झगड़े से बचता है और घमंड से दूर रहता है ।



६६

मन ना रँगाये रँगाये जोगी कपड़ा ।
आसन मारि मंदिरमें बैठे
ब्रह्म-छाड़ि पूजन लागे पथरा ॥
कनवा फड़ाय जटवा बढ़ौले
दाढी बढ़ाय जोगी होइ गैले बकरा ।
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले
काम जराय जोगी होय गैले हिजरा ॥
मथवा मुँड़ाय जोगी कपड़ा रंगौले,
गीता बाँचके होय गैले लबरा ।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो,
जम दरवजवा बाँधल जैबे पकड़ा ॥

जोगी के मन में प्रेम का रंग है नहीं, उसने सिर्फ़ कपड़े रँगवा लिये हैं, आसन मारकर मंदिर में बैठ गया है और ब्रह्म को छोड़कर पत्थर की पूजा कर रहा है । उसने अपने कान चीरकर कुंडल पहन लिये हैं बाल लंबे कर लिये हैं और दाढी बढ़ाकर बकरा बन गया है । जोगी जंगल में जाकर धूनी रमा रहा है और काम-वासना का दमन करके जोगी हिजड़ा हो गया है । सर मुँडाकर जोगी ने कपड़े रँग लिये हैं और गीता पढ़के बड़ी-बड़ी बातें बना रहा है । सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि इस तरह तू हाथ-पाँव बाँधकर यमराज के दरवाज़े पर डाल दिया जायेगा ।



६७

ना जानै साहब कैसा है ।
मुल्ला होकर बांग जो देवे,
क्या तेरा साहब बहरा है ।
कीड़ीके पग नेवर बाजे
सो भी साहब सुनता है ।

مالا پھیری تلک لگایا
لمبی جٹـــا بڑھاتا ہے
انتر تیرے کُـکَـپھر کٹــــاری
یوں نہیں صاحب ملتا ہے

نہ جانے یہ کیسا صاحب (خدا) ہے۔ مُلاؔ ہوکر جو تو اذان دیتا ہے تو کیا تیرا خدا بہرا ہے۔ وہ تو وہ آواز بھی سنتا ہے جو کیڑوں مکوڑوں کے چلنے سے پیدا ہوتی ہے۔ تو مالا جپتا ہے، تلک لگاتا ہے اور لمبی لمبی جٹائیں رکھتا ہے۔ تیرے دل میں تو کفر کی کٹاری رکھی ہوئی ہے۔ ظاہر ہے کہ خدا اس طرح نہیں ملتا۔

۶۸

ہم سوں رہا نہ جائے مُرلیا کے دُھن سن کے
بنا بسنت پھول اک پُھولے بھنوَر سدا بولائے
گگن گرجے، بجلی چمکے، اُٹھتی ہیے ہلور
بِگـسـت کنول، میگھ برسانے، چِتـوَت پربھو کی اور
تاری لاگی تہاں من پُہنچا، گیب دُھجا پھہرائے
کہیں کبیر آج پران ہمارا، جیوت ہی مرجائے

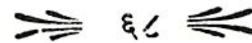
میں مُرلی کی دھن سن رہا ہوں اور میرا دل قابو سے باہر ہوا جا رہا ہے۔ بغیر بسنت کے پھول کھل رہے ہیں اور بھونرا دیوانہ ہوا جارہا ہے۔ آسمان گرج رہا ہے، بجلی چمک رہی ہے اور میرے دل کے اندر لہریں اٹھ رہی ہیں۔ کنول کھل رہا ہے، پانی برس رہا ہے اور میرے دل کی لو پربھو کی طرف لگی ہوئی ہے۔ میرا من وہاں پہنچ گیا ہے جہاں کائینات کی تالیاں بج رہی ہیں اور غیب کا پرچم لہرا رہا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ آج تو جیتے جی مرجانے میں مزا ہے۔

۶۹

جو کھودائے مسجید بستُ ہے، اور مُلک کیہ کیرا
تیرتھ مورت رام نواسی، باہر کرے کو ہیرا
پورب دِسا ہری کو واسا، پچھم اللہ مُکاما
دل مین کھوج دل ہی میں کھوجو، اہیں کریما راما

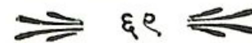
माला फेरी तिलक लगाया,
लंबी जटा बढ़ाता है।
अन्तर तेरे कुफ़र-कटारी,
यों नहिं साहब मिलता है।

न जाने यह कैसा साहब (प्रभु) है। मुल्ला होकर जो तू बाँग (अज़ान) देता है तो क्या तेरा खुदा बहरा है। वह तो वह आवाज़ भी सुनता है जो कीड़ों-मकोड़ों के चलने से पैदा होती है। तू माला जपता है, तिलक लगाता है और लंबी-लंबी जटाएँ रखता है। तेरे दिल में तो कुफ्र की कटारी रखी हुई है। इस तरह ईश्वर नहीं मिलता।



हमसों रहा न जाय मुरलियाके धुन सुनके।
बिना बसन्त फूल इक फूलै भँवर सदा बोलाय।
गगन गरजै बिजुली चमकै, उठती हिये हिलोर।
बिगसत कँवल मेघ बरसाने चितवत प्रभुकी ओर।
तारी लागी तहाँ मन पहुँचा, गैब धुजा फहराय।
कहैं कबीर आज प्रान हमारा, जीवत ही मर जाय॥

मैं मुरली की धुन सुन रहा हूँ और मेरा दिल क़ाबू से बाहर हुआ जा रहा है। बिना वसंत के फूल खिल रहा है और भँवरा दीवाना हुआ जा रहा है। आसमान गरज रहा है और बिजली चमक रही है और मेरे दिलके अंदर लहरें उठ रही हैं। कमल खिल रहा है, पानी बरस रहा है और मेरी लौ प्रभु की ओर लगी हुई है। मेरा मन वहाँ पहुँच गया है जहाँ सृष्टि की तालियाँ बज रही है और ग़ैब की ध्वजा फहरा रही है। कबीर कहते है कि आज तो जीते जी मर जाने में सुख है।



जो खोदाय मसजीद बसतु है और मुलुक केहि केरा।
तीरथ-मूरत राम-निवासी बाहर करे को हेरा।
पूरब दिसा हरीको बासा पच्छिम अलह मुकामा।
दिलमें खोज दिलहिमें खोजो इहैं करीमा-रामा।

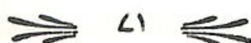
جیتے عورت مرد اُپانی، سو سب روپ تمہارا
کبیر پونگڑا اللہ رام کا، سو گرو پیر ہمارا

اگر خدا صرف مسجد میں بستا ہے تو یہ دنیا کس کی ہے، اگر رام صرف تیرتھ استھان کی مورتی میں نظر آتا ہے تو پھر اس استھان کے باہر کیا ہو رہا ہے۔ ہری پورب میں بستا ہے اور اللہ کا مقام پچھم میں ہے، میں کہتا ہوں اپنے دل میں جھانک کر دیکھو، کریم اور رام دونوں یہیں ملیں گے۔ عورت اور مرد اس کی جیتی جاگتی تصویریں ہیں۔ وہ سب تمہارے اپنے روپ ہیں، کبیر اللہ اور رام دونوں کا بالک ہے وہی ہمارا گرو ہے وہی ہمارا پیر۔


۷۰

سیل سنتوش سدا سم درشٹ، رہن گہن میں پورا
تا کے درس پرم بھاجے، ہوئی کلیس سب دورا
نس واسر چرچا چت چندن آن کتھا نہ سوہاوے
کرنی دھرنی سنگیت گاوے، پریم رنگ اُڑاوے
راگ سروپ اکھنڈت اُبچل، نربھے بے پروائی
کہے کبیر تاہ پگ پرسو، گھٹ گھٹ سب سُکھ دائی

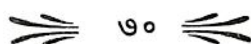
جس کی طبیعت میں انکسار ہے، دل میں صبر ہے، جو صاحب نگاہ ہے اور رہن گہن میں پورا ہے، جو اُس (ذات پاک) کا دیدار کرچکا ہے وہ خوف اور ہراس سے بے نیاز ہے۔ اُس کے ذہن میں ہر وقت ذات پاک کا تصور اس طرح رہتا ہے جیسے دل میں صندل کی خوشبو بسی ہو، اُسے کوئی دوسری داستان پسند نہیں آتی۔ اٹھتے بیٹھتے وہ اس کا گیت گاتا ہے اور چاروں طرف پریم رنگ اڑاتا رہتا ہے۔ وہ راگ کی طرح مسلسل اور پر سکون ہے، نڈر ہے اور بے پروا ہے، کبیر کہتے ہیں کہ اُس کا چرن چھوؤ جو ہر وجود کو سُکھ اور پریم سے بھر دیتا ہے۔


۷۱

سادھ سنگت پیتم اہاں چل جائیے
بھاو بھگت اُپدیس تہاں تے پائیے

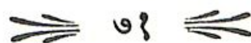
जेते औरत-मरद उपानी सो सब रूप तुम्हारा।
कबीर पोंगड़ा अलह-रामका सो गुरु पीर हमारा।

अगर खुदा सिर्फ़ मस्जिद में बसता है तो यह दुनिया किसकी है। अगर राम सीर्फ़ तीर्थ स्थानों की मूर्तियों में दिखायी देता है तो फिर उस स्थान के बाहर क्या हो रहा है। हरि पूरबमें बसता है और अल्लाह का वास पच्छिम में है। मैं कहता हूँ अपने दिल में झाँककर देखो करीम और राम दोनों यहीं मिलेंगे। औरत और मर्द उसकी जीती जागती तस्वीरें हैं, वे सब तुम्हारे अपने रूप हैं। कबीर अल्लाह और राम दोनों का बालक है और वही हमारा गुरु है, वही हमारा पीर है।



सील-सन्तोष सदा समदृष्टि, रहनि गहनिमें पूरा।
ताके दरस-परम भय भाजै, होइ कलेस सब दूरा॥
निसी-बासर चरचा चित-चंदन, आन कथा न सोहावै
करनी धरनी संगीत गावै, प्रेम रंग उड़ावै॥
राग-सरूप अखंडित अविचल- निर्भय बेपरवाई।
कहै कबीर ताहि पग परसो, घट घट सब सुखदाई।

जिसके स्वभाव में शील और संन्तोष है, जो सबको एक दृष्टि से देखता है, और रहन-गहन में पूरा है, उसके परम दर्शन से सारे भय भाग जाते हैं और सब क्लेष दूर हो जाते हैं। हर समय उसकी चर्चा (कल्पना) इस तरह रहती है जैसे मन में चंदन की सुगंध बसी हो, उसे कोई दूसरी कथा अच्छी नहीं लगती। उठते-बेठते वह उसका गीत गाता है और चारों तरफ़ प्रेम का रंग उड़ाता रहता है। वह राग की तरह अखंडित और अविचल है, निडर है और बेपरवाह है। कबीर कहते हैं कि उसी के चरण छुओ जो हर प्राणी को सुख और प्रेम से भर देता है।



साध-संगत पीतम उहाँ चल जाइये।
भाव-भक्ति-उपदेस तहाँते पाइये॥

سنگت ہی جر جاونہ چرچا نام کی
دولہا بنا برات کہو کس کام کی
دبدھا کو کر دور پیتم کو دھیائیے
آن دیو کی سیو نہ چت لگائیے
آن دیو کی سیو بھلی نہہ جیو کو
کہے کبیر وچار نہ پاوے پیو کو

نیک لوگوں کی صحبت اختیار کرو، انہیں کے ساتھ پریتم تک رسائی ہوگی. فکر اور ذکر اور ہدایت وہیں سے ملے گی، وہ محفل جل کر راکھ ہوجائے جہاں اس کے نام کا چرچا نہیں ہے، اگر خود دولہا نہ ہو تو برات کس کام کی. شک اور شبہ کو دل سے دور کرکے صرف پریتم سے لو لگاؤ، اور دیوتا کی سیوا کا خیال بھی نہ کرو کیونکہ کسی اور دیوتا کی سیوا میں کوئی بھلائی نہیں ہے، کبیر سوچ بچار کے بعد یہ کہتے ہیں کہ اس طرح پریتم نہیں مل سکتا،

۷۲

تو ہار ہیرا پرائل با کچڑے میں
کوئی ڈھونڑھے پورب کوئی ڈھونڑھے پچھم
کوئی ڈھونڑے پانی پتھرے میں
داس کبیر یے ہیرا کو پرکھیں
باندھ لیلے جیرا کے انچرے میں

تیرا ہیرا کیچڑ میں گر کر کھو گیا ہے، کوئی اُسے پورب میں تلاش کر رہا ہے اور کوئی پچھم میں، اور کوئی پانی اور پتھر میں. لیکن داس کبیر اس ہیرے کی قدر جانتے ہیں اور انہوں نے اُسے اپنے دل کی گانٹھ میں باندھ لیا ہے.

۷۳

آیو دن گونے کے ہو من ہوت ہلاس
ڈولیا اٹھاوے بیجا بنواں ہو، جہاں کوئی نہ ہمار
پئیاں توری لاگوں کہروا ہو، ڈولی دھر چھن بار
مل لیویں سکھیا سہیلر ہو، ملوں کل پروار

संगत ही जरि जाव न चरचा नाम की।
दूलह बिना बरात कहो किस कामकी॥
दुबिधाको कर दूर पीतमको ध्याइये।
आन देवकी सेव न चित्त लगाइये॥
आन देवकी सेव भली नहिं जीवको।
कहै कबीर विचार न पावै पीवको॥

साधुओं की संगत में रहो, उन्हीं के साथ प्रियतम (ईश्वर) तक पहुँच सकोगे। भाव, भक्ति और उपदेश उन्हीं से मिलेगा। वह संगत ही जलकर राख हो जाये जहाँ उसके नाम की चर्चा नहीं है। अगर दूल्हा ही न हो तो बरात किस काम की। मन से दुविधा निकाल कर सिर्फ़ प्रीतम का ध्यान करो, किसी और देवता की सेवा का विचार भी मन में न लाओ क्योंकि किसी और देवता की सेवा में कोई भलाई नहीं है। कबीर सोच-विचार कर यह कहते हैं कि इस तरह प्रीतम नहीं मिल सकता।

७२

तोर हीरा हिराइल बा किचड़ेमें।
कोई ढूँढ़ै पूरब कोई ढूँढ़ै पच्छिम
कोई ढूँढ़ै पानी-पथरेमें।
दास कबीर ये हीराको परखैं
बाँध लिहलै जीयराके अंचरेमें।

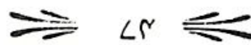
तेरा हीरा कीचड़ में गिरकर खो गया है। कोई उसे पूरब में ढूँढ़ रहा है और कोई पच्छिम में और कोई पानी और पत्थर में। लेकिन कबीरदास इस हीरे का मूल्य जानते हैं और उन्होंने उसे अपने दिल की गाँठ में बाँध लिया है।

७३

आयौ दिन गौनेकै हो, मन होत हुलास।
डोलिया उठावे बीजा बनवाँ हो, जहँ कोई न हमार॥
पइयाँ तोरी लागौं कहरवा हो, डोली धर छिन बार।
मिल लेवैं सखिया सहेलर हो, मिलौं कुल परिवार॥

داس کبیر گاویں نرگن ہو، سادھو کرلے بچار
نرم گرم سودا کرلے ہو، آگے ہاٹ نا باجار

گونے (دولہن کی رخصت) کا دن آگیا اور دل خوشی سے پھولا نہیں سماتا، وہ میری ڈولی جنگل میں اٹھا لائے ہیں جہاں میرا کوئی نہیں ہے، اے کہار میں تیرے پاؤں پکڑتی ہوں، پل بھر کے لئے ڈولی نیچے رکھ دے، میں اپنی سکھیوں، سہیلیوں، اور گھر والوں سے رخصت تو ہولوں. داس کبیر ہر صفت سے بے نیاز ہوکر گا رہے ہیں کہ «اے سادھو نرم گرم جو بھی سودا کرنا ہو جلدی سے کرلو کیونکہ آگے کوئی ہاٹ کوئی بازار نہیں ہے.»

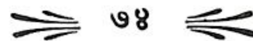


ارے دل
پریم نگر کا انت نہ پایا، جیوں آیا تیوں جاویگا
سن میرے ساجن سن میرے میتا، یا جیون میں کیا کیا بیتا
سر پاہن کو بوجھا لیتا، آگے کون چھڑاویگا
پرلی پار میرا میتا کھڑیا، اس ملنے کا دھیان نہ دھریا
ٹوٹی ناؤ اُپر جو بیٹھا، گا پھل گوتا کھاویگا
داس کبیر کہیں سمجھائی، انت کال تیرا کون سہائی
چلا اکیلا سنگ نہ کوئی، کیا آپنا پاویگا

ارے دل، آخر تجھے پریم نگر کا انت نہ ملا (عشق کے راز سمجھ میں نہیں آئے) تو جیسے آیا ہے ویسے ہی جائے گا، میرے ساجن، سُن میرے دوست، اس زندگی میں کیا کیا نہیں بیت چکی ہے. تونے اپنے سر پر پتھروں کا بوجھ اٹھا رکھا ہے، اس بوجھ کو کون ہلکا کرے گا. دوست تو دوسرے کنارے پر کھڑا ہے، تونے اس سے ملنے کی کوئی ترکیب نہیں نکالی، تو ٹوٹی ہوئی ناؤ پر بیٹھا ہے، اے غافل تو ضرور غوطہ کھائے گا. داس کبیر سمجھا کر کہتے ہیں کہ آخری وقت میں تیرا کوئی سہارا نہیں ہے، تو اکیلا جا رہا ہے، کوئی سنگی ساتھی نہیں ہے، تونے اب تک جو کیا ہے اسی کا پھل تجھے ملے گا.

दास कबीर गौंव निरगुन हो, साधो करि ले बिचार।
नरम-गरम सौदा करि ले हो, आगे हाट ना बाजार ॥

गौने का दिन आ गया है और दिल खुशी से फूला नहीं समाता। वे हमारी डोली जंगल में उठा लाये हैं जहाँ मेरा कोई नहीं है। ऐ कहार, मैं तेरे पाँव पड़ती हूँ, पल भर के लिये डोली नीचे रख दे, मैं अपनी सखियों, सहेलियों और घरवालों से विदा तो हो लूँ। कबीरदास निर्गुण होकर (संसार के माया-मोह से मुक्त होकर) गा रहे हैं कि "ऐ साधु, नरम-गरम जो भी सौदा करना हो जल्दी से कर लो क्योंकि आगे कोई हाट कोई बाजार नहीं है।"



अरे दिल,
प्रेमनगरका अन्त न पाया, ज्यों आया त्यों जावैगा।
सुन मेरे साजन सुन मेरे मीता, या जीवन में क्या क्या बीता ॥
सिर पाहनको बोझा लीता, आगे कौन छुड़ावैगा।
परली पार मेरा मीता खड़िया, उस मिलनेका ध्यान न धरिया।
टूटी नाव उपर जो बैठा, गाफिल गोता खावैगा ॥
दास कबीर कहैं समुझाई, अन्तकाल तेरा कौन सहाई।
चला अकेला संग न कोई, किया आपना पावैगा ॥

ओ दिल, आखिर तुझे प्रेमनगर का अंत नहीं मिला (प्रेम का मर्म समझ में नहीं आया)। तू जैसे आया है वैसे ही जायेगा। सुन मेरे साजन, सुन मेरे मीत, इस जीवन में क्या क्या नहीं बीत चुकी है। तूने अपने सर पर पत्थरों का बोझ उठा रखा है, इस बोझ को कौन हल्का करेगा। मीत (मित्र) तो दूसरे किनारे पर खड़ा है। तुमने उससे मिलने की कोई तरकीब नहीं निकाली। तू टूटी हुई नाव पर बैठा है, ग़ाफ़िल तू जरूर ग़ोता खायेगा। दास कबीर समझाकर कहते हैं अन्तकाल में तेरा कोई सहारा नहीं है। तू अकेला जा रहा है, कोई संगी-साथी नहीं है। तूने अब तक जो किया है उसका फल तुझे मिलेगा।

۷۵

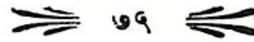
بید کہے سرگن کے آگے نرگن کا بسرام
سرگن نرگن تج ہو سوہاگن ، دیکھ سب ہی نج دھام
سکھ دکھ وہاں کچھو نہیں و یاپے ، درسن آٹھو جام
نور اوڑھن نورے ڈاسن ، نورے کا سرہان
کہے کبیر سنو بھائی سادھو ، ست گرو نور تمام

ویدوں کا کہنا ہے کہ سرگن کے آگے نرگن پھیلا ہوا ہے ، (صفات کی آڑ میں بے صفات چھپا ہوا ہے) اے سہاگن سرگن اور نرگن کے جھمیلوں میں تجھے کیا ملے گا ، دیکھ ہر مقام تیرا مقام ہے ، وہاں سکھ اور دکھ کا دھندلکا نہیں ہے ، آٹھوں پہر چاروں طرف درشن ہی درشن ہے (دیدار ہی دیدار ہے) نور کی چادر ہے ، نور کی مسند ہے ، نور کا تکیہ ہے ، سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ ست گرو سرپا نور ہے ۔

۷۶

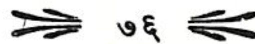
تو صورت نین نہار ، وہ انڈ میں سارا ہے
تو ہردے سوچ بچار یہ دیش ہمارا ہے
ست گرو درس ہوئے جب بھائی
وہ دیں تم کو پریم چتائی
سرت نرت کے بھید بتائی
تب دیکھے انڈ کے پارا ہے
سکل جگت میں ست کی نگری
چت بھلاوے بانکی ڈگری
سو پہنچے چالے بن پگ ری
ایسا کھیل اپارا ہے

تو اس کی صورت اپنی آنکھوں میں بسا لے اور دیکھ کہ یہ دنیا اس کے وجود سے بھری ہوئی ہے ۔ دل میں سوچ تو معلوم ہوگا کہ یہ سارا دیس تیرا اپنا ہے ۔ جس دن ست گرو کے درشن ہوں گے اس دن عشق جاگ اُٹھے گا ، تعلق اور بے تعلقی کے سارے راز کھل جائیں



वेद कहे सरगुनके आगे निरगुनका बिसराम।
सरगुन-निरगुन तजहु सोहागिन, देख सबहि निज धाम।
सुख दुख वहाँ कछु नहीं व्यापै, दरसन आठो जाम।
नूर ओढ़न नूरै डासन, नूरैका सिरहान।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नूर तमाम॥

वेदों में कहा गया है कि सरगुन (सगुण) के आगे निरगुन (निर्गुण) फैला हुआ है। ऐ सुहागिन सगुण-निर्गुण के झमेलों में तुझे क्या मिलेगा, देख हर जगह तेरा घर है। वहाँ जीव और दुख कुछ नहीं है। आठों पहर हर तरफ़ दर्शन ही दर्शन है। नूर (प्रकाश) की चादर है, नूर का बिछौना है, नूर के तकिये हैं। सूनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि सत्गुरु सिरसे पैर तक नूर ही नूर है।



(१) तू सूरत नैन निहार वह अंडमें सारा है।
तू हिरदे सोच बिचार यह देश हमारा है।
सतगुरु दरस होय जब भाई,
वह दें तुमको प्रेम चिताई,
सुरत-निरतके भेद बताई,
तब देखे अंण्डकै पारा है॥
सकल जगतमें सतकी नगरी,
चित्त भुलावै बांकी डगरी,
सो पहुँचे चाले बिन पग री,
ऐसा खेल अपारा है॥

तू उसकी सूरत अपनी आखों में बसा ले और देख कि सारा ब्रह्मांड उसी से भरा हुआ है। तू हृदय में सोच तो मालूम होगा कि यह सारा देश तेरा अपना है। जिस दिन सत्गुरु के दर्शन होंगे उस दिन प्रेम जाग उठेगा, सुरत (प्रेम) और निरत (वैराग्य) के सारे रहस्य प्रगट हो जायेंगे और तब मालूम होगा कि वह

گے اور تب محسوس ہوگا کہ وہ (اس دنیا میں ہوتے ہوئے بھی) اس دنیا سے ماورا ہے۔ یہ جگت سب کی نگری ہے، اس کی ٹیڑھی بانکی پگڈنڈیاں دلکش ہیں۔ یہ کیسا عجیب کھیل ہے کہ ان راہوں پر قدم رکھے بغیر ہی چلنے والے منزل پر پہونچ جاتے ہیں۔

(۲) لیلا سُکھ اننت وہاں کی
جہاں راس وِلاس اپارا ہے
گہن تجن چھوٹے یہ پائی
پھر نہیں پانا ستانا ہے
پد نربان ہے اننت اپارا
سُرت مورتِ لوک پسارا
ست پُرش نو تن تن دھارا
صاحب سکل روپ سارا ہے
باگ بگیچے کھلی پھلواری
امرت لہریں ہو رہیں جاری
ہنسا کیل کرت تنہ بھاری
جہاں ان حد گھورے اپارا ہے
تا مدھ ادھر سنہاسن گاجے
پرش مہاتہاں ادھک براجے
کوٹن سور روم اک لاجے
ایسا پرش دیدارا ہے
پنتھ بِنا ست راگ اُچاریں
جو بیدھت ہیئے منجھارا ہے
جنم جنم کا امرت دھارا
جہاں ادھر امرت پُھارا ہے
ست سے ست سُتِ کہلائی
ست بھنڈار یاہی کے ماہی
نہتت رچنا تاہِ رچائی
جو سبھن تیں نیارا ہے
احد لوک وہاں ہے بھائی
پُرش انامی اکھا کہائی

(इस ब्रह्मांड में होते हुए भी) ब्रह्मांड से परे हैं। सारा जगत सत्य की नगरी है, इसकी टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में मन भटक जाता है। यह कैसा अजीब खेल है कि इन मार्गों पर जो पैरों के बिना चलता है वही मंज़िल तक पहुँचता है।

(२) लीला सुक्ख अनन्त वहाँ की
जहाँ रास विलास अपारा है,
गहन-गजन छूटे यह पाई
फिर नहिं पाना सताना है ॥ ३ ॥
पद निरवान है अनन्त अपारा
सुरति मूरति लोक पसारा,
सत्तपुरुष नूतन तन धारा
साहिब सकल रुप सारा है ॥ ४ ॥
बाग-बगीचे खिली फुलवारी
अमृत-लहरें हो रहीं जारी
हंसा केल करत तहँ भारी
जहँ अनहद घूरै अपारा है ॥ ५ ॥
तामध अधर सिंहासन गाजै
पुरुष महा तहँ अधिक विराजै
कोटिन सूर रोम इक लाजै
ऐसा पुरुष दीदारा है ॥ ६ ॥
पंथ बिना सतराग उचारैं
जो बेधत हिये भँझारा है।
जन्म जन्मका अंमृत धारा
जहँ अधर-अंमृत फुहारा है ॥ ७ ॥
सतसे सत्त सुन्न कहलाई,
सत्त भँडार याहीके माँहीं।
निःतत रचना ताहि रचाई
जो सबहिनतें न्यारा है ॥ ८ ॥
अहद लोक वहाँ है भाई,
पुरुष अनामी अकह कहाई।

جو پہنچے جانیگے واہی
کہن سنن تے نیارا ہے
رُوپ سَروپ کچھو وہاں ناہیں
ٹھور ٹھاؤں کچھو دیسے ناہیں
اجر تول کچھ درشٹ نہ آئی
کیسے کہوں سُمارا ہے
جا پر کرپا کرہے سائیں
ان ہد مارگ گاوے تاہی
اُدبھو پرلے پاوت ناہیں
جب پاوے دیدارا ہو
کہیں کبیر مکھ کہا نہ جائی
نا کاگد پر انک چڑھائی
مانوں گونگے سم گڑ کھائی
کیسے بچن اُچارا ہو

وہاں سُکھ کا کھیل مسلسل جاری ہے اور سعادت اور مُسرت ابدی ہے۔ یہ مل جائے تو دنیا کا سارا کھونا اور پانا بے معنی ہے۔ (حاصل کرنے کی جد و جہد اور تج دینے کی لذت ختم ہوجاتی ہے) وہی لامحدود نروان ہے۔ اسی سے ساری کائینات میں عشق (مُسرت) کا ظہور ہے۔ ذات حق (ست پرش) سے نئے نئے اجسام کے دھارے بہ رہے ہیں اور ہر روپ میں اسی (صاحب) کی شکل دکھائی دے رہی ہے۔ باغ مہک رہے ہیں اور پھلواریاں کھلی ہوئی ہیں، امرت کی لہریں جاری ہیں، وہاں ہنس (روح) خوش ہوکر ناچ رہا ہے اور لامحدود نغمے کے بادل چھائے ہوئے ہیں، اس کے بیچ میں وہ سنگھاسن معلق ہے جس پر مہاپُرش (ذات پاک) براجمان ہے اور اس کا دیدار ایسا دلکش ہے کہ اس کے ایک بال کی روشنی سے لاکھوں سورج شرما جاتے ہیں۔

کوئی راہ نہیں ہے پھر بھی صوت سرمدی گونج رہی ہے جو دل میں اتر جاتی ہے۔ جنم جنم کا امرت دھارا بہ رہا ہے اور ابدیت کا پھوار پڑ رہی ہے۔ وہ جسے شونیہ (خلا) سمجھا جاتا ہے وہی سب سے

जो पहुँचे जानेगे वाही
कहन सुननते न्यारा है ॥ ९ ॥
रुप-सरुप कछू वहँ नाहीं,
ठौर-ठाँव कछु दीसै नाहीं।
अजर-तूल कछु दृष्टि न आई
कैसे कहूँ सुमारा है ॥ १० ॥
जापर किरपा करिहै साईं
अनहद मारग गावै ताहीं।
उद्भव परलय पावत नाहीं
जब पावै दीदारा हो ॥ ११ ॥
कहैं कबीर मुख कहा न जाई
ना कागदपर अंक चढ़ाई।
मानों गूँगे सम गुड़ खाई
कैसे बचन उचारा हो ॥ १२ ॥

वहाँ सुख की लिला अनंत है और व अपार रास-विलास है। यह मिल जाए तो दुनिया का सारा खोना और पाना व्यर्थ है। वही अनंत अपार निर्वाण है। इसी में सारे लोक में सुरति (प्रेम) का अस्तित्व है। सत्तपुरुष ने नया तन धारण किया है, हर रुप में उसी (साहब) की शक्ल दिखायी दे रही है।

बाग महक रहे हैं और फुलवारीयाँ खिली हुई हैं, अमृत की धारा बह रही है। वहाँ हंस (आत्मा) मगन होकर क्रिड़ा कर रहे हैं और अनहद नाद आकाश में गूँज रहा है।

उसके बीच में वह सिंहासन लटका हुआ है जिस पर महापुरुष विराजमान है। और उसका दर्शन इतना नयनाभिराम है कि उसके एक बाल की ज्योति से लाखों सूरज शरमा जाते हैं।

पंथ के बिना सत्-राग गूँज रहा है जो दिल में उतर जाता है। जन्म-जन्म की अमृत-धारा बह रही है और अमृत की फुहार पड़ रही है।

वह जिसे शून्य समझा जाता वही सबसे बड़ा सत्य है, उसी में सत्य का भंडार है नितःत्व रचना उसी से हुई है, जो सबसे न्यारा है।

भाई वह अनंत लोक वहाँ है जिसके पुरुष (स्वामी) का कोई नाम नहीं है और उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जो वहाँ पहुँचेगा वही जानेगा, कहने-सुननेकी कोई गुंजाइश नहीं है।

بڑی صداقت ہے اور تمام صداقتیں اسی میں محو ہیں ۔ دانش اور فلسفے کی رسائی سے دور اس کے وجود میں تخلیق کا کھیل جاری ہے جو خود سب سے نیارا ہے ۔ بھائی وہ احدیت (یکتائی) کی دنیا ہے جس کے مالک (پُرش) کا کوئی نام نہیں ہے کوئی بیان نہیں ہے ، جو وہاں پہونچے گا وہی جانے گا ، کہنے سننے کی کوئی گنجائش نہیں ہے ۔ وہاں روپ سروپ کچھ نہیں ہے ۔ کوئی مقام دکھائی نہیں دیتا ۔ عرض و طول کچھ نظر نہیں آتا ۔ پھر کیسے کہوں کہ اس کا شمار کیا جاسکتا ہے ۔ جس پر معبود (سائیں) کی عنایت ہے وہی صوتِ سرمدی کا راز پاسکتا ہے ۔ جسے اس کا دیدار ہوگیا اس کے لئے ازل اور ابد بے معنی ہیں ۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس کا بیان زبان سے نہیں کیا جاسکتا ، کاغذ پر لکھا نہیں جاسکتا ، یہ ایسا ہی ہے جیسے گونگے نے گڑ کھایا ہو ، اس کا ذائقہ کیسے بیان ہوسکتا ہے ۔



۷۷

چل ہنسا وا دیس جہاں پیا بسے چت چور
سُرت سوہاگن ہے پنہارن بھرے ٹھاڑھ بن ڈور
وہ دیسواں بادر نا امڑے رم جھم برسے میہ
چوبارے میں بیٹھ رہو نا ، جا بھیجہ نردیہہ
وہ دیسوا میں نت پورنما کبہُوں نہ ہوئے اندھیر
ایک سُرج کے کون بتاوے ، کوٹن سُرج اُنجیر

اے ہنس اُس دیس چل جہاں دل چرا لینے والے پیا کی نگری ہے جہاں پر پریم کی سہاگن کھڑی ہوئی بغیر ڈور کے پانی بھر رہی ہے ۔ اُس دیس میں بادل گھر کے نہیں آتے لیکن مینہ رم جھم برستا ہے ۔ چوبارے میں مت بیٹھ ، باہر نکل اور اپنے بغیر جسم کے وجود (نردیہہ) کو بھیگ جانے دے ۔ اُس دیس میں چاندنی ہمیشہ کھلی رہتی ہے اور اندھیرا کبھی نہیں ہوتا ۔ ایک سورج کی بات کون کرتا ہے وہاں تو کروڑوں سورج چمک رہے ہیں ۔ (ہنس = روح = دل)



۷۸

کہیں کبیر سنو ہو سادھو امرت بچن ہمار
جو بھل چاہو آپنو ، پرکھو کرو بچار

वहाँ रुप-स्वरुप कुछ नहीं है, और ठौर-ठाँव कुछ दिखायी नहीं देता। उसका विस्तार दृष्टि से ओझल है, फिर कैसे कहूँ कि उसकी गणना (सुमारा-शुमार) की जा सकती है।

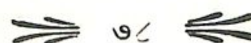
जिसपर साईं की कृपा होगी वही अनहद मार्ग को पा सकता है। जिसे उसका दीदार (दर्शन) हो गया उसके लिये उद्भव और प्रलय के बंधन मिट गये।

कबीर कहते हैं कि उसका वर्णन मुख से नहीं किया जा सकता, काग़ज़ पर लिखा नहीं जा सकता। जैसे अगर गूँगा आदमी गुड़ खा ले तो उसकी मिठास का वर्णन कैसे कर सकता है।



चल हंसा वा देस जहँ पिया बसै चितचोर।
सुरत सोहागिन है पनिहारिन, भरै टाढ़ बिन डोर॥
वहि देसवाँ बादर ना उमड़ै रिमझिम बरसै मेह।
चौबारेमें बैठ रहो ना, जा भीजहु निर्देह॥
वहि देसवामें नित्त पूर्निमा, कबहुँ न होय अँधेर।
एक सुरजकै कवन बतावै, कोटिन सुरज ऊँजेर॥

ऐ हंस, उस देश चल जहाँ चितचोर पिया रहता है, जहाँ सुरतकी सुहागिन खड़ी हुई बिना डोर के पानी भर रही है। उस देश में बादल घिरकर नहीं आते लेकिन मेंह रिमझिम बरसता है। चौबारे में मत बैठ, बाहर निकल और निदेह (बिना शरीर का अस्तित्व) इस पानी में भीग। उस देश में हमेशा पूर्णिमा रहती है और अंधेरा कभी नहीं होता। एक सूरज की बात कौन करता है, वहाँ तो करोडों सूरज चमक रहे हैं।



कहैं कबीर सुनो हो साधो, अंमृत-बचन हमारा।
जो भल चाहो अपनो, परखो करो बिचार॥

جے کرتا نیں اوپجے تاسوں پر کُبو بیچ
اپنی بُدھی وویک بن، سمج بساہی میچ
یہی میں نے سب مت چلے، یہی چلیو اُپدیس
نشچئے گہ نربھئے رہو، سُن پرم تت سندیس
کیہی گاوو کیہی دھیا وہو، چھوڑو سکل دھمار
یہ ہردے سب کو بسے، کیوں سیوو سُن اجاڑ
دورہی کرتا تھاپ کے۔ کری دور کی آس
جو کرتا دورے ہُتے۔ تو کو جگ سرجے پاس
جو جانو یہاں ہے نہیں، تو تم دھاوو دور
دور سے دور بھرم لشپھل مرو بسور
دُرلبھ درسن دور کے، نیر سدا سکھ باس
کہیں کبیر مونہ ویا پیا، مت دکھ پاوے داس
آپ اپن پوچینہو، نکھ سکھ سہت کبیر
آنند منگل گاوہو ہوہی اپن پوتھیر

سنو سادھو کبیر کہتے ہیں کہ « ہمارا بچپن امرت ہے (ہماری بات لا فانی ہے) اگر اپنا بھلا چاہتے ہو تو ہمارے بچپن کو پرکھو اور اس پر غور کرو۔ تم اپنے خالق سے بیگانے ہوگئے ہو۔ تم نے اپنی عقل گم کردی ہے اور موت کو خرید لیا ہے۔ تمام فلسفے یہیں سے چلے ہیں تمام تعلیمات یہیں سے نکلی ہیں، یقین پیدا کرو اور بے خوف ہو جاؤ اور عظیم صداقت کا پیام مجھ سے سنو۔ تم کس کے گیت گاتے ہو، کس کا دھیان کرتے ہو، ارے شکلوں کے اس فریب سے باہر نکلو، وہ تو سب کے دل میں بستا ہے پھر اجاڑ ویرانوں میں مارے مارے پھرنے سے کیا فائدہ، اگر تم نے گرو کو دور رکھا ہے تو ظاہر ہے کہ تم دوری اور فاصلے کی پوجا کررہے ہو، اگر مالک واقعی دور ہے تو پھر اس آس پاس کی دنیا کو کس نے پیدا کیا ہے، اگر تم نے اس کو دور سمجھ لیا ہے، تو پھر تم دور سے دور اس کی تلاش میں جاؤگے لیکن وہ رونے بسورنے اور آنسو بہانے سے بھی نہیں مل سکتا۔ جب وہ دور ہے تو پھر اس کا درشن بھی دور ہے، جب وہ پاس ہے تو صرف مسرت اور سعادت ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ

जे करतातें ऊपजै, तासों परि गयौ बीच।
अपनी बुद्धि विवेक-बिन, सहज बिसाही मीच॥
यहिमेंते सब मत चलै, यही चल्यौ उपदेस।
निश्चय गहि निर्भय रहो, सुन परम तत्त संदेस॥
केहि गावो केहि ध्यावहू, छोड़ो सकल धमार।
वह हिरदे सबको बसे, क्यों सेवो सुन्न-उजाड़॥
दूरहि करता थापिकैं, करी दूरकी आस।
जो करता दूरै हुते, तो को जग सिरजै पास॥
जो जानो यहँ है नहीं, तो तुम धावो दूर।
दूरसे दूर भ्रमि भ्रमि, निष्फल मरो बिसूर॥
दुरलभ दरसन दूरके, नियर सदा सुख-बास।
कहैं कबीर मोंहि व्यापिया, मत दुख पावै दास॥
आप अपनपौ चीन्हहू, नख-सिख सहित कबीर।
आनंद-मंगल गावहू, होहि अपनपौ थीर॥

सुनो साधु, कबीर कहते हैं कि हमारा वचन अमृत है। अगर भला चाहते हो तो हमारे वचन को परखो और उस पर विचार करो। तुम अपने कर्ता (रचयिता, सृजक) से अलग हो गये हो। तुमने अपनी बुद्धि खो दी है और सहज ही मौत को मोल ले लिया है। सारे मत यहीं से चलते हैं, सारे उपदेश यहीं से निकलते हैं। मन में निश्चय पैदा करो और भय त्याग दो और परम सत्य का संदेश मुझसे सुनो। तुम किसके गीत गाते हो, किसका ध्यान करते हो। अरे, साकार के इस भ्रम से बाहर निकलो। वह तो सबके हृदय में बसता है फिर उजाड़ और निर्जन स्थानों में मारे-मारे फिरने से क्या फ़ायदा। अगर तुमने सृष्टा को दूर रखा है तो स्पष्ट है कि तुम दूरी की पूजा कर रहे हो। अगर कर्ता (ईश्वर) सचमुच दूर है तो फिर इस आस-पास की दुनिया को किसने पैदा किया है। अगर तुमने उसको दूर समझ लिया है तो तुम दूर से दूर उसकी खोज में जाओगे, लेकिन वह रोने-बिसूरने और आँसू बहाने से भी नहीं मिल सकता। जब वह दूर है तो उसका दर्शन भी दूर है। जब वह पास है तो सदा सुख ही सुख है।

اے بندے (داس) کیوں دکھ اٹھاتا ہے . وہ تو تیرے وجود میں جاری اور ساری ہے . اپنے آپ کو پہچانو کبیر وہ سر سے پاؤں تک تم میں بسا ہوا ہے . خوشی کے گیت (آنند منگل) گاؤ اور دل کا سکون باقی رکھو .

۷۹

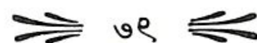
نا میں دھرمی ناہیں ادھرمی ، نامیں جتی نہ کامی ہو
نا میں کہتا نا میں سنتا ، نامیں سیوک سوامی ہو
نا میں بندھا نا میں مکتا ، نامیں برت نہ رنگی ہو
نا کاہو سے نیارا ہوا ، نا کاہو کے سنگی ہو
نا ہم نرک لوک کو جاتے نا ہم سُرگ سدھارے ہو
سب ہی کرم ہمارا کیا ، ہم کرمن تیں نیارے ہو
یا مت کو کوئی برلے بوجھے ، سو اٹر ہو بیٹھے ہو
مت کبیر کاہو کو تھاپے ، مت کاہو کو میٹے ہو

نہ میں دھرمی ہوں اور نہ ادھرمی ، نہ میں قانون کا بندہ (برھم چاری) ہوں اور نہ خواہشوں کا غلام . نہ میں بولتا ہوں نہ میں سنتا ہوں . نہ میں عابد ہوں نہ معبود . نہ میں جبر کے قبضے ہوں نہ اختیار کے . نہ میرا کسی سے تعلق ہے نہ میں بے تعلق ہوں . نہ میں کسی سے دور ہوں نہ کسی سے قریب . نہ ہم جہنم میں جاتے ہیں نہ جنت کا راستہ لیتے ہیں . سب کام ہم نے کیے ہیں لیکن ہر کام سے بے نیاز ہیں . اس فلسفے (مت) کے سمجھنے والے کم ہیں . لیکن جس نے سمجھ لیا وہ مطمئن ہوگیا . کبیر نہ تو کسی مت کا بانی ہے اور نہ کسی مت کا مٹانے والا .

۸۰

ست نام ہے سب تیں نیارا
نرگن سرگن شبد پسارا
نرگن بیج سرگن پھل پھولا
ساکھا گیان نام ہے مولا
مول گہے تیں سب سکھ پاوے
ڈال پات میں مول گنواوے

कबीर कहते हैं कि ऐ बंदे, क्यों दुख उठाता है, वह तो तेरे अस्तित्व में व्याप्त है। अपने आपको पहचानो, कबीर, वह सर से पाँव तक तुम में बसा हुआ है। आनंद-मंगल गाओ और अपने मन को स्थिर रखो।



ना मैं धर्मी नाहीं अधर्मी, ना मैं जती न कामी हो।
ना मैं कहता ना मैं सुनता, ना मैं सेवक-स्वामी हो।
ना मैं बंधा ना मैं मुक्ता, ना मैं बिरत न रंगी हो।
ना काहूसे न्यारा हूआ, ना काहूके संगी हो।
ना हम नरक-लोकको जाते, ना हम सुर्ग सिधारे हो।
सब ही कर्म हमारा कीया, हम कर्मनतें न्यारे हो।
या मतको कोई बिरलै बूझै, सो अटर हो बैठे हो।
मत कबीर काहूको थापै, मत काहूको मेटे हो॥

न मैं धर्मात्मा हूँ न अधर्मी। न मैं ब्रह्मचारी हूँ न कामुक। न मैं बोलता हूँ न न सुनता हूँ। न मैं सेवक (उपासक) हूँ न स्वामी (प्रभु)। न मैं बँधा हुआ हूँ न मुक्त हूँ, न मैं विरक्त हूँ न आसक्त (रंगी)। न किसी से अलग हूँ न किसी के साथ। न हम नरक लोक को जाते हैं, न स्वर्ग को सिधारते हैं। सब कर्म हमने किये हैं लेकिन हम कर्म से अलग हैं। इस मत के समझनेवाले बिरले ही हैं, लेकिन जिसने समझ लिया वह अटल होकर बैठ गया। कबीर ने न तो किसी मत की स्थापना की है, न किसी मत को मिटाया है।



सत्त नाम है सबत न्यारा।
निर्गुन-सर्गुन शब्द पसारा॥
निर्गुन बीज सर्गुन फल-फूला।
साखा ज्ञान नाम है मूला॥
मूल गहेतें सब सुख पावै।
डाल-पातमें मूल गँवावै॥

سائیں ملانی سکھ دلانی
نرگن سرگن بھیــد مٹانی

ست نام سب سے نیارا ہے ۔ (ایسا نام کوئی نہیں) نِرگن (بے صفات) اور سَرگُن (صاحب صفات) صرف الفاظ ہیں۔ نِرگُن بیج ہے اور سَرگُن پھل اور پھول گیان اس کی شاخ ہے اور نام اس کی جڑ۔ جو جڑ تک پہونچ گیا اس نے مسرت حاصل کرلی۔ جو ڈال پات میں الجھ گیا وہ جڑ تک کبھی نہیں پہونچا۔ مالک (سائیں) سے ملاقات مسرت کا حصول ہے اور اس سے نرگن اور سرگن کے بوید بھاؤ مٹ جاتے ہیں۔

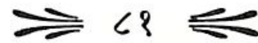
۸۱

پرتھم ایک جو آپے آپ ۔ نِرکر نرگُن نرجاپ
نہیں تو آد انت مدھ تارا ۔ نہیں تو اندھ دھندھ اجیارا
نہیں تو بھومی پون آکاسا ۔ نہیں تو پاوک نیر نواسا
نہیں تو سرسُتی جمنا گنگا ۔ نہیں تو ساگر سمد ترنگا
نہیں تو پاپ پن نہیں وید پرانا ۔ نہیں تو بھئے کتیب کُرانا
کہیں کبیر وچار کے تب کچھ کرپا ناہیں
پرم پرش تہاں آپ ہی، اگم اگو چرماہیں
کرتا کچھ کھاوے نہیں پیوے ۔ کرتا کبھوں مرے نہ جیوے
کرتا کے کچھ روپ نہ ریکھا ۔ کرتا کے کچھ برن نہ بھیکھا
جا کے جات گوت کچھ ناہیں ۔ مہما برن نہ جائے موپاہیں
روپ اروپ نہیں تیرا ناؤں ۔ برن ابرن نہی تیہ ٹھاؤں

ازل میں وہ اکیلا تھا اور اس کا اپنا وجود ہی اس کے لئے کافی تھا، وہ جس کا نہ رنگ ہے نہ روپ ہے، وہ جو بے صفات ہے۔ نہ تو ابتدا تھی، نہ ارتقا (مدھ = وسط) نہ انتہا، نہ اندھیرا تھا، نہ دھندلکا تھا، نہ اجالا۔ نہ زمین تھی، نہ ہوا تھی۔ نہ آسمان، نہ آگ تھی نہ پانی۔ نہ گنگا جمنا اور سرسوتی کے دھارے تھے، نہ سمندر تھا نہ موجیں۔ نہ گناہ تھا، نہ ثواب، نہ وید پُران تھے نہ قرآن۔ کبیر سوچ بچار کے بعد کہتے ہیں کہ تب کوئی حرکت اور جنبش نہیں تھی، ذات مطلق (پرم پُرش = ذات اعلیٰ) اپنی خودی کی نا معلوم اور لا محدود گہرائیوں میں کھوئی ہوئی تھی۔

साँई मिलानी सुख दिलानी।
निर्गुन-सर्गुन भेद मिटानी॥

सत्य नाम सबसे न्यारा है। निर्गुण और सगुण केवल शब्द हैं। निर्गुण बीज है और सगुण फल और फूल। ज्ञान उसकी डाल है और नाम उसकी जड़। जो जड़ तक पहुँच गया, उसे सब सुख मिल गये। जो डाल-पात में उलझ गया वह जड़ तक कभी नहीं पहुँचा। साँई से मिलन सुख प्राप्त करना है और उससे निर्गुण और सगुण का भेदभाव मिट जाता है।



प्रथम एक जो आपै आप। निरकार निर्गुन निर्जाप।
नहिं तब आदि-अन्त-मध-तारा। नहिं तब अंध धुंध उजियारा॥
नहिं तब भूमि पवन-आकासा। नहिं तब पावक-नीर-निवासा॥
नहिं तब सरसुति-जमुना-गंगा। नहिं तब सागर-समुद्र-तरंगा॥
नहिं तब पाप-पुन्न नहिं वेद-पुराना। नहिं तब भये कतेब कुराना॥
कहैं कबीर विचारिकै, तब कुछ किरपा नाहिं।
परम पुरुष तहँ आपही, अगम-अगोचर माहिं॥
करता कुछ खावै नहिं पीवै। करता कबहूँ मैर न जीवै॥
करताके कुछ रुप न रेखा। करता के कछु बरन न भेखा॥
जाके जात-गोत कुछ नाहीं। महिमा बरनि न जाय मो पाहीं।
रूप-अरूप नहिं तेरा नाँव। बर्न-अबर्न नहीं तेहि ठाँव॥

आरंभ में वह अकेला था और वह निराकार निर्गुण और उसका कोई वर्णन नहीं किया जा सकता था। न तो आदि था, न अन्त था और न मध्य, यह क्रम था ही नहीं। तब न अँधेरा था, न धुँधलका, न उजाला। न पृथ्वी थी, न हवा थी, न आकाश था। न आग थी न पानी। न गंगा, जमुना और सरस्वती नदियाँ थीं, न समुद्र और उसकी लहरें। तब न पाप था न पुण्य, न वेद और पुराण थे न क़ुरान। कबीर सोच-विचारकर कहते हैं, तब तक कोई (ईश्वर की) लीला दिखायी नहीं देती थी। परम-पुरुष अगम और अगोचर की गहराइयों में खोया हुआ था।

خالق (کرتا = کرتار) نہ کچھ کھاتا ہے نہ پیتا ہے ۔ وہ نہ مرتا ہے نہ جیتا ہے ، اس کا نہ کوئی روپ ہے نہ ریکھا (اکیر) نہ رنگ ہے نہ بھیس ۔ نہ اس کی ذات پات ہے نہ گوتر ، اس کی شان بیان سے باہر ہے ۔ نہ وہ مشکل ہے نہ شکل (نہ خوبصورت ہے نہ بدصورت) اس کا کوئی نام نہیں ہے ۔ نہ وہ رنگ میں اسیر رہا اور نہ رنگ سے آزاد ہے ۔ اس کا کوئی مقام نہیں ہے ۔

(یہ نظم اگر ایک طرف ان معنوں میں خالص ویدانت ہے کہ برھما مکمل عدم اور مکمل خاموشی (شونیہ) ہے تو دوسری طرف ہمہ اوست کی تشریح ان معنوں میں ہے کہ کائینات کی کسی چیز سے الگ اس کا وجود نہیں ۔ وہ سب کچھ ہے الگ کچھ نہیں ہے)

۸۲

کہیں کبیر وچار کے جاکے برن نہ گاؤں
نراکار اور نرگنا ، ہے پورن سب ٹھاؤں
کرتا آنند کھیل لائی ، اونکارتے سرشٹی اُپائی

آنند دھرتی آنند آکاس آنند چند سور پرکاس
آنند آد انت مدھ تارا آنند اندھ کوپ اجیارا
آنند ساگر سمدر ترنگا آنند سرستی جمنا گنگا
کرتا ایک اور سب کھیل مرن جنم بِرہ میل
کھیل جل تھل سکل جہانا کھیل جانوں جمی اسمانا
کھیل کا یہ سکل پسارا کھیل مانھی رہے سنسارا
کہیں کبیر سب کھیلن ماہیں کھیلن ہار کو چینہیں ناہیں

کبیر سوچ وچار کے بعد کہتے ہیں کہ وہ جس کی نہ کوئی ذات پات ہے نہ کوئی ٹھکانہ ، جو جسم سے پاک اور صفات سے بے نیاز ہے ، اُس کامل سے ساری کائینات بھری ہوئی ہے ۔ وہ خالق ہے جس نے مسرت اور سعادت کا کھیل شروع کیا ہے اور اوم کے لفظ سے کائینات کی تخلیق کی ہے ۔ زمین مسرت ہے ، آسمان مسرت ہے ، چاند کا نور اور سورج کی روشنی مسرت ہے ، ازل مسرت ہے ، ابد مسرت ہے ، ارتقا مسرت ہے ، اندھیرا مسرت ہے ، اجالا مسرت ہے ، سمندر مسرت ہے ، اس کی لہریں مسرت ہیں ، مسرت ہیں گنگا اور جمنا اور سرسوتی

कर्ता (सृष्टि का रचयिता) न कुछ खाता है न पीता है। वह न मरता है न जीता है। उसका न कोई रूप है न आकार (रेखा), न कोई रंग है न भेष। उसकी न कोई जात-पाँत है न गोत्र। उसकी महिमा मुझसे वर्णन नहीं की जाती। न उसका रूप है, न वह अरूप है, न उसका कोई नाम है। न उसका कोई रंग है, न बेरंग है। उसका कोई स्थान नहीं हैं।



कहैं कबीर विचारिके, जाकै बर्न न गाँव।
निराकार और निर्गुना, है पूरन सब ठाँव॥
करता आनंद खेल लाई, ओंकारते सृष्टि उपाई॥
आनंद धरती आनंद आकास। आनंद चंद-सूर परकास॥
आनंद आदि-मध-तारा। आनंद अन्धकूप उजियारा॥
आनंद सागर-समुद्र-तरंगा। आनंद सरसुति जमुना-गंगा॥
करता एक और सब खेल। मरन-जनम बिरह मेल॥
खेल जल-थल-सकल जहाना। खेल जानौं जमी असमाना॥
खेलका यह सकल पसारा। खेल माँहि रहै संसारा॥
कहैं कबीर सब खेलनमाहीं। खेलनहारकों चीन्हैं नाहीं

कबीर सोच-विचारकर कहते हैं कि वह जिसका न कोई वर्ण है न कोई ठिकाना, जो निराकार और निर्गुण है सारी सृष्टि उसी से पूर्ण है। वह कर्ता है जिसने आनंद का खेल शुरु किया और ॐ ध्वनि से सारी सृष्टि को जन्म दिया। आनंद पृथ्वी है आनंद आकाश है। चाँद और सूरज का प्रकाश आनंद है। आदि, अंत और मध्य का क्रम आनंद है, अँधेरा आनंद है उजाला भी आनंद है। समुद्र आनंद है और उसकी लहरें आनंद हैं। आनंद हैं गंगा, जमुना और सरस्वती की धारा। कर्ता एक है और जन्म-मरण, विरह-मिलन सब उसके खेल

کے دھارے۔ خالق ایک ہے، زندگی اور موت، ہجر اور وصال سب اس کے کھیل ہیں۔ کھیل پانی کا، کھیل مٹی کا، کھیل سارے جہان کا، کھیل زمین اور آسمان کا۔ کائینات کی سرشت میں کھیل ہے اور کھیل ہی میں ساری کائینات ہے، کبیر کہتے ہیں کہ ساری دنیا اس کا (حسین و جمیل) کھیل ہے لیکن کھیلنے والے کو کوئی نہیں پہچانتا۔

۸۳

جھی جھی جنتر باجے
کر چرن بہُونا ناچے
کر بِن باجے سُنے شروَن بِن
شَروَن شروتا اوئی
پاٹ نہ سُبھاس سبھا بِن اَوسر
بوجھو مُنی جن سوئی

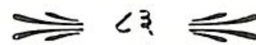
ساز بج رہا ہے، ہاتھ ہیں نہ پاؤں لیکن ناچ ہو رہا ہے۔ انگلیاں نہیں لیکن نغمہ ہے، کان نہیں ہیں لیکن سنائی دے رہا ہے۔ وہی خود کان ہے اور وہی سننے والا، دروازہ بند ہے اور اندر خوشبو بھری ہے۔ کوئی محفل آرا نظر نہیں آتا لیکن محفل سجی ہوئی ہے، بوجھنے والے اسے بوجھ لیں گے۔ (یہ ترجمہ بھی ممکن ہے «نہ تخت نہ دربار، پھر بھی محفل آراستہ ہے جو اس کو سمجھ لے وہی محرم راز ہے»)۔

۸۴

مور پھکروا مانگ جائے
میں تو دیکھو نہ پولیوں
منگن سے کیا مانگئے
بن مانگے جو دیہہ
کہیں کبیر میں ہوں واہی کو
ہونی ہونے سو ہوئے

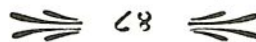
میرا فقیر مانگتا پھر رہا ہے لیکن میں نے تو اس کی جھلک بھی نہیں دیکھی مانگنے والے سے میں کیا مانگوں، وہ تو بن مانگے دیتا ہے، کبیر کہتے ہیں کہ میں تو اس کا ہوں جو ہونا ہے ہو جائے۔

(लीला) हैं। जल-थल, सारा संसार खेल है। पृथ्वी और आकाश ये भी खेल ही समझो। चारों ओर उसी की लीला व्याप्त है और इसी लीला में सारे संसार का अस्तित्व है। कबीर कहते हैं कि सारा संसार इसी खेल के अंदर है लेकिन खेलनेवाले को कोई नहीं पहचानता।



झी झी जंतर बाजै।
कर चरन बिहूना नाचै।
कर बिनु बाजै सुनै श्रवन बिनु
श्रवन श्रोता लोई।
पाट न सुबास सभा बिनु अवसर
बूझौ मुनि-जन सोई॥

यंत्र (बाजा) बज रहा है। हाथ हैं न पाँव लेकिन नाच हो रहा है। हाथ के बिना बाजा बज रहा है और कानों के बिना सुनायी दे रहा है। वही ख़ुद कान है और वही सुननेवाला। न कोई सिंहासन है न कोई बैठने की जगह, और बिना किसी अवसर (दरबार) के सभा जमी हुई है जो इस रहस्य को जान ले वही असली मुनि है।



मोर फकिरवा मांगि जाय,
में तो देखहू न पौल्यौं।
मंगनसे क्या मांगिये,
बिन मांगे जो देय।
कहैं कबिर मैं हौं वाही को,
होनी होय सो होय।

मेरा फ़क़ीर तो माँगकर चला भी गया, लेकिन मैंने तो उसकी झलक भी नहीं देखी। माँगनेवाले से मैं क्या माँगूँ, वह तो बिन माँगे देता है। कबीर कहते हैं कि मैं तो उसी का हूँ, अब जो होना है हो जाये।

نیہر سے جیرا پھاٹ رے
نیہر نگری جن کے بگڑی۔ اس کا کیا کور باٹ رے
تنک جیروا موہ نہ لاگے، تن من بہت اچاٹ رے
یا نگری میں لکھ دروا جا۔ بیچ سمندر گھاٹ رے
کیسے کے پار اتریں سجنی، اگم پنتھ کا پاٹ رے
عجب طرح کا بنا تنبورا، تار لگے من مات رے
کھونٹی ٹوٹی تار بلگانا، کوو نہ پوچھت بات رے
ہنس ہنس پوچھے مات پتا سوں، بھورریں سا سر جاب رے
جو چاہیں سو وو ہی کری ہیں۔ پت واہی کے ہاتھ رے
نہائے دھوئے دلہن ہوئے بیٹھی، جو ہے پیہ کی باٹ رے
تنک گھونگھٹوا دکھاو سکھی ری، آج سوہاگ کی رات رے
کہے کبیر سنو بھائی سادھو پیا ملن کی آس رے
بھور ہوت بندے یاد کرو گے، نیند نہ آوے کھاٹ رے

ماں باپ کے گھر سے جی اکتا گیا ہے۔ جس کی یہ نگری بگڑ گئی اس کا نہ کوئی گھر ہے نہ راستہ۔ اب تو ذرا بھی جی نہیں لگتا، تن من اچاٹ رہتا ہے۔ اس نگری میں لاکھ دروازے ہیں لیکن بیچ میں سمندر حائل ہے، سجنی میں کیسے پار اتروں، اس راستے کا کوئی اور چھور نہیں ہے۔

یہ تنبورا عجب ترکیب سے بنا ہوا ہے۔ جب اس کے تار بجنے لگتے ہیں تو دل نغمے میں کھو جاتا ہے۔ لیکن جب کھونٹی ٹوٹ جاتی ہے اور تار الگ ہوجاتے ہیں تو پھر کوئی اس کی بات نہیں پوچھتا۔

میں ہنس ہنس کر ماں باپ سے پوچھتی ہوں کہ صبح ہوتے ہی سسرال جانا پڑے گا۔ وہ جو چاہیں گے کریں گے اب تو عزت انہیں کے ہاتھ ہے۔ چونکہ پیا کا انتظار ہے اس لئے نہا دھو کر دلہن بنی بیٹھی ہوں سکھی ذرا اپنا گھونگھٹ اٹھاؤ آج سہاگ کی رات ہے۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ پیا سے ملنے کی امید ہے۔ بستر پر لیٹ کر نیند نہیں آتی، صبح ہوگی تو مجھے یاد کروگے۔

८९

नैहरसे जियरा फाट रे।
नैहर नगरी जिनके बिगड़ी, उसका क्या घर-बाट रे।
तनिक जियरवा मोर न लागै, तन मन बहुत उचाट रे।
या नगरीमें लख दरवाजा, बीच समुंदर घाट रे।
कैसेकै पार उतरिहैं सजनी अगम पंथका पाट रे।
अजब तरहका बना तंबूरा, तार लगै मन मात रे।
खूँटी टूटी तार बिलगाना, कोउ न पूछत बात रे।
हँस हँस पूछै मातुपितासों, भोरें सासुर जाब रे।
जो चाहैं सो वो ही करिहैं, पत वाहीके हाथ रे।
न्हाय-धोय दुल्हिन होय बैठी, जोहै पियकी बाट रे।
तनिक घुंघटवा दिखाव सखीरी, आज सोहागकी रात रे।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, पिया-मिलन की आस रे।
भोर होत बंदे याद करोगे, नींद न आवे खाट रे।

माँ-बाप के घर से जी उकता गया है। जिसके नैहर की नगरी बिगड़ गयी, उसका न कोई घर है न रास्ता। अब तो तनिक भी जी नहीं लगता, तन-मन उचाट रहता है। इस नगरी में लाख दरवाजे हैं लेकिन बीच में समुद्र की बाधा है। सजनी, मैं कैसे पार उतरूँ, इस रास्ते का कोई ओर-छोर नहीं है।

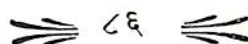
यह तंबूरा अजब तरह से बना है। जब इसके तार बजने लगते हैं तो मन मुग्ध हो जाता है। लेकिन जब खूँटी टूट जाती है और तार अलग होताजा है, तो फिर कोई उसकी बात नहीं पूछता। मैं हँस-हँसकर माँ-बाप से पूछती हूँ कि भोर होते ही मैं ससुराल जाऊँगी। जो चाहेंगे वही करेंगे, अब तो लाज उन्हीं के हाथ है। पिया की प्रतीक्षा में वह नहा-धोकर दुल्हिन बनी बैठी है। सखी, तनिक अपना घूँघट उठाओ, आज सोहाग की रात है। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि पिया से मिलने की आशा है। खाट पर नींद नहीं आती, सुबह होगी तो मुझे याद करोगे।

جیو محل میں سو پہنواں، کہاں کرت اُنماد رے
پوچھا دیوا کرلے سیوا، رین چلی آوت رے
جُگن جُگن کرے پتیچھن، صاحب کا دل لاگ رے
سو جہت ناہیں پرم سُکھ ساگر، بنا پریم بیراگ رے
سرون سُر بُجھ صاحیب سے پورن پرگٹ بھاگ رے
کہے کبیر سنو بھاگ ہمارا، پایا اچل سوہاگ رے

زندگی کے محل میں خود شیو مہمان ہیں۔ تو کہاں پاگل بنا پھر رہا ہے۔ اپنے دیوتا کی سیوا کرلے۔ رات بڑی تیزی سے چلی آ رہی ہے۔ میرا انتظار کرتے کرتے نہ جانے کتنے جُگ بیت گئے۔ مالک کا دل مجھ سے لگ گیا ہے۔ پریم اور بیراگ کے بغیر مسرت کا بحر بیکراں دکھائی نہیں دیتا لیکن اب اپنے مالک سے محبت کا نغمہ سننے کے بعد میری قسمت جاگ اٹھی ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ ہمارے بھاگ کیسے اچھے ہیں کہ کبھی نہ ختم ہونے والا سہاگ ملا ہے۔

گگن گھٹا گھہرانی سادھو، گگن گھٹا گھہرانی
پورب دس سے اٹھی ہے بدریا، رم جھم برست پانی
آپن آپن میڑ سمہارو، بہیو جات یہ پانی
سُرت نرت کا بیل نہاین، کرے کھیت نروانی
دھان کاٹ مار گھر آوے، سوئی کُسل کسانی
دونوں تھار برابر پرسیں، جیویں مُنی اور گیانی

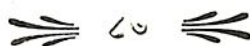
آسمان پر بادل گرج رہے ہیں سادھو آسمان پر بادل گرج رہے ہیں۔ پورب کی طرف سے گھٹا اٹھی ہے اور رم جھم رم جھم پانی برس رہا ہے۔ اپنے اپنے کھیت کی مینڈھ کو بچانے کی ترکیب کرو نہیں تو پانی سب کا سب بہ جائے گا۔ عشق اور بے تعلقی کی بیلوں کو بھٹکنے دو اور نجات کی کھیتی تیار کرلو۔ (یہ ترجمہ بھی ہوسکتا ہے، «مُسرت اور نرت کے بیلوں کو جوت کر نروان کی کھیتی کرلو») سمجھدار کسان وہی ہے جو دھان کو کاٹ کر گھر لے آتا ہے۔ اور دونوں تھالوں میں برابر کھانا نکالتا ہے جسے مُنی اور گیانی دونوں کھاتے ہیں۔



८६

जीव महलमें सिव पहुनवाँ, कहाँ करत उनमांद रे।
पहुछा देवा करिलै सेवा, रैन चली आवत रे।
जुगन जुगन करै पतीछन, साहबका दिल लाग रे।
सूझत नाहिं परम सुख-सागर, बिना प्रेम बैराग रे।
सरवन सुर बुझि साहेबसे, पूरन प्रगट भाग रे।
कहै कबीर सुनो भाग हमारा, पाया अचल सोहाग रे॥

जीवन के महल में शिव (परमात्मा) अतिथि है, तू कहाँ पागल बना फिर रहा है। अपने देवता की सेवा कर ले, रात बड़ी तेज़ी से चली आ रही है। मेरी राह देखते-देखते जाने कितने युग बीत गये, प्रभु का दिल मुझसे लग गया है। प्रेम और वैराग्य के बिना परम सुख का सागर दिखायी नहीं देता। जो सुर हमने सुना था उसे अपने साहब से समझ लेने के बाद हमारे भाग जाग उठे हैं। कबीर कहते हैं कि हमारा भाग्य कितना अच्छा है कि मुझे अचल सोहाग मिल गया है।



८७

गगनघटा घहरानी साधो, गगनघटा घहरानी।
पूरन दिससे उठी है बदरिया, रिमझिम बरसत पानी।
आपन आपन मेंड़ सम्हारो, बह्यौ जात यह पानी।
सुरत-निरतका बेल नहायन, करै खेत निर्वानी।
धान काट मार घर आवै, सोई कुसल किसानी।
दोनों थार बराबर परसैं, जेवैं मुनि और ज्ञानी॥

आकाश पर बादल गरज रहे हैं, साधुओ, आकाश पर बादल गरज रहे हैं। पूरब की ओरसे घटा उठी है और रिमझिम-रिमझिम पानी बरस रहा है। अपने-अपने खेत की मेंड़ को सँभालो नहीं तो यह पानी बहा जाता है। सुरत और निरत के बैल बाँधकर जो निर्वाण की खेती करता है और धान काटकर घर ले आता है वही कुशल किसान है। दोनों थालियों में (सुरति और निरति) बराबर खाना परोसता है जिसे मुनि और ज्ञानी खाते हैं।

۸۸

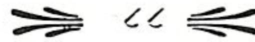
آج دن کے میں جاؤں بلہاری
پیتم صاحب آئے میرے پہونا ، گھر آنگن لگے سہونا
سب پیاس لگے منگل گاین ، بھئے مگن لکھ چھب من بھاون
چرن پکھاروں ، بدن نہاروں ، تن ، من ، دھن ، سب سائیں پے واروں
جا دن پائے پیا دھن سوئی ، ہوت اننّد پرم سکھ ہوئی
سُرت لگی ست نام کی آسا ، کہے کبیر داسن کے داسا

اس دن پر نثار ہوجانے کو جی چاہتا ہے ، آج پریتم مہمان آئے ہیں اور گھر آنگن سہانے لگ رہے ہیں ۔ میری پیاس گیت گا رہی ہے اور خوش ہوکر اس کے دل موہ لینے والے حسن میں کھوئی جارہی ہے ۔ میں اس کے پاؤں دھوتی ہوں ، اس کے چہرے کو (پیار سے) دیکھتی ہوں اور اپنا تن من دھن سب سائیں پر نچھاور کر دیتی ہوں ۔ یہ دن کتنا مبارک ہے کہ مجھے اپنے پیا کی دولت ملی ہے میری خوشی کی کوئی انتہا نہیں ہے ۔ داسوں کے داس کبیر کہتے ہیں کہ مجھے عشق ہوگیا ھے اور دل ست نام کے لئے تڑپ رہا ھے ۔ (بدن = ودن = چہرہ)

۸۹

کوئی سنتا ھے گیانی راگ گگن میں ، اواج ہوتی پانی
سب گھٹ پورن پور رہا ہے ، سب سُرن کے کھانی
جو تن پایا کھنڈ دیکھایا ، ترسنا نہیں بجھانی
امرت چھوڑ کھنڈ رس چاکھا ، ترسنا تاپ تپانی
اوں انگ سو انگ باجا باجے ، سُرت نِرت سمانی
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو ، یہی آد کی بانی

ہے کوئی گیانی جو آسمان کے راگ کو سنے جیسے تیز بارش ہو رہی ہو ۔ مکمل ذات نے ہر جسم کو اپنے وجود سے بھر دیا ھے ۔ اور سب کو سونے کی کان بنا دیا ھے ۔ جس نے تن پایا لیکن صرف نیم حقیقت کو دیکھا اس کی پیاس کبھی نہیں بجھی ۔ اس نے امرت کو چھوڑ کر ناقص رس چکھا اور تشنگی کی آگ میں جلتا رہا ۔ اوں انگ سوانگ کا راگ گونج رہا ھے ، اور سُرت (عشق) نرت (بیراگ) ایک ہوگئے ہیں ۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ یہی ازلی نغمہ ہے ۔



आज दिनके मैं जाउँ बलिहारी।

पीतम साहेब आये मेरे पहुना, घर-आंगन लगे सुहौना ॥

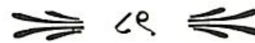
सब प्यास लगे मंगल गायन, भये मगन लखि छबि मनभावन ॥

चरन पखारूँ बदन निहारूँ, तन-मन-धन सब साँईपै वारूँ ॥

जा दिन पाये पिया धन सोई, होत अनंद परम सुख होई ॥

सुरत लगी सत नामकी आसा, कहै कबीर दासनके दासा ॥

आज का दिन धन्य है, इस पर न्योछावर हो जाने को जी चाहता है। आज प्रियतम हमारे यहाँ मेहमान आये हैं, और घर और आँगन सुहावने लग रहे हैं। मेरी प्यास मंगल गा रही है और उसकी मनभावन छवि देखकर मगन हो उठी है। मैं उसके पैर धोती हूँ, उसके मुख को (प्यार से) देखती हूँ और अपना तन-मन-धन उस साईं पर न्योछावर करती हूँ। यह दिन कितना शुभ है कि मुझे अपने पिया जैसी निधि मिल गयी है, मेरे आनंद और सुख की कोई सीमा नहीं है। दासों के दास कबीर कहते हैं कि मुझे प्रेम हो गया है और सतनाम की आसा में हृदय तड़प रहा है।



कोई सुनता है ज्ञानी राग गगनमें, अवाज होती पीर्ना।

सब घट पूरन पूर रहा है, सब सुरनके खानी।

जो तन पाया खंड देखाया, तृस्ना नहीं बुझानी।

अंमृत छोड़ खंडरस चाखा, तृस्ना ताप तपानी ॥

ओं अंग सो अंग बाजा बाजे, सुरत-निरत समानी।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यही आदकी बानी ॥

है कोई ज्ञानी जो गगन के राग को सुने, जैसे तेज्ज वर्षा हो रही हो। पूर्ण (पूरन-पूर्ण सत्ता) ने हर घट (शरीर) को अपने अस्तित्व से भर दिया है और सबको सोने की खान बना दिया है। जिसने तन पाया लेकिन केवल खंड (अपूर्ण) सत्य को देखा, उसकी तृष्णा कभी नहीं बुझी, उसने अमृत को छोड़कर खंड-रस (अशुद्ध रस) चखा और तृष्णा की अग्नि में जलता रहा। ओहं-सोहं का राग गूँज रहा है और सुरत-निरत एक हो गये हैं। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि यही आदि की वाणी है।

۹۰

میں کاسوں کہوں آپن پیہ کی بات رے
کہیں کبیر بچھڑ نہیں ملیہو
جیوں ترور چھوڑ بن دھام ری

میں اپنے پریتم کی بات کس سے کہوں۔ کبیر کہتے ہیں کہ ہجر کے بعد وصال ممکن نہیں ہے جیسے پیڑ کو چھوڑ کر جنگل نہیں مل سکتا (ایسے ہی وہ مجروح خیال میں تلاش نہیں کیا جاسکتا۔)

۹۱

سنسکرت بھاشا پڑھ لینہا، گیانی لوک کہوری
آسا ترسنا میں بہہ گیو سجنی، کام کے تاپ سہوری
مان منی کی مٹکی سر پر، ناہک بوجھ مروری
مٹکی پٹک ملو پیتم سے صاحیب کبیر کہوری

میں نے سنسکرت بھاشا پڑھ لی ہے۔ لوگو اب مجھے گیانی کہو۔ (لیکن اس سے کیا فائدہ جب) پیاس بہائے لئے جا رہی ہے اور خواہشوں کی آگ جلائے ڈال رہی ہے۔ غرور اور تکبر کا بوجھ سر پر اٹھائے پھرنا اور اس کے نیچے دب کر مرنا فضول ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس بوجھ کو پھینک دو اور پریتم کو مالک کہہ کر پکارو اور اس سے جا ملو۔

۹۲

چرکھا چلے سُرت برہن کا
کایا نگری بنی ات سُندر محل بنا چیتن کا
سُرت بھانوری ہوت گگن میں، پیڑھا گیان رتن کا
مہین سوت برہن کاتیں، مانجھا پریم بھگت کا
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، مالا گونتھو دن رین کا
پیا مور ائی ہیں پگا رکھی ہیں، آنسو بھینٹ دیہوں نین کا

پریم کی ماری برہن (جو اپنے پریتم سے جدا ہوگئی ہے) چرخا چلا رہی ہے۔ جسم کا شہر اپنے سارے جلال و جمال کے ساتھ ابھر رہا ہے اور اس کے اندر دل کا محل تعمیر ہو رہا ہے۔ آسمان پر پیار کے پھیرے پڑ رہے ہیں اور عرفان کے جواہرات کا بنا ہوا تخت بچھا ہے۔

९०

मैं कासों कहों आपन पियकी बात री।
कहैं कबीर बिछुड़ नहिं मिलिहौ
ज्यों तरवर छोड़ बनश्राम री ॥

मैं अपने पिया की बात किससे कहूँ। कबीर कहते हैं कि एक बार बिछुड़ जाने के बाद पिया से मिलना संभव नहीं है जैसे डालसे टूटने के बाद जंगल का फूल दुबारा उस डाल तक नहीं पहुँच सकता।

९१

संसकिरत भाषा पढ़ि लीन्हा, ज्ञानी लोक कहो री।
आसा तृस्नामें बहि गयो सजनी, कामके ताप सहो री ॥
मान-मनीकी मटुकी सिरपर, नाहक बोझ मरो री।
मटुकी पटक मिलो पीतमसे, साहेब कबीर कहो री ॥

मैंने संस्कृत भाषा पढ़ली है, लोगो अब मुझे ज्ञानी कहो। (लेकिन इससे क्या लाभ जब) आशा की तृष्णा बहाये ले जा रही है और कामनाओं की अग्नि जलाये डाल रही है। मान और अहंकार का बोझ सर पर उठाये फिरना और उसके नीचे दबकर मरना बेकार है। कबीर कहते हैं कि इस बोझ को फेंक दो और प्रीतम से जा मिलो।

९२

चरखा चलै सुरत बिरहिनका।
काया नगरी बनी अति सुंदर, महल बना चेतनका।
सुरत भाँवरी होत गगनमें, पीढ़ा ज्ञान-रतनका।
मिहीन सूत बिरहिन कातैं, माँझा प्रेम भगतिका।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, माला गूंथो दिन रैनका।
पिया मोर ऐंहैं पगा रखिहैं, आँसू भेंट देहौं नैनका ॥

सुरत (प्रेम) की विरहिणी चरखा चला रही है। शरीर की नगरी बहुत सुंदर बनी हुई है और उस में चेतना का महल बना है। आकाश में सुरत के फेरे पड़ रहे हैं और ज्ञान के रत्नों का बना हुआ आसन बिछा है। विरहिणी सूत को महीन कात रही है और उससे प्रेम और भक्ति का माँझा (ब्याह से पहले

برہن سوت کو مہین کات رہی ہے اور اس سے پریم اور بھگتی کا عروسی جوڑا تیار ہورہا ہے۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ " میں دن اور رات کی مالا گوندھ رہا ہوں۔ جب میرے پریتم آئیں گے اور (میرے گھر میں) اپنے قدم رکھیں گے تو میں اپنی آنکھوں کے آنسو نذر کروں گا۔

۹۳

کوٹن بھانُ، چندر، تارا گن، چھتر کی چھانہ رہائی
من میں من، نینن میں نینا، من نینا اِک ہوجائی
سُرت سوہاگن ملن پیا کو، تن کے نین بُجھائی
کہیں کبیر ملے پریم پورا، پیا میں سرت ملائی

اس کی چھتر چھایا میں کروڑوں سورج، کروڑوں چاند اور کروڑوں تارے چمک رہے ہیں۔ اس کا دل میرے دل میں ہے، اس کی آنکھیں میری آنکھوں میں ہیں۔ اب دل اور آنکھ دونوں ایک ہوگئے ہیں۔ پیار کی ماری سہاگن اپنے پریتم سے مل گئی ہے اور تن کی آنکھ بند کرکے من کی آنکھ کھول دی ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ پورا پریم اس وقت ملتا ہے جب اپنا پیار پریتم میں سما جاتا ہے۔

۹۴

اودھو، بیگم دیس ہمارا
راجہ۔ رنک، بھکیر، بادسا، سب سے کہوں پکارا
جو تم چاہو پرم پد کو، بسی ہو دیس ہمارا
جو تم آئے جھینے ہوکے، تجو من کی بھارا
دھرن، اکاس، گگن، کچھ ناہیں، نہیں چندر، نہیں تارا
ستّ دھرم کی ہیں مہتابیں۔ صاحیب کے دربارا
کہیں کبیر سنو ہو پیارے، ستّ دھرم ہے سارا

اودھو، ہمارا دیس وہ ہے جس میں کوئی غم نہیں ہے۔ یہ بات ہم راجہ اور بھکاری، فقیر اور بادشاہ سب سے پکار پکار کر کہہ رہے ہیں۔ اگر تم ذاتِ اعلیٰ کے متلاشی ہو ہمارے دیس میں آن بسو۔ اگر تم تھک کر چور ہوگئے ہو تو یہاں من کا بوجھ ہلکا کرلو۔ اس جگہ زمین، آسمان، چاند، تارے کچھ بھی نہیں۔ مالک کے دربار میں صرف ست دھرم

हल्दी लगने पर पहने जानेवाले कपड़े) तैयार हो रहा है कबीर कहते हैं कि सुनो भाई साधु, मैं दिन और रात की माला गूँथ रहा हूँ। जब मेरे पिया आयेंगे और (मेरे घर में) पैर रखेंगे तो मैं अपनी आँखों के आँसू भेंट चढ़ाऊँगी।

॥ ९३ ॥

कोटिन भानु-चन्द्र-तारा-गन छत्रकी छाँह रहाई।
मनमें मन नैननमें नैना, मन नैना इक हो जाई।
सुरत सोहागिन मिलन पियाको, तनके नयन बुझाई।
कहैं कबीर मिलै प्रेम-पूरा, पियामें सुरत मिलाई॥

उसकी छत्रछाया में करोड़ों चाँद और करोड़ों तारे चमक रहे हैं। उसका मन मेरे मन में है, उसकी आँखें मेरी आँखों में हैं, अब मन और आँख दोनों एक हो गये हैं। सुरत सुहागिन ने पिया से मिलने के लिए अपने तन के नैन बंद कर लिए हैं (मन के नैन खोल लिए है)। कबीर कहते हैं कि पूरा प्रेम उस समय मिलता है जब अपना प्यार प्रीतम में समा जाता है।

॥ ९४ ॥

अवधू बेगम देस हमारा।
राजा-रंक-फकीर-बादसा सबसे कहौं पुकारा।
जो तुम चाहो परम पदको, बसिहो देस हमारा॥
जो तुम आये झीने होके, तजो मनकी भारा।
धरन-अकास-गगन कछु नाहीं, नहीं चन्द्र नहिं तारा।
सत्त-धर्मकी हैं महताबें, साहेबके दरबारा।
कहैं कबीर सुनो हो प्यारे, सत्त-धर्म है सारा॥

अवधू, हमारा देश वह है जहाँ कोई गम नहीं है। यह बात हम राजा और भिखारी, फ़क़ीर और बादशाह सबसे पुकार-पुकार कर कह रहे हैं। अगर तुम परम पद को पाना चाहते हो तो हमारे देश में आकर बस जाओ। अगर तुम थककर चूर हो गये हो तो यहाँ मन का बोझ हल्का कर लो। इस जगह जमीन आसमान, चाँद-तारे कुछ भी नहीं। प्रभु के दरबार में सत्य-धर्म की महताबें जग-

(صداقت) کے مہتاب جگمگا رہے ہیں ۔ پیارے بھائی سنو کبیر کہتے ہیں
کہ ست دھرم ہی سب کچھ ہے باقی کچھ نہیں ۔

۹۵

سائیں کے سنگ ساسُر آئی
سنگ نہ رہی ، سُواد نہ جانیو ، گیو جوبن سپنے کے نائی
سکھی سہیلی منگل گاویں ، سُکھ دُکھ ماتھے ہردی چڑھائی
بھیو وواہ ، چلی بن دولہا ، باٹ جات سمدھی سمجھائی
کہیں کبیر ۔ ہم گونے جئی ہے ، ترب کنت لے تور بجائی

میں اپنے سوامی کے سنگ سُسرال آئی ۔ اس کے ساتھ رہی نہیں ، وصال کا مزا جانا نہیں ، جوانی خواب کی طرح آئی اور چلی گئی ۔ شادی کے دن سکھیوں نے گیت گائے اور ماتھے پر دکھ سکھ کی ہلدی لگائی ۔ لیکن جب شادی ہوچکی تو میں بغیر دولہا کے چل دی ، راستے میں رشتہ داروں نے سمجھایا کبیر کہتے ہیں ہم پریتم کے عشق کا گیت گاتے ہوئے گونے جائیں گے (رخصت ہوں گے) ۔

۹۶

سمجھ دیکھ من میت پیروا
عاسک ہو کر سونا کیارے
پایا ہو تو دے لے پیارے
پائے پائے پھر کھونا کیارے
جب آنکھین میں نیند گھنیری
تکیہ اور بچھونا کیارے
کہیں کبیر پریم کا مارگ
سر دینا تو رونا کیارے

دیکھ میرے دلدار ، عاشق ہوکر سونا کیسا ، وہ مل گیا ہے تو اپنے وجود کو محو کردے ، اُسے پاکر کھو دینا کیا معنی رکھتا ہے ۔ جب آنکھوں میں گھنیری نیند بسی ہو تو پھر تکیے اور بستر کی کیا ضرورت ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ عشق کی راہ میں سر دے کر رونا بیکار ہے ۔

मगा रही हैं। प्यारे भाई सुनो, कबीर कहते हैं कि सत्य-धर्म ही सब कुछ है और बाकी कुछ नहीं।



साँईके संग सासुर आई।

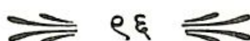
संग ना रही स्वाद ना जान्यो, गयो जोबन सुपने को नाईं।

सखी-सहेली मंगल गावैं, सुखदुख माथे हरदी चढ़ाई।

भयौ विवाह चली बिन दूलह, बाट जात समधी समझाई।

कहैं कबीर हम गौने जैबे, तरब कन्त लै तूर बजाई।

मैं अपने स्वामी (साईं) के साथ ससुराल आयी। उसके साथ रही नहीं, प्रणय का स्वाद नहीं जाना। यौवन सपने की तरह आया और चला गया। ब्याह के दिन सखीयों ने मंगल गाया और मेरे माथे पर सुख-दुख की हल्दी लगायी, लेकिन जब ब्याह हो चुका तो मैं दूल्हा के बिना चल दी। रास्ते में सगे-संबंधियोंने मुझे समझाया। कबीर कहते हैं कि हम प्रीतम के प्रेम के गीत गाते हुए गौने जायेंगे।



समुझ देख मन मीत पियरवा,
आसिक होकर सोना क्यारे।
पाया होतो दे ले प्यारे,
पाय पाय फिर खोना क्यारे।
जब अँखियनमैं नींद घनेरी,
तकिया और बिछौना क्या रे।
कहैं कबीर प्रेमका मारग,
सिर देना तो रोना क्या रे।

देख मेरे मन के मीत, प्यारे इस बात को समझ ले कि प्रेमी होकर सोना कैसा। अगर तूने पाया है तो दिल खोलकर दे; उसे पाकर खो देने का सवाल नही पैदा होता। जब आखों में घनेरी नींद बसी हो तो फिर तकिये और बिस्तर की क्या जरूरत है। कबीर कहते हैं कि प्रेम के मार्ग में सर दिया हैं तो रौना कैसा।

۹۷

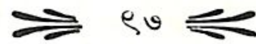
نارد پیار سو انتر ناہیں
پیار جاگے تب ہی جاگوں پیار سووے تب سووُں
جو کوئی میرے پیار دُکھاوے جڑا مول سوں کھووُں
جہاں میرا پیار جس گاوے تہاں کروں میں باسا
پیار چلے آگے اُٹھ دھاؤں موہ پیار کی آسا
بے حد تیرتھ پیار کے چرنن کوٹ بھگت سمائے
کہیں کبیر پریم کی مہما پیار دیت بجھائے

او نارد میرا محبوب مجھ سے دور نہیں ہے. جب پیار جاگتا ہے تو میں بھی جاگتا ہوں اور پیار سوتا ہے تو میں بھی سوتا ہوں. جو میرے محبوب کو دکھ پہنچاتا ہے اس کو میں نیست و نابود کردیتا ہوں، میں وہاں رہتا ہوں جہاں میرے محبوب کا قصیدہ پڑھا جاتا ہے. جب وہ چلتا ہے تو اس سے پہلے اُٹھ کر بھاگتا ہوں. مجھے صرف محبوب کا اشتیاق ہے. اس کے تیرتھ بہت ہیں اور اس کے قدموں میں کروڑوں عاشق بیٹھے ہوئے ہیں. کبیر کہتے ہیں کہ عشق کا راز صرف محبوب آشکار کرتا ہے.

۹۸

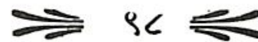
کوئی پریم کی پینگ جھلاؤ رے
بُھج کے کھمبھ اور پریم کے رس سے
تن من آج جُھلاؤ رے
نینن بادل کی جھر لاؤ
شیام گھٹا اُر چھاؤ رے
آوت آوت سُرت کی راہ پر
فکر پیا کو سناؤ رے
کہت کبیر سنو بھائی سادھو
پیا کو دھیان چت لاؤ رے

آج کوئی پریم کا جھولا جھلاؤ. محبوب کی بانہوں میں جھولا ڈال کے اور پریم کے رس سے سرشار ہوکے تن اور من کی پینگ بڑھاؤ. نینوں کی جھڑی لگاؤ اور دل پر کالی گھٹا چھا جانے دو. آتے آتے بالکل محبوب



नारद, प्यार सो अन्तर नाहीं।
प्यार जागै तौही जागूँ प्यार सोवै तब सोऊँ ॥
जो कोई मेरे प्यार दुखावैं जड़ा-मूलसों खोऊँ ॥
जहाँ मेरा प्यार जस गावै तहाँ करौं मैं बासा।
प्यार चले आगे उठ धाऊँ मोहि प्यारकी आसा ॥
बेहद तीरथ प्यारके चरननि कोट भक्त समाय।
कहैं कबीर प्रेमकी महिमा प्यार देत बुझाय ॥

ओ नारद, मेरा प्यार (प्रीतम) मुझसे दूर नहीं है। जब वह जागता है तो मैं भी जागता हूँ और प्यार सोता है तो मैं भी सोता हूँ। जो मेरे प्रियतम को दुःख पहुँचाता है उसको मैं जड़-मूल से नष्ट कर देता हूँ। मैं वहाँ रहता हूँ जहाँ मेरे प्रियतम का यशगान होता है। जब वह चलता है तो उससे पहले उठकर भागता हूँ। मुझे तो बस अपने प्रियतम से मिलने की अभिलाषा है। उसके तीरथ अनेक हैं और उसके चरणों में करोड़ों प्रेमी बैठे हैं। कबीर कहते हैं कि प्रेम की महिमा प्रियतम ही समझा सकता है।



कोई प्रेमकी पेंग झुलावै।
भुजके खंभ और प्रेमके रससे,
तन-मन आजु झुलाव रे।
नैनन बादरकी झर लाओ,
श्याम घटा उर छाव रे।
आवत आवत श्रुतकी राहपर,
फिकर पियाको सुनाव रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
पियाको ध्यान चित लाव रे।

आज कोई प्रेम का झूला झुलाओ। प्रियतम की बाँहों में झूला डालकर और प्रेम-रस में डूबकर तन-मन के पेंग बढ़ाओ। नैनों के बादलों की झड़ी लगा दो और हृदय पर काली घटा छा जाने दो। आते आते बिल्कुल प्रियतम के कान

کے کان کے قریب آجاؤ اور اُسے اپنے دل کی بیقراری کا حال سناؤ۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ اپنے محبوب کے تصور میں ڈوب جاؤ۔

۹۹

امرت برسے ہیرا نِپجے
گھنٹ پڑے ٹکسال
کبیر جلاہا بھیا پارشو
انبھئے اُتریا پار
کبیر ہری رس یوں پیا
باکی رہی نہ تھاکِ
پا کا کلس کمہار کا
بہُوری نہ چڑھئی چاک

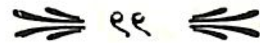
امرت برس رہا ہے اور ہیرا پیدا ہو رہا ہے، ٹکسال کا گھنٹہ بج رہا ہے، کبیر جولاہا جواہرات کا پرکھنے والا بن گیا ہے، اور بغیر کسی خوف کے پار اتر گیا ہے۔ کبیر نے ہری رس (عشق حقیقی کی شراب) اس طرح پیا ہے کہ اب پیاس باقی نہیں رہ گئی، کمہار کا پکّا گھڑا دوبارہ چاک پر نہیں چڑھتا۔

۱۰۰

ہوں تو سب ہی کی کہوں، موکوں کوؤ نہ جان
تب ہُو بھلا اب بھی بھلا، جُگ جُگ ہوؤں نہ آن
کلِ کھوٹا جگ آندھرا، سبد نہ مانے کوئے
جاہے کہوں ہِت آپنا، سو اُٹھ بیری ہوئے
مس کاگج چھویو نہیں، کلم گہی نہیں ہات
چار یو جُگ کو مہاتم مُکھ ہی جنائی بات
بولی ہمری پُورَب کی، ہمیں لکھے نہیں کوئے
ہم کو تو سوئی لکھے، دُھر پورب کا ہوئے

میں تو سب کی کہتا ہوں لیکن مجھے کوئی نہیں جانتا، میں تب بھی بھلا تھا، اب بھی بھلا ہوں اور جُگ بیت جانے کے بعد بھی مجھ میں کوئی فرق نہیں آئے گا۔ کلجگ کھوٹا ہے دنیا اندھی ہے،

के पास आ जाओ और उसे अपने मन की व्याकुलता का हाल बताओ। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि अपने पिया के ध्यान में लीन हो जाओ।



अंमृत बरिसै हीरा निपजै,
घंटा पड़ै टकसाल।
कबीर जुलाहां भया पारखू,
अनभै उतरया पार॥ १॥
कबीर हरि-रस यों पिया,
बाकी रही न थाकि
पाका कलस कुम्हारका,
बहुरि न चढ़ई चाकि॥ २॥

अमृत बरस रहा है और हीरा उत्पन्न हो रहा है। टकसाल का घंटा इस बात की घोषणा कर रहा है। कबीर जुलाहा पारखी बन गया है और बिना किसी भय के पार उतर गया है। कबीर ने हरि-रस इस तरह पिया है कि अब प्यास बाक़ी नहीं रह गयी है जैसे कुम्हार के पक्के घड़े को दुबारा चाक पर चढ़ाने की जरूरत नहीं रह जाती।



हौं तो सबहीकी कहौं, मोकों कोउ न जान।
तबौ भला अब भी भला, जुग जुग होउँ न आन॥ १॥
कलि खोटा, जग आँधरा, सब्द न मानै कोय।
जाहि कहौं हित आपुना, सो उठि बैरी होय॥ २॥
मसि-कागज छूयो नहिं, कलम गहि नहिं हात।
चारिउ जुगको महातम मुखहि जनाई बात॥ ३॥
बोली हमरी पूर्वकी, हमें लखै नहिं कोय।
हमको तो सोई लखै, धुर पूरबका होय॥ ४॥

मैं तो सबकी कहता हूँ लेकिन मुझे कोई नहीं जानता। मैं तब भी भला था और अब भी भला हूँ और कई युग बीत जाने के बाद भी मुझ में कोई परिवर्तन नहीं होगा। कलियुग खोटा है और दुनिया अंधी है, शब्द को कोई नहीं जानता।

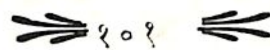
شبد (حرف حق) کو کون نہیں جانتا. جس سے اس کے فائدے کی بات کرتا ہوں، وہی میرا دشمن ہوجاتا ہے. روشنائی اور کاغذ میں نے چھوا نہیں، قلم کو ہاتھ نہیں لگایا، چاروں یُگوں کی تفسیر زبانی ہی بیان کی، میری بولی پورب کی ہے اور اس لئے ہمیں کوئی خاطر میں نہیں لاتا، ہماری قدر تو وہ جانے جو خود پورب کا ہو.

۱۰۱

اودھو قُدرت کی گت نیاری
رنک نِواج کَرے وہ راجا، بھوپتِ کرے بھکھاری
یے تے لونگہ پھل نہیں لاگے، چندن پھول نہ پھولے
مچھ شکاری رمے جنگل میں سِنھ سمندر ہی جھولے
ریڑا روکھ بھیا ملیا گر، چھوں دِس پھوٹی باسا
تین لوک برھمانڈ کھنڈ میں دیکھے اندھ تماسا
پنگُل میرو سُمیر اُلنگھے تربھون مکتا ڈولے
گونگا گیان وگیان پرکاسے انہد بانی بولے
باندھ اکاس پتال پٹھاوے سیس سرگ پر راجے
کہے کبیر رام ہیں راجا جو کچھ کریں سو چھاجے

اودھو، قدرت کا کھیل عجیب و غریب ہے. اگر فقیر کو نوازے تو راجہ کردے اور راجہ کو چاہے تو بھکاری بنادے. یہ اسی کا کھیل ہے کہ لونگ میں پھل نہیں لگتا اور صندل جو مہکتا ہے پھول سے محروم ہے. (اگر وہ چاہے تو لونگ میں پھل لگ جائے اور صندل میں پھول کھلنے لگیں) مگرمچھ شکار کے لئے جنگل میں گھومے اور شیر سمندر میں غوطے کھائے، ریڑ کا پیڑ صندل سے بھرے جنگلوں کا پہاڑ بن جائے اور چاروں طرف خوشبو پھیلنے لگے. اندھا بھی کائینات کے تینوں عالم (آسمان، دھرتی اور پاتال) کا تماشا دیکھے. لنگڑا آدمی سُمیر کے پربت کو پھاند جائے اور تینوں عالم میں آزادی سے گھومے. گونگا آدمی علم اور عرفان کی باتیں کرے اور الوہیت کا گیت گائے، اور اگر وہ چاہے تو آسمان کو پاتال میں پھینک دے اور شیش ناگ جو پاتال میں ہے اس کو جنت میں پہونچا دے. کبیر کہتے ہیں کہ رام (بھگوان) راجا ہیں اور وہ جو کچھ کریں وہ انہیں زیب دیتا ہے.

जिससे उसके हित की बात कहता हूँ वही मेरा बैरी हो जाता है। कागज़ और स्याही मैंने कभी छुआ नहीं और क़लम को कभी हाथ नहीं लगाया, चारों युगों का माहात्म्य मैंने अपने मुख से वर्णन किया। मेरी बोली पूरब की है और इसलिए हमें कोई महत्व नहीं देता। हमारा महत्व तो वही जाने जो खुद धुर पूरब का हो।



अवधू, कुदरतिकी गति न्यारी।
रंक निवाज करै वह राजा, भूपति करै भिखारी॥
ये ते लवंगहिं फल नहिं लागे, चंदन फूल न फूलै।
मच्छ शिकारी रमै जंगलमें, सिंह समुद्रहि झूलै॥
रेंड़ा रूख भया मलयागिर, चहूँ दिसि फूटी बासा।
तीन लोक ब्रह्मांड खंडमें देखै अंध तमासा॥
पंगुल मेरु सुमेर उलंवै त्रिभुवन मुक्ता डोलै।
गूँगा ज्ञान-विज्ञान प्रकासै अनहद बानी बोलै॥
बाँधि अकास पताल पठावै सेस सरगपर राजै।
कहै कबीर राम हैं राजा जो कछु करैं सो छाजै॥

ऊधो प्रकृति का खेल विचित्र है। यदि फ़क़ीर को नवाज़े तो राजा कर दे और राजा पर बिगड़े तो उसे भिकारी बना दे। यह उसी का खेल है कि लौंग में फल नहीं लगता और चंदन फूल से वंचित है हालांकि उसकी सुगन्ध चारों ओर फैली रहती है (यदि वह चाहे तो लौंग में फल लग जायें और चन्दन में फूल खिलने लगें) मगर मच्छ शिकार के लिए जंगल में घूमें और सिंह समुद्र में गोते लगायें। रेंड़ का वृक्ष चन्दन से भरे जंगलों का पहाड़ बन जाये और चारों ओर सुगंध फैलने लगे। अंधा त्रिलोक के दर्शन कर ले, लंगड़ा सुमेरु पहाड़ लांघ जाये और तीनों लोक में आज़ादी से घूमे। गूंगा ज्ञान विज्ञान की बातें करे और अनहद गीत गाने लगे और यदि वह चाहे तो आकाश को उठाकर पाताल में फेंक दे और शेषनाग को स्वर्ग में भेज दे। कबीर कहते हैं कि राम राजा हैं वह जो कुछ भी करें उन्हें शोभा देता है।

≫ ۱۰۲ ≪

اُلٹی جات کُل دوؤ بساری سن سہج مہی بُنت ہماری
ہمرا جھگڑا رہا نہ کوؤ پنڈت مُلاّ چھاڑے دوؤ
بُن بُن آپ آپ پہراووں جہاں نہیں آپ تہاں ہوے گاووں
پنڈت مُلاّ جو لکھ دییا چھاڑ چلے ہم کچھو نہ لییا
ردے کہلاس نرکھ لے میرا آج کھوج کھوج ملے کبیرا

ہم نے ذات اور خاندان دونوں کو بھلا دیا ہے۔ اور ہماری بُنت شونیہ اور سہج میں جاری ہے، ہمارا جھگڑا کسی سے نہیں رہا۔ پنڈت اور ملا دونوں کو نظر انداز کردیا۔ آپ ہی بُنتا ہوں اور آپ ہی پہنتا ہوں اور جہاں اپنے آپ کو نہیں پاتا وہاں جاکر گاتا ہوں۔ پنڈت اور ملا نے جو کچھ لکھا اس میں سے ہم نے کچھ بھی نہیں لیا۔ اے میر (جماعت کا پیشوا) دیکھ لے میرا دل بالکل خالی ہے۔ اب کبیر اس منزل میں پہونچ گیا ہے کہ بہت تلاش کرنے کے بعد ملے گا۔

≫ ۱۰۳ ≪

بوجھو پنڈت، کرہو بچاری، پُرُش اہے کہ ناری
بامہن کے گھر بامہن ہوتی، یوگی کے گھر چیلی
کلما پڑھ پڑھ بھئی تُرکنی، کلی میں رہی اکیلی
بر نہیں برے بیاہ نہیں کرئی، پُتر جنم ہونہاری
کارے مونڈے ایک نہیں چھاڑے، اب ہی آد کنواری
رہے نہ میکے، جائی نہ سسُرے، سائیں کے سنگ سووے
کہہ کبیر وہ جُگ جُگ جیوے جات پانت کُل کھووے

اب پنڈتو غور کرکے یہ پہیلی بوجھو کہ وہ (مایا) مرد ہے یا عورت۔ برھمن کے گھر وہ برھمنی ہوتی ہے اور یوگی کے گھر چیلی بن جاتی ہے۔ کلمہ پڑھ کر وہ مسلمان ہوجاتی ہے اور پھر بھی اس تمام جھگڑے میں سب سے الگ رہتی ہے۔ شوہر نہیں رکھتی، بیاہ نہیں کرتی، پھر بھی حاملہ ہے۔ کسی ایک کو بھی نہیں چھوڑتی ہے پھر بھی ہمیشہ کی کنواری ہے۔ میکے رہتی نہیں، سُسرال جاتی نہیں، لیکن سائیں کے ساتھ سوتی ضرور ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ وہ (مایا) ذات، پات، کنبہ خاندان کچھ نہیں رکھتی مگر لا فانی ہے۔

१०२

उलटि जात-कुल दोऊ बिसारी। सुन्न सहज महि बुनत हमारी।
हमरा झगरा रहा न कोऊ। पंडित-मुल्ला छाँड़े दोऊ।
बुनि बुनि आप आप पहिरावों। जहँ नहीं आप तहाँ है गावों।
पंडित-मुल्ला जो लिखि दीया। छाँड़ि चले हम कछु न लीया।
रिदै खलासु निरखि ले मीरा। आजु खोजि खोजि मिलै कबीरा॥

हम ने जाति और कुल दोनों को भुला दिया है और हमारी बुनत शून्य और सहज में जारी है। हमारा झगड़ा किसी से नहीं रहा। हमने पंडित और मुल्ला दोनों की ओर से मुंह मोड़ लिया है। आप ही बुनता हूँ और आप ही पहनता हूँ और जहाँ स्वयं को नहीं पाता वहाँ जाकर गाता हूँ। पंडित और मुल्ला ने जो लिखा उसमें से हमने कुछ भी नहीं लिया ऐ मीर। देख ले मेरा दिल बिल्कुल खाली है। अब कबीर उस मंजिल में पहुँच गया है कि बहुत तलाश करने के बाद ही मिल सकता है।

१०३

बूझहु पंडित, करहु बिचारी, पुरुष अहै की नारी।
बाम्हनके घर बाम्हनि होती, योगीके घर चेली।
कलमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी, कलिमें रही अकेली।
बर नहिं बरै ब्याह नहिं करई, पुत्र-जन्म-होनिहारी।
कारे-मूंडे एक नहिं छाँड़ै, अब ही आदिकुँवारी॥
रहै न मैके जाइ न ससुरे सांईके सँग सोवै।
कह कबीर वह जुग जुग जीवै जाति-पाँति कुल खोवै॥

अय पण्डित तू सोच विचार कर यह पहेली बूझ कि वह (माया) पुरुष है या नारी। ब्राह्मण के घर वह ब्राह्मणी होती है और योगी के घर चेली बन जाती है। कलमा पढ़कर वह मुसलमान हो जाती है और फिर भी इस सारे झगड़े में सबसे अलग रहती है। पति नहीं रखती, विवाह नहीं करती फिर भी गर्भवती है। किसी को छोड़ती भी नहीं फिर भी कुंवारी है। मैके में रहती नहीं ससुराल जाती नहीं लेकिन साईं के साथ सोती अवश्य है। कबीर कहते हैं कि वह (माया) जात पांत, कुल खान्दान कुछ नहीं रखती मगर शाश्वत है।

۱۰۴

رام تیری مایا دُند مچاوے

گت مت واکی سمجھ پرے نہیں، سُرنر مُن ہی نچاوے
کاسمیر کے ساکھا بڑھیے . پھول انوپم بانی
کیتک چانک لاگ رہے ہیں، چاکھت سُوا اُڑانی
کہا کھجور بڑائی تیری، کل کوئی نہیں پاوے
گریکھم رُت اب آئی طُلانی، چھایا کام نہ آوے
اپنا چتر اور کو سکھوے، کامن، کنک، سیانی
کہیں کبیر سنو ہو سنتو، رام چرن رت مانی

رام، تیری مایا دُند مچارہی ہے. اس کی کیفیت سمجھ میں نہیں آتی، دیوتا، انسان، رشی اور مُنی سب کو نچاتی رہتی ہے، مایا نے سیمل کی شاخ کی طرح جو یہ اپنی شاخیں پھیلا رکھی ہیں اس سے کیا فائدہ. طرح طرح کے پھول لگتے ہیں، کتنے ہی پپیہے آکر بیٹھتے ہیں اور طوطے پھل کھا کر اُڑ جاتے ہیں. کھجور کے پیڑ تیری بڑائی بیکار ہے تجھ سے کسی کو آرام نہیں ملتا، گرمی کا طولانی موسم آگیا ہے اور تیرا سایہ کام نہیں آتا. مایا اپنی چالاکی اوروں کو سکھا دیتی ہے اور عورت اور سونے میں یہی سیانا پن اور دھوکا ہے. سنو سنتو کبیر کہتے ہیں کہ ہم نے تو رام (بھگوان) کے چرنوں سے لو لگانے کا راستہ اختیار کیا ہے.

۱۰۵

ای مایا رگھوناتھ کی بوری، کھیلن چلی اہیرا ہو
چتر چکنیا چُن چُن مارے، کاہُ نہ راکھے نیرا ہو
مدنی، بیر، دگمبر، مارے، دھیان دھرنتے جوگی ہو
جنگل میں جنگم مارے، مایا کنہ ہوں نہ بھوگی ہو
بید پڑھنتے بیدوا مارے، پُجا کرنتے سامی ہو
ارتھ وچارت پنڈت مارے، باندھیؤ سکل لگامی ہو
سنگی رش بن بھیتر مارے، سر برھما کا پھوری ہو
ناتھ مچھندر چلے پیٹھ دے، سنگھلو میں بوری ہو
ساکٹ کے گھر کرتا دھرتا ہری بھگتن کی چیری ہو
کہیں کبیر سُنہو ہو سنتو، جوں واوے توں پھیری ہو

१०४

राम तेरी माया दुंद मचावै।
गति-मति वाकी समझि परै नहिं, सुर-नर मुनिहिं नचावै।
का सेमरके साखा बढ़ये, फूल अनूपम बानी।
केतिक चातक लागि रहे हैं, चाखत सुवा उड़ानी॥
कहा खजूर बड़ाई तरी, फल कोई नहीं पावै।
ग्रीखम रित अब आई तुलानी, छाया काम न आवै॥
अपना चतुर औरको सिखवै, कामिनि-कनक सयानी।
कहैं कबीर सुनो हो सन्तो, राम-चरण रति मानी॥

राम तेरी माया ने द्वन्द मचा रखा है। उसकी गति समझ में नहीं आती। देवता मनुष्य ऋषि और मुनि सबको नचाती रहती है। माया ने सेमल की शाखा की तरह जो यह अपनी शाखाएँ फैला रखी हैं उससे एक फ़ायदा है। तरह तरह के फ़ूल खिलते हैं कितने ही पपीहे आकर बैठते हैं और तोते फल खाकर उड़ जाते हैं। खजूर के पेड़ तेरी बड़ाई बेकार है। तुझसे किसी को आराम नहीं मिलता। गर्मी का मौसम आ गया है और तेरी छाया काम नहीं आती। माया अपनी चालाकी औरों को सिखा देती है और औरत तथा सोने में यही सियानापन और धोका है। सुनो सन्तो, कबीर कहते हैं कि हमने तो राम (भगवान) के चरणों से लौ लगाने का मार्ग अपना लिया है।

१०५

ई माया रघुनाथकी बौरी, खेलन चली अहेरा हो।
चतुर चिकनिया चुनि चुनि मारे, काहु न राखे नेरा हो।
मौनी-बीर-दिगंबर मारे, ध्यान धरंते जोगी हो।
जंगलमेंके जंगम मारें, माया किन्हहुँ न भोगी हो।
बेद पढ़ंते बेदुआ मारे, पुजा करंते सामी हो।
अरथ विचारत पंडित मारे, बाँधेउ सकल लगामी हो।
सिंगी रिषि बन भीतर मारे, सिर ब्रह्माका फोरी हो।
नाथ मछंदर चले पीठि दै, सिंहलहूमें बोरी हो।
साकटके घर करता-धरता हरि-भगतनकी चेरी हो।
कहहिं कबीर सुनहु हो सन्तो, जौं वावै तौं फेरी हो॥

یہ مایا جو رگھوناتھ (بھگوان) کی دیوانی ہے، شکار کھیلنے نکلی ہے. بڑے بڑے چالاک اور سبک دست آدمیوں کو چن چن کر مارتی ہے اور کسی کو اپنے قریب نہیں آنے دیتی. کہیں وہ مونی، پیر اور دگمبر کو مارتی ہے اور کہیں دھیان میں کھوئے ہوئے جوگی کو اور کہیں جنگلوں میں رہنے والے جنگم سادھوؤں کو. غرض مایا سے کوئی فیض یاب نہیں ہوسکا. وہ وید پڑھتے ہوئے برھمنوں کو بھی مار لیتی ہے اور پوجا کرتے ہوئے سوامیوں کو بھی اور تفسیر بیان کرتے ہوئے پنڈتوں کو بھی. اس نے سب کے منہ میں لگام لگا دی ہے، وہ جنگل میں جاکر سنگی رشی کو مارتی ہے اور برھما کا سر پھوڑ دیتی ہے. اس کے فریب نے مچھندر ناتھ کو بھی جو مایا کی طرف سے پیٹھ موڑکر چلے تھے لنکا میں جا کے ڈبو دیا. مایا دنیا دار کے گھر میں کرتا دھرتا بن بیٹھتی ہے لیکن ہری کی بھگتی میں کھوئے ہوئے لوگوں کی کنیز ہوجاتی ہے.

۱۰۶

بانگڑ دیس لوون کا گھر ہے، تہاں جن جائی داجھن کا ڈر ہے
سب جگ دیکھوں کوئی نہ دھیرا، پرت دھور سر کہت ابیرا
نہ تہاں سرور نہ تہاں پانی، نہ تہاں ست گرو سادھو وانی
نہ تہاں کوکل نہ تہاں سووا، اونچے چڑھے چڑھے ہنسا مووا
دیس مالوا گہر گنبھیر ڈگ ڈگ روٹی پگ پگ نیر

بانگڑ دیس (مغربی علاقہ) گرم لوں کا دیس ہے. وہاں مت جاؤ، جل جانے کا ڈر ہے. میں ساری دنیا کو دیکھتا ہوں، کسی کے دل میں، صبر قناعت نہیں ہے. سر پر جو خاک پڑتی ہے اسے وہ عبیر سمجھتے ہیں. نہ وہاں جھیل ہے نہ پانی نہ ست گرو ہیں نہ سادھو کی آواز (صدائے حق) نہ وہاں کوئل ہے نہ طوطا، اور ہنس اونچا اڑتے اڑتے مرگیا، لیکن مالوے کا دیس گھر گنبھیر ہے وہاں قدم قدم پر روٹی اور قدم قدم پر پانی ہے. کبیر کہتے ہیں کہ اس دنیا کی حیثیت اعتباری ہے. گونگا گڑ کھاکر اس کا مزا بیان نہیں کرسکتا.

यह माया जो रघुनाथ (भगवान) की दिवानी है, शिकार खेलने निकली है। बड़े बड़े चालाक और चतुर लोगों को चुन चुनकर मारती है और किसी को अपने निकट नहीं आने देती। कहीं वह मौनी, बीर और दिगम्बर को मारती है और कहीं ध्यान में खोये हुए जोगी को और कहीं जंगलों में रहने वाले जंगम साधुओं को। कहने का मतलब यह है कि माया से किसी को लाभ नहीं पहुंचा। वह वेद पढ़ते हुए ब्राह्मणों को भी मार लेती है और पूजा करते हुए स्वामियों को भी और अर्थ समझने वाले पण्डितों को भी। उसने सब के मुंह में लगाम लगा दी है। वह जंगल में जाकर संगी ऋषि को मारती है और ब्रह्मा का सर फोड़ देती है। उसके फ़रेब ने मछिन्दर नाम को भी, जो माया की ओर से मुंह मोड़-कर चले थे, लंका में जाके डुबो दिया। माया दुनियादार के घर में कर्ता धरता बन बैठती है लेकिन हरि की भक्ति में खोये हुए लोगों की दासी हो जाती है।



बांगड़ देस लूवनका घर है, तहँ जिनि जाइ दाझनका डर है।
सब जग देखौं कोई न धीरा, परत धूरि सिर कहत अबीरा ॥
न तहाँ सरवर न तहाँ पाणी, न तहाँ सतगुरु साधू-वाणी।
न तहाँ कोकिल न तहाँ सूवा, ऊँचै चढ़ि चढ़ि हंसा मूवा ॥
देस मालवा गहर गँभीर, डग डग रोटी पग पग नीर।
कहै कबीर धरती मन मांनां, गूंगेका गुड़ गूंगै का जांणा ॥

बांगड़ देश (पश्चिमी भाग) गरम लूओं का देश है। वहाँ मत जाओ, जल जाने का डर है। मैं सारे संसार को देखता हूँ किसी के दिल में सन्तोष और शान्ति नहीं है। सर पर जो धूल पड़ती है उसे वह अबीर समझते हैं। न वहाँ झील है, न पानी। न सत्गुरु है न साधु की आवाज। न वहाँ कोयल है न तोता और हंस ऊंचा उड़ते उड़ते मर गया। लेकिन मालवे का देश गहर गम्भीर है। वहाँ क़दम क़दम पर रोटी और क़दम क़दम पर पानी है। कबीर कहते हैं कि इस संसार की हैसियत वही है जिसपर विश्वास कर लिया गया है। गूंगा गुड़ खाकर उसका स्वाद नहीं बता सकता।

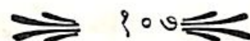
١٠٧

رہنا نہیں دیس بِرانا ہے
یہ سنسار کاگد کی پڑیا ، بوند پڑے ڈھل جانا ہے
یہ سنسار کانٹ کی باڑی ، الجھ پُلجھ مرِ جانا ہے
یہ سنسار جھاڑا و جھانکر ، آگ لگے برِ جانا ہے
کہت کبیر سنو بھائی سادھو . ست گُرو نام ٹھکانا ہے

یہ پرایا دیس ہے . یہاں نہیں رہنا ہے . یہ سنسار کاغذ کی پڑیا ہے جو ایک بوند پانی سے گل جاتی ہے . یہ کانٹوں کی جھاڑی ہے جس میں الجھ کر لوگ مرجاتے ہیں . یہ جھاڑ جھنکاڑ ہے جو آگ لگتے ہی جل جاتا ہے . کبیر کہتے ہیں سنو بھائی سادھو اصل منزل ست گرو کا نام ہے .

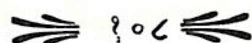
١٠٨

« تُمہ گھر جاؤ ہماری بہنا ، وش لاگیں تہارے نیناں
انجن چھانڑِ نِرنجن راتے ، ناکس ہیں کا دیناں
بلِ جاؤں تاکی جن تمہ پٹھئی ، ایک بھائی ایک بہناں »
« راتی کھانڈی دیکھ ہمارا سنگارو
سُرگ لوک تھیں ہم چلِ آئی کرن کبیر بھر تاری »
« سرگ لوگ میں کیا دکھ پریا ، تمہ آئی کلِ مانہیں
جات جلاہا نام کبیرا ، اج ہوں پتیجو ناہیں
تہاں جاؤ جہاں پاٹ پٹمبر ، اگر چندن گھسِ لیناں
آئی ہمارے کہا کروگی ، ہم تو جاتِ کمیناں
جنِ ہم ساجے ساجیہ نواجے ، باندھے کاچے دھاگے
جے تمہ جتن کرو بُہتیرا ، پانی آگ نہ لاگے
صاحب میرا لیکھا مانگے ، لیکھا کیوں کرِ دیجے
جے تمہ جتن کرو بُہتیرا تو پاہن نیر نہ بھیجے
جاکی میں مچھی سو میرا مچھا سو میرا رکھوالو
ٹُک ایک تمہارے ہاتھ لگاؤں تو راجا رام رسالو
جات جُلاہا نام کبیرا بنِ بن پھروں اُپاسی
آس پاس تمہ پھر پھر ویسو ایک ماؤ ایک ماسی »



रहना नहिं देस बिराना है।
यह संसार कागदकी पुड़िया, बूँद पड़े धुल जाना है ॥
यह संसार काँटकी बाड़ी, उलझ-पुलझ मरि जाना है।
यह ससांर झाड़ औ झाँखर, आग लगे बरि जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है।

यह पराया देश है, यहाँ नहीं रहना है। यह संसार काग़ज़ की पुड़िया है जो एक बूंद पानी से गल जाती है। यह कांटों की झाड़ी हैं जिसमें उलझ कर लोग मर जाते हैं। यह झाड़ झंकाड़ है जो आग लगते ही जल जाता है। कबीर कहते हैं कि सुनो भाई साधु, सत्गुरु का नाम ही आखरी ठिकाना है।

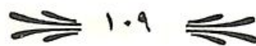


"तुम्ह घरि जाहु हमारी बहना, विष लागैं तिहारे नैंना ॥
अंजन छांड़ि निरंजन राते, ना किसहींका दैनां।
बलि जाऊँ ताकि जिनि तुम्ह पठई, एक भाई एक बहनां ॥"
"राती खाँडी देखि हमारा सिंगारो।
सरग-लोकथैं हम चलि आई, करन कबीर भरतारी ॥"
"सरगलोकमें क्या दुख पड़िया, तुम्ह आई कलिमाँहीं।
जाति जुलाहा नांम कबीरा, अजहुँ पतीजौ नाहीं ॥
तहाँ जाहु जहाँ पाट-पटंबर अगर चंदन घसि लीनां।
आइ हमारै कहा करौगी, हम तौ जाति कमीनां ॥
जिनि हम साजे साज्य निवाजे, बाँधे काचै धागे।
जे तुम्ह जतन करौ बहुतेरा, पाणी आगि न लागै ॥
साहिब मेरा लेखा माँगै, लेखा क्यूं करि दीजै।
जे तुम्ह जतन करौ बहुतेरा, तो पाहण नीर न भीजै ॥
जाकी मैं मछी सो मेरा मछा सो मेरा रखवाल्ह।
टुक एक तुम्हारै हाथ लगाऊँ तौ राजाराम रिसाल्ह ॥
जाति जुलाहा नाम कबीरा बनि बनि फिरौं उपासी।
आसि-पासि तुम्ह फिरि फिरि बैसौ एक माउ एक मासी ॥"

میری ؛ ن (مایا) تم اپنے گھر جاؤ ، تمہاری آنکھیں مجھے زہر لگ رہی ہیں ۔ میں نے صفت کو چھوڑکر صفات سے لو لگائی ہے ، اب مجھے کسی سے کچھ لینا دینا نہیں ، میں اس کے قربان جاؤں جس نے تمہیں بھیجا ہے ، ہم دونوں تو بہن بھائی ہیں ۔

اس لال تلوار کو دیکھ و کبیر ، میرا سنگار دیکھو ، میں جنت سے اُتر کر آئی ہوں اور کبیر میں تمہیں اپنا دولھا بنانا چاہتی ہوں ۔

جنت میں تمہیں کیا دکھ تھا جو نے اس کل جگی دُنیا میں آنے کی تکلیف گوارا کی ، ہماری ذات جلاہے کی ہے اور نام کبیر ہے ، ہمیں تو کبھی کسی نے پوچھا نہیں ، تم وہاں جاؤ تخت بچھے ہیں ، باغ آراستہ ہیں ، اناج کے بورے بھرے ہیں ، ریشم کی بھرمار ہے ، اگر اور صندل گھسا جا رہا ہے ، ہمارے پاس آکر کیا کروگی ، ہم تو کمینوں کی ذات سے تعلق رکھتے ہیں ۔ جس نے ہمیں پیدا کیا ہے اور جس کی نوازش ہم پر ہے اس نے ہمیں اپنے پیار کے کچے دھاگے میں باندھ رکھا ہے ۔ تم چاہے جتنے جتن کرو پانی میں آگ نہیں لگا سکوگی (مجھے اپنی طرف مائل نہیں کرسکوگی) میرا مالک تو اعمالنامہ مانگتا ہے ، وہ میں اُسے کیسے دکھاؤں گا ۔ تم چاہے جتنے جتن کرو پتھر میں پانی جذب نہیں ہوسکتا ۔ میں جس کی مچھلی ہوں وہی میرا مچھیرا ہے وہی میرا رکھوالا ہے ۔ اگر تمہیں ہاتھ بھی لگادوں تو رام مجھ سے روٹھ جائیں گے ، میری تو جلاہے کی ذات ہے اور میں جنگل جنگل بھوکا پیاسا مارا پھرتا ہوں ، تم میرے آس پاس گھومو اور بیٹھو ، ہماری ماں اور خالہ ایک ہی ہے (یعنی ہم سگے بہن بھائی ہیں) ۔

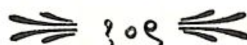


مایا مہا ٹھگنی ہم جانی
تر گن پھانس لئے کر ڈولے ، بولے مدھری بانی
کیسو کے کملا ہوئی بیٹھی ، سو کے بھون بھوانی
پنڈا کے مورت ہوئی بیٹھی ، تیرتھ‌ہو میں پانی
جوگی کے جوگن ہوئی بیٹھی ، راجا کے گھر رانی
کاہو کے ہیرا ہوئی بیٹھی ، کاہو کے کوڑی کانی

"मेरी बहन (माया) तुम अपने घर जाओ। तुम्हारी आँखें जहर लग रही हैं। मैंने अंजनरूप संसार को छोड़कर निरंजन को अपना लिया है। अब मुझे किसी से कुछ लेना देना नहीं है। मैं उसपर बलि जाऊँ जिसने तुम्हें यहाँ भेजा है। हम दोनों तो बहन भाई हैं।"

"अय कबीर इस लाल तलवार को देखो, यह मेरा शृंगार देखो। मैं स्वर्गलोक से उतरकर आयी हूँ और तुम्हें अपना पति बनाना चाहती हूँ।"

"स्वर्ग में तुम्हें क्या तकलीफ़ थी जो तुमने इस कलयुगी दुनिया में आनेका कष्ट किया। हम जाति के जुलाहे हैं और हमारा नाम कबीर है। हमें तो कभी किसी ने पूछा नहीं। तुम वहाँ जाओ जहाँ तख्त बिछे हैं, बाग़ सजे हैं और अनाज के बोरे भरे हैं। रेशम की भरमार है, अगर और चंदन विसा जा रहा है। हमारे पास आकर क्या करोगी। हम तो नीच लोग हैं जिसने हमें पैदा किया है और जिसकी दया दृष्टि हमपर है उसने हमें अपने प्यार के कच्चे धागे में बांध लिया है (दूसरे अर्थ में जहाँ जिनि का मतलब मत या नहीं है इन सजावटों से हमें मत नवाजो और हमें कच्चे धागे में बाँधने की कोशिश मत करो) तुम चाहे जितने जतन करो, पानी में आग नहीं लगा सकोगी (मुझे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकोगी) मेरा मालिक तो लेखा माँगता है, वह मैं उसे कैसे दिखाऊंगा। तुम चाहे जितने जतन करो पत्थर में पानी नहीं सोख सकता। मैं जिसकी मछली हूँ वही मेरा मछेरा है। वही मेरा रखवाला है। यदि तुम्हें हाथ भी लगा दूँ तो राम मुझसे रूठ जायेंगे। मैं तो जाति का जुलाहा हूँ और जंगल जंगल भूका प्यासा मारा फिरता हूँ। तुम मेरे आसपास घूमो और बैठो। हमारी माँ और मौसी एक ही है। (यानी हम सगे बहन भाई हैं)



मया महा ठगनी हम जानी।
तिरगुन फाँसि लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बानी॥
केसवके कमला होइ बैठी, सिवके भवन भवानी।
पडांके मूरत होइ बैठी तीरथहूमें पानी।
जोगीके जोगिन होइ बैठी, राजाके घर रानी।
काहूके हीरा होइ बैठी काहूके कौड़ी कानी।

بھگتن کے بھگتن ہوئی بیٹھی، برہما کے برہمانی
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، یہ سب اکتھ کہانی

ہم مایا کو بہت بڑی ٹھگنی سمجھتے ہیں، اس کے ہاتھ میں ترگن کی پھانسی کا پھندا ہے اور ہونٹھوں پر میٹھے بول. کیشو (وشنو) کے یہاں کملا (لکشمی) بن بیٹھی اور شیو کے یہاں بھوانی، پنڈا کے گھر مورت بن بیٹھی اور تیرتھ میں پانی. جوگی کے گھر میں جوگن ہوگئی اور راجا کے گھر رانی. کسی کے یہاں ہیرا بن کر آئی اور کسی کے یہاں کانی کوڑی، بھگتوں کے یہاں بھگتن ہوگئی اور برھما کے گھر برھمانی. سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ یہ ناقابل بیان کہانی ہے.

۱۱۰

یا کریم بلِ حکمت تیری
کھاک ایک صورت بُہتیری
اردھ گگن میں نیر جمایا
بہت بھانت کر نورن پایا
اولیا آدم پیر مُلانا
تیری صِفت کر بھئے دوانا
کہے کبیر یہُ ہیتُ بچارا
یارب یارب یار ہمارا

اے کریم میں تیری حکمت پر قربان جاؤں، خاک ایک ہے لیکن صورتیں ہزاروں ہیں. تونے وسط آسمان میں پانی کو قائم کیا اور طرح طرح کے نور پھیلائے، اولیا، آدم، پیر، مولوی سب تیری صفات بیان کرتے کرتے دیوانے ہوگئے، کبیر کہتے ہیں کہ ہم نے تو بس یہ نکتہ سوچا ہے کہ یارب ہمارا یار ہے.

۱۱۱

پانڑے بوجھ پیہو تم پانی
جِہی مٹیا کے گھر ماں بیٹھے، تا ماں سِسٹ سمانی
چھپن کوٹ جادَو جہاں بھینجے، مُنِ جن سہس اٹھاسی

भक्तनके भक्तिन होइ बैठी, ब्रह्माके ब्रह्मानी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी।

हम माया को बहुत बड़ी ठगनी समझते हैं उसके हाथ में त्रिगुण की फाँसी का फंदा है और होंठों पर मीठे बोल। केशव (विष्णु) के यहाँ कमला (लक्ष्मी) बन बैठी और शिव के यहाँ भवानी। पण्डे घर मूर्ति बनी बैठी है और तीर्थ में पानी। जोगी के घर में जोगन हो गयी और राजा के घर रानी। किसी के यहाँ हीरा बन कर आयी और किसी के यहाँ कानी कौड़ी। भक्तों के यहाँ भक्तिन हो गयी और ब्रह्मा के घर ब्रह्मानी। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि यह अकथनीय कथा है।

≫ ११० ≪

या करीम बलि हिकमति तेरी,
खाक एक सूरति बहुतेरी॥
अर्ध गगन मैं नीर जमाया,
बहुत भाँति करि नूरनि पाया॥
अवलिय-आदम-पीर-मुलाना
तेरी सिफति करि भये दिवाना॥
कहै कबीर यहु हेतु बिचारा
या रब या रब यार हमारा॥

अय करीम, मैं तेरी हिक़मत पर क़ुरबान जाऊँ। ख़ाक एक है लेकिन सूरतें हज़ारों हैं। तूने मध्य आकाश में पानी को स्थापित किया और भाँति भाँति के प्रकाश फैलाये। औलिया, आदम, पीर, मौलवी सब तेरी प्रशंसा करते करते दिवाने हो गये। कबीर कहते हैं कि हमने तो बस यह सोचा है कि यारब हमारा यार है।

≫ १११ ≪

पाँड़े बूझि पियहु तुम पानी।
जिहि मिटियाके घरमँह बैठे, तामँह सिस्ट समानी।
छपन कोटि जादव जहँ भींजे, मुनिजन सहस अठासी।

پَیگ پَیگ پیگمبر گاڑے، سو سب سر ہو مـانٹی
تے ہی مٹیا کے بھانڑے پانڑے، بوجھ پی ہو تم پانی
مچـھ کـچھ گھریار بیانے، اُدِھر نیر جل بھریا
ندیا نیر نرک بہی آوے، پسُ مـانس سب سریا
ہاڑ جھری جھرِ گود گری گر، دودھ کہاں تیں آیا
سوا پانڑے جیون بیٹھے، مٹیـاہن چھوت لگایا
بید کتیب چھانڑ دیو پانڑے، ای سب من کے بھرما
کہیں کبیر سنو ہو پانڑے، ای تمہرے ہیں کرما

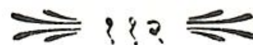
یہ تمہاری حماقت ہے پانڈے کہ تم پہلے ذات پوچھتے ہو پھر اس کے ہاتھ کا پانی پیتے ہو۔ تم جس مٹی کے گھر میں بیٹھے ہو اس میں ساری کائینـات (سٹ = سرشٹی = فطرت = تخلیق) سمائی ہوئی ہے۔ چھپن کروڑ یادوٗ اور اٹھاسی ہزار منی یہاں غرق ہوگئے ہیں اور قدم قدم پر گڑے ہوئے پیغمبروں کی لاشیں سڑ کر مٹی ہوگئی ہیں، اے پانڈے یہ برتن اُسی مٹی کے ہیں اور تم ذات پوچھ کے پانی پیتے ہو۔ اس پانی میں مگر مچھ، کچھوے اور گھڑیال بچے دیتے ہیں اور ان کا خون پانی میں مل جـاتا ہے۔ اس ندی کے پانی میں سـارا نرک (گندی چیز = دوزخ) بہہ کر آتا ہے اور جانور اور انسان سب اس میں سڑتے ہیں۔ جب ہڈی اور گودا گل جاتا ہے تب دودھ بنتـا ہے، اس دودھ کو لے کر پانڈے کھانا کھانے بیٹھتے ہیں۔ لیکن ساری چھوت چھات مٹی ہی میں مانتے ہیں، اے پانڈے جی وید اور قرآن سب کو چھوڑ دو، یہ سب دل کے دھوکے ہیں۔ سنو پانڈے جی کبیر کہتے ہیں کہ یہ تمہارے کرم ہیں جو تمہارے سامنے آتے ہیں۔

۱۱۲

سادھو، پانڑے نِپُن کسائی
بکری مارِ بھیڑ کو دھائے، دل میں درد نہ آئی
کراسنان تلک دے بیٹھے بدھی سوں دیو پُجائی
آتم مار پلک میں بِنسے، رُدھرکی ندی بہائی
ات پُنیت اونچے کُل کہئے، سبھا مانہ ادھکائی
ان سے دِچّھا سب کوئی مانگے، ہنسی آوے مونہ بھائی

पैग पैग पैगम्बर गाड़े, सो सब सरि भा माँटी।
तेहि मिटियाके भाँड़े पाँड़े, बूझि पियहु तुम पानी।
मच्छ-कच्छ घरियार बियाने, रुधिर-नीर जल भरिया।
नदिया नीर नरक बहि आवै, पसु-मानुस सब सरिया॥
हाड़ झरि झरि गूद गरि गरि, दूध कहाँतें आया।
सो लै पाँड़े जेंवन बैठे, मटियहिं छूति लगाया॥
वेद कितेब छाँड़ि देउ पाँड़े, ई सब मनके भरमा।
कहहिं कबीर सुनहु हो पाँड़े, ई तुम्हरे हैं करमा॥

यह तुंम्हारी मूर्खता है कि तुम पहले पाँड़े की जाति पूछते हो, फिर उसके हाथका पानी पीते हो। तुम जिस मिट्टी के घर में बैठे हो उसमें सारी सृष्टि समायी हुई है। छप्पन करोड़ यादव और अठासी हज़ार मुनि यहाँ डूब गये और क़दम क़दम पर गड़े हुए पैग़म्बरों की लाशें सड़ कर मिट्टी हो गयी है। अय पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गन्दी चीज़ें) बहकर आता है और जानवर और इंसान सब इस में सड़ते हैं। जब हड्डी और गूदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआ-छूत मिट्टी में मानते हैं। अय पाँड़े जी वेद और कुरान सब को छोड़ दो। ये सब दिल का धोका हैं। सुनो पाँड़ेजी, कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते हैं।



साधो, पाँड़े निपुन कसाई।
बकरि मारि भेड़िको धाये, दिलमें दरद न आई।
करि अस्नान तिलक दै बैठे, विधिसों देवि पुजाई।
आतम मारि पलकमें बिनसे, रुधिर की नदी बहाई।
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये, सभामाहिं अधिकाई।
इनसे दिच्छा सब कोई माँगे, हँसि आवे मोहिं भाई।

پاپ کٹن کو کتھا سناویں ، کرم کراویں نیچا
بوڑت دوؤ پر سپر دیکھے گہے بانہہ جم کھینچا
گائے بدھے سو ترک کہاوے یہ کیا ان سے چھوٹے
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، کل میں بامہن کھوٹے

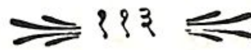
اے سادھو ، یہ پانڈے بڑے مشاق قصائی ہیں ، بکری کا بلیدان کرکے بھیڑ کی طرف لپکتے ہیں. ان کے دل میں ذرا بھی رحم نہیں، اشنان کرکے اور تلک لگا کے بیٹھتے ہیں اور بڑی باقاعدگی سے دیوتا کی پوجا کرتے ہیں. یہ اپنی آتما کو ایک پل میں مار دیتے ہیں ، اور خون کی ندی بہادیتے ہیں. یہ بہت مقدس ہیں اور اونچے خاندان کے ہیں اور سبھا میں ان کی بڑی مان دان ہے ان سے سب لوگ علم اور عرفان حاصل کرتے ہیں اور مجھے یہ تماشا دیکھ کے ہنسی آتی ہے ، لوگوں کا پاپ کاٹنے کے لئے یہ کتھا سناتے ہیں اور کام ان سے بہت نیچے کرواتے ہیں. میں نے دونوں کو ایک ساتھ ڈوبتے دیکھا ہے ، جس کو انہوں نے سہارا دیا اس کو لے ڈوبے ، جو گائے کو مارے وہ مسلمان کہلاتا ہے ، لیکن کیا یہ پانڈے اُن مسلمانوں سے کچھ کم ہیں. کبیر کہتے ہیں کلجگ میں برہمن بہت کھوٹے ہوگئے ہیں.

۱۱۳

پانڑے نہ کرسی باد بیبادم
یادیہی بن سبد نہ سوادم
انڈ برہمنڈ کھنڈ بھی ماٹی
ماٹی نوندھ کایا
ماٹی کھوجت ست گرو بھیٹیا
تن کچھ الکھ لکھایا
جیوت ماٹی موا بھی ماٹی
دیکھ گیان بچاری
ات کالی ماٹی میں واسا
لیٹے پاؤں پساری
ماٹی کا چتر پون کا تھمبا
بِند سنجوگ اُپایا

पाप-कटनको कथा सुनावैं, करम करावैं नीचा।
बूड़त दोउ परस्पर दीखे, गहे बाँहि जम खींचा।
गाय बधै सो तुरक कहावै, यह क्या इनसे छोटे।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, कलिमें बाम्हन खोटे॥

अय साधु, ये पाँडे बड़े कुशल क़साई हैं। बकरी का बलिदान करके भेड़ की ओर लपकते हैं। इन के दिल में दया नाम मात्र को भी नहीं है। स्नान करके तिलक लगाकर बैठते हैं और बड़ी विधि से भगवान की पूजा करते हैं। ये अपनी आत्मा को क्षण भर में मार देते हैं और ख़ून की नदियाँ बहा देते हैं। ये बड़े पवित्र हैं और कुलीन घराने से सम्बन्ध रखते हैं। सभा में इनका बड़ा मान है। सब लोग इनसे दीक्षा लेते हैं और मुझे यह देखकर बड़ी हँसी आती है। लोगों के पाप काटने के लिए ये कथा सुनाते हैं और उनसे नीचे काम करवाते हैं। मैंने दोनों को एक साथ डूबते देखा है। जिसको इन्होंने सहारा दिया उसी को ले डूबे। जो गाय को मारे वह मुसलमान कहलाता है लेकिन क्या ये पाँड़े उन मुसलमानों से कुछ कम हैं। कबीर कहते हैं कि कलियुग में ब्राह्मण बहुत खोटे हो गये हैं।



पाँड़े न करसी बाद-बिबादं
या देही बिन सबद न स्वादं।
अंड ब्रह्मंड खंड भी माटी,
माटी नवनिधि काया।
माटी खोजत सतगुरु भेव्या,
तिनु कछु अलख लखाया।
जीवत माटी मूवा भी माटी
देखौ ग्यान बिचारी।
अति काली माटीमैं बासा
लैटै पाँव पसारी॥
माटीका चित्र पवनका थंभा
ब्यंद संजोगि उहाया।

بھا نیں گھڑے سنوارے سوئی
یُہہ گووِ ِند کی مایا
ماٹی کا مندر گیان کا دیپک
پون باتِ اُجیارا
تہی اُجیارے سب جگ سوجھے
کبیر گیان بچارا

دیکھو پانڈے ، فضول بحث مباحثہ نہ کرو. اس جسم کے بغیر نہ تو شبد (صوتِ سرمدی) ہے اور نہ شبد کا مزا، یہ کرۂ زمین ، یہ کائینات ، اس کا جزو اور کُل سب مٹی ہے یہ نونـدھیون کی کایا (یعنی جسم بھی جو طرح طرح کے خزانوں سے معمور ہے) مٹی ہے. اس مٹی کی تلاش میں (یعنی اپنے آپ کو پہچاننے میں) ست گرو سے ملاقات ہوئی اور انہوں نے تھوڑے سے راز سے پردہ اٹھایا (ان دیکھے کو دکھایا) ذرا گیان دھیان سے کام لو تو معلوم ہوگا کہ زندہ بھی مٹی ہے اور مردہ بھی مٹی ہے. اس بے حد کالی مٹی میں ہماری رہائش ہے اور ہم اس میں پاؤں پھیلائے لیٹے ہوئے ہیں، ہوا کے ستون پر آویزاں یہ مٹی کی بنی ہوئی تصویر وہ سنجوگ ہے جسے ایک نقطے نے ظاہر کیا ہے یہ گووند (بھگوان) کی شکتی کا کرشمہ ہے کہ وہ اس مٹی کو توڑتا ، بناتا اور سنوارتا رہتا ہے، مٹی کا مندر ہے جس میں عرفان کا چراغ جل رہا ہے اور ہوا کی بتی کا اجالا پھیل رہا ہے ، کبیر سوچ بچار کے کہتے ہیں کہ اس روشنی میں سارا جگ دکھائی دیتا ہے.

۱۱۴

من بنیاں بنج نہ چھوڑے
جنم جنم کا مارا بنیاں اج ہوں پـور نـہ تولے
پاسنگ کے ادھکاری لے لے، بھولا بھولا ڈولے
گھر میں دُبدھا کُمتِ بنی ہے ، پل پل میں چت تورے
کنبا وا کے سکل حرامی ، امرت میں وش گھولے
تم ہیں جل میں تم ہیں تھل میں ، تم ہی گھٹ گھٹ بولے
کہے کبیر واسش کو ڈرئیے ، ہردے گانٹھ نہ کھولے

भाँनें वड़ै संवारै सोई,

यहु गोव्यंदकी माया।

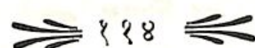
माटीका मंदिर ग्यानका दीपक

पवन बाति उजियारा ॥

तिहि उजियारै सब जग सूझै,

कबीर ग्यान बिचारा ॥

देखो पाँड़े, व्यर्थ वाद विवाद न करो। इस शरीर के बिना न तो शब्द है और न शब्द का स्वाद। यह धरती, यह ब्रह्माण्ड, इसका कोई अंश या पूर्ण सब मिट्टी है। यह नवनिधियों की काया (शरीर, जो भांति भांति के खज़ानों से परिपूर्ण है) भी मिट्टी है। इस मिट्टी की खोज में (स्वयं को पहचानने में) सत्गुरु से भेंट हुई और उन्होंने थोड़ेसे रहस्य पर से पर्दा उठाया (अनदेखे को दिखाया) जरा ज्ञान ध्यान से काम लो तो मालूम होगा कि जीवित भी मिट्टी है और मुर्दा भी मिट्टी है। इस अत्यन्त काली मिट्टी में हम रहते हैं। इस में पाँव फैलाये लेटे हुए है। हवा के स्तम्भ पर लगा यह मिट्टी का चित्र वह संयोग है जिसे एक बिन्दु ने प्रकट किया है। यह गोविन्द (भगवान) की शक्ति का चमत्कार है कि वह इस मिट्टी को तोड़ता बनाता और संवारता रहता है। मिट्टी का मंदिर है जिस में ज्ञानका दीपक जल रहा है और हवा की बत्ती का प्रकाश फैल रहा है। कबीर सोच विचारकर कहते हैं कि इस प्रकाश से सारा जग दिखायी देता है।



मन बनियाँ बनिज न छोड़ै।

जनम जनमका मारा बनियाँ, अजहूँ पूर न तौले।

पासँग कै अधिकारी लैले, भूला भूला डोलै।

घरमें दुबिधा कुमति बनी है, पलमें चित्त तोरै।

कुनबा वाके सकल हरामी, अंमृतमें विष घोलै।

तुमहीं जलमें तुमहीं थलमें, तुमही घट घट बोलै।

कहै कबीर वा सिषको डरिये, हिरदे गाँठि न खोलै ॥

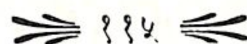
من کا بنیا اپنا بنیا پن نہیں چھوڑتا۔ یہ جنم جنم کا مارا آج بھی پورا نہیں تولتا۔ کم تولنے کو اس نے اپنا حق سمجھ لیا ہے اور اس کے غرور میں بھولا بھولا رہتا ہے۔ تذبذب نے اُس کی عقل خراب کردی ہے اور وہ ہر لمحہ اپنے ضمیر کو مجروح کرتا ہے۔ اس کا سارا خاندان حرامی ہے کہ وہ امرت میں زہر گھولتا ہے۔ (اوپر سے یہی کہتا رہتا ہے کہ،) بحر و بر میں تم ہی تم ہو، ہر جسم کے اندر تم بول رہے ہو۔ (لیکن دل میں اس کا یقین نہیں ہے) کبیر کہتے ہیں کہ ایسے گیان سے ڈرئیے جو دل کی گانٹھ نہیں کھولتا، (دل کی بات ظاہر نہیں کرتا)

۱۱۵

میرا تیرا منواں کیسے اِک ہوئی رے
میں کہتا ہوں آنکھن دیکھی، تو کہتا کاگد کی دیکھی
میں کہتا سُر جھاون ہاری، تو راکھیو اُرجھائی رے
میں کہتا تو جاگت رہیو، تو رہتا ہے سوئی رے
میں کہتا نرموہی رہیو، تو جاتا ہے موہی رے
جُگن جُگن سمجھاوت ہارا کہی نہ مانت کوئی رے
تو تو رنڈی پھرے بہنڈی، سب دھن ڈارے کھوئی رے
ست گرو دھارا نرمل باہے، وا میں کایا دھوئی رے
کہت کبیر سنو بھائی سادھو، تب ہی ویسا ہوئی رے

میرا دل اور تیرا دل ایک کیسے ہوسکتا ہے۔ میں آنکھوں دیکھی کہتا ہوں اور تو کتابوں میں لکھی بات سناتا ہے، میں سمجھانے والی بات کہتا ہوں اور تو الجھانے والی، میں کہتا ہوں کہ جاگتے رہنا اور تو سوتا رہتا ہے، میں کہتا ہوں کہ سنسار سے دل نہ لگانا اور تو اس کے موہ میں مبتلا ہے۔ سمجھاتے سمجھاتے جُگ بیت گئے لیکن میری کہی ہوئی بات کوئی جانتا نہیں۔ تو تو رنڈی کی طرح آوارہ ہے، اور دھن دولت (ضمیر کی عصمت) کھو بیٹھا۔ کبیر کہتے ہیں کہ ست گرو صاف و پاک پانی کا بہتا ہوا دھارا ہی اور جس نے اپنی کایا اُس میں دھوئی وہی ست گرو جیسا ہوسکتا ہے۔

मन का बनिया अपना बनियापन नहीं छोड़ता। यह जनम जनम का मारा आज भी पूरा नहीं तोलता। कम तोलने को उसने अपना अधिकार समझ लिया है और उसके घमण्ड में भूला भूला रहता है। दुविधा ने उसकी बुध्दि भ्रष्ट करदी है और वह हर पल अपने अन्तःकरण को घायल करता है। उसका सारा कुटुम्ब हरामी है जो अमृत में विष घोलता है। (प्रत्यक्ष यही कहता रहता है कि) जल थल में तुम ही तुम हो, हर शरीर के अन्दर तुम बोल रहे हो (लेकिन मन में इस पर विश्वास नहीं है)। कबीर कहते हैं कि ऐसे ज्ञान से डरते रहो जो दिल की गाँठ नहीं खोलता (दिल की बात प्रकट नहीं करता)।



मेरा-तेरा मनुआँ कैसे इक होई रे।
मैं कहता हौं आँखिन देखी, तू कहता कागदकी देखी।
मैं कहता सुरझावनहारी, तू राख्यौ उरझाई रे।
मैं कहता तू जागत रहियो, तू रहता है सोई रे।
मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाता है मोही रे।
जुगन जुगन समुझावत हारा, कहीं मानत कोई रे।
तू तो रंडी फिरै बिहंडी, सब धन डारे खोई रे।
सतगुरु धारा निर्मल बाहै, वामें काया धोई रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तब ही वैसा होई रे॥

मेरा और तेरा दिल एक कसे हो सकता है। मैं आँखो देखी कहता हूँ और तू किताबों में लिखी बात सुनाता है। मैं सुलझाने वाली बात कहता हूँ और तू उलझानेवाली। मैं कहता हूँ कि जागते रहना और तू सोता रहता है। मैं कहता हूँ कि संसार से दिल न लगाना और तू उसके मोह में फंसा हुआ है। समझाते समझाते युग बीत गये परन्तु मेरी कही बात कोई मानता नहीं। तू तो रंडी की तरह आवारा है और सारा धन सम्पत्ति (अन्तःकरण का सतीत्व) खो बैठा है। कबीर कहते हैं कि सत्गुरु निर्मल और पवित्र जल की धारा हैं। जो कोई इस पानी से अपनी काया को धो लेगा वही सत्गुरु जैसा हो सकता है।

۱۱۶

دُلہن انگیا کاہے نہ دھووائی
بال پنے کی میلی انگیا وشیے داگ پر جائی
بن دھوئے پیہ ریجھت ناہیں، سیج سیں دیت گرائی
سُمرن دھیان کے صابُن کر لے ستنام دریائی
دُبدھا کے بھید کھول بُہریا من کے میل دھووائی
چیت کرو تینوں پن بیتے، اب تو گون نگچائی
پالنہار دوار ہیں ٹھاڑھے، اب کاہے پچھتائی
کہت کبیر سنو ری بُہریا، چت انجن دے آئی

اے دولہن تو نے اپنی انگیا کیوں نہیں دھولوائی یہ بچپن کی میلی انگیا ہے جس پر نفسانی خواہشات کے داغ پڑے ہوئے ہیں. بغیر دھوئے ہوئے پریتم ریجھتے نہیں ہیں اور سیج سے گرا دیتے ہیں. خدا کی یاد کو اپنا صابن بنالے اور ست نام کو دریا بنالے. اے دولہن تذبذب کی گرہیں کھول دے اور من کا میل دھو ڈال. سوچ تو کہ عمر کے تین حصے بیت چکے ہیں اور اب گونے (رخصت) کا وقت قریب آگیا ہے، تیرا پالنے والا دروازے پر کھڑا ہے، اب کیوں اداس ہے. کبیر کہتے ہیں اے دولہن اپنے دل کی آنکھ میں گیان کا کاجل لگا کر آجا.

۱۱۷

سادھو دیکھو جگ بورانا
سانچی کہو تو مارن دھاوے جھوٹھے جگ پتیانا
ہندو کہت ہے رام ہمارا مسلمان رحمانا
آپس میں دوؤ لڑے مرت ہیں مرم کوئی نہیں جانا
بہت ملے مونہی نیمی دھرمی پرات کریں اسنانا
آتم چھوڑِ پشانیں پوچیں، تنکا تھوتھا گیانا
آسن مار ڈمبھ دھرِ بیٹھے، من میں بہت گمانا
پیپر پاتھر پوجن لاگے تیرتھ برَت بُھلانا
مالا پہرے ٹوپی پہرے چھاپ تلک انُمانا
ساکھی سبدے گاوت بھولے آتم کھبر نہ جانا
گھر گھر منتر جو دین پھرت ہیں مایا کے ابھمانا

११६

दुलहिन अँगिया काहे न धोवाई।
बालपनेकी मैली अँगिया विषय-दाग परि जाई।
बिन धोये पिय रीझत नहीं, सेजसें देत गिराई।
सुमिरन ध्यानकै साबुन करि ले सत्तनाम दरियाई।
दुबिधाके भेद खोल बहुरिया मनकै मैल धोवाई।
चेत करो तीनों पन बीते, अब तो गवन नगिचाई।
पालनहार द्वार हैं ठाढ़ै अब काहे पछिताई।
कहत कबीर सुनों री बहुरिया चित अंजन दे आई॥

अय दुल्हिन, तूने अपनी अंगिया क्यों नहीं धुलवाई। यह बचपन की मैली अंगिया है जिसपर विषय वासना के धब्बे पड़े हुए हैं। इसे बिना धोये प्रीतम रीझते नहीं हैं और सेज से नीचे गिरा देते हैं। भगवान की याद को अपना साबुन बना ले और सत्त नाम को दरिया। अय दुल्हिन दुविधा की गांठें खोल दे और मन का मैल धो डाल। जरा विचार तो कर आयु के तीन भाग बीत चुके हैं और गौने का समय निकट आ गया है। तेरा पानेवाला दरवाज़े पर खड़ा है। अब क्यों उदास है। कबीर कहते हैं कि अय दुल्हिन अपने मन की आँख में ज्ञान का काजल लगाकर आ जा।

११७

साधो, देखो जग बौराना।
साँची कहौ तौ मारन धावै झूठे जग पतियाना।
हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना।
आपसमें दोउ लड़े मरतु हैं मरम कोइ नहिं जाना।
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्रात करैं असनाना।
आतम-छोड़ि पषानें पूजैं तिनका थोथा ज्ञाना।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे मनमें बहुत गुमाना।
पीपर-पाथर पूजन लागे तीरथ-वर्त भुलाना।
माला पहिरे टोपी पहिरे छाप-तिलक अनुमाना।
साखी सब्दै गावत भूले आतम खबर न जाना।
घर घर मंत्र जो देन फिरत हैं माया के अभिमाना।

گُرووا سہت سِشیہ سب بوڑے انت کال پچھتانا
بُہتک دیکھے پیر اولیا پڑھیں کتاب گُرانا
کریں مرید کبر بتلاویں انہوں گُکھدا نہ جانا
ہندو کی دیا ، مہر ترکن کی، دونوں گھر سے بھاگی
وہ کرے جبہہ واں جھٹکا مارے آگ دوؤ گھر لاگی
یا بدھِ ہنست چلت ہیں ہمکو آپ کہاویں سیانا
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، ان میں کون دِوانا

دیکھو سادھو ساری دنیا پاگل ہوگئی ہے، سچی بات کہو تو مارنے کو دوڑتے ہیں لیکن جھوٹ پر ساری دنیا کا ایمان ہے. ہندو رام کا نام لیتا ہے اور مسلمان رحمان کا اور دونوں اس بات پر آپس میں لڑے مرتے ہیں لیکن حقیقت سے کوئی واقف نہیں. مجھے دھرم اور اس کے قوانین کے ماننے والے بہت ملے جو ہر صبح اشنان کرتے ہیں اور آتما کو چھوڑ کر پتھر کی پوجا کرتے ہیں. ان کا علم اور عرفان جھوٹا ہے. غرور سے آسن مار کے بیٹھے ہیں اور ان کا من گمان میں مبتلا ہوجاتا ہے جس کی وجہ سے وہ پتھر اور پیپل کو پوجتے ہیں مالا اور ٹوپی پہن کر تلک اور چھاپا لگاتے ہیں. نصیحت اور اپدیش (ظاہری علم) کے الفاظ بولتے بولتے وہ آتما سے بے خبر ہوگئے ہیں. جو گرو مایا کے غرور میں گھر گھر منتر سناتے پھرتے ہیں وہ گرو اور ان کے چیلے سب ڈوب چکے ہیں اور پچھتاوے کے سوا ان کے پاس کچھ نہیں ہے میں نے پیر اور مرید بہت دیکھے ہیں جو کتاب اور قرآن پڑھتے رہتے ہیں، وہ قبر دکھاکر لوگوں کو مرید بناتے ہیں، ظاہر ہے کہ انہوں نے خدا کو نہیں پہچانا ہے، ہندو کی دیا اور مسلمانوں کی محبت دونوں ان کے گھروں سے نکل گئی ہیں ایک جانور کو ذبح کرتا ہے اور دوسرا جھٹکا کرتا ہے لیکن آگ دونوں کے گھر میں لگی ہے. اس طرح وہ ہم پر تو ہنستے ہیں اور خود سیانے کہلاتے ہیں. کبیر کہتے ہیں اے سادھو تم ہی بتاؤ ہم دونوں میں کون دیوانہ ہے

۱۱۸

میاں تُمھ سو بولیاں بِنِ نہیں آوے
ہم مسکین کھدائی بندے تمہرا جس منِ بھاوے

गुरुवा सहित सिष्य सब बूड़े अंतकाल पछिताना।
बहुतक देखे पीर-औलिया पढ़ैं किताब-कुराना।
करैं मुरीद कबर बतलावें उनहूँ खुदा न जाना।
हिन्दुकी दया मेहर तुरकनकी दोनों घरसे भागी।
वह करै जिबह वाँ झटका मारे आग दोऊ घर लागी।
या विधि हँसत चलत हैं हमको आप कहावैं स्याना।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, इनमें कौन दिवाना॥

देखो साधु, सारी दुनिया पागल हो गयी है। सच्ची बात कहो तो मारने को दौड़ते हैं लेकिन झूठपर सब का विश्वास है। हिन्दू राम का नाम लेता है और मुसलमान रहमान का और दोनों आपस में इस बात पर लड़ते मरते हैं लेकिन सच्चाई से कोई भी परिचित नहीं। मुझे धर्म और उसके नियमों के मानने वाले बहुत मिले जो हर प्रातःकाल स्नान करते हैं और आत्मा को छोड़कर पत्थर की पूजा करते हैं। उनका ज्ञान झूठा है। दम्भ धारण करके आसन लगा कर बैठते हैं और उनका मन अहंकार में डूब जाता है, जिसके कारण वह पत्थर और पीपल को पूजते हैं (देखो नोट) माला और टोपी पहनकर तिलक और छापा लगाते हैं। उपदेश देते देते वह आत्मा से बेखबर हो गये हैं। जो गुरु माया के घमण्ड में घर घर मन्त्र सुनाते फिरते हैं वह गुरु और उनके चेले सब डूब चुके हैं। उनके पास पछतावे के सिवा कुछ नहीं है। मैं ने पीर और औलिया बहुत देखे हैं जो किताब और क़ुरान पढ़ते रहते हैं। वह क़ब्र दिखा कर लोगों को मुरीद बनाते हैं। जाहिर है कि उन्होंने खुदा को नहीं पहचाना है। हिन्दू की दया और मुसलमानों की मुहब्बत दोनों उनके घरों से निकल गयी हैं। एक जानवर को जिबह करता है और दूसरा झटका करता है लेकिन आग दोनों के घर में लगी है। इस तरह वह हम पर तो हंसते हैं और ख़ुद सियाने कहलाते हैं। कबीर कहते हैं, अय साधु तुम ही बताओ हम दोनों में कौन दिवाना है।



११८

मीयाँ तुम्हसौं बोल्याँ बणि नहीं आवै।
हम मसकीन खुदाई बन्दे तुम्हरा जस मनि भावै॥

اللہ اولِ دین کا صاحب جور نہیں پھرمایا
مرسد پیر تمہارے ہیے کو، کہو کہاں تھیں آیا
روجا کریں نواج گُجاریں کلمے بھست نہ ہوئی
ستر کعبے اِک دل بھیتر جے کر جانے کوئی
کھسم پچھانِ ترس کرِ جی میں مال متیں کر پھیکی
آیا جانِ سائیں کو جانیں، تب ہوے بھست سریکی
ماٹی ایک، بھیش دھر ناناں، سب میں بر ہمْ سماناں
کہے کبیر بھست چھٹکائی دو جگ ہی من مانا

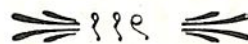
میاں تم سے کہنے کے لئے کوئی بات نہیں بنتی۔ ہم تو مسکین خدائی بندے ہیں، تمہارے جی میں جو آئے وہ سمجھو۔ اللہ دین کا اول اصول ہے اور اس نے زبردستی کی ہدایت نہیں فرمائی ہے۔ تمہارے پیر اور مرشد کون ہیں اور کہاں سے آئے ہیں۔ روزے رکھنے، نماز گزارنے اور کلمہ پڑھنے سے جنت نہیں ملتی۔ کاش کوئی یہ بات جانے کہ ایک دل میں ستر کعبے موجود ہیں۔ اپنے محبوب کو پہچانو، اور دل میں رحم پیدا کرو اور مال و متاع کو حقیر سمجھو۔ بہشت تو تب ملتی جب سائیں (محبوب) کو اپنے پاس محسوس کریں۔ ایک مٹی ہے اور طرح طرح کی شکلیں اور سب میں بْرَہْمْ (ذات مطلق) موجود ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ بہشت اور دوزخ کا تصور من مانا ہے۔

۱۱۹

ابناسی دولہا کب ملہو، بھکتن کے رچھپال
جل اپجی جل ہی سوں نیہا، رٹت پیاس پیاس
میں ٹھاڑی برہن مگ جوؤں پریتم تُمری آس
چھوڑے گیہہ نیہہ لگ تم سوں، بھئی چرن اوْلین
تالا بیْل ہوت گھر بھیتر، جیسے جل بن مین
دوْس نہیں بوکھ رین نہیں ندرا گھر انگنا نہ سُہائے
سیجر یا بیرن بھئی ہم کو، جاگت رین بہائے
ہم تو تمری داسی سجنا، تم ہمرے بھرتار
دین دیال دیا کر آؤ سمرتھ سرجن ہار

अलह अवलि दीनका साहिब, जोर नहीं फुरमाया।
मुरिसद-पीर तुम्हारै है को, कहौ कहाँथैं आया॥
रोजा करैं निवाज गुजारैं कलमैं भिसत न होई।
सत्तरि काबे इक दिल भीतरि जे करि जानै कोई।
खसम पिछाँनि तरस करि जियमैं, माल मर्ती करि फीकी।
आया जाँनि साँईकूं जाँनैं, तब है भिस्त सरीकी।
माटी एक भेष धरि नाँनाँ सबमें ब्रह्म समानाँ।
कहै कबीर भिस्त छिटकाई दोजग ही मनमानाँ॥

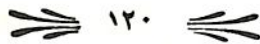
मियाँ, तुमसे कहने के लिए कोई बात नहीं बनती। हम तो सीधे सादे भगवान् के भक्त हैं, तुम्हारे जो जी में आये वह समझो। अल्लाह धर्म का पहला सिद्धान्त है और उसने जबरदस्ती का आदेश नहीं दिया। तुम्हारे पीर और मुर्शद कौन हैं और कहाँसे आये हैं। रोज़े रखने, नमाज़ गुज़ारने और कलमा पढ़ने से जन्नत नहीं मिलती। काश! कोई यह बात जाने कि एक दिल में सत्तर काबे हैं। अपने प्रीतम को पहचानो और दिल में दया उत्पन्न करो और माया को तुच्छ जानो। जन्नत तो तब मिलती है जब साईं (प्रीतम) को अपने पास अनुभव करें। एक मिट्टी हैं और तरह तरह के रूप हैं और सब में ब्रह्म वर्तमान है। कबीर कहते हैं कि जन्नत और दोज़ख (स्वर्ग और नर्क) की धारणा मनमानी है।



अबिनासी दुलहा कब मिलिहौ, भक्तनके रछपाल।
जल उपजी जल ही सों नेहा, रटत पियास पियास।
मैं ठाढ़ी बिरहन मग जोऊँ, प्रियतम तुमरी आस।
छोड़े गेह नेह लगि तुम-सों, भई चरन लवलीन।
ताला-बेलि होति घर भीतर, जैसे जल बिन मीन।
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, घर अंगना न सुहाय।
सेजरिया बैरिन भइ हमको, जागत रैन बिहाय।
हम तो तुमरी दासी सजना, तुम हमरे भरतार।
दीन-दयाल दया करि आओ, समरथ सिरजनहार।

کے ہم پران تجت ہیں پیارے، کے اپنی کرلیو
داس کبیر برہا اتِ باڑھیو ہم کو درسن دیو

میرے لازوال دولھا کب ملوگے. تم تو بھگتوں کے رکھوالے ہو. پانی میں پیدا ہوئی اور پانی ہی سے محبت ہے، پھر بھی میں پیاس پیاس چلاتی ہوں، میں برہ کی ماری کھڑی ہوئی تمہاری راہ دیکھ رہی ہوں، میرے پریتم بس تمہاری ہی آس ہے. تمہاری محبت میں گھر چھوٹ گیا اور میں تمہاری قدموں میں آگئی. گھر کے اندر مین ماہی بے آب کی طرح تڑپتی ہوں. دن کو بھوک نہیں لگتی، رات کو نیند نہیں آتی، اور گھر کا آنگن سہانا نہیں لگتا. اب تو میری سیج میری دشمن ہوگئی ہے. ساری رات آنکھوں میں کٹ جاتی ہے (جاگ جاگ کر رات کو صبح کردیتی ہوں) ساجن میں تو تمہاری کنیز ہوں، تم میرے مالک ہو. اے غریب نواز اب رحم کرو اور آجاؤ تم قادرِ مطلق اور خالق ہو. یا تو مجھے اپنا بنا لو نہیں تو میں جان دے دوں گی. داس کبیر کے لئے جدائی حد سے زیادہ بڑھ گئی ہے. اب مجھے اپنا جلوہ دکھا دو.



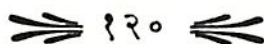
۱۲۰

تن من دھن باجی لاگی ہو
چوپڑ کھیلوں پیو سے رے تن من باجی لگایا
ہاری تو پیہ کی بھئی رے، جیتی تو پیہ مور ہو
چوسریا کے کھیل میں رے جُگ مِلن کی آس
نرد اکیلی رہ گئی رے نہیں جیون کی آس ہو
چار برن گھر ایک ہے رے، بھانتِ بھانتِ کے لوگ
منسا باچا کرمنا کوئی، پریتِ نباہو اور ہو
لکھ چوراسی بھر مت بھر مت پوبے اٹکی آئے
جو ابکے پونا پڑی رے، پھر چوراسی جائے ہو
کہیں کبیر دھرم داس سے رے، جیتی باجی مت ہار
اب کے سُرت چڑائے دے رے، سوئی سُہاگن نار ہو

تن من دھن کی بازی لگی ہوئی ہے. میں اپنے پریتم کے ساتھ چوپڑ کھیل رہی ہوں اور تن من کی بازی لگا دی ہے. اگر ہاری تو پریتم کی ہوجاؤں گی اور جیتی تو پریتم میرے ہوجائیں گے. چوسر کے اس

कै हम प्रान तजति हैं प्यारे, कै अपनी कर लेव।
दास कबीर बिरहा अति बाढ़ेव, हमको दरसन देव।

मेरे अमर दूल्हा, कब मिलोगे ? तुम तो भक्तों के रखवाले हो। पानी में पैदा हुई और पानी ही से प्रेम है, फिर भी मैं प्यास प्यास चिल्लाती हूँ। मैं विरह की मारी खड़ी हुई तुम्हारी राह देख रही हूँ। मेरे प्रीतम बस तुम्हारी ही आस है। तुम्हारे प्रेम में घर छूट गया और मैं तुम्हारे चरणों में आगयी। घर के अन्दर मैं उसी तरह तड़पती हूँ जैसे मछली बिना पानी के। दिन को भूख नहीं लगती रात को नींद नहीं आती और घर का आंगन सुहाना नहीं लगता। अबतो मेरी सेज मेरी दुश्मन होगई है। सारी रात आंखों में कट जाती है (जाग-जाग कर रात को सुबह कर देती हूँ)। साजन मैं तो तुम्हारी दासी हूँ। तुम मेरे मालिक हो। अय दीनदयालु अब दया करो और आजाओ। तुम सर्वशक्तिमान और सृजनहार हो। या तो मुझे अपना बना लो नहीं तो मैं जान दे दूँगी। दास कबीर के लिए विरह हद से गुज़र गया है अब तो दर्शन दे दो।



१२०

तन-मन-धन बाजी लागी हो।
चौपड़ खेलूँ पीवसे रे- तन-मन बाजी लगाया।
हारी तो पियकी भई रे, जीती तो पिय मोर हो।
चौसरियाके खेलमें रे, जुग्ग मिलनकी आस।
नर्द अकेली रह गई रे, नहिं जीवनकी आस हो।
चार बरन घर एक है रे, भाँति भाँतिके लोग।
मनसा-वाचा-कर्मना कोइ, प्रीति निबाहो ओर हो।
लख चौरासी भरमत भरमत, पौपै अटकी आय।
जो अबके पौ ना पड़ी रे, फिर चौरासी जाय हो।
कहैं कबीर धर्मदाससे रे, जीती बाजी मत हार।
अबके सुरत चढ़ाय दे रे, सोई सुहागिन नार हो।

तन मन धन की बाजी लगी हुई है। मैं अपने प्रीतम के साथ चौपड़ खेल रही हूँ, और तन मन की बाजी लगा दी है। अगर हारी तो प्रीतम की हो जाऊंगी और जीती तो प्रीतम मेरे हो जायेंगे। चौसर के इस खेल में जुग मिलन की

کھیل میں جُگ ملن کی آس ہے گوٹ اکیلی رہ جائے تو اس کے بچنے کی امید نہیں رہتی۔ رنگ چار ہیں لیکن آخری گھر ایک ہے، بھانت بھانت کے لوگ ہیں تو کیا۔ خیال، بات اور عمل تینوں سے اپنی محبت نبھاؤ۔ سب چوراسی لاکھ جنم کے چکر میں بھٹک رہے ہیں اور بات ہو پر اٹکی ہوئی ہے۔ اگر اب کے پونہ پڑی تو پھر چوراسی لاکھ جنم لینے پڑیں گے۔ کبیر دھرم داس سے کہتے ہیں کہ جیتی بازی مت ہارنا۔ جو اب کے محبت کو داؤں پہ لگا دے وہی عورت سہاگن ہے۔

۱۲۱

کیسے دن کٹہیں جتن بتائے جئیو
ایہ پار گنگا اوہ پار جُمنا
بچواں مڑئیا ہم کاں چھوائے جئیو
انچرا پھارِ کے کاگج بنائین
اپنی سُرتیا ہیرے لکھائے جئیو
کہت کبیر سنو بھائی سادھو
بہیاں پکرِ کیں رہیا بتائے جئیو

یہ بتاتے جاؤ کے ہجر کے دن کیسے کٹیں گے۔ اس پار گنگا ہے اور اُس پار جمنا۔ بیچ میں ہماری جھونپڑی بنواتے جاؤ۔ آنچل پھاڑ کاغذ بنایا ہے۔ دل پر اپنی صورت کا نقش چھوڑتے جاؤ (اپنا پیار دل پر لکھتے جاؤ) کبیر کہتے ہیں کہ بانہہ پکڑ کر راستہ بتاتے جاؤ۔

۱۲۲

گگن کی اوٹ نسانا ہے
دہنے سور چندرما بائیں، تنکے بیچ چھپانا ہے
تن کی کمان سُرت کا رودا، سبد بان لے تانا ہے
مارت باں بیدھا تن ہی تِن، ست گُرو کا پروانا ہے
ماریو بان گھاؤ نہیں تن میں، جِن لاگا تِن جانا ہے
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، جِن جانا تِن مانا ہے

ग्रास है। गोट अकेली रह जाए तो उसके बचने की आशा नहीं रहती। रंग चार हैं लेकिन अन्तिम घर एक है। भांति भांति के लोग हैं तो क्या, मन, वचन और कर्म तीनों से अपना प्रेम निबाहो। सब चौरासी लाख जनम के चक्कर में भटक रहे हैं। और बात पौ पर अटकी हुई है। अगर अबकी बार पौ न पड़ी तो फिर चौरासी लाख जन्म लेने पड़ेंगे। कबीर धर्मदास से कहते हैं कि जीती बाजी मत हारना। जो अबकी बार प्रेम को दांव पर लगादे वही औरत सुहागन है।

१२१

कैसे दिन कटिहै जतन बताये जइयो,
एहि पार गंगा ओहि पार जमुना,
बिचवाँ मड़इया हमकाँ छवाये जइयो।
अँचरा फारिके कागज बनाइन,
अपनी सुरतिया हियरे लिखाये जइयो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो
बहियाँ पकरिकें रहिया बताये जइयो।

यह बताते जाओ कि विरह के दिन कैसे कटेंगे। इस पार गंगा है और उस पार जमुना। बीच में हमारी झोंपड़ी बनवाते जाओ। आंचल फाड़ कर कागज़ बनाया है। दिल पर अपनी सूरत का नक़्श छोड़ते जाओ (अपना प्यार दिल पर लिखते जाओ)। कबीर कहते हैं कि बांह पकड़कर रास्ता बताते जाओ।

१२२

गगनकी ओट निसाना है।
दहिने सूर चंद्रमा बायें, तिनके बीच छिपाना है।
तनकी कमान सुरतका रोदा, सब्द-बान ले ताना है।
मारत बान बेधा तन ही तन, सतगुरुका परवाना है।
मारयौ बान घाव नहिं तनमें, जिन लागा तिन जाना है।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जिन जाना तिन माना है॥

نشان آسمان کی اوٹ ہے۔ داہنی طرف سورج ہے بائیں طرف چاند اور نشان بیچ میں چھپا ہوا ہے۔ تن کی کمان اور عشق کی ڈوری اور شبد (لفظ = نام = صوت سرمدی) کا تیر تان لیا ہے، اور اس تیر نے تن کو چھید ڈالا ہے لیکن زخم دکھائی نہیں دیتا۔ جنہوں نے زخم کھایا ہے وہی جانتے ہیں۔ بھائی سادھو سنو کبیر کہتے ہیں جو جان گئے ہیں وہ اس بات کو مانتے ہیں۔

۱۲۳

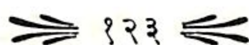
سوچ سمجھ ابھمانی، چادر بھئی ہے پرانی
ٹکڑے ٹکڑے جوڑ جگت سوں، سی کے انگ لپٹانی
کر ڈاری میلی پاپن سوں لوبھ موہ میں سانی
نا یہہ لگیو گیان کے صابن، نا دھوئی بھل پانی
ساری عمری اوڑھتے بیتی، بھلی بری نہیں جانی
سنکا مان جان جیہ اپنے، یہہ ہے چیج برانی
کہت کبیر دھر راکھ جتن سے پھیر ہاتھ نہیں آنی

اے مغرور ذرا یہ سوچ کہ تری چادر پرانی ہوچکی ہے۔ بڑے جتن سے ٹکڑے جمع کر کے سی لیے ہیں اور پھر انہیں جسم سے لپیٹ لیا ہے۔ تو نے گناہوں سے یہ چادر میلی کردی ہے اور لالچ سے اسے گندہ کردیا ہے۔ نہ اس میں تو نے گیان کا صابن لگایا نہ اسے اچھی طرح پانی سے دھویا۔ ساری عمر اوڑھتے بیت گئی اور تو نے بھلے برے کی تمیز نہیں کی۔ اور شک اور شبہ میں مبتلا یہ سمجھ لے کہ یہ دوسرے کی چیز ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اسے جتن سے رکھنا۔ یہ پھر ہاتھ نہیں آئے گی۔ (چادر سے مراد زندگی ہے)

۱۲۴

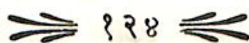
ان پرایت وست کو کہا تجے، پرایت کو تجے سو تیاگی ہے
سن اصیل ترنگ کہا پھیرے، اپھتر پھیرے سو باگی ہے
جگ بھوکا گاونا کیا گاوے، انبھو گاوے سو راگی ہے
بن گیہہ کی باسنا ناس کرے، کبیر سوئی بیراگی ہے

निशाना आकाश की ओर है। दाहिनी ओर सूरज है और बायीं ओर चांद और निशाना बीच में छुपा हुआ है। तन का धनुष और प्रेम की डोरी और शब्द का तीर तान लिया है और इस तीर ने तन को छेद डाला है, लेकिन घाव दिखाई नहीं देता। जिन्होंने घाव खाया है वही जानते हैं। भाई साधु सुनो कबीर कहते हैं कि जो जान गये हैं वह इस बात को मानते हैं।



सोच-समुझ अभिमानी, चादर भई है पुरानी।
टुकड़े टुकड़े जोड़ि जगत-सों, सीके अँग लिपटानी।
कर डारी मैली पापन-सों, लोभ-मोहमें सानी।
ना यहि लग्यो ज्ञानकै साबुन, ना धोई भल पानी।
सारी उमिर ओढ़ते बीती, भलि बुरी नहिं जानी।
संका मान जान जिय अपने, यह है चीज बिरानी।
कहत कबीर धरि राखु जतनसे, फेर हाथ नहिं आनी॥

अय अभिमानी ज़रा सोच कि तेरी चादर पुरानी हो चुकी है। बड़े जतन से टुकड़े जमा करके सी लिये हैं और फिर अपने शरीर से लपेट लिया है। तूने इस चादर को पापों से मैला कर दिया है और लालच से गन्दा। न इसमें तूने ज्ञान का साबुन लगाया और न उसे पानी से अच्छी तरह धोया। सारी उम्र इसे ओढ़ते बीत गई और तूने भले बुरे को नहीं पहचाना। अरे मन में शंका रखनेवाले यह समझ ले कि यह दूसरों की चीज़ है। कबीर कहते हैं कि इसे जतन से रखना। यह फिर हाथ नहीं आयेगी। (चादर का शब्द जिन्दगी के लिये प्रयुक्त है।)



अनप्रापत वस्तुको कहा तजे, प्रापतको तजे सो त्यागी है।
सु असील तुरंग कहा फेरे, अफतर फेरे सो बागी है।
जगभवका गावना क्या गावै, अनुभव गावै सो रागी है।
बन गेहकी बासना नास करै, कब्बीर सोई बैरागी है॥

جو چیز حاصل نہیں ہوئی اسے کیا ترک کرتا ہے، جو حاصل ہو چکا ہے اسے ترک کرنے والا تیاگی ہے. اصیل گھوڑے کو کیا پھیرنا، جو ڑیل گھوڑے کو پھیرے وہ بگدھری جانتا ہے. دنیا کے تجربے کا گانا کیا گاتا ہے، اصلی راگ جاننے والا وہ ہے جو اپنے تجربے کا گیت گاتا ہے. کبیر کہتے ہیں کہ بیراگی وہ ہے جو گھر اور جنگل دونوں کی خواہش کو ترک کردے.

۱۲۵

توکو پیو ملیں گے، گھونگھٹ کے پٹ کھول رے
گھٹ گھٹ میں وہی سائیں رمتا، کٹُک بچن مت بول رے
دھن جوبن کو گرب نہ کیجے، جھوٹا پنچ رنگ چول رے
سُن محل میں دِینا بارلے، آسا سوں مت ڈول رے
جوگ جُگت سورنگ محل میں، پیہ پائی انمول رے
کہے کبیر آنند بھیو ہے، باجت انہد ڈھول رے

تجھ کو پریتم ملیں گے، اپنے گھونگھٹ کے پٹ کھول دے. ہر جسم میں وہی ایک مالک آباد ہے، کسی کے لئے کڑوا بول کیوں بولتا ہے. دولت اور جوانی کا غرور مت کر کیونکہ یہ پانچ رنگ کا چولا جھوٹا ہے. شونیہ کے محل میں چراغ جلالے اور امید کا دامن ہاتھ سے مت چھوڑ. اپنے یوگ کے حربے سے رنگ محل میں تجھے انمول پریتم ملے گا. کبیر کہتے ہیں کہ صوتِ سرمدی کا ساز بج رہا ہے اور مسرت ہی مسرت ہے.

۱۲۶

دُئی جگدیس کہاں تے آیا، کہہ کوتے بھرمایا
الّٰہ، رام، کریما، کیسو، ہجرت نام دھرایا
گہنا ایک کنک تیں گڑھنا، اِن منہہ بھاؤ نہ دوجا
کہن سُنن کو دُرکر پاپن، اِک نماج اِک پوجا
وہی مہادیو وہی محمد، برھما، آدم کہئے
کو ہندو کو ترک کہاوے، ایک جمیں پر رہئے

जो वस्तु प्राप्त नहीं हुई उसे क्या त्यागना। जो प्राप्त हो चुका है उसे त्यागने वाला ही त्यागी है। असील घोड़े को क्या फेरना। जो अड़ियल घोड़े को फेरे वही बागी है। दुनिया के अनुभव के गीत क्या गाता है। असली रागी वह है जो अपने अनुभव के गीत गाता है। कबीर कहते हैं कि बैरागी वह है जो घर और जंगल दोनों की इच्छा को त्याग दे।

१२५

तोको पीव मिलेंगे घूँघटके पट खोल रे।
घट घटमें वही साईं रमता, कटुक बचन मत बोल रे।
धन जोबनको गरब न कीजै, झूठा पंचरंग चोल रे।
सुन्न महलमें दियना बार ले, आसासों मत डोल रे।
जोग जुगत सो रंग महलमें, पिय पाई अनमोल रे।
कहै कबीर आनंद भयो है, बाजत अनहद ढोल रे।

तुझको प्रीतम मिलेंगे, अपने घूँघट के पट खोल दे। हर शरीर में वही एक मालिक आबाद है। किसी के लिए कड़वा बोल क्यों बोलता है। धन और यौवन पर अभिमान मत कर क्योंकि यह पांच रंग का चोला झूठा है। शून्य के महल में चिराग जला और उम्मीद का दामन हाथ से मत छोड़। अपने योग के जतन से तुझे रंगमहल में अनमोल प्रीतम मिलेगा। कबीर कहते हैं कि अनहद का साज बज रहा है और चारों ओर आनन्द ही आनन्द है।

१२६

दुई जगदीस कहाँते आया, कहु कवने भरमाया।
अल्लह-राम-करीमा केसो, हजरत नाम धराया॥
गहना एक कनकतें गढ़ना, इनि महँ भाव न दूजा।
कहन-सुननको दुर करि पापिन, इक निमाज इक पूजा॥
वही महादेव वही महंमद, ब्रह्मा-आदम कहिये।
को हिन्दूको तुरुक कहावै, एक जिमींपर रहिये॥

وید کتیب پڑھے وِے کُتُبا، وے مولانا وے پانڈے
بیگر بیگر نام دھرائے، ایک مٹیا کے بھانڈے
کہیں کبیر وے دونوں بھولے، رام نہ کنہوں نہ پایا
وے کھستی وے گائے کٹاویں، باد نہ جنم گنوایا

دو جگدیش (دنیا کے مالک) کہاں سے آئے. تجھے اس بھرم میں کس نے مبتلا کردیا ہے. اللہ، رام، رحیم الگ الگ کیسے ہوسکتے ہیں. ایک سونے سے سب زیور بنائے گئے ہیں ان میں دوسری قدر و قیمت نہیں ہے. یہ سب، ایک نماز، ایک پوجا، کہنے سننے کی باتیں ہیں، ان کو اپنے وجود سے دور کردے. وہی مہادیو ہے وہی محمد، جو برھما ہے اس کو آدم کہنا چاہئے. کوئی ہندو کہلاتا ہے اور کوئی مسلمان لیکن رہتے ایک زمین پر ہیں. ایک وید کی کتابیں پڑھتا ہے اور ایک خطبہ، ایک مولانا کہلاتا ہے اور ایک پنڈت. الگ الگ نام رکھ لیے ہیں، ویسے برتن سب ایک ہی مٹی کے ہیں. کبیر کہتے ہیں کہ وہ دونوں گمراہ ہیں، رام (خدا) کو کسی نے نہیں پایا. ایک بکرا کاٹتا ہے دوسرا گائے ذبح کرتا ہے اور دونوں اس جھگڑے میں اپنی زندگی گنواتے ہیں.

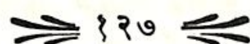
۱۲۷

من تم ناہک دُند مچائے
کر اسمان چُھوو نہ کاہو، پاتی پھول چڑھائے
مورت سے دنیا پھل مانگے، اپنے ہاتھ بنائے
یہ جگ پوجے دیو دیہرا، تیرتھ ورت انہائے
چلت پھرت میں پاؤں تھکت ہے، یہ دُکھ کہاں سمائے
جھوٹھی کایا جھوٹھی مایا، جھوٹھے جھوٹھے جھوٹھل کھائے
بانجھن گائے دودھ نہ دیہے، ماکھن کہاں سے پائے
سانچے کے سنگ سانچ بستُ ہے، جھوٹھے مار ہٹائے
کہے کبیر جنہیں سانچ وستُ ہے سہجے درسن پائے

اے من تو ناحق دُند مچارہا ہے. پھول پتی چڑھا کے بھی کوئی آسمان کو ہاتھوں سے نہیں چھوسکتا. دنیا اپنے ہاتھ کی بنائی ہوئی مورتی سے پھل مانگتی ہے، اور دیوتاؤں کی چوکھٹ پوجتی ہے اور تیرتھ پر جاتی

वेद-कितेब पढ़े वे कुतुबा, वे मौलना वे पाँडे।
बेगरि बेगरि नाम धराये, एक मटियाके भाँडे॥
कहँहि कबीर वे दूनौं भूले, रामहिं किनँहु न पाया।
वे खस्सी वे गाय कटावैं, बादहिं जन्म गँवाया॥

दो जगदीश कहाँ से आये। तुझे इस भ्रम में किसने डाल दिया। अल्लाह, राम, रहीम अलग अलग कैसे हो सकते हैं। एक ही सोने से सब जेवर बनाये गये हैं उनमें दो भाव कैसे हो सकते हैं। एक नमाज, एक पूजा यह सब कहने सुनने की बातें हैं। इनको अपने वजूद से दूर करदे। वही महादेव है और वही महम्मद। जो ब्रह्मा है उसी को आदम कहना चाहिये। कोई हिन्दू कहलाता है और कोई मुसलमान लेकिन रहते सब एक ही जमीन पर हैं। एक वेद पढ़ता है और दूसरा खुतबा। एक मौलाना कहलाता है और एक पण्डित। नाम अलग अलग रख लिये हैं, वैसे बरतन सब एक ही मिट्टी के हैं। कबीर कहतेहैं कि वे दोनों भटक गये हैं। राम (खुदा) को किसी ने नहीं पाया। एक बकरा काटता है और दूसरा गाय जिबह करता है और दोनों इसी झगड़े में अपना जीवन व्यर्थ गंवाते हैं।



मन, तुम नाहक दुंद मचाये।
करि असमान छुवो नहिं काहू, पाती फूल चढ़ाये।
मूरतिसे दुनिया फल माँगै, अपने हाथ बनाये।
यह जग पूजै देव-देहरा, तीरथ-वर्त-अन्हाये।
चलत-फिरतमें पाँव थकित भे, यह दुख कहाँ समाये।
झूठी काया झूठी माया, झूठे झूठे झूठल खाये।
बाँझिन गाय दूध नहिं देहै, माखन कहँसे पाये।
साँचेके सँग साँच बसत है, झूठे मारि हटाये।
कहै कबीर जहँ साँच वस्तु है, सहजै दरसन पाये॥

मन तू व्यर्थ ही दुंद मचा रहा है। फूल-पत्ती चढ़ा कर भी कोई आकाश को हाथों से नहीं छू सकता। दुनिया अपने हाथ की बनाई हुई मूर्ति से फल मांगती है, और देवी देवताओं की चौखट पूजती है। तीर्थयात्रा पर जाती है, व्रत

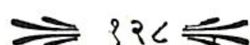
ہے ، برت رکھتی ہے اور اشنان کرتی ہے ۔ اس چکر میں چلتے چلتے پاؤں تھک جاتے ہیں ۔ آخر یہ دکھ کہاں سمائے گا ۔ کایا بڑی جھوٹی ہے ، مایا بھی جھوٹی ہے ، ناحق تو جھوٹھن کھاتا پھرتا ہے ۔ بانجھ گائے جب دودھ ہی نہیں دیگی تو تجھے مکھن کہاں سے ملے گا ۔ سچے کے ساتھ سچا ہی بستا ہے ۔ جھوٹے کو مار کے بھگا دو ۔ کبیر کہتے ہیں کہ جہاں صداقت بستی ہے وہاں دیدار اور جلوہ بڑا بے تکلف ہوتا ہے ۔

۱۲۸

یہ جگ اندھا میں کیہہ سمجھاوں
اک دُئی ہوں انہیں سمجھاوں سب ہی بھلانا پیٹ کے دھندا
پانی کے گھوڑا پون اسوروا ڈھرکِ پرے جس اوس کے بُندا
گھری ندیا اگم بہے دھروا کھیون ہارا پڑگا پھندا
گھر کی وستُ نکٹ نتہہِ آوت دِینا بارِ کے ڈھونڑھت اندھا
لاگی آگ سکل بن جرِ گا بِن گُرگیان بھٹکیا بندا
کہے کبیر سنو بھائی سادھو اک دن جائے لنگوٹی جھار بندا

یہ ساری دنیا اندھی ہے ۔ میں کس کو سمجھاؤں ۔ ایک دو ہوں تو میں انہیں سمجھانے کی کوشش بھی کروں ۔ یہاں تو سب ہی پیٹ کے دھندے میں بھٹکتے پھررہے ہیں ۔ پانی کے گھوڑے پر ہوا کا سوار ایسے ٹپک جاتا ہے جیسے اوس کی بوند ۔ (حقیقت کی) اتھاہ ندی بہ رہی ہے اور اس کی دھار کے بیچ میں کھیون ہار پھنس گیا ہے ۔ گھر کی چیز کے قریب نہیں جاتا لیکن اندھا چراغ جلاکر ادھر ادھر ڈھونڈھتا پھرتا ہے ۔ آگ لگی اور سب کچھ جل گیا ۔ گروکے گیان (عرفان حق) کے بغیر بندہ بھٹک رہا ہے ۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ یہ بندہ ایک دن لنگوٹی جھاڑ کے رخصت ہوجائے گا ۔

रखती है और स्नान करती है। इसी चक्कर में चलते चलते पांव थक जाते हैं। आख़िर यह दुख कहां समायेगा। काया भी झूठी है, माया भी झूठी है। तू व्यर्थ ही झूठन खाता फिरता है। बांझ गाय जब दूध ही नहीं देगी तो तुझे मक्खन कहां से मिलेगा? सच्चे के साथ सच्चा ही बसता है। झूठे को मार कर भगा दो। कबीर कहते हैं कि जहां सत्य का वास है वहां दीदार और जलवा बड़ा बेतकल्लुफ़ होता है।



यह जग अंधा मैं केहि समुझावों।
इक-दुई हों उन्हें समुझावों सब ही भुलाना पेटके धंधा।
पानीके घोड़ा पवन असवरवा ढरकि परै जस ओसके बुंदा।
गहरी नदिया अगम बहै धरवा खेवनहारा पड़िगा फंदा॥
घरकी वस्तु निकट नहिं आवत दियना बारिके ढूँढ़त अंधा॥
लागी आग सकल बन जरिगा बिन गुरुग्यान भटकिया बंदा।
कहै कबीर सुनो भई साधो इक दिन जाय लंगोटी झार बंदा॥

यह सारी दुनिया अंधी है। मैं किसको समझाऊँ। एक दो हों तो मैं उन्हें समझाने की कोशिश भी करूँ। यहां तो सब ही पेट के धन्दे में भटकते फिर रहे हैं। पानी के घोड़े पर हवा का सवार ऐसे टपक जाता है जैसे ओस की बूंद। सत्य की अथाह नदी बह रही है और उसकी धारा के बीच में खेवनहार फंस गया है। अंधा घर की वंस्तु के निकट नहीं जाता मगर चिराग़ जला कर इधर-उधर ढूंढता फिरता है। आग लगी और सब कुछ जल गया। गुरु के ज्ञान के बिना बंन्दा भटक रहा है। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि यह बन्दा एक दिन लंगोटी झाड़कर रवाना हो जायेगा।

حواشی

(۱) اسلامی عقیدے میں خدا رگِ جان سے بھی زیادہ قریب ہے ، تصوف کی روایات میں اور اردو فارسی شاعری میں اس کی بے شمار مثالیں ملیں گی :

دل کے آئینے میں ہے تصویر یار
اک ذرا گردن جھکائی دیکھ لی

(نا معلوم)

جنہیں میں ڈھونڈھتا تھا آسمانوں میں زمینوں میں
وہ نکلے میرے ظلمت خانۂ دل کے مکینوں میں

(اقبال)

نہ تو اندر حرم گنجی ، نہ در بُت خانہ می آئی
و لیکن سوئے مشتاقان چہ مشتاقانہ می آئی
قدم بیباک تر نہ در حریمِ جان مشتاقان
تو صاحب خانۂ آخر چرا دزدانہ می آئی

(ترجمہ : تو کعبے میں سماتا ہے اور نہ بت خانے میں . لیکن اپنے چاہنے والوں کے پاس کتنا خوش ہوکر آتا ہے ، ذرا چاہنے والوں کے دل [حریم جان = خلوت خانۂ روح] میں نڈر ہوکر قدم رکھ . آخر تو اس گھر کا مالک ہے پھر چوروں کی طرح آنے کی کیا ضرورت ہے) (اقبال)

بنگال کے باؤل بھگتوں کے یہاں بھی یہ تصور عام ہے :

« اے دل میں مکے اور مدینے کیوں جاؤں
« مرا محبوب (مونیر مانُش) تو میرے پہلو میں ہے
« اس سے انجان ہوکر ، اس سے دور رہ کر میں دیوانہ ہوجاتا ہوں
« مندر اور مسجد میں عبادت کہاں

« ہر قدم پر مکہ ہے ، ہر قدم پر کاشی
« میری زندگی کا ایک ایک پل مبارک ہے »
(اے . کے . سین کی انگریزی کتاب «ہندو ازم» سے ترجمہ)

اس تصور کی ابتدا اُپنی شد اور ویدانت سے ہوئی ہے اور یہ شاعری اور فلسفے کے غیر مذہبی (Secular) تصور کی طرف انسان کا پہلا قدم ہے جس میں مذہبی کتابوں اور عبادت خانوں کو چھوڑ کر انسان نے انسان کی روح کے اندر جھانکنے کی اور اس کی ذات میں دلچسپی لینے کی کوشش کی ہے ۔

(۲) سنت ریداس = اصلی نام روی داس ہے ۔ کبیر کے گرو سوامی رامانند کے بارہ چیلوں میں ریداس بھی ایک ہیں جو ذات کے چمار تھے ، وہ بھی غالباً کاشی کے رہنے والے تھے ، کوئی مکمل کتاب یا مجموعہ نہیں ملتا ، لیکن کچھ نظمیں (غالباً چالیس پد) سکھوں کی مقدس کتاب گرو گرنتھ صاحب میں شامل ہیں ۔

یہ عجیب اور دلچسپ بات ہے کہ قرون وسطیٰ کی وہ انسان دوست تحریک جس نے پہلی بار انسانی برادری کو ایک سمجھا اور مذہب کو عشق بنادیا اور جو یورپ میں مسٹی -زم ، ایران اور اسلامی دنیا میں تصوف اور ہندوستان کے ہندوؤں میں بھگتی اور چین میں چی این اور جاپان میں ژن (دھیان کی بگڑی ہوئی شکل) کے نام سے مشہور اور مقبول ہوئی ایک ایسی تحریک تھی جس کی ظاہری شکلوں پر ان علاقوں کے مذہب کا رنگ چڑھا ہوا تھا لیکن اندرونی طور سے یعنی اپنے معنی اور مقصد کے اعتبار سے ایک تھی ، شروع سے آخر تک اس عہد کے دستکاروں کے ہاتھوں میں رہی ، عیسائی مسٹک پال = خیمہ دوز تھے ، منصور حلاج بڑھئی اور خود کبیر جولاہے تھے ۔

ایک عیسائی پادری نے حضرت عیسیٰ کو بھی دستکاروں کے ضمرے میں شامل کردیا ہے « وہ ہاتھ جو رحمتِ خداوندی بن کر لوگوں کے سروں پر سایہ افگن ہوتے تھے ، جو نابینا آنکھوں کو بینائی عطا کرتے تھے اور جذامیوں کو اچھا کردیتے تھے ، جن کی ہتھیلیاں صلیب پر زخمی ہوگئی تھیں ، وہ ہاتھ محنت سے چور اور پسینے سے تر ہوچکے تھے ،

وہ کیلیں ٹھوکنا جانتے تھے ۔ وہ ایک سادہ محنت کش کے ہاتھ تھے ۔ حضرت عیسیٰ نے انسانی روح کو سُدھارنے اور نکھارنے سے پہلے مادے کو اپنے ہاتھوں سے سنوارا تھا »

(Giovanni Papini "Life of Christ")

ڈاکٹر رادھا کُمد مکرجی نے اپنی انگریزی کتاب «ہندو سویلایزیشن» (مطبوعہ بھارتی ودیا بھون ، بمبئی ، جلد ۱ صفحہ ۱۵۵) میں ہندوستان کی مختلف جاتیوں اور ورنوں کے فرائض بیان کیے ہیں « براھمن = تعلیم دینا ، قربانی اور مذہبی رسوم ادا کرنا ، دان یا خیرات وصول کرنا ، چھتری (کشتری) = حفاظت اور حکومت کرنا ، ویش = تجارت اور کھیتی کرنا ، جانور پالنا ، بینکنگ ۔ شودر = سچائی ، صفائی ، انکسار ، آچمن منتر کے بغیر اشنان ، لاشیں اٹھانا اور جلانا ، اپنی ہی جاتی میں شادی کرنا ، اونچی جاتیوں کی خدمت کرنا اور شِلپ ورتی یعنی دستکاری کرنا ، نائی ، دھوبی ، مصور ، بڑھئی ، لوہار کا پیشہ اختیار کرنا » ۔

ایسی صورت میں ظاہر ہے کہ سماج کی ترقی ، جاگیرداری کے زوال اور تجارت اور ابتدائی سرمایہ داری کی نشو و نما کے ساتھ ساتھ ویش اور شودر کا درجہ بڑھ گیا کیونکہ تجارت ، کھیتی ، جانور پالنا اور بینکنگ ، ویش کے ہاتھوں میں تھی اور تمام دستکاریاں شودر کے ہاتھ میں ، بھگتی کی تحریک کے ساتھ ساتھ شاعری اور فلسفے بھی جو برہمنوں کی میراث تھے ، دستکاروں تک پہونچ گئے ۔ اس کا آخری اور بڑا شاعر اور مفکر کبیر ہے ۔

سُپچ رشی = کبیر پنتھی گرنتھوں میں یہ بتایا گیا ہے کہ کلجُگ کی ابتدا میں جب کبیر صاحب کا ظہور ہوا تو کاشی (بنارس) کے سُدرشن نامی مہاتما نے کبیر سے دیکشا (شاگردی) لی ۔ وہ ذات کے بھنگی تھے ۔ پنڈت ہزاری پرشاد دوئی ویدی نے اپنی ہندی کتاب « کبیر » میں لکھا ہے کہ مہا بھارت کی لڑائی جیت لینے کے بعد یُدھشٹر نے بھائیوں اور عزیزوں کا خون کرنے کے گناہ سے نجات پانے کے لئے ایک بہت بڑا یگیہ کیا ۔ سری کرشن نے اس یگیہ میں ایک گھنٹا باندھ دیا اور کہا کہ جب گھنٹا سات بار بجے تو سمجھنا چاہیے کہ گناہ سے نجات مل گئی ۔ ہزاروں سادھو اور براھمن بھوجن کرچکے مگر گھنٹا نہیں بجا ۔

تب کرشن جی کی ہدایت پر بھیم کاشی کے سُدرشن بھنگی کو بلانے گئے۔ بھیم کے غرور کی وجہ سے سُدرشن نے آنے سے انکار کردیا۔ تب یدھشٹر خود جاکر انہیں بلا لائے اور بھوجن کرایا۔ ان کے بھوجن کرنے پر گھنٹا بجا۔ پھر سب لوگ کرشن جی کے کہنے پر پریاگ (الہ آباد) گئے۔ وہاں سنگم کے پانی میں سب نے اپنا اپنا عکس دیکھا۔ صرف سُدرشن بھنگی کا عکس انسان کا تھا باقی سب کے عکس کتے اور دوسرے جانوروں سے ملتے تھے۔

سنتوں کی کوئی ذات نہیں ہوتی اس خیال کو صوفیانہ فکر نے اس طرح ادا کیا ہے:

بندۂ عشق شدی، ترکِ نسب کن جامی
که دریں راه فلان ابن فلان چیزے نیست

(ترجمہ: اے جامی اب عشق کی غلامی اختیار کی ہے تو باپ دادا کا نام بھول جاؤ کیونکہ اس راستے میں یہ بات کہ فلاں فلاں کا بیٹا ہے بے معنی ہے۔):

باز می گویم و از گفتۂ خود دل شادم
بندۂ عشقم و از ہر دو جہان آزادم

(ترجمہ: میں یہ بات پھر دہرا رہا ہوں اور اس بات سے خوش ہوں کہ میں عشق کا غلام ہوں اور دونوں جہان کی پابندیوں سے آزاد ہوں) حافظ شیرازی۔

(۳) کرم کی پھانس = تمام مذاہب میں یہ عقیدہ، عام ہے کہ اخلاقی قوانین خدا یا دیوتاؤں کے بنائے ہوئے ہیں اور ان پر عمل کرنا انسان کا فرض ہے۔ اخلاقیات کے اس تصور میں پہلی بنیادی تبدیلی گوتم بُدھ (پانچ سو قبل مسیح) نے کی جن کی تعلیم میں اخلاقی قوانین خود انسان بناتا ہے اور اُن کو اپنے اوپر عائد کرتا ہے۔ جان نہ لینا خواہش سے بچنا، جھوٹ اور نشے سے پرہیز کرنا، یہ سب خود اختیاری فرائض ہیں جن سے کوئی ثواب نہیں ملتا بلکہ شعور اور چینتا پر جلا ہوتی ہے یا وہ پردے اُٹھ جاتے ہیں جو شعور اور چینتا پڑے ہوئے ہیں ان فرائض کو ادا کرنا یا ان پر عمل کرنا اچھا کرم ہے اور اس کے

مقابلے پر برا کرم ہے اور دونوں سے عمل اور رد عمل کا سلسلہ شروع ہوتا ہے جو لامتناہی ہے۔ لیکن ہر کرم چاہے وہ اچھا ہو یا برا ہو ایک طرح کا الجھاوا ہے، انسان کی گردن میں پڑی ہوئی رسّی ہے جو اسے عمل اور ردّ عمل کے لامتناہی سلسلے میں کھینچے لئے جا رہی ہے، اسی کو کبیر نے «کرم کی پھانسی» (پھانس) کہا ہے۔ اس لئے بدھ گیان کی اعلیٰ منزلوں میں اپنے آپ کو اچھے اور برے دونوں طرح کے کرم کے پھندوں سے آزادکر لینا شامل ہے۔ یہاں سے نروان کی منزلیں شروع ہوتی ہیں بھگتی تحریک پر اور سنت کویوں کے یہاں بُدھ دھرم کے اس اخلاقی نظرئے کی پر چھائیں اکثر مل جاتی ہے۔ اس خیال کو کبیر نے نظم ٦ میں اس طرح پیش کیا ہے کہ عمل صرف گیان حاصل کرنے کے لئے ہے۔ گیان حاصل ہوجانے کے بعد عمل اسی طرح بیکار اور غیر ضروری ہو جاتا ہے جس طرح پھل آجانے کے بعد پھول کی ضرورت نہیں رہتی۔

اس نظم کا ایک پہلو اور بھی ہے جو کسی حد تک محدود ہے۔ اس میں شیخ سعدی اور اقبال، کبیر کے ہم خیال ہیں:

تو کارِ زمیں را نکو ساختی
که با آسمان نیز پرداختی

سعدی

(ترجمہ: کیا تو نے زمین کا کام سنوار لیا ہے جو آسمان کی طرف پرواز کر رہا ہے؟)

اگر نہ سہل ہوں تجھ پر زمیں کے ہنگامے
بُری ہے مستیِ اندیشہ ہائے افلا کی

(اقبال)

(۴) سہس کنول (سہسر = ہزار) ہزار پنکھڑیوں کا کنول۔ ہائن رِش زمر (Heinrich Zimmer) نے اس کی تشریح اس طرح کی ہے کہ تخلیق، تخریب اور تخلیقِ نو کا ازلی اور ابدی عمل جاری ہے وہ مہاپُرش، وہ سو یم بَھو، وہ ذات مطلق جسے وشنو کہتے ہیں اور جو کائنات (Cosmos) کے اصولِ اول، بنیادی پانی کی تاریک سطح پر

تیر رہا ہے ، جب اپنے لطف و کرم سے ، اپنی خوشنودی کی خاطر آفاق (Universe) کو پھر سے تخلیق کرنا چاہتا ہے تو اس کی ناف سے ایک تنہا کنول باہر نکلتا ہے جس میں خالص سونے کی ہزار پنکھڑیاں سورج کی آب و تاب سے جگمگاتی ہیں اور یہ خالقِ آفاق کنول کے ساتھ ساتھ برھمـاؔ کو بھی باہر نکالتا ہے جو کنول کے بیچوں بیچ بیٹھا ہوا تخلیقی طاقتوں کے نور سے جگمگا رہا ہے .

یہ برھما ایک ایسا یوگی ہے جسے اپنے اوپر اور کائنات اور آفاق کی طاقتوں پر پورا پورا قابو ہے . جب کوئی انسان اپنی تپسیا سے روحانی طور پر اعلیٰ مقام حاصل کر لیتا ہے تو وشنو اس کا اعتراف کرتا ہے اور وہ شخص بھی جلیل القدر یوگی ہو جاتا ہے اور تخلیق کائنـات و آفاق کے اس سنہرے سنگھاسن ، سہس کنول ، پر بیٹھ کر لا محدود حسن (روپ اپار) کا جلوہ دیکھ سکتا ہے .

(کبیر کے دوہے کی معنویت یہیں تک ہے ، لیکن یہ بات دلچسپی سے خالی نہیں ہے کہ برھما کے کنول کو زمین کا ہیولیٰ بھی مانا جاتا ہے بلکہ وہ خود زمین کی دیوی دھرتی ماتا ہے . ہند و صنمیـات (Iconography) اور اسطوری نشانات (Mythologlical symbols) کے اعتبـار سے اس کنول کی پنکھڑیوں کی اوپری سطح پر وہ سر زمینیں آباد ہیں جن تک رسائی ممکن نہیں . پنکھڑیوں کی نچلی پشت پر سانپوں اور جنوں (یکش) کی بستیاں ہیں اور اس پھول کے دل (وسط) میں وہ براعظم ہے جس کا ایک حصہ بھارت ورش ہے .

(ایک اور علامت = کائیناتی گہرائیوں (Cosmic Abys) میں بھرے ہوئے تاریک پانیوں پر زمین اس طرح تیرتی ہے جیسے لا شعور کے تاریک سمندر میں شعور کا جگمگاتا ہوا کنول تیر رہا ہو . یہ کنول تخلیق کا دروازہ کائنات کی کوکھ ہے . یہ تخلیقی اصول کی پہلی پیدائش ہے اس کے دل سے برھما پیدا ہوتا ہے کبھی پانی عورت ہے اور کنول تخلیقی عضو اور کبھی خود کنول دھرتی ماتا اور نمی کی دیوی ہے .

(ویدوں کی ابتدائی روایات میں کنول کی دیوی کا ذکر نہیں ہے . آریوں نے بعد میں اسے قدیم ہندوستان کے غیر آریائی باشندوں کی عوامی تہذیب اور عوامی روایات سے اخذ کیا اور اسے شری اور لکشمی کے ناموں سے یاد کیا ، لکشمی جو دولت کی دیوی ہے کنول کی علامت

رکھتی ہے اس لئے اس کو کنول کی بیٹی — « پدم سنبھووا » — کہا گیا ہے ۔ زمانۂ ما قبل تاریخ کے قدیم غیر آریائی ہندوستان میں وہ چاول اور دھان کی دیوی ہے ۔ اب وہ ہندوستانی دیومالا کی سب سے زیادہ محبوب ، مقبول ، پیاری اور ہردلعزیز دیوی ہے ۔ جو تصویروں میں کنول کے پھول پر کھڑی ہوئی نظر آتی ہے ۔ کبھی کبھی اس کے بازو سے کنول کا پھول اور اس کا ڈنٹھل زیور کی طرح لپٹا ہوتا ہے ، بُدھ آرٹ میں کنول پر بیٹھے ہوئے بھگوان بُدھ یا اپنے ہاتھوں میں کنول کا پھول لیے ہوئے بودھی ستوّ — پدم پانی — زمانۂ ما قبل تاریخ کے قدیم ترین ہندوستان کی روایات سے اپنا روحانی رشتہ جوڑ رہے ہیں) ۔

کبیر کے اس شعر میں جو خیال ہے وہ فارسی اور اردو کے شعرا کے یہاں بھی عام ہے اور صوفی روایات سے آیا ہے جن پر بھگتی اور ویدانت کا اچھا خاصا اثر ہے :

اے تماشا گاہِ عالم روئے تُست
تو کجا بہر تماشا می روی

(ترجمہ : ساری دنیا تیرے چہرے کا تماشا دیکھتی ہے ۔ تو خود کہاں تماشا دیکھنے جا رہا ہے) سعدی

ستم است اگر ہوست کشد کہ بسیر سرو و سمن درآ
تو ز غنچہ کم نہ دمیدۂ ، درِ دل کشا ، بچمن درآ

(ترجمہ : کیسے ستم کی بات ہے کہ ہوس تجھے باغوں کی سیر کے لیے کھینچے لئے جا رہی ہے ۔ تو تو خود ایک کھلتا ہوا پھول ہے ، دل کے دروازے کو کھول کے اپنے باغ میں داخل ہوجا ۔) بیدل

دنیا کے تمام مذاہب میں اس خیال کی بنیادی وحدت کی طرف ڈاکٹر رادھا کرشنن نے ان الفاظ میں اشارہ کیا ہے :

« جب ہندو انتر آتما کی بات کرتے ہیں اور بُدھ دھرم والے خود بُدھ کی بلندی تک پہونچنے کے امکان کو تسلیم کرتے ہیں اور یہودی یہ اقرار کرتے ہیں کہ انسانی روح خدا کا چراغ ہے اور جب عیسائی یہ اعلان کرتے ہیں کہ خدا کی بادشاہت تمہارے وجود کے اندر ہی ہے ، کیا تمہیں یہ نہیں معلوم کہ معبد خداوندی اور روحِ خداوندی تمہارے سینے میں ہے ، اور جب پیغمبر اسلام یہ فرماتے ہیں کہ خدا ہماری رگِ جان سے بھی زیادہ قریب ہے ، تو یہ سب مختلف طریقوں سے ایک

ہی بات کہتے ہیں اور وہ یہ کہ الوہیت کوئی بیرونی جابرانہ طاقت نہیں ہے ، خدا کوئی سلطان نہیں ہے ، بلکہ وہ روحانی اور اندرونی اصول ہے جو خودی میں پیوست ہے . یہ اندرونی روشنی انتر جیوتی ہے . ہم سب الوہیت کی چنگاریاں ہیں اور خدا کے ساتھ خدا کی طرح تخلیق کے عمل میں مصروف ہیں اور ہمارا فرض ہے کہ ہم حالات کے مقابلے میں جد و جہد کریں تاکہ بدی اور نا انصافی اور نابرابری کو ختم کرکے انسانی زندگی کے معیار کو بلند کریں .»

(۵) اودھو = اودھوت = لفظی معنی ہیں وہ جس کی بیوی نہ ہو . یعنی علائق دنیا سے آزاد . کبیر نے یہ لفظ ناتھ پنتھی جوگیوں کے لئے استعمال کیا ہے جن کی کبیر کے نظام فکر میں اچھی خاصی مان دان ہے . **سہج اوستھا** (فطری انداز) پراپت (حاصل) کرنے پر سادھک سادھنا کرنے والا اودھوت بن جاتا ہے . «اے میرے [illegible] چت وہاں چل کر وشرام کر جہاں سورج اور چاند کی بھی رفتار نہیں ہے ، جہاں ابتدا بھی نہیں اور انتہا بھی نہیں اور وسط بھی نہیں ، جنم بھی نہیں ، مرن بھی نہیں ، اپنا بھی نہیں ، پرایا بھی نہیں ، جو مہا سکھ ہے ، جو سہج اوستھا ہے» (دیکھیے نظم ۴۱)

(۶) گھٹ = وسیع معنوں میں استعمال ہوتا ہے . مٹی کا برتن = جسم = دل = دماغ = روح فکر وغیرہ ، کبیر کا محبوب لفظ ہے . (دیکھیے نظم ۸)

(۷) جامی ایران کے آخری بڑے شاعر ہیں جو قریب قریب کبیر کے ہم عصر کہے جاسکتے ہیں ، ان کی شاعری صوفیانہ ہے ، اگر اس نظم کے ساتھ ان کی ایک غزل پڑھی جائے تو لطف بڑھ جائے گا :

حسنِ خویش از روئے خوباں آشکارا کردہ یی
بس بہ چشم عاشقان آں را تماشا کردہ یی
ز آب و گل عکسِ جمال خویشتن بنمودہ یی
شمع گل رخسارۂ و ماہ سروِ بالا کردہ یی
جرعہ یی از جام عشقِ خود بخاک افشاندہ یی
ذوفنونِ عقل را مجنون و شیدا کردہ یی

گرچہ معشوقی لباسِ عاشقی پوشیدہ ہی
انگہ از خود جلوۂ بر خود تمنا کردہ ہی
بر رخ از زلف سیہ مشکین سلاسل بستہ ہی
عالمے رابستۂ زنجیر سودا کردہ ہی
موکب حسنت نہ گنجد در زمین و آسمان
در حریم سینہ حیرانم کہ چون جا کردہ ہی
میکنی جامی گم اندر عشق، اسم و رسمِ خویش
آفریں بادہ بریں رسمے کہ پیدا کردہ ہی

(ترجمہ: تو نے اپنے حسن کو معشوقوں کے چہروں سے آشکار کیا ہے اس لئے عاشقوں کی آنکھ سے اس کا تماشا دیکھتا ہے۔ اپنے جمال کا عکس تو نے پانی اور مٹی میں ظاہر کیا اور اُسے گل رخسار شمع اور بلند قامت چاند — حسین صورت — میں تبدیل کر دیا، اپنے جام عشق سے ایک جرعہ ایک گھونٹ زمین پر انڈیل دیا اور ہزاروں فن جاننے والی عقل کو دیوانہ بنا دیا۔ حالانکہ تو معشوق یعنی حسن ہی حسن ہے لیکن تو نے عاشقی کا لباس پہن رکھا ہے اور اس کے بعد اپنے حسن کو خود ہی دیکھنے کی تمنا کر رہا ہے، تو نے مشک کی طرح مہکتی ہوئی کالی زلفوں کی زنجیریں اپنے چہرے پر باندھ لی ہیں اور اب ایک دنیا کو دیوانگی کی ان زنجیروں میں جکڑ لیا ہے تیرے حسن کا لشکر زمین و آسمان کی وسعتوں میں بھی نہیں سما سکتا پھر بھی میں حیران ہوں کے تو نے سینے کے اندر کیسے جگہ بنا لی۔ اے جامی تو نے اس عشق میں اپنا نام اور اپنا کام سب کچھ گم کر دیا ہے۔ اس رسم عاشقی کا کیا کہنا جو تو نے پیدا کی ہے۔

سترہویں اور اٹھارویں صدی کے اردو شاعر ولی دکنی نے اس خیال کو ایک شعر میں یوں کہا ہے:

حسن تھا پردۂ تجرید میں سب سوں آزاد
طالب عشق ہوا صورتِ انسان میں آ

(۸) کافر کی یہ پہچان کہ آفاق میں گم ہے
مومن کی یہ پہچان کہ گم اس میں ہیں آفاق
(اقبال)

یہاں کافر اور مومن ہندو اور مسلمان کے معنوں میں نہیں استعمال کئے گئے ہیں ۔ مومن صاحب عرفان (سنت) ہے اور کافر بے یقین اور مشکک (اودیا کا شکار)

(۱۰) سبدن مار جگائے = شبدوں (لفظوں) کی مار یا سنگیت کی چوٹ سے جگاتا ہے ، صوت سرمدی سے بیدار کرتا ہے ، بھگتی میں ایک چیز ہے شبد سادھنا (دیکھئے نظم ۵۷) ازل میں آتمن (خودی) برھمن (وجود مطلق) میں کھوئی ہوئی تھی جو مہا سکھ مہا آنند ہے . وہ مکمل سکوت کا عالم تھا (شونیہ) لیکن جب آتمن برھمن سے الگ ہوکر سنسار میں نیچے اترنے لگی تو اس سفر میں اس کی شکتی یا طاقت کم ہوتی گئی جس کی وجہ سے ایک آواز پیدا ہوئی اور اس آواز کو ویدانت اور یوگ میں شبد (لفظ = نام = کلمہ = Logos) کہتے ہیں . نیچے اترتے ہوئے آتمن (خودی) نے طرح طرح کے رنگ اور شکلیں اختیار کرنا شروع کیں اور سنسار میں آکر مانس (ذہن) اور مایا (مادہ) بن گئی . باوجود اس کے کہ وہ کثیف ہوچکی ہے اس نے ابھی تک عشق اور پریم کے پیغام کو قبول کرنے کی صلاحیت پوری طرح نہیں کھوئی ہے . اس لئے وہ برھمن کی طرف گرو کی رہنمائی میں دوبارہ رجوع کرسکتی ہے . اس طرح وہ بلندی کی طرف سفر شروع کرتی ہے . اس کو اپنی کھوئی ہوئی طاقت اور شکتی دوبارہ ملتی جاتی ہے . اس یاترا میں اُسے وہی آواز جسے شبد کہتے ہیں پھر سنائی دیتی ہے اور اس نغمے پر وہ بڑھتی چلی جاتی ہے . رفتار کی تیزی کے ساتھ ساتھ نغمہ بھی بلند ہوتا جاتا ہے . یہ خود روح کا نغمہ ہے جسے یوگی «اناہت ناد» کہتے ہیں اور صوفی صوتِ سرمدی کے نام سے یاد کرتے ہیں . (ماخوذ از بانکے بہاری - «میرا بائی» مطبوعہ بھارتی ودیا بھون . بمبئی) «جو آواز بیرونی کانوں سے سنی جاتی ہے وہ دو چیزوں کے ٹکراؤ سے پیدا ہوتی ہے . لیکن برھمن کی آواز اناہت شبد ہے یعنی وہ آواز یا شبد جو دو چیزوں کے ٹکراؤ کے بغیر پیدا ہو . یہ آواز «اوم» ہے (ہائن رش زمر) میرابائی نے شبد کو نام بھی کہا ہے اور کبیر کے یہاں بھی جو اناہت ناد کو انہد کہہ دیتے ہیں نام کا لفظ کبھی کبھی ان معنوں میں استعمال ہوتا ہے . کبیر کے «انہد» میں ایک لطف یہ بھی ہے کہ اگر اس کو «ان حد»

لکھا جائے تو اس کے معنی لا محدود اور بیکراں ہوجائیں گے . (« حد حد سب کہیں ، ان حد کہے نہ کوئے . ان حد کے میدان میں سکھ سے کبیرا سوئے »)

فارسی کے عظیم صوفی شاعر مولانا جلال الدین رومی (سنہ ۱۲۰۷ ء تا سنہ ۱۲۷۳ ء) کی مثنوی کی ابتدا میں بھی جہاں بانسری کو روح کے استعارے کی طرح استعمال کیا گیا ہے اس تصور کی جھلک ملتی ہے .

بشنو ازنے چو حکایت می کند
از جدائی ہا شکایت می کند
کز نیستان تا مرا ببریده اند
از نفیرم مرد و زن نالیده اند
سینه خواہم شرح شرح از فراق
تا بگویم شرحِ دردِ اشتیاق
ہر کسے کو دور ماند از اصل خویش
باز جوید روزگارِ وصلِ خویش

(ترجمہ : بانسری سے سنو وہ کیسی (دردناک) کہانی سنا رہی ہے . اور (کس انداز سے) اپنے ہجر و فراق کی شکایت کررہی ہے . (وہ کہہ رہی ہے) جب سے مجھے نیستاں سے کاٹ کر الگ کیا گیا ہے میری آواز سن کر مرد و زن رونے لگتے ہیں . میں چاہتی ہوں کہ سینہ زخمی ہوجائے تاکہ میں دردِ اشتیاق کا حال جی کھول کر سنا سکوں . ظاہر ہے کہ جو کوئی اپنی اصل سے دور ہوجاتا ہے وہ پھر وصل کی تلاش کرنے لگتا ہے) بانسری = آتمن (خودی) نیستاں برہمن (وجود مطلق)

(۱۱) سنت اور بھگت کویوں نے بھگتی کے جوش میں اپنے آپ کو دولہن اور ذاتِ مطلق کو دولہا کی تشبیہ سے یاد کیا ہے . یہ تشبیہ صوفیوں کے یہاں بھی مشترک ہے . « الأولیاءُ عرائسُ اللهِ وَلا یَری العرائسَ اِلّا المَحَارِمُ » یعنی جو اولیا ہیں وہ الله کی دولہنیں ہیں اور دولہنوں کو صرف محرم ہی دیکھ سکتے ہیں . مولانا جلال الدین رومی نے اپنی مثنوی میں یہ تشبیہ استعمال کی ہے . ہندستان میں فقیروں اور درویشوں کی ایک قسم « سدا سہاگن » کے نام سے مشہور ہے . کبیر نے

اپنی ایک نظم میں خدا کو «ابناسی دولہا» (لا فانی دولہا) کہہ کر مخاطب کیا ہے

یہ کہنا مشکل ہے کہ بھگتی اور صوفی فکر میں یہ استعارہ کہاں سے آیا اور کب سے رائج ہے۔ لیکن میرا خیال ہے کہ اس کے ڈانڈے کرشن بھگتی سے جاملتے ہیں۔ کرشن صرف وشنو کا اوتار ہی نہیں ہیں بلکہ پرم آتمن ہیں جن میں جاکر مل جانے کے لئے تمام انفرادی روحیں، جیو یا آتمن بیقرار ہیں۔ اور یہ بیقرار روحیں عشق کی زبان میں گوپیاں ہیں جن کی تعداد کروڑوں بتائی جاتی ہے۔ ظاہر ہے کہ بندرا بن میں کروڑوں گوپیاں نہیں ہوسکتی تھیں۔ اس لئے یہ روحیں (آتمن) ہیں جو اپنی نجات اور آزادی کے لئے اپنے شوہروں اور بچوں کو چھوڑکر (یعنی دنیاوی تعلقات کو توڑکر) بانسری کی آواز (اناہت ناد = صوت سرمدی) پر کرشن سے جا ملتی ہیں۔ یہ عشق کی زبان ہے اور اس کا مفہوم روحانی ہے۔ اس کہانی کا مفہوم بھی روحانی ہے جس میں کرشن نے جمنا میں نہاتی ہوئی گوپیوں کے کپڑے چرا لیے یا چھپا لئے ہیں۔ عاشق یا محبوب کے سامنے شرم و حجاب بے معنی ہیں۔ وہاں تو «میں» (اہنکار) باقی ہی نہیں رہتا۔ اسی لئے صوفیوں نے یہ کہا ہے کہ اللہ کے دولہنوں کو صرف محرم (متر = دوست = بھید جاننے والا) دیکھ سکتا ہے اور کبیر بھی یہی کہتے ہیں:

جو سُکھ چہے تو لجّا تیاگے، پیا سے ہل مل لاگے
گھونگھٹ کھول انگ بھر بھینٹے، نین آرتی ساجے

(۱۲) ہنس = پاکیزگی، شعور اور زندگی کے اصلی جوہر کا استعارہ ہے۔ کبیر نے روح (آتمن) کے معنوں میں بھی استعمال کیا ہے۔ سنسکرت اور ہندی کا آخری حرف ساکن نہیں بلکہ متحرک ہوتا ہے اس لئے ہنس = ہنسَ (ہنسا) لیکن پوربی زبان میں «وا» اور «آ» کا اضافہ آواز دینے کے لئے یا پیار ظاہر کرنے کے لئے بھی کیا جاتا ہے۔ اس لئے کبیر نے «ہنسا» کہا ہے۔

ہندو صنمیات (Iconography) میں عام طور سے جنگلی ہنس برہمّا سے وابستہ ہے۔ اندر کی سواری (واہن) ہاتھی ہے۔ شیو کی سواری نندی بیل۔ اسی طرح برہمّا کی سواری ہنس ہے۔ ہائی نش

زمر کی تشریح کے مطابق ہر وا َبن الوہی ہستی کی حیوانی ہیئت (ظہور) ہے۔ یہ بے داغ روحانیت کے ذریعے سے حاصل کی ہوئی مکمل ترین آزادی کا نشان (Symbol) ہے۔ اسی لئے ہندو جوگی یا سنت جب بار بار پیدا ہونے کے چکر سے آزاد ہوجاتا ہے تو ہنس کا درجہ حاصل کرلیتا ہے۔ اُسے «پرم ہنس» کہتے ہیں۔

ہر وجود میں مزاج کی دو متضاد کیفیتیں ہوتی ہیں اور ہنس کی زندگی ان دونوں کیفیتوں کی ترجمان ہے۔ وہ پانی پر تیرنے کے باوجود پانی کی فطرت میں اسیر نہیں ہے۔ پانی کی سطح کو چھوڑکر وہ صاف و شفاف فضا میں بلند ہوسکتا ہے اور فضا میں موسموں کے اعتبار سے وہ شمال اور جنوب جدھر چاہے جاسکتا ہے۔ وہ جہانیاں جہان گشت ہے۔ خانہ بدوش آوارہ گرد، جو زمین کی تاریک پستیوں سے لےکر فضا کی نورانی بلندیوں تک ہر جگہ یکساں اطمینان اور بے پروائی سے گزرسکتا ہے۔ اس لئے ہنس اس الوہی جوہر (Essence) کی علامت ہے جو ہستی کے شکنجوں میں اسیر ہوکر بھی ان سے آزاد رہتا ہے۔ محدود اور لا محدود، فانی اور لا فانی، خاکی اور نوری، تغیر اور غیر تغیر پذیر، سب کے ساتھ اور کسی کے ساتھ نہیں،

یہ الوہی خودی (آتمن) کائینات (Cosmos) اور آفاق (Universe) کے جسم کے اندر ایک نغمے کی طرح تیرتی ہے، ہر سنت اور جوگی اپنے سانس کے زیر و بم میں یہی نغمہ سنتا ہے اور مست ہوجاتا ہے۔ ہر اندر جاتی ہوئی سانس «ہم ن» ہے (م = ن) اور ہر باہر آتی ہوئی سانس «س = سا ہے۔ اور ہر ہونے والا جوگی متواتر اور مسلسل «ہم ن — سا» «ہم ن — سا» (ہنسا، ہنسا) سنتا رہتا ہے اور اپنے وجودکی الوہی اصلیت کو پہچاننے لگتا ہے۔

اس اندرونی ہنس کے گیت میں ایک راز اور بھی ہے۔ وہ «ہم ن — سا» «ہم ن — سا» (ہنسا، ہنسا،) کے ساتھ ساتھ یہ بھی سنتا ہے۔ «سا — ہم ن» «سا — ہم ن» (سا = وہ ہم‌ن = میں) اور اس کا مطلب ہے «وہ میں ہوں۔ جو وہ ہے وہی میں ہوں،» یعنی میں اتمن (الوہی خودی) ہوں، میں وجود مطلق ہوں۔ انا الحق۔

سو ہم باس = انا الحق کی خوشبو ، سو ہم = سواہم = سا ہم ن = جو وو ہے وہ میں ہوں ، برَہمَ کے ساتھ جیو کی ابھِنّتا ۔ کُل کے ساتھ جزو کا مکمل اتحاد، اس لئے میں نے منصور کی روایت سے سوھم کا ترجمہ انا الحق کیا ہے ۔ دوسری جگہ کبیر نے اسی کو « سوہنگ » لکھا ہے ۔ نغمے کی مناسبت سے « باجے سوہنگ تورا » یعنی انا الحق کا ساز بج رہا ہے ۔

مدن = کامدیو = عشق کا دیوتا ۔

(۱۳) ایک ان دیکھے خدائے واحد کا تصور بہت قدیم ہے ۔ اگر ایک طرف اُپنیشد کی تعلیمات میں ، جو کئی صدی قبل مسیح سے شروع ہو جاتی ہیں ، یہ تصور موجود ہے تو دوسری طرف عبرانی پیغمبروں نے اس کی تبلیغ کی ہے ۔ اس تصور نے زمانۂ قدیم میں انسانی گروہوں کو قبائلی دیوتاؤں کے تصور سے آزاد کرکے وسیع تر انسانی وحدت کی بنیاد ڈالی ۔ اسلام کی ساری بنیاد ایک خدائے واحد کی عبادت پر قائم ہے جو لا الٰہ الا اللہ کے چار لفظوں میں سما گئی ہے (قلندر جز دو حرف لاالٰہ کچھ بھی نہیں کہتا ، فقیہ شہر قارون ہے لغت ہائے حجازی کا ۔ اقبال) ۔ اقبال نے اپنی مشہور نظم « شکوہ » میں ایک بند کہا ہے جو کبیر کی نظم کے خیال سے بہت قریب آجاتا ہے :

ہم سے پہلے تھا عجب تیرے جہاں کا منظر
کہیں معبود تھے پتھر ، کہیں مسجود شجر
خو گر پیکر محسوس تھی انساں کی نظر
مانتا پھر کوئی ان دیکھے خدا کو کیونکر
تجھ کو معلوم ہے لیتا تھا کوئی نام ترا
امتِ احمد مرسل نے کیا کام ترا

(۱۴) اصلِ شہود و شاہد و مشہود ایک ہے
حیراں ہوں پھر مشاہدہ ہے کس حساب میں
ہے مشتمل نمودِ صوَر پر وجودِ بحر
یاں کیا دھرا ہے قطرۂ و موج و حباب میں

(۱۵) ست لوک (عالم لاہوت) کا بیان ہے یعنی جو کچھ برھمانڈ (کائینات) میں ہے وہی پنڈ (جسم) میں ہے آدمی خود ہی اپنے گھٹ (وجود) کے اندر یہ سب کچھ دیکھ سکتا ہے۔

کرشن ۔ ہندوستانی دیو مالا کے سب سے مقبول ہیرو اور ہندوؤں کے سب سے زیادہ محبوب دیوتا ہیں اور وشنو کا آٹھواں اوتار سمجھے جاتے ہیں۔ اُن کی ہردلعزیزی کا یہ عالم ہے کہ دہلی اور اتر پردیش کے مسلمان گھرانوں میں جب بچہ پیدا ہوتا ہے تو گیت کرشن جی کے گائے جاتے ہیں۔ مثلاً البیلی جچا (زچہ) مان کرے نند لال سے، سہاگن جچا مان کرے نند لال سے» یا «البیلے نے مجھے درد دیا سانولیانے مجھے درد دیا۔» نند لال اور سانولیا دونوں سے مراد کرشن جی ہیں۔ (سند کے لئے دیکھیے «رسوم دہلی» از مولوی سید احمد دہلوی) تقسیم ہند کے بعد یہ گیت پاکستان بھی پہونچ گئے ہیں۔ کرشن بھگتی کے گیت اور نظمیں اردو کے بہت سے شاعروں کے یہاں ملتے ہیں جن میں اہم ترین نام نظیر اکبر آبادی (اٹھارویں صدی) اور مولانا حسرت موہانی (بیسویں صدی) کے ہیں۔

کرشن کا نام سب سے پہلے رگ وید میں آتا ہے ہے۔ لیکن وہ کرشن جن کے گرد بھگتی کی شاعری اور فلسفہ کا ہالہ ہے سب سے پہلے چھاند یوگ اُپنی شد میں ظاہر ہوئے ہیں اور وہاں وہ دیوکی کے بیٹے ہیں پھر اُن کا ذکر مہا بھارت میں آتا ہے اور اُن کا الو ہی نغمہ «بھگود گیتا» ہے جو اپنی شاعری، فلسفے اور روحانیت کے اعتبار سے اپنا جواب نہیں رکھتا۔ یہ نغمہ صدیوں سے ہندوستان میں مقبول ہے اور یورپ اور امریکہ کے دانش وروں اور شاعروں نے بھی اس سے اثر قبول کیا ہے۔ عالموں کا خیال یہ ہے کہ «بھگود گیتا» مہا بھارت سے بعد کی تخلیق ہے لیکن اب وہ مہا بھارت کا حصہ ہے۔ پرانوں میں اور خاص طور سے بھگوت پُران میں کرشن جی کی زندگی کی جو تفصیلات ہیں وہی اب عوام کے ذہن میں افسانہ بن گئی ہیں جن کی بنیاد پر صدیوں سے ہزاروں اور لاکھوں گیت اور تصویریں بنائی جارہی ہیں جن کا شمار ہندوستانی آرٹ کے شاہکاروں میں ہوتا ہے۔ بھگوت پُران کی کہانیاں ہندی میں «پریم ساگر» کے نام سے ترجمہ ہوکر

مقبول ہو چکی ہیں، ہندی کے دو بہت بڑے شاعروں، میرا بائی اور سور داس کی عظمت کا دارو مدار کرشن بھگتی کی شاعری پر ہے۔

کرشن جی یادو نسل سے تھے اور یہ قبیلہ جمنا کے کنارے بندرا بن اور گوکل میں گلے بانی کرتا تھا۔ اس زمانے میں متھرا اور بندرا بن میں کنس کی حکومت تھی۔

کرشن جی کی پیدائش کا افسانہ اپنی تفصیلات کے بعض اختلافات کے ساتھ یہودیوں، عیسائیوں اور مسلمانوں کے ایک عظیم پیغمبر حضرت موسیٰ کی پیدایش کے افسانے سے بہت ملتا جلتا ہے۔

کرشن جی کی ماں دیوکی راجہ کنس کی بھتیجی تھیں۔ اور نارد منی نے یہ پیشین گوئی کی تھی کہ دیوکی کا بیٹا کنس کی ظالم حکومت کا خاتمہ کردے گا۔ اس خطرے سے بچنے کے لئے کنس نے دیوکی کو اپنے محل میں قید کرلیا اور ان کی کوکھ سے پیدا ہونے والے چھ بیٹوں کو قتل کردیا۔ جب ساتویں بار حمل قرار پایا تو وہ وشنو کا اوتار تھا اور وہ دیوکی کے پیٹ سے اُن کی سوت، واسو دیو کی دوسری بیوی، روہنی کے پیٹ میں منتقل ہوگیا۔ اس بچے کا نام بلرام تھا جو، وشنو کے سفید بال سے پیدا ہوئے تھے۔ دیوکی کے آٹھویں بیٹے کرشن تھے۔ اُن کا رنگ اس لئے کالا تھا کہ وہ وشنو کے سیاہ بال سے پیدا ہوئے تھے۔ آدھی رات کو جب کرشن جی نے جنم لیا تو محل کے سپاہیوں پر نیند غالب آگئی اور تمام دروازے کھل گئے۔ کرشن کے پتاجی واسو دیو بچے کی جان بچانے کے لئے اُسے گود میں اُٹھاکر متھرا سے باہر چلے گئے اور جمنا کے پار ایک اہیر نند کے گھر پہونچے جس کی بیوی یشودا کے یہاں لڑکی پیدا ہوئی تھی، انھوں نے اپنے بیٹے کو اس کی بیٹی سے بدل لیا۔ اس طرح کرشن جی کی پرورش یشودا کی گود اور نند کے گھر میں ہوئی اور اس لئے وہ نند لال کہلاتے ہیں۔ کنس نے اپنی گھبراہٹ میں یہ حکم دے دیا کہ جس لڑکے میں طاقت اور شکتی کی علامتیں نظر آئیں اُسے قتل کردیا جائے۔ نند کو جب یہ خبر ملی تو وہ کرشن اور یشودا کو اور روہنی اور بلرام کو اپنے ساتھ لے کر گوکل چلے گئے۔ وہیں کرشن جی اپنے بھائی بلرام کے ساتھ سبزہ زاروں میں بڑھے اور پلے۔ بچپن میں وہ نہایت معصوم شرارتیں کرتے تھے اور مکھن چراکر کھالیتے تھے۔ جوانی میں بانسری

بجاتے پھرتے تھے اور گوپیوں کو چھیڑتے تھے۔ اُن کی سب سے زیادہ محبوب گوپی اور بیوی رادھا تھیں اور انہیں دونوں کے گرد تمام رومانی افسانوں، شاعری اور تصویروں کی تخلیق ہوئی ہے۔ مہا بھارت کی جنگ میں کرشن جی پانڈو کے ساتھ تھے اور ارجن کے رتھ بان کی حیثیت سے جنگ میں شریک تھے۔ اس میدان میں پانڈو اور کورو کے لشکروں کے درمیان کھڑے ہوکر کرشن جی نے ارجن کو اپنا الوھی نغمہ «بھگود گیتا» سنایا۔

حضرت موسیٰ کے افسانے میں کنس کی جگہ مصر کا بادشاہ فرعون ہے جس نے اپنی جان اور سلطنت بچانے کے لئے یہودیوں کے پیدا ہونے والے بیٹوں کے قتل کا حکم دے دیا تھا۔ جب موسیٰ پیدا ہوئے تو اُن کی ماں نے اُنہیں ایک بکس میں بند کرکے دریائے نیل میں ڈال دیا اور فرعون کی بیٹی نے اس بکس کو نکال لیا اور حضرت موسیٰ کی پرورش فرعون کے محل میں ہوئی۔ حضرت موسیٰ کی زندگی میں بھی ایک جنگ ہے جس کا خاتمہ اس طرح ہوتا ہے کہ وہ اپنی قوم کو لے کر دریائے نیل پر آتے ہیں، دریا کا پانی دونوں طرف ہٹ جاتا ہے اور درمیان میں راستہ بن جاتا ہے جس سے حضرت موسی اپنی قوم کو لے کر گزر جاتے ہیں۔ لیکن جب فرعون اپنے لشکر کے ساتھ اس راستے سے گزرنے کی کوشش کرتا ہے تو دونوں طرف سے پانی کے دھارے آکر مل جاتے ہیں اور فرعون اپنے لشکر سمیت دریائے نیل میں غرق ہوجاتا ہے۔

وشنو = ہندو تثلیث (تری مورتی) کے دوسرے دیوتا کا نام رِگ وید میں وشنو کا شمار اول درجے کے دیوتاؤں میں نہیں ہوتا۔ وہ شمسی طاقت (Solar Energy) کا مظہر ہیں۔ کائینات اُن کے تین قدموں کے نیچے ہے اور اُن کے نور کے غبار سے بھری ہوئی ہے۔ تین قدموں سے مراد ہے روشنی یعنی آگ، بجلی اور سورج۔ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ اس سے مراد سورج کا طلوع ہونا، نصف النہار پر پہونچنا اور غروب ہونا ہے۔ وشنو کی خصوصیت دنیا کی حفاظت اور رکھوالی ہے۔

براہمنوں کی لکھی ہوئی اُن تحریروں میں جن میں ویدک رسوم بیان کئے گئے ہیں اور جو «براہمن» کے نام سے مشہور ہیں، وشنو

کو نئی صفات سے متصف کردیا گیا ہے اور ان کا درجہ بہت بلند ہوگیا ہے ۔ مہا بھارت اور پُرانوں میں وہ ہندو تثلیث کے دوسرے دیوتا ہیں اور ستّو گن یعنی رحم اور کرم کا مظہر ہیں اور اس لئے دنیا کے رکھشک ہیں ، یہ وہ روح ہے جو کائینات میں جاری اور ساری ہے ۔ اس لئے اُن کو ازلی اور ابدی پانی کے عنصر سے منسوب کردیا گیا ہے ۔ اس شکل میں وشنو کا نام نارائن ہے یعنی پانی میں حرکت کرنے والا تصویروں میں اُنہیں شیش ناگ پر لیٹا ہوا دکھایا جاتا ہے جو ازلی اور ابدی پانی (اصولِ اول) میں تیر رہا ہے ۔ یہ اس وقت کا منظر ہے جب کائینات اپنی زندگی کا ایک چکّر پورا کرکے غارت ہوجاتی ہے اور زندگی کا نیا چکّر شروع کرنے والی ہوتی ہے ۔

وشنو کے پجاری اُن کو سب سے بڑا دیوتا مانتے ہیں جن سے تمام اشیا ظاہر ہوئی ہیں ۔ مہا بھارت اور پُرانوں میں وہ پرجا پتی (خالقِ کائینات) ہیں اور اُن کا ظہور تین حالتوں (اوستھاؤں) میں ہوتا ہے ۔ ۱ ۔ برھما = خالقِ کائینات جو ازلی اور ابدی پانی پر تیرتے ہوئے محوِ خواب وشنو کی ناف سے نکلنے والے کنول کے پھول سے پیدا ہوئے ہیں ۔ ۲ ۔ وشنو خود جو اپنے اوتاروں مثلاً رام اور کرشن کی شکل اختیار کرتے ہیں اور اس طرح دنیا کی حفاظت اور رکھشا کرتے ہیں ۔ ۳ ۔ شیو یا رُدر یا مہیش جو تباہی اور بربادی کی طاقت ہیں ۔

وشنو کے اوتاروں کی تعداد صرف دس ہے ۔ لیکن بھاگوت پُران میں بائیس بیان کی گئی ہے اور پھر ان گنت اوتاروں کا بھی ذکر آیا ہے ۔ سب سے زیادہ مقبول ساتویں اوتار رام اور آٹھویں اوتار کرشن ہیں اور ان دونوں میں بھی کرشن کو وشنو کا مکمل ترین مظہر سمجھا جاتا ہے ۔

کہا جاتا ہے کہ مقدس گنگا وشنو کے قدموں (چرنوں) سے نکلی ہے ۔

وشنو دنیا کے رکھوالے کی حیثیت سے بہت مقبول دیوتا ہیں اور اُن کی پوجا مسرت کے جذبے کے ساتھ کی جاتی ہے ، اُن کے ہزار نام ہیں اور ان ناموں کا جپنا مبارک سمجھا جاتا ہے ۔ ان کی سواری (واہن) عقاب ہے ۔ ان کا رنگ گہرا نیلا ہے اور چار ہاتھ ہیں ۔ ایک میں شنکھ ، دوسرے میں چکّر (ہتھیار) تیسرے میں گدا (گرز) اور چوتھے میں کنول کا پھول ہے ۔ اُن کے پاس ایک کمان اور ایک تلوار

بھی ہے ۔ ان کی بیوی لکشمی (دولت کی دیوی) ہیں جن کے ساتھ وہ کنول کے پھول پر بیٹھے یا کنول کے پتے پر تیرتے ہوئے دکھائی دیتے ہیں ۔ (ڈکشنری آف ہندو مائی تھالوجی ، انگریزی ، جان ڈاؤسن) ۔

بُرَھمَا = ہندو تثلیث (تری مورتی) کے پہلے دیوتا کا نام جنہیں جگدیشور ، اُت پادک (پیدا کرنے والا) پرجا پتی اور ودھاتا کے ناموں سے بھی یاد کیا جاتا ہے ۔

رامائن کے بیان کے مطابق پہلے صرف پانی تھا جس سے زمین کی تشکیل ہوئی ۔ اس پانی سے برھما ظاہر ہوئے جنہوں نے سور کا حیوانی قالب اختیار کرکے زمین کو اوپر اٹھایا اور اپنے بیٹوں ، رشیوں اور منیوں کے ساتھ ساری دنیا کی تخلیق کی ۔ مہابھارت کے بیان کے مطابق برھما وشنو کی ناف سے پیدا ہوئے جہاں سے ایک کنول کا پھول باہر نکلا ۔ (دیکھیے سہس کنول نمبر ۲) اس لئے ان کا نام نابھی جا اور سروجن بھی ہے ۔ وہ اپنی برکتوں سے دیوتاؤں اور ان کے دشمنوں دونوں کو نوازتے ہیں ۔ شیو دھرم میں برھما کا خالق مہادیو یا رُدر (شیو) کو مانا جاتا ہے اس لئے برھما شیو لنگ کی پوجا کرتے ہوئے مانے جاتے ہیں ۔

جب برھما دنیا کی تخلیق کرتے ہیں تو وہ صرف ایک دن زندہ رہتی ہے اور برھما کا ایک دن دو ارب سولہ کروڑ سال کے برابر ہوتا ہے ۔ اس طول طویل دن کے خاتمے پر دنیا آگ سے تباہ ہوجاتی ہے لیکن رشی ، مُنی ، دیوتا اور عناصر باقی بچ جاتے ہیں ۔ پھر برھما دوبارہ دنیا کی تخلیق کرتے ہیں اور تباہی اور تخلیق نو کا یہ عمل برھما کی عمر کے سو سال تک جاری رہتا ہے (چونکہ برھما کا ایک دن دو ارب سولہ کروڑ سال کے برابر ہوتا ہے اس لئے اس کو پہلے تین سو پینسٹھ سے ضرب دے کر پھر حاصل شدہ عدد کو سو سے ضرب دیجئے تو برھما کی عمر کے سو سال کی مدت کا اندازہ ہوگا) سو سال کے بعد برھما بھی ختم ہوجاتے ہیں ، سارے دیوتا ، رشی ، مُنی ، بھی ختم ہوجاتے ہیں اور کائینات اپنے عناصر کی شکل میں منتشر ہوجاتی ہے ۔ (ہندو صنمیات کی لغت ، انگریزی ، جان ڈاؤسن) ۔

وقت کا یہ چکر ہندو تصور ہے جو اسلامی تصورِ وقت سے مختلف ہے ۔ لیکن عجب اتفاق ہے کہ اس سے ملتا جلتا تصور غالب کے

یہاں موجود ہے۔ اپنی فارسی تصنیف «مہر نیم روز» میں لکھا ہے کہ صفات عین ذات ہیں اور پرتو آفتاب سے جدا نہیں۔ قیامت کے بعد نیا آدم پیدا ہوگا اور ایک آدم کے بعد دوسرا آدم ظہور کرے گا (دیکھئے دیباچہ دیوان غالب۔ مطبوعہ ہندوستانی بک ٹرسٹ، بمبئی)

مہیش = (شیو = وناشک، یعنی دنیا کو تباہ کرنے والا) ہندو تثلیث (تری مورتی) کے تیسرے دیوتا کا نام۔

شیو کا نام ویدوں میں نہیں ملتا۔ لیکن ان کا دوسرا نام رُدرٗ رگ وید میں اگنی کے لئے استعمال ہوا ہے۔ ویدوں کے رُدرٗ نے ترقی کرکے ایک عرصے میں طاقتور شیو کی شکل اختیار کرلی۔ حالانکہ شیو تباہی اور بربادی کے دیوتا ہیں لیکن ان کی طاقتیں اور صفات کہیں زیادہ ہیں۔ رُدرٗ کی حیثیت سے وہ مہا کال (وقت) ہیں جو انحطاط، تباہی اور موت لاتا ہے۔ لیکن ہندو عقیدے میں تخریب خود تعمیر کا پیش خیمہ ہے اس لئے شیو اور شنکر کی حیثیت سے یہ مقدس دیوتا تعمیر اور تخلیق نو کی طاقت بن کر ظاہر ہوتے ہیں جن کی بدولت ہر موت کے بعد زندگی، ہر تخریب کے بعد تعمیر کا مسلسل عمل جاری رہتا ہے۔ اس لئے وہ ایشور اور مہادیو ہیں۔ ان کی تجدید حیات کی طاقت کا اظہار لنگ کی علامت سے کیا جاتا ہے اور اس لئے شیو کی پوجا یا تو تنہا لنگ کی شکل میں کی جاتی ہے یا کبھی کبھی لنگ کے ساتھ یونی کی بھی پرستش ہوتی ہے جو ان کی شکتی یا نسوانی طاقت کی علامت ہے۔ شیو شکتی کے قدیم فلسفے کے اعتبار سے نسوانی طاقت کے بغیر شیو صرف شَو (शव) یعنی مردہ جسم ہے اور جب اس میں شکتی شامل ہوتی ہے تو وہ شیو (शिव) بن کر جاگ اٹھتا ہے۔ (ہندوستانی تہذیب کے مورخوں اور عالموں کا خیال ہے کہ لنگ پوجا قدیم آریوں کی آمد سے پہلے ہندوستان میں موجود تھی جس پر ہڑپا کے کھنڈروں سے نکلنے والے لنگ کے نمونے شاہد ہیں۔ ہندو دھرم میں لنگ پوجا غالباً پہلی صدی عیسوی کے آس پاس شامل کی گئی۔) مہا کال اور مہادیو کے علاوہ ان کی تیسری شکل ایک دھیان میں کھوئے ہوئے مہا یوگی کی ہے جو اپنی تپسیا سے بے پناہ طاقت حاصل کرلیتا ہے، معجزے دکھاتا ہے اور عظیم روح کائنات سے مل کر ایک ہوجاتا

ہے۔ اس کردار میں وہ ایک ننگا یوگی ہے جسے دگمبر کہتے ہیں اور جس کا لباس عناصر کے سوا کچھ نہیں۔ وہ دُھرجتی ہیں جن کے بال الجھے ہوئے ہیں اور جسم پر بھبھوت ملا ہوا ہے۔ اپنے پہلے کردار یعنی تخریبی طاقت کے اعتبار سے وہ بَھیرَوْ ہیں جو تخریب اور تباہی سے لذت حاصل کرتے ہیں۔ ساتھ ہی ساتھ وہ بُھوتیشور بھی ہیں اور بھوت پریت پر حکومت کرتے ہیں۔ وہ اپنے سر کے گرد سانپ لپیٹ کر اور گردن میں انسانی کھوپڑیوں کی مالا پہن کر اپنے بھوت پریت کے لشکروں کے ساتھ شمسانوں کی سیر کرتے ہیں اور مستی کے عالم میں وہ تخریبی رقص کرتے ہیں جسے تانڈَوْ کہتے ہیں۔

شیو سکون اور مکمل خاموشی (شونیہ) کے بھی دیوتا ہیں اور رقص کے دیوتا بھی (نٹ راج)۔ تامل نادیدمیں نٹ راج کی پرستش ہوتی ہے اور بنارس میں وشیشور کی، اُن کا مقام شمال میں کیلاش پربت اور جنوب میں چدَم برَم کا مندر ہے جہاں اُن کو ناچتا ہوا دیوتا مانا جاتا ہے۔ شیو کی ایجاد ایک سو آٹھ قسم کے رقص ہیں، بعض لطیف اور خوبصورت اور بعض انتہائی حشر انگیز اور خوفناک۔ ان میں تانڈو سب سے زیادہ مشہور ہے۔ اس رقص سے دنیا تباہ ہوجاتی ہے اور وقت کا ایک چکر پورا ہوجاتا ہے۔

شیو کے بھی ہزار سے زیادہ نام ہیں جو اُن کی مختلف صفات کو ظاہر کرتے ہیں۔ شیو کا رنگ سفید ہے اور ان کے پانچ سر (پنچ آنن) اور چار ہاتھ ہیں، تصویروں میں عام طور سے اُنہیں بیٹھا ہوا دکھایا جاتا ہے، دھیان میں کھوئے ہوئے، ماتھے پر تیسری آنکھ ہے جو اتنی تباہ کار ہے کہ اس سے کامدیو بھسم ہوگئے تھے۔ اس تیسری آنکھ کے اوپر پیشانی نئے چاند سے سجی ہوئی ہے، الجھے ہوئے بالوں کی گانٹھ سر پر سینگ کی طرح دکھائی دیتی ہے جس پر دریائے گنگا کی علامت ہے جس کی آسمان سے گرتی ہوئی دھار کو شیو نے اپنے سر پر روک لیا تھا۔ گردن میں کھوپڑیوں کا ہار (مُنڈمالا) ہے اور گلے میں سانپ لپٹے ہوئے ہیں (ناگ کنڈل) اور دنیا تباہ کردینے والے زہر کو پی لینے کی وجہ سے گردن نیلی ہے (نیل کنٹھ) ہاتھوں میں ترشول، ڈمرو، گرز اور رسی ہے۔ جسم پر شیر، ہرن یا ہاتھی کی کھال کا لباس ہے، عام طور سے اُن کا واہن (سواری) نندی بیل پاس

ہی نظر آتا ہے۔ پروفیسر کوسمبی کے بیان کے مطابق لنگ پُران کی شہادت پر یہ کہنا غلط نہ ہوگا کہ نندی بیل شیو کا باطنی نشان (Totem) ہے اور پتھر کی تہذیب کے آخری دور (Neolithic) سے تقریباً دو ہزار سال پہلے وحشی قبائل میں نندی بیل کی پرستش کا ثبوت ملتا ہے۔ اس طرح شیو کا کردار آریائی اور غیر آریائی قبائل کے اتحاد کی علامت بن جاتا ہے۔ (ماخوذ از ۱ ۔ ڈکشنری آف ہندو مائی تھو لاجی، انگریزی، ڈاؤسن، ۲ ۔ دی ونڈر دیٹ واز انـــڈیا، انگریزی، باشم۔ ۳ ۔ انٹروڈکشن ٹو دی اسٹـــڈی آف انڈین ہسٹری، انگریزی، دامودر دھرمانند کوسمبی)۔

سرسوتی = علم اور فن، شعر اور شاعری کی دیوی، ویدوں میں ایک ندی اور ایک دیوی دونوں صورتوں میں ذکر ہے۔ سرسوتی ندی بہت مقدس تھی اور آریوں کے ابتدائی ہندستانی وطن برھما ورت کی ایک سرحد پر بہتی تھی۔ ندی کی دیوی کی حیثیت سرسوتی زرخیزی اور پاکیزگی کی طاقت ہے۔ نطق اور بیان (واچ) کی دیوی کی حیثیت سے ویدوں میں ذکر نہیں ملتا لیکن براھمنوں اور مہا بھارت میں وہ نطق اور بیان کی دیوی ہے۔ ہندو صنمیات میں سرسوتی برھما کی بیوی ہے اور سنسکرت زبان اور دیوناگری حروف کی خالق مانی جاتی ہے، رنگ سفید ہے اور اعضا متناسب، ماتھے پر نیا چاند ہے اور وہ کنول کے پھول پر بیٹھی یا کھڑی ہوئی دکھائی دیتی ہے۔ (ہندو صنمیات کی لغت، انگریزی، جان ڈاؤسن)۔

اندر = آکاش کا دیوتا۔ ویدوں نے ان کا شمار اول درجے کے دیوتاؤں میں کیا ہے لیکن وہ غیر مخلوق نہیں ہیں۔ ماں اور باپ کا ذکر ہے۔ ان کا رنگ سنہرا ہے اور ہاتھ لمبے لمبے ہیں۔ لیکن وہ اپنی شکلیں بدل سکتے ہیں اور بے شمار روپ اختیار کرسکتے ہیں۔ ان کا دو گھوڑوں کا رتھ سنہری ہے، ہتھیار بجلی ہے جو داہنے ہاتھ میں ہے۔ سوم رس انہیں بہت مرغوب ہے جسے وہ بلا نوش رندوں کی طرح پیتے ہیں اور اس سے مست ہوجانے کے بعد دشمنوں سے جنگ کرنے نکلتے ہیں۔ فضا کے دیوتا کی حیثیت سے وہ موسموں پر حکومت کرتے ہیں اور بارش کا پانی تقسیم کرتے ہیں، ویدوں میں آگنی کے سوا سب سے

زیادہ جس دیوتا کی تعریف ہے وہ اندر ہیں۔ وہ بہت سخی اور فیاض دیوتا ہیں جن کا نام بارش، زرخیزی، بجلی اور طوفان سے وابستہ ہے اور وہ قحط اور خشک سالی کے اشیٔر کے خلاف مسلسل لڑتے رہتے ہیں۔ داسو اور اشوروں کے "پتھر کے بنے ہوئے شہروں" کو تباہ کرنے کا سہرا ان کے سر ہے۔ ان کی براہ راست پرستش نہیں کی جاتی لیکن کچھ تہوار ان کے نام سے مخصوص ہیں۔ برج کی چراگاہوں میں گوالے ان کی پرستش کرتے تھے لیکن کرشن نے ان کے دل جیت لیے اور اندر کی پوجا بند ہوگئی۔ اس پر اندر کو بہت غصہ آیا اور انہوں نے برج باسیوں پر بارش کا طوفان نازل کیا۔ لیکن کرشن نے جو وشنو کے اوتار تھے گوردھن پہاڑ کو اپنی ایک انگلی پر اٹھا لیا اور اسے سات دن تک چھتری کی طرح استعمال کیا۔ آخر اندر کو شکست ہوگئی اور انہوں نے کرشن کے اقتدار کو تسلیم کرلیا۔

(۱۶) عالم ناسوت کا بیان ہے۔

چوراسی لچھُہ جیو = چوراسی لاکھ فرد۔ جینیوں اور ہندوؤں کے عقیدے کے مطابق ایک ذی حیات مکتی یا نجات پانے سے پہلے چوراسی لاکھ بار زندگی کا قالب اختیار کرتا ہے۔ ایک زندگی کو یونی کہتے ہیں۔

(۱۷) بند (۱) گڑہ = تارا۔ تپن = سورج۔ (دیکھیے نمبر ۸۹)

بند (۲) سُرتِ اور نرتِ - سادھنا یعنی بھگتوں کے روحانی ریاض کے دو پہلو ہیں۔ ایک نرتِ جس کا مطلب ہے دنیا سے بے تعلق ہوجانا اور دوسرا سُرتِ جس کا مطلب ہے بھگوان سے لو لگانا۔ اس لئے اس نظم میں اور آئندہ نظموں میں سُرتِ کا ترجمہ پریم اور نرتِ کا ترجمہ بیراگ کیا گیا ہے۔ کبیر نے سُرتِ (پریم) کو راگ اور نرتِ (بیراگ) کو وینا کے تار سے تشبیہ دی ہے۔ جس طرح تار سے راگ پیدا ہوتا ہے اسی طرح بیراگ اور دنیا سے بے تعلقی سے پریم پیدا ہوتا ہے۔

بند (۶) اگم = غیر متحرک، ساکن، نا قابلِ فہم، نا قابل حصول، جس میں دوسرے کی سمائی نہ ہوسکے، گہرا، اتھاہ، لامحدود،

بیکراں۔ آگم کی بگڑی ہوئی شکل میں اس کے معنی ہیں مستقبل یا دوسری دنیا۔

(۲۰) یہ بظاہر سیدھی سادی نظم انتہائی پیچیدہ فلسفیانہ خیالات سے بھری ہوئی ہے جس پر شونیہ واد اور وگیان واد (یوگا چار) کے فلسفے کا عکس پڑ رہا ہے۔ ان کے مطابق ایک داخلی تخلیقی قوت جسے « پری کلپ » کہتے ہیں مظاہر کے وجود کی ذمہ دار ہے۔ یہ ایک سحر کارانہ تخلیقی خیال ہے جو « اُلے وگیان » کے ازلی اور ابدی مخزن سے ہر تصویر اور ہر تصویر کا جوہر حاصل کرسکتا ہے۔ یہ مخزن بجائے خود خالص خیال ہے، وہ خیال جو اپنے وجود کے لئے کسی شے کا محتاج نہیں (خیال مطلق) یعنی ایسا خیال جو محض خلا، خاموشی اور مکمل سناٹا (شونیہ) ہے۔

(۲۳) پنڈت ہزاری پرساد دوئی ویدی نے لکھا ہے کہ شام کا اندھیرا سنتوں کی شاعری میں بڑھاپے کی علامت ہے لیکن اس نظم میں وصالِ یار کی علامت ہے، شنکھ، گھنٹے اور شہنائیاں وصال کا جشن منانے کے لئے ہیں۔ چونکہ شام کا اندھیرا پچھم کی طرف سے بڑھتا آتا ہے اس لئے پچھم کی کھڑکی کھولنا اجیالے کی علامت ہے۔ جس میں پچھم سے مراد انسان کی پشت ہے جہاں ریڑھ کی ہڈی کے درمیان سے وہ روحانی شاہراہ گزرتی ہے جسے سوشمنا مارگ کہتے ہیں۔

(۲۵) ہری = وشنو کے لئے استعمال ہوتا ہے، کبیر نے عام طور سے بھگوان کے معنوں میں لیا ہے

(۲۶) اونکار = اومکار = اوم = بھگوان کا راگ روپی یا شبد روپی انگ، وجود مطلق، خالق کائینات۔

(۲۷) ان چنہار = غیرمتعارف (دوسرے مصرعے میں غلطی سے ان جنہاز چھپ گیا ہے)

(۲۸) باجے سوہنگ تورا = اناالحق کا ساز بج رہا ہے۔ (دیکھیے ۱۲) اس کی تفسیر یہ ہے کہ ذات کے سامنے ناچتی ہوئی صفات اناالحق کا

ساز بجا رہی ہیں جب گرو چیلے کے پیر چھوتا ہے تو دوئی وحدت میں تبدیل ہوجاتی ہے۔ اس کو «سرِ توحید» (ایک پن کا بھید) کہتے ہیں۔ (دیکھیے ۴۷)

(۲۹) بئی چترا = وحدت کا کثرت بن جانا۔

برھما - وشنو - شیو = (دیکھیے ۱۵)

اس نظم میں یہ جذبہ ہے کے آتما خود برھما، وشنو اور شیو سے پہلے موجود تھی۔ آتمن برھمن میں محو تھی۔ حافظ شیرازی نے اسے اس طرح ادا کیا ہے:

ماجرائے من و معشوقِ مرا پایان نیست
ہرچه آغاز نه دارد نه پذیرد انجام

(ترجمہ: «میری اور میرے محبوب کی محبت کی کہانی کبھی ختم نہیں ہوسکتی۔ جس چیز کی ابتدا نہیں ہے اس کی انتہا کیسے ہوسکتی ہے» یعنی میرا عشق ازلی اور ابدی ہے۔ وہ جب سے ہے جب سے وجود مطلق ہے۔ اور وجود مطلق کی کوئی ابتدا نہیں ہے)

اور رومی نے کہا ہے:

ما خازنِ خزانۂ دلدار بوده ایم
ما سالہا مصاحب دلدار بوده ایم
ما در فضائے عالمِ اسرار سالہا
باطائرانِ قدس در اطوار بوده ایم
ما رختِ خود زعالم ہستی کشیده ایم
برکوئے یار بے غمِ اغیار بوده ایم
آدم ہنوز در عدم آباد بود که ما
مست و خراب نرگسِ آن یار بوده ایم
پیش از ظہورِ انجم و افلاک و دائرات
دائر بگرد نقطه چو پرکار بوده ایم
در گلشنِ وصال بچندیں ہزار سال
پیش از دوکون طائر طیار بوده ایم

غیر از یکے نہ بود و نباشیم و نیستیم
در کثرتِ چنیں پئے اظہار بودہ ایم
(کلیات شمس تبریزی)

(ترجمہ: میں محبوب کے خزانے کا محافظ رہا ہوں، میں برسوں اس کا مصاحب رہ چکا ہوں۔ میں عالمِ اسرار کی فضا میں طائران قدس کے ساتھ برسوں اڑ چکا ہوں۔ عالمِ ہستی سے میں نے دامن کھینچ لیا اور کوچۂ یار میں رقیب کے بغیر تنہا رہا ہوں۔ ابھی آدم کی تخلیق بھی نہیں ہوئی تھی جب میں اپنے یار کی آنکھوں کا مست و خراب تھا۔ آسمانوں اور ستاروں کے وجود سے پہلے میں وجود مطلق کے نقطے کے گرد گھوم رہا تھا۔ دونوں جہان کے وجود سے بھی پہلے میں ہی گلشن وصال میں اڑ رہا تھا۔ ایک کے سوا نہ تو کچھ تھا، نہ ہو سکتا ہے اور نہ ہے۔ صرف اپنے اظہار کے لئے یہ کثرت کی شکل اختیار کی ہے)۔

(۳۰) پکھیرو یہاں جیو آتما (ہنس) کا استعارہ ہے اور ترور (درخت) جسم کا۔

(۳۱) **گگن کواڑ** = شونیہ کا دروازہ، سادھنا، سمادھی۔

(۳۲) ساری کائینات اصول اول کے گرد ناچ رہی ہے۔ نغمہ حمد و ثنا کا ہے۔ (دیکھیے نمبر ۸۹)۔

(۳۳) اقبال نے کہا ہے:

وہ حرف راز کہ مجھ کو سکھا گیا ہے جنوں
خدا مجھے نفسِ جبرئیل دے تو کہوں

(۴۰) تانترک سادھکوں نے یوگ اور بھوگ کو ایک ہی سمجھا ہے، یوگ کی سادھنا (ریاض) ماورائی ادراک کا وہ جُوا ہے جو تجربات دنیا سے حاصل کئے ہوئے عام انسانی شعور کی گردن پر رکھ دیا جاتا ہے اور بھوگ دنیاوی لذتوں، غموں اور مسرتوں کو پوری طرح برتنے کا نام ہے۔ تانترک اصولوں کے مطابق بھوگ کو یوگ کا ذریعہ بنایا جا سکتا ہے، چنانچہ اس اصول میں حسن پرستی، جنسی اور جسمانی ہم آغوشی کے علاوہ گوشت، مچھلی، بھنے ہوئے اناج اور شراب کا استعمال

شامل ہے۔ (فارسی اور اردو شاعری میں ترغیب گناہ اور عظمت گناہ کا فلسفہ جس کی وجہ سے یہ شاعری بے حد رنگین اور دلکش ہوگئی ہے ان تانترک اصولوں سے قریب ہے۔

« بندہ نوازیوں پہ خدائے کریم تھا
کرتا نہ میں گنہ تو گناہِ عظیم تھا »

(امیر مینائی)

اور عمر خیام نے تو حد کردی، گناہ کو رحمت کی آرائش قرار دیدیا :

آباد خرابات زمے خوردنِ ما خونِ دو ہزار توبہ برگردنِ ما
گرمن نہ کنم گناہ رحمت چہ کند آرائشِ رحمت زگنہ کردنِ ما

یعنی یہ دنیا میری شراب نوشی سے آباد ہے، میری گردن پر دو ہزار توبہ کا خون ہے۔ اگر میں گناہ نہ کروں تو بیچاری رحمت کیا کرے گی۔ میرے گناہوں ہی سے تو اس کی آرائش ہوتی ہے۔ اسی فلسفے کے تحت شراب جو اسلام میں حرام تھی صوفیانہ شاعری میں شراب معرفت بن گئی اور ایسے اشعار کہے گئے جیسے :

«ز مے سجّادہ رنگین کن، گرت پیر مغاں گوید
کہ سالک بے خبر نبود ز راہ و رسمِ منزلہا»

(حافظ)

یعنی اگر پیر مغاں کہے تو جانماز کو شراب سے رنگین کرلو۔ کیونکہ روحانی رہنما منزل کی راہ و رسم سے بے خبر نہیں ہوتا) کبیر کے یہاں کہیں کہیں تانترک اثرات ملتے ہیں جیسے اس نظم میں یوگ اور بھوگ کے متعلق اُن کا نظریہ، لیکن کبیر کے یہاں بھوگ صرف گھریلو زندگی اور عام سماجی ذمہ داریوں تک محدود ہے۔ اس میں جنسی ہم آغوشی اور شراب خوری وغیرہ شامل نہیں ہے۔

(۴۱) سہج کے معنی ہیں فطری، بے ساختہ، اور بے تکلف۔ اور کبیر نے انہیں معنوں میں سہج سمادھی کا استعمال کیا ہے۔ (دیکھیے اودھو ۵)
بنگال کے باؤل (باؤلا = دیوانہ) بھگتوں میں جو «تمام روائتی بندشوں سے آزاد، ہوا کی طرح مارے مارے پھرتے ہیں» (کے ایم۔ سین) اور جنھوں نے اپنی عمارت بُدھ مت، تانترک اور وشنو مت کے کھنڈروں پر کھڑی کی ہے، سہج سادھنا کا بہت حسین تصور ملتا ہے :

« میں اس لئے دیوانہ ہوگیا ہوں، میرے بھائی
« کہ میں کسی رسم، کسی رواج، کسی مالک کا پابند نہیں ہوں
« انسانوں کے پیدا کئے ہوئے تفرقے میرے لئے بے معنی ہیں
« میں اپنے دل سے پیدا ہونے والی محبت کے سرور میں ڈوبا ہوا ہوں
« محبت میں ہجر ہے اور فراق نہیں، وصال ہی وصال ہے
« دل سے دل ملے رہتے ہیں
« میں اس خوشی میں ناچتا گاتا رہتا ہوں
« میں اس لئے دیوانہ ہوگیا ہوں میرے بھائی »

اردو کے شاعر میر تقی میر نے انتہائی سرشاری کے اس عالم کو غزل کے دو مصرعوں میں سمیٹ لیا ہے:

اس کا بحر حسن سراسر اوجِ موج و تلاطم ہے
شوق کی اپنے نگاہ جہاں تک جاوے بوس و کنار ہے آج

سہج پر باول بھگتوں کا اصرار اتنا زیادہ ہے کہ وہ اپنی تحریک کی تاریخ بھی قلمبند کرنا گوارا نہیں کرتے۔ اے۔ کے۔ سین نے اپنی انگریزی کتاب « ہندوازم » میں ایک دلچسپ واقعہ بیان کیا ہے۔ جب انہوں نے مشرقی بنگال میں دریا کے کنارے بیٹھے ہوئے ایک باؤل سے پوچھا کہ « آپ آنے والی نسلوں کے لئے اپنا تاریخی ریکارڈ کیوں نہیں رکھتے » تو اس نے جواب دیا کہ « ہم تو سہج کے قائل ہیں اور اس لئے اپنے پیچھے کوئی نقشِ قدم چھوڑنا ضروری نہیں سمجھتے »۔ اُس وقت دریا کا پانی اترا ہوا تھا اور کچھ مانجھی اپنی کشتی کو کیچڑ میں کھینچ رہے تھے جس کی وجہ سے کیچڑ میں نشان پڑگئے تھے۔ باؤل نے ادھر اشارہ کرکے کہا کہ « کیا بھرے پانی میں تیرتی ہوئی ناؤ کوئی نشان چھوڑتی ہے؛ صرف وہ مانجھی جو اپنی مجبوری کی وجہ سے کیچڑ میں ناؤ چلاتے ہیں نشان چھوڑ جاتے ہیں۔ یہ تو سہج نہیں ہے۔ اصلی کوشش یہ ہونی چاہیے کہ بھگتی کے اس دھارے پر تیرتے رہیں جو بھگتوں کی اپنی زندگی سے پیدا ہوتا ہے اور پھر ایک دھارے کو دوسرے دھارے سے ملا دیں۔ باؤل باؤل ہیں اور کچھ بھی نہیں۔ وہ کسی طبقے، کسی ذات سے بھی آئیں ان کا کوئی اور کارنامہ نہیں ہے۔ سب دھارے گنگا میں مل کر گنگا بن جاتے ہیں »۔

جاپانی ژن مت کا ایک واقعہ اس سے بھی زیادہ دلچسپ ہے۔ ایک محفل میں بہت سے ژن جمع ہوئے۔ مقرر تقریر کرنے کے لئے کھڑا ہوا۔ اتنے میں ایک چڑیا آئی اور کھڑکی پر بیٹھ کر گانے لگی۔ مقرر نے اپنی تقریر شروع نہیں کی اور چڑیا کا گیت سنتا رہا۔ جب چڑیا گیت ختم کر کے اڑ گئی تو مقرر نے اعلان کیا کہ محفل ختم ہوگئی۔ اور مجمع برخاست ہوگیا۔

غالب کے الفاظ میں اس کا نچوڑ یہ ہے کہ:

ہے رنگِ لالۂ و گل و نسریں جدا جدا
ہر رنگ میں بہار کا اثبات چاہیے
سر پائے خم پہ چاہیے ہنگام بے خودی
رو سوئے قبلہ وقت مناجات چاہیے
یعنی بہ حسبِ گردش پیمانۂ صفات
عارف ہمیشہ مست مے ذات چاہیے

اور سہج کے بیساختہ پن کو اقبال نے اس طرح ادا کیا:

نہ پیو ستم در ایں بستان سرا دل
ز بند این و آن آزاده رفتم
چو بادِ صبح گردیدم دمے چند
گلان را آب و رنگے داده رفتم

(ترجمہ: میں نے اس رنگ اور بو سے بھری ہوئی دنیا سے دل نہیں لگایا۔ میں ایسے ویسے بندھنوں سے ہمیشہ آزاد رہا۔ صبح کی ہوا کی طرح میں اس چمن میں آیا اور پھولوں کو رنگ اور حسن دے کر چلا گیا)۔

(۴۲) صوفیوں اور سنتوں نے علم اور عقل پر عشق کو ترجیح دی ہے۔ اُن کے یہاں باطنی عرفان (انتر گیان) اصل عبادت ہے اور عرفان ظاہری عبادت اور اس کے رسوم و قیود کو بیکار کردیتا ہے۔ اس کا سماجی پہلو یہ ہے کہ مولوی، پروہت اور ظاہری مذہب نے علم اور عقل پر قبضہ کر رکھا تھا۔ انتر گیان اور باطنی عرفان اس اجارہ داری کو توڑ دیتے ہیں اور خدا اور بھگوان کو عام انسانوں تک پہونچا دیتے ہیں۔

(۴۴) نظم ۱۷ کے پہلے تین بندوں میں بھی کبیر نے چاند، سورج اور ستاروں کے جلال و جمال کو اس نور مطلق کی نشانی سمجھا ہے جس سے ساری کائینات بھری ہوئی ہے. اس سنت شاعر نے بار بار خدا کو نور سے تعبیر کیا ہے. یہ خیال کبیر کا اسلامی ورثہ ہے. اللهُ نورُ السمٰوٰتِ وَالارضِ (قرآن حکیم) یعنی اللہ آسمانوں کا اور زمین کا نور ہے.

(۴٦) مشہور قدیم فارسی شاعر ابو سعید ابوالخیر نے ایک رباعی میں کہا ہے:

پُرسید یکے منزلِ آن مہر گُسِل
گفتم کے دلِ من است اورا منزل
گفتا کہ دلت کجا ست گفتم براو
پُرسید کے او کجا ست گفتم در دل

(ترجمہ: کسی نے پوچھا کہ اُس مہر گسل کی منزل کہاں ہے. میں نے کہا میرے دل میں. پوچھا تیرا دل کہاں ہے. میں نے کہا اس کے پاس۔ پوچھا وہ کہاں ہے. میں نے کہا میرے دل میں)
ایک اور فارسی شعر ہے:

خود کوزۂ و خود کوزہ گرو خود گل کوزہ
خود رندسبوکش
خود برسرِ آن کوزہ خریدار بر آمد
بشکست و روانہ شد

(ترجمہ؛ وہ خود ہی کوزہ ہے خود ہی کوزہ بنانے والا اور خود ہی وہ مٹی جس سے کوزہ بنتا ہے اور خود ہی اس کوزے میں شراب پینے والا پھر وہ خود اس کوزے کا خریدار بن کر ظاہر ہوجاتا ہے اور کوزے کو توڑ کر چل دیتا ہے) رومی

(۴۷) یہاں درخت سے مراد دنیا ہے لیکن اُسے بغیر جڑ کا وجود اس لئے کہا ہے کہ وہ مایا کی تخلیق ہے محض دام خیال. مگر چیلے (آتمن، جیو) کے ساتھ گرو (برھمن، وجود مطلق) بھی موجود ہے. جیو تو رس چکھنے یعنی دنیا کو برتنے اور بھوگنے میں مصروف ہے اور

بگھوان یا وجود مطلق نرنتر کھیل میں یعنی اپنی لیلا دکھا رہا ہے اور خوش ہو رہا ہے۔ اس نظم کی ابتدا میں جو الگ الگ معلوم ہوتے ہیں وہ آخر میں ایک ہو جاتے ہیں۔ بے شکل (گرو = ذاتِ مطلق) ہر شکل (جیو = فرد) کے اندر موجود ہے۔ اس لئے دنیاوی شکلوں ہی پر قربان ہو جانے کو جی چاہتا ہے۔ شیخ سعدی کے الفاظ میں «عاشقم برهمه عالم کے عالم ازوست» یعنی میں ساری دنیا پر عاشق ہوں کیونکہ ساری دنیا اُسی سے ہے۔ صوفیوں کی زبان میں اس کو «سرِ توحید» (ایک پن کا بھید) کہتے ہیں۔ حقیقت کی خارجی شکل انسان ہے اور وہ حقیقت کی داخلی شکل خدا کے ساتھ ایک ہے۔ صوفی اپنی خودی کے فریب سے نکل کر ذات مطلق میں غرق یا فنا ہو جاتا ہے۔ پھر اس کو ہر شکل میں الوہیت کی تصویر دکھائی دینے لگتی ہے۔ مولانا رومی نے اس کو «حقیقت در حقیقت غرقه» یعنی حقیقت حقیقت میں ڈوب گئی کہا ہے۔

(۵۱) صوفیوں کے نزدیک بھی موت وصال محبوب ہے۔ اس کی زیادہ ترقی یافتہ شکل فطرت سے ہم آہنگی ہے جس نے اردو کے کلاسیکی شعراء کے یہاں بڑی خوبصورت شکل اختیار کی ہے۔ میر کہتے ہیں:

رنگ گل و بوئے گل، ہوتے ہیں رواں دونوں
کیا قافلہ جاتا ہے، جو تو بھی چلا چاہے

پھر نہ کچھ دیکھا بجز یک شعلۂ پر پیچ و تاب
شمع تک تو ہم نے دیکھا تھا کہ پروانہ گیا

(۵٦) توحید کی طرح ایمان باالغیب بھی اسلام کی بنیاد ہے۔ اس نظم کا پہلا مصرع اس خیال سے قریب ہے۔ کبیر کی شاعری میں دوسرے مقامات پر غیب کا لفظ بار بار آیا ہے۔

(۵۷) دیکھیے ۱۰

(٦۰) میر تقی میر کہتے ہیں:

سراپا آرزو ہونے نے بندہ کر دیا ہم کو
و گر نہ ہم خدا تھے گر دلِ بے مدعا ہوتے

(٦٦) «جس نے اپنے آپ کو گناہوں سے پاک نہیں کیا، جس نے اعتدال اور سچائی کو چھوڑ دیا اور گیروے کپڑے پہننے کی خواہش کی وہ گیروے کپڑوں کے قابل نہیں ہے.» (دھم پد، میکس مُلر کے انگریزی ترجمے سے ترجمہ)

ہندوستان کے قومی جھنڈے کے رنگوں پر اظہار خیال کرتے ہوئے راشٹر پتی ڈاکٹر رادھا کرشنن نے فرمایا ہے جو گیا یا گیروا رنگ در اصل آگ کا رنگ ہے اور آگ وہ استعارہ ہے جس میں ہر کثافت جل کر راکھ ہو جاتی ہے.

اس لئے گیروا لباس تارک الدنیا جوگیوں کا لباس قرار پایا اور بُدھ، بکھشوؤں نے بھی پہنا. لیکن یہ لباس خود ایک قسم کی مذہبی وردی بن گیا. اس لئے صوفیوں اور سنتوں نے تمام مذہبی رہنماؤں کے اس قسم کے لباس کی طرح گیروے کپڑوں کی بھی مخالفت شروع کردی اور اس کے مقابلے میں من کے رنگ یعنی دل کی صفائی اور پاکیزگی پر زور دیا.

کبیر کی طرح بنگال کے باؤل بھگتوں کا یہ کہنا ہے کہ «اگر رنگ دل میں نہ ہو تو باہر کیا دکھائی دے گا. کچے پھل کے چھلکے کو رنگ دینے سے کچھ پھل نہیں پک جاتا» وہ تو کچا ہی رہتا ہے.

فارسی اور اردو شاعری میں شیخ اور مُلا کے عمامے اور مذہبی کپڑوں کا خوب مذاق اڑایا گیا ہے. اکثر میخانے کے لونڈے شیخ کا عمامہ اتار لے جاتے ہیں:

جو پاک رکھتے ہیں تن کا جامہ، رکھے ہیں، ناپاک دامنِ دل
خدا کے نزدیک اے مُصلیؔ، نہیں ہیں زنہار وہ نمازی
(محمد رفیع سودا)

(٦٩) دل سے پوچھا یہ میں کہ عشق کی راہ
کس طرف مہربان پڑتی ہے
کہا اُن نے کہ نے یہ ہندستان
نے سوئے اصفہان پڑتی ہے

یہ دو راہا جو کفر و دین کا ہے
دونوں کے درمیان پڑتی ہے

(سودا)

(۷۵) دیکھیے ۴۴

(۸۰) درخت ، شاخ اور جڑ کا استعارہ عبدالرحمن جامی کے یہاں بھی ہے :

دلا منشیں در این ویرانہ چوں چُغد
سوئے مرغان قُدسی آشیاں بر
بود گیتی درختے سر بسر شاخ
ولے جملہ سوئے یک اصل رہبر
زہر شاخے سوئے آں اصل رہ جوی
چوں آں را یافتی از شاخ بگزر
نہ باشد شیوۂ مرغانِ زیرک
نشستن ہر زماں برشاخِ دیگر

(ترجمہ : اے دل ویرانے میں الو کی طرح نہ بیٹھ ۔ اُڑ کر اُن طائروں کے پاس پہونچ جا جن کا نشیمن عرش معلیٰ پر ہے ۔ زمین ایک ایسا درخت ہے جس میں شاخیں ہی شاخیں ہیں لیکن وہ تمام شاخیں ایک اصلیت یعنی جڑ کی طرف رہنمائی کر رہی ہیں ۔ ہر شاخ سے اصل کی طرف جانے کی راہ تلاش کر ۔ جب وہ مل جائے تو شاخ کو چھوڑ دے نئی نئی شاخوں پر بیٹھے رہنا عقلمند طائروں کا شیوہ نہیں)

(۸۹) (نظم ۱۷ کا پہلا بند بھی دیکھیے)

گگن راگ: در اصل ستاروں کا نغمہ ہے ۔ کبیر نے اپنی کئی اور نظموں میں اس کو بار بار دھرایا ہے ۔ مسلم فلسفیوں اور صوفی شاعروں کے یہاں یہ تصور موجود ہے ۔ اس کی ابتدا یونانی مفکر فیثاغورس (Pythagorus) کے اس نظرئے سے ہوتی ہے کہ سیاروں کے فاصلوں اور گردشوں کا توازن موسیقی کے اصولوں کی بنیادوں پر قائم ہے ۔ مسلم فلسفیوں نے اس سے یہ نظریہ بنایا کہ سیاروں اور ستاروں سے نغمہ پیدا ہوتا ہے جو خدا کی حمد و ثنا کے لئے ہے ۔ اور اس نغمے کو پاک

روحیں سن سکتی ہیں۔ اصولِ اول کے گرد گھومتے ہوئے ستاروں کی گردش عشق کا نتیجہ ہے۔ یہی نغمہ آسمان سے اتر کر زمین پر آیا ہے۔ مولانا رومی فرماتے ہیں:

پس حکیمان گفته اند این لحنها
از دوارِ چرخ بگرفتیم ما
بانگ گردش ہائے چرخ است این که خلق
می سرایندش بطنبور و بحلق

(ترجمہ: پس فلسفیوں کا کہنا ہے کہ یہ مترنم آوازیں آسمان میں ناچتے ہوئے نورانی اجسام سے آتی ہیں۔ اور یہ نغمہ جو لوگ طنبور سے پیدا کرتے ہیں اور گلے سے نکالتے ہیں گردش چرخ کا نغمہ ہے)

اس بنیاد پر صوفیوں نے سماع کو جائز قرار دیا ہے جبکہ اسلام میں موسیقی حرام ہے۔ چنانچہ مولانا رومی فرماتے ہیں کہ سماع در اصل «صوت بلیٰ» سننے کا نام ہے اور انسان بے خود ہوکر وصال یار تک پہونچ جاتا ہے۔ (مثنوی کا انگریزی ترجمہ، از نکلسن، جلد نمبر ۸)

کبیر نے ایک نظم (نمبر ۳۹) میں انسانی جسم کو طنبورے کا ٹھاٹھ کہا ہے جس سے حضوری کا نغمہ نکلتا ہے۔

(۹۰) اس نظم کا آخری مصرعہ مبہم ہے۔ ہندی اور اردو کے ترجمے دو مختلف اوقات میں کیے گئے تھے اس لئے ان میں بہت بڑا فرق پیدا ہو گیا ہے۔ اور وہ غلطی سے اسی طرح چھپ گئے۔ اردو کا ترجمہ ٹیگور کے کئے ہوئے انگریزی ترجمے سے زیادہ قریب ہے۔ (ارد میں مجروح کا لفظ محبوب پڑھا جائے)

(۹۱) ہندستان کی جدید زبانوں مثلاً ہندی، اردو، مراٹھی، بنگالی، پنجابی وغیرہ کی ترقی میں صوفیوں اور سنتوں کا بہت بڑا حصہ ہے۔ انہوں نے سنسکرت اور فارسی کو چھوڑکر جو مولویوں، حکمرانوں اور پنڈتوں کی زبانیں تھیں اور عوام کی دسترس سے بہت دور تھیں، عوام کی بولیوں یعنی بھاشاؤں میں لکھنا شروع کیا، ہندی میں کبیر، ملک محمد جائسی، تلسی داس، سور داس، میرا بائی اس کی سب سے زیادہ شاندار مثالیں ہیں۔

اس نظم میں کبیر نے سنسکرت کو غرور اور تکبر کی زبان قرار دیا ہے . ایک اور جگہ لکھا ہے کہ سنسکرت تو کنوئیں کا پانی ہے اور بھاشا بہتی ہوئی ندی ہے . (« سنسکرت ہے کوپ جل ، بھاشا بہتا نیر ») پنڈت سُندر لال نے اپنی کتاب « کبیر اور انسانیت » میں لکھا ہے کہ « کاشی کے ہندوؤں میں ان دنوں سنسکرت کا زور تھا » ظاہر ہے کہ کبیر ایسی زبان استعمال کرنا چاہتے تھے جو آسانی سے لوگوں کے دلوں میں گھر کرسکے .

(۹۳) غالب کا تخیل حسن اور عشق کے مکمل وصال کے لئے ترستا رہا :

میں نامراد دل کی تسلی کو کیا کروں
مانا کہ تیرے رخ سے نگہ کامیاب ہے

وا کردئے ہیں شوق نے بندِ نقاب حسن
غیر از نگاہ اب کوئی حائل نہیں رہا

لیکن کبیر نے نگاہوں کے اس فاصلے کو ختم کردیا ہے اور وصل ہی وصل ہے . ایک دوہے میں اس خیال نے یہ شکل اختیار کی ہے :

نینا انتر آو توں ، جیوں ہوں نین جھپنیوں
نا ہوں دیکھوں اور کوں ، نا تجھ دیکھن دیوں

(پلک جھپکاتے ہی تو آنکھوں میں سما جاتا ہے . میں آنکھیں بند کرلیتا ہوں ، نہ خود کسی کو دیکھتا ہوں نہ تجھے دیکھنے دیتا ہوں)

ایک اور دوہا :

نینوں کی کر کوٹھری ، پُتری پلنگ بچھائے
پلکوں کی چِک ڈار کے ، پیا کو لیا رجھائے

(ترجمہ : آنکھوں کی کوٹھری بنائی اور پتلی کا پلنگ بچھایا اور پلکوں کی چلمن ڈال کر پیا کو رجھا لیا)

(۹۶) غالب نے کہا ہے :

کسی کو دے کے دل کوئی نوا سنجِ فغاں کیوں ہو
نہ ہو جب دل ہی سینے میں تو منہ میں زباں کیوں ہو

(۹۹) آخری دو مصرعوں میں دوبارہ پیدا ہونے کی طرف اشارہ ہے ، عمر خیام کی ایک رباعی میں موت صفات کو ترک کرکے عین ذات بن جانے کا نام ہے جسے اس نے عین حیات کہا ہے :

ما ذاتِ نهاده در صفاتیم همه
عینِ خرد و سخرهٔ ذاتیم همه
تا در صفتیم در مماتیم همه
چوں رفت صفت ، عینِ حیاتیم همه

(ترجمه : میں وہ ذات ہوں جو صفات میں گھری ہوئی ہے . (سَرگُن کے اندر نِرگن) میں عین خرد ہوں لیکن چونکه صفات میں لپٹا ہوا ہوں اس لئے عین ذات کے سامنے مسخرہ معلوم ہوتا ہوں . جب تک صفات میں مبتلا ہوں تب تک موت میں مبتلا ہوں . جب صفات زائل ہوجائیں گی تو میں عین حیات بن جاوں گا)

(۱۰۱) سُمیر = سونے کا ایک فرضی پہاڑ . پہاڑوں کا سر تاج .

(۱۰۲) اپنے آپ کو مذہبی کتابوں سے آزاد کرلینے کا جذبہ بھگتی کے دوسرے مدرسوں میں بھی ملے گا مثلاً کے ایم . سین نے اپنی انگریزی کتاب « ہندوازم » میں بنگال کی باول تحریک کے ایک بھگت کا واقع لکھا ہے :

« جب میں نے ایک باؤل سے پوچھا کے وہ لوگ مذہبی کتابوں کو کیوں نہیں مانتے تو اس نے ذرا خفا ہوکر جواب دیا که کیا ہم کتے ہیں جو دوسروں کا جھوٹا چاٹتے پھریں . بہادر صرف اپنی تخلیق اور اپنے کارنامے پر فخر کرتے ہیں . جو اپنے باپ دادا کے کارناموں پر ناز کرتے رہتے ہیں وہ بزدل اور کمزور ہیں . اُن میں خود کوئی صلاحیت باقی نہیں رہ گئی . »

کبیر نے بھی ایک دوہے میں کہا ہے :

ساکھی لائے جتن کر ، اِت اُت اچھر کاٹ
کہہ کبیر کب لگ جیئے ، جھوٹی پتّل چاٹ

(ترجمہ : ادھر اُدھر سے حرف جمع کر کے نصیحت نامہ تیار کیا گیا ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس طرح جھوٹے پتّل چاٹ کر کب تک زندہ رہو گے)

سہج = جو ساتھ پیدا ہوا ہو ۔ فطری ، بیساختہ ، بے تکلف ۔

شوٗنیہ = خلا ، سناٹا ، بے صفات ذاتِ مطلق ۔

کھلاس = خلاص ۔

میرا = اے امیر اے پنچ ۔

(۱۰۳) حافظ شیرازی نے بھی دنیا (سنسار = مایا) کو ایک ایسی عورت سے تشبیہ دی ہے جس کے ہزاروں شوہر ہیں ۔ « کہ این عجوز عروسِ ہزار داماد است » ۔

کبیر کی نظم کا آخری مصرعہ اس اعتبار سے اہم ہے کہ اس میں مایا کو لافانی کہا گیا ہے ۔ اس خیال کا سلسلہ زاما نُج کے وششٹ اَدؔویت سے جا ملتا ہے ۔ (دیکھیے دیباچہ کبیر کے مایا کے تصور پر نوٹ) ۔

(۱۰۴) رَت = میں نے اس کا ترجمہ مصرع کے پورے مفہوم کے اعتبار سے لو لگانا کیا ہے ۔ رَتِ جنسی جذبے کو بھی کہتے ہیں اور یہ عشق کے دیوتا کامدیو کی بیوی کا بھی نام ہے ۔

(۱۰۵) اہیرا = اہیڑ = شکار ۔

نیرا = قریب ۔

مونی = خاموش رہنے والے سادھو ۔

بیر = شیو بھگتوں کی ایک قسم ۔

دگمبر = جینی فقیر جو ننگے رہتے ہیں اور تمام دِشاؤں (سمتوں) کو اپنا لباس سمجھتے ہیں ۔

سنگی = ایک رشی کا نام جو جنگل میں تپسیا کرتے تھے اور ایک عورت پر عاشق ہوگئے تھے۔

برھما کا سر پھوڑنا = دماغ یا عقل برھما کا مقام ہے۔ اس لئے اس کا مطلب ہوا عقل کا قتل۔

چھندر ناتھ = سِدھ یوگی تھے جو لنکا کی عورتوں پر عاشق ہوگئے تھے۔

ساکٹ = شکتی کو ماننے والا۔ غرور اور طاقت سے کام لینے والا۔

(۱۰۶) اس نظم کا مفہوم واضح نہیں ہے۔ بانگڑ دیش اور مالوے کی کیا اہمیت ہے پتہ نہیں چلتا۔ بانگڑ اس علاقے کا قدیم نام ہے جسے ہریانہ کہتے۔ مالوے کا علاقہ وسط ہندستان میں ہے جہاں کی راتیں بڑی سہانی ہوتی ہیں۔ اس علاقے کو کبیر نے «گھر گنبھیر» کہا ہے یعنی وسیع، بیکراں، اتھاہ۔ اس اعتبار سے بانگڑ دیش کا مطلب ہوگا اونچا یا بلند خشک پٹھاروں کا علاقہ۔ کبیر چونکہ گرہستی تھے اور کپڑا بن کر اپنی روزی کماتے تھے اس لئے یہ خیال پیدا ہوتا ہے کہ بانگڑ دیش سے مراد ترک دنیا ہے اور گھر گنبھیر مالوے سے مراد دنیا کو برتنا ہے۔ نظم کے آخر میں کبیر نے دنیا کو اعتباری کہا ہے:

یہ تو وہم کا کارخانہ ہے
یاں وہیں ہے جو اعتبار کیا

(میر تقی میر)

(۱۰۷) صبح دم طائرانِ خوش الحان
پڑھتے ہیں کلُّ من علیہا فان
جائے عبرت سرائے فانی ہے
موردِ مرگ ناگہانی ہے

(شوق)

[۱۰۹] تِر گُن پھانس = (ترگن کا پھندا) قدیم ہندو فکر کے مطابق مادّے یا پراکرتی کی تین صفات (گُن) ہیں ۔ ۱ ۔ تَمس یعنی جمود ، سکون ، بے حرکتی ۲۔ رَجَس یعنی حرکت ، عمل ۳۔ ستّو یعنی تناؤ یا آہنگ اور تناسب ، یہ تینوں صفات مل کر مادے کی اصل حقیقت بن جاتی ہیں ۔ بٹی ہوئی رسّی کی طرح یہ تینوں صفات (گُن) ایک دوسرے کے ساتھ پیوست ہیں ۔ پہلے گن کی زیادتی انسان کو سست ، کاہل ، اور کینہ پرور بنا دیتی ہے ۔ دوسرے گن کی زیادتی غرور اور شجاعت پیدا کرتی ہے اور تیسرے گن کی زیادتی متوازن طبیعت اور سمجھداری کی ذمہ دار ہے ، بالترتیب ان کا رنگ سیاہ ، سرخ اور سفید ہے ۔

کیسو : کیشو = خوبصورت بالوں والا ، وشنو کا ایک اور نام ۔ (ویسے یہ نام کرشن جی کے لئے بھی استعمال ہوتا ہے ۔ کیونکہ وہ وشنو کا اوتار ہیں) ۔

بھوانی : شیو کی بیوی پاروتی یا دُرگا کا ایک اور نام ، بھوانی دیوی ٹھگوں کی رکھوالی ہے اور چیچک کی بھی دیوی سمجھی جاتی ہے ۔

کملا : لکشمی دیوی کا ایک اور نام ، مکمل عورت ۔

برھمانی : برھما کی مونث ، کبیر کی ایجاد معلوم ہوتی ہے ۔

[۱۱۱] معلوم نہیں چھپن کروڑ اور اٹھاسی ہزار کی تعداد کی کیا اہمیت ہے ۔ لیکن اشارہ یادَو قبیلے کے ڈوبنے کی طرف ہے ، ایک چندر وَنشی راجہ ییاتی کا بیٹا یدُو تھا ۔ اس کی نسل یادَو کہلائی جس میں کرشن پیدا ہوئے ۔ کرشن جی کی پیدائش کے وقت وہ لوگ گوالے تھے ، لیکن آخر میں دُوارکا (گجرات) میں اُن کی سلطنت قائم ہوئی کرشن جی کے بعد جب دُوارکا شہر سمندر کی طوفانی لہروں میں ڈوب گیا تو یہ لوگ بھی غرق ہوگئے ۔ وشنو پُران میں ان کی تعداد لاکھوں اور کروڑوں بتائی گئی ہے ۔

اس نظم میں جس خیال کا اظہار کیا گیا ہے اس کی تائید میں دو واقعے بھی بیان کئے جاتے ہیں ۔

کبیر کی بیٹی کمالی کے متعلق مشہور ہے کہ وہ ایک دن کنوئیں پر پانی بھر رہی تھی، ایک پیاسے براھمن نے اُس سے پانی مانگا. پانی پی کر جب اُسے یہ معلوم ہوا کہ کمالی جولاہے کی بیٹی ہے تو وہ بہت خفا ہوا اور کہنے لگا کہ تونے مجھے بے دھرم کردیا. دونوں کبیر کے پاس آئے، کبیر نے براھمن دیوتا کو بتایا کہ آخر سمجھو تو پاک اور ناپاک کیا چیز ہے. سیکڑوں لاشیں اور منوں پتیاں پانی میں سڑا کرتی ہیں، کروڑوں آدمی زمین میں دفن ہیں اور اس مٹی سے وہ برتن بنائے جاتے ہیں جن میں تم پانی پیتے اور کھانا کھاتے ہو. کھانا کھاتے وقت تم کپڑے اتار ڈالتے ہو، صرف ایک دھوتی باندھے رہتے ہو مگر وہ دھوتی جلاہے کی بُنی ہوئی ہوتی ہے. مکھیاں غلیظ اور مُردار پر بیٹھتی ہیں اور وہاں سے اُڑکر تمھارے کھانے پر بیٹھتی ہیں کیا تم اُن کو روک سکتے ہو. اسی طرح کا ایک اور واقعہ «دبستان مذاہب» میں درج ہے.

«کہتے ہیں کچھ براھمن گنگا کنارے بیٹھے ہوئے گنگا جل کی تعریف کر رہے تھے کہ اس سے سارے گناہ دھو جاتے ہیں. اُن میں سے ایک نے پانی مانگا. کبیر اُن کی باتیں سن رہا تھا. اُٹھ کر گیا اور اپنا پیالہ پانی سے بھرکر براھمن کے پاس لے آیا. چونکہ کبیر جولاہا تھا اور براھمن ان لوگوں کے ہاتھ کا چھوا ہوا کھاتے پیتے نہیں ہیں، اس براھمن نے پانی نہیں پیا. کبیر نے کہا کہ آپ ابھی فرماتے تھے کہ گنگا جل سے گندگی سے بدن اور روح دھوجاتے ہیں. اگر یہ پانی میرے برتن کو بھی پاک نہیں کرسکتا تو اس تعریف کے قابل نہیں». (کبیر صاحب - مولفۂ پنڈت منوہر لال زتشی - مطبوعہ ہندستانی اکیڈمی - الہ‌آباد ۱۹۳۰ع).

(۱۱۳) باد بیادم = (واد وِواد) بحث مباحثہ.

نو نِدھ کایا = نو نِدھیوں سے معمور جسم، نِدھ خزانے کو کہتے نو نِدھ دولت کے دیوتا کُوَیر کے نو خزانے ہیں. اور ہر خزانے کی محافظ ایک ایک روح ہے جن کی پرستش تانترک دھرم میں کی جاتی ہے، اُن سب کے الگ الگ نام ہیں.

اَت = بے حد

واساَ = رہنے کی جگہ

اُبارنا = بے نقاب کرنا

وِینَد = (بِندو) نقطہ۔ غالب نے کہا ہے :

سخن یکے ست ولے در نظر ز سُرعتِ سیر
کند چو شعلۂ جوّالہ نقطہ پرکاری

(ترجمہ : بات ایک ہی ہے لیکن اپنی تیز رفتاری کی وجہ سے ایک نقطہ جو وجودِ مطلق ہے ناچتے ہوئے شعلے کی طرح نگاہوں پر ظاہر ہوتا ہے)

غالب کی تشبیہ ذہنی اور فکری ہے ۔ کبیر کی تشبیہ حسّی اور زمینی ۔

گُووینَد = (گووِند) کرشن کا نام، کرشن وشنو کا اوتار ہیں اس لئے بھگوان یعنی خالقِ کائینات ۔

گیارہویں اور بارہویں مصرعے میں جو تصویر کبیر نے پیش کی ہے وہ بڑی خوبصورت اور عجیب و غریب ہے ۔ سانس ہوا کا کھمبا ہے جس کے چاروں طرف جسم مٹی کی بنی ہوئی تصویر ہے ۔

پوَن باتِ = (پون باتی) ۔ ہوا کی بتّی ۔ یہاں سانس چراغ کی لو ہے (شمعِ عرفان کا اجالا)

(۱۱٦) انگیا جسم ہے اور دولہن روح ۔

چت انجن = لفظی معنی دل کا کاجل، مراد ہے دل کی آنکھ میں گیان کا کاجل ۔

(۱۱۷) تیرتھہ برن بھر لانا = اس ٹکڑے کا ترجمہ نہیں گیا ہے کیونکہ مفہوم صاف نہیں ہے ۔

چھاپ = چھاپا ۔ تِلک کی ایک قسم ۔ ہندوؤں میں مختلف فرقوں کے تِلک الگ الگ ہیں ۔

(۱۱۸) روجا = روزہ ۔

نواج = نماز.

بھست = بہشت.

مال متین = مال متاع.

دو جگ = دوزخ.

ستّر کعبے اک دل بہتر = اس تصور سے اردو اور فارسی شاعری بھری پڑی ہے:

بت خانہ توڑ ڈالئے مسجد کو ڈھائیے
دل کو نہ توڑئیے یہ خدا کا مقام ہے

توڑ کے بت خانے کو مسجد بناکی تو نے شیخ
برھمن کے دل کی بھی کچھ فکر ہے تعمیر کا

سودا

ٹک دیکھ صنم خانۂ عشق آن کے اے شیخ
جوں شمعِ حرم رنگ جھمکتا ہے بتاں کا

سودا

مے خور و مصحف بسوز و آتش اندر کعبہ زن
ساکنِ بت خانہ باش و مردم آزاری مکن

(ترجمہ: شراب پیو، قرآن کو جلا دو، کعبے کو آگ لگا دو اور بت خانے میں جا کر بیٹھ جاؤ لیکن مردم آزاری مت کرو۔ یعنی مردم آزاری سب سے بڑا گناہ ہے)

آخری دو مصرعے۔ ماٹی ایک ..... سمانا:

حقیقت ایک ہے ہر شے کی خاکی ہو کہ نوری ہو
لہو خورشید کا ٹپکے اگر ذرے کا دل چیریں

(اقبال)

کہیں کبیر ..... من مانا:

ہم کو معلوم ہے جنت کی حقیقت لیکن
دل کے خوش رکھنے کو غالب یہ خیال اچھا ہے

(غالب)

(۱۲۰) جُگ ملن = چوسر کے کھیل میں جب ایک خانے میں دو گوٹیں جمع ہوجاتی ہیں تو وہ پٹ نہیں سکتیں۔ اس کو جُگ ملن کہتے ہیں۔ سودا کا شعر ہے:

امن دو دل کو ہو یکساں بہ بساطِ دوراں
چوٹ کھاتی نہیں وہ نرد جو ہو نرد کے ساتھ

بساطِ دوراں = زمانے کی بساط۔ نرد = گوٹ۔

چار برن = چار رنگ، چوسر کے کھیل میں گوٹوں کے چار رنگ اور ہندو دھرم میں ذاتوں کے چار رنگ یہاں دونوں مفہوم ہیں۔

چوراسی = چوسر کے کھیل میں گوٹ کو چوراسی گھر چلنے پڑتے ہیں تب کہیں جاکر اُس کی گردش ختم ہوتی ہے۔ ہندو عقیدہ ہے کہ نروان سے پہلے انسان کو چوراسی لاکھ جنم لینے پڑتے ہیں۔

پو = جب گوٹ آخری گھر میں پھونچ جاتی ہے تو جیتنے کے لئے پو ضروری ہے، یہاں پو سے مراد موت اور نروان ہے، جو گوٹ چوراسی گھر چلنے اور پو پڑنے کے بعد اندر پھونچ گئی وہ پھر باہر نہیں نکلتی گویا اس کا نروان ہوگیا۔

(۱۲۱) سُرت = محبت، لیکن یہاں غالباً یہ صورت کی بگڑی ہوئی شکل ہے،



⋙ टिप्पणियाँ ⋘

१ इस्लाम में खुदा को रगे-जाँ (प्राण-धमनी) से भी ज़्यादा क़रीब माना गया है। तसव्वुफ़ की परंपरा में और उर्दू और फ़ारसी शायरी में इसकी बेशुमार मिसालें मिलेंगी।

दिल के आईने में है तस्वीरे-यार
इक ज़रा गर्दन झुकायी देख ली
(अज्ञात)

जिन्हें मैं ढूँढता था आसमानों में ज़मीनों में
वो निकले मेरे ज़ुल्मतखानए-दिल के मकीनों में
(इक़बाल)

[ज़ुल्मतखानए-दिल = दिल का अँधेरा घर; मकीन = रहनेवाला]

न तू अंदर हरम गंजी, न दर बुतखाना मी आई
व लेकिन सूए-मुश्ताक़ाँ चे मुश्ताक़ाना मी आई
क़दम बीबाकतर नेह दर-हरीमे-जाने मुश्ताक़ाँ
तू साहिब खानई आखिर चिरा दुज़्दाना मी आई
(इक़बाल)

भावार्थ :- तू काबे में समाता है और न बुतखाने में, लेकिन अपने चाहनेवालों के पास कितना खुश होकर आता है। ज़रा चाहनेवालों के दिल (हरीम खाना : खिल्वतखाना, रूह) में निडर होकर क़दम रख। आखिर तू इस घर का मालिक है, फिर चोरों की तरह आने की क्या जरूरत है?)

बंगाल के बाउल भक्तों के यहाँ भी यह धारणा प्रचलित है :

"ए दिल, मैं मक्के और मदीने क्यों जाऊँ
"मेरा महबूब (मनेर मानुष) तो मेरे पहलू में है
"उससे अनजान होकर, उससे दूर रहकर मैं दीवाना हो जाता हूँ,
"मंदिर और मस्जिद में पूजा कहाँ
"हर क़दम पर मक्का है हर क़दम पर काशी
"मेरे जीवन का एक-एक पल धन्य है।"

[ए. के. सेन की अंग्रेजी पुस्तक "हिंदूइज़्म से अनूदित]

इस कल्पना का आरंभ उपनिषद और वेदांत से होता है और यह कविता और दर्शन की धर्म निरपेक्ष कल्पना की ओर मनुष्य का पहला क़दम है जिसमें धर्म-ग्रंथों और उपासना गृहों को छोड़ कर मनुष्य ने मनुष्य की आत्मा के अंदर कने की और उसके व्यक्तित्व में दिलचस्पी लेने की कोशिश की है।

२ **सन्त रैदास—**असली नाम रविदास है। कबीर के गुरु स्वामी रामानंद के बारह चेलों में रैदास भी एक हैं जो जाति के चमार थे। वह भी शायद काशी के रहनेवाले थे। इनकी कोई पूरी किताब या संग्रह नहीं मिलता, लेकिन कुछ कविताएँ (लगभग ४० पद) सिखों के धर्मग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहब' में शामिल हैं।

यह अजीब और दिलचस्प बात है कि मध्ययुग का वह मानव-प्रेमी आंदोलन जिसने पहली बार पूरी मानवता को एक बिरादरी समझा और धर्म को प्रेम बना दिया और जो योरप में 'मिस्टीसिज़्म' (mysticism), इरान और इस्लामी दुनिया में तसव्वुफ़ और हिंदुस्तान के हिंदुओं में भक्ति और चीन में ची-एन और जापान में ज़ेन (ध्यान का अपभ्रंश) के नाम से मशहूर हुआ और स्वीकार किया गया, एक ऐसा आंदोलन था जिसके प्रकट रूप पर इन प्रदेशों के धर्मों का रंग चढ़ा हुआ था लेकिन जो आंतरिक रूप में अर्थात अपने सार और उद्देश्य की दृष्टि से एक था। यह आंदोलन शुरु से आखिर तक इस युग के शिल्पकारों के हाथों में रहा। ईसाई सन्त पाल खेमादोज़ (तंबू सिलनेवाला) थे, मंसूर हल्लाज बढ़ई और खुद कबीर जुलाहे थे।

एक ईसाई पादरी ने हज़रत ईसा को भी शिल्पकारों की श्रेणी में शामिल कर दिया है। "वे हाथ जो दैवी कृपा बनकर लोगों की रक्षा करते थे, जो अंधो की आँखों को रोशनी देते थे और कोढ़ियों को अच्छा कर देते थे, जिनकी हथेलियाँ सलीब पर ज़ख़्मी हो गयी थीं, वे हाथ मेहनत से चूर और पसीने से तर-बतर हो चुके थे। वे कीले ठोंकना जानते थे। वे एक साधारण श्रमिक के हाथ थे। हज़रत ईसा ने आत्मा को सुधारने और निखारने से पहले पदार्थ (matter) को अपने हाथों से सँवारा था। (Giovanni Papini "Life of Christ")

डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने अपनी अंग्रेजी किताब "हिंदू सिविलिज़ेशन" (भारतीय विद्या भवन, बंबई, खण्ड १, पृष्ठ १०५) में भारत की अलग अलग जातियों और वर्णों के कर्त्तव्य बताये हैं। "ब्राह्मण—शिक्षा देना, यज्ञ और पूजा-पाठ कराना, दान लेना; क्षत्रिय—रक्षा और शासन करना; वैश्य—व्यापार और खेती करना, पशु पालना, महाजनी करना, शूद्र—सच्चाई, सफ़ाई, विनम्रता, आचमन-मंत्र के बग़ैर स्नान, लाशें उठाना और जलाना, अपनी ही जाति में विवाह करना, ऊँची जातिवालों की सेवा करना और शिल्पवृत्ति अर्थात दस्तकारी करना, नाई धोबी, चित्रकार, बढ़ई, लोहार आदि का काम करना।"

ऐसी सूरत में ज़ाहिर है कि समाज की प्रगति, सामंती व्यवस्था के पतन और व्यापार और प्रारंभिक पूँजीवाद के उत्थान के साथ-साथ वैश्य और शूद्र का पद ऊँचा हो गया

क्योंकि व्यापार, खेती, पशुपालन और महाजनी वैश्य के हाथ में थी और सारे शिल्प शूद्र के हाथ में। भक्ति आंदोलन के साथ-साथ कविता और दर्शन भी, जिन पर ब्राह्मणों का एकाधिकार था, शिल्पकारों तक पहुँच गये। उसका आखिरी और बड़ा कवि और चिंतक कबीर है।

सुपच ऋषि—कबीरपंथी ग्रंथों में यह बताया गया है कि कलियुग के आरंभ में जब कबीर साहबने जन्म लिया तो काशी के सुदर्शन नामक महात्मा ने कबीर से दीक्षा ली। वह जाति के भंगी थे। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पुस्तक कबीर में लिखा है कि महाभारत की लड़ाई जीत लेने के बाद युधिष्ठिर ने अपने भाइयों और सगे संबंधियों का वध करने के पाप का प्रायश्चित करने के लिए एक बहुत बड़ा यज्ञ किया। भगवान श्रीकृष्ण ने इस यज्ञ में एक घंटा बाँध दिया और कहा कि जब घंटा सात बार बजे तो समझना चाहिये कि पाप से मुक्ति मिल गयी। हज़ारों साधु और ब्राह्मण भोजन कर चुके मगर घंटा नहीं बजा। तब कृष्णजी के आदेश पर भीम काशी के सुदर्शन भंगी को बुलाने गये। भीम के अहंकार के कारण सुदर्शन ने आनेसे इंकार कर दिया। तब युधिष्ठिर खुद उन्हें बुला लाये और भोजन कराया। उनके भोजन करने पर घंटा बजा। फिर सब लोग कृष्णजी के कहने पर प्रयाग गये। वहाँ संगम के पानी में सबने अपनी परछाई देखी। सिर्फ सुदर्शन भंगी की परछाई मनुष्य की थी, बाकी सबकी परछाइयाँ कुत्ते और दूसरे जानवरों से मिलती थी।

सन्तों की कोई जाति नहीं होती इस विचार को सूफ़ी चिंतन में इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

बंदए-इश्क़ शुदी तर्के-नसब कुन 'जामी'
कि दरिन राह फुलाँ-इब्ने फुलाँ चीज़े-नीस्त

—जामी

[भावार्थ:– ऐ जामी, अब इश्क़ की गुलामी की है तो बाप-दादा का नाम भूल जाओ, क्योंकि इस रास्ते में यह बात कि अमुक आदमी अमुक का बेटा है कोई अर्थ नहीं रखती]

बाज़ मी गोयमो अज़ गुफ़्तए-खुद दिलशादम
बंदए इश्क़म-ओ-अज़ हर दो जहाँ आज़ादम

[भावार्थ:– मैं यह बात फिर दोहरा रहा हूँ और इस बात से खुश हूँ कि मैं इश्क़ का गुलाम हूँ ओर दोनों जहान की पाबंदियों से आज़ाद हूँ]

—हफ़िज़ शीराज़ी

३ कर्म की फांस—सभी धर्मों में यह धारणा प्रचलित है कि नैतिक नियम ईश्वर या देवताओं के बनाये हुए हैं और इनका पालन करना मनुष्य का कर्तव्य है। नैतिकता की इस कल्पना में पहला बुनियादी परिवर्तन गौतम बुद्ध (५०० ई. पू.) ने किया, जिनकी शिक्षा में नैतिक नियम स्वयं मनुष्य बनाता है और उनको अपने ऊपर लागू करता है। किसी के प्राण न लेना, वासनाओं से बचना, झूठ और नशे से दूर रहना, ये सब अपनी इच्छा से स्वीकार किये जाने वाले कर्तव्य हैं जिनका कोई पुण्य फल नहीं मिलता बल्कि ये चेतना को निखारते हैं या वे परदे उठ जाते हैं जो चेतना पर पड़े हुए हैं। इन कर्तव्यों का पालन

करना अच्छा कर्म है और इसके विपरीत बुरा कर्म है और इन दोनों से क्रिया-प्रतिक्रिया का क्रम आरंभ होता है जिसका कोई अंत नहीं है। लेकिन हर कर्म चाहे वह अच्छा हो या बुरा हो, एक तरह का उलझावा है, मनुष्य की गरदन में पड़ी हुई रस्सी है जो उसे क्रिया-प्रतिक्रिया के इस अनंत क्रम में खींचे लिये जा रही है। इसको कबीर ने "कर्म की फांस" (फाँसी) कहा है। इसलिए बौद्धमत में ज्ञान के उच्चतर स्तरों पर अपने आपको अच्छे और बुरे दोनों तरह के कर्म के फंदों से मुक्त कर लेना शामिल है। यहाँ से निर्वाण की मंज़िलें शुरु होती हैं। मुक्ति आंदोलन पर और संत कवियों के यहाँ बौद्ध धर्म के इस नैतिक विचार की झलक अक्सर मिल जाती है। इस विचार को कबीर ने पद ६ में इस तरह व्यक्त किया है कि कर्म केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए है ज्ञान प्राप्त हो जाने के बाद कर्म उसी तरह बेकार और अनावश्यक हो जाता है जिस प्रकार फल आ जाने के बाद फूल की ज़रूरत नहीं रहती।

इस पद का एक पहलू और भी है जो किसी हद तक सीमित है। इसमें शेख सादी और इक़बाल का कबीर से मतैक्य है :—

तू कार-ज़मीं रा निको साख्ती
कि बा-आस्माँ नीज़ परदाख्ती

[भावार्थ :— क्या तूने ज़मीन का काम संवार लिया है जो आस्मान की तरफ उड़ान भर रहा है ?]

—सादी

अगर न सहल हों तुझ पर ज़मीं के हंगामे
बुरी है मस्तिए-अंदेशहाए-अफ़लाकी

[मस्तिए-अंदेशहाए-अफ़लाकी = आसमान की चिंता में लीन]

—इक़बाल

४ सहस कँवल (सहस्त्र कमल) हज़ार पंखड़ियों वाला कमल। हाइनरिश ज़िमर ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है कि सृष्टि, विनाश और नवसृष्टि का अनादि-अनंत क्रम चल रहा है। वह महापुरुष, वह स्वयंभू, वह परम आत्मा जिसे विष्णु कहते हैं और जो ब्रह्माण्ड (Cosmos) के आद्य-सिद्धांत, आद्य-जल विस्तार के अन्धकारमय धरातल पर तैर रहा है, जब अपनी कृपा से अपने आपको प्रसन्न करने के लिए सृष्टि (Universe) को फिर से रचना चाहता है तो नाभि से एक अकेला कमल बाहर निकलता है जिसमें शुद्ध सोने की एक हज़ार पंखड़ियाँ सूरज जैसी चमक से जगमगाती हैं और सृष्टिकर्ता कमल के साथ साथ ब्रह्मा को भी जन्म देता है, जो कमल के बीचोबीच बैठा हुआ सृजन की शक्तियों की ज्योति से जगमगा रहा है।

यह ब्रह्मा एक ऐसा योगी है जिसे अपने ऊपर और सृष्टि और ब्रह्मांड की शक्तियों पर पूरा क़ाबू है। जब कोई मनुष्य अपनी तपस्या में उच्च आध्यात्मिक पद प्राप्त कर लेता है तो विष्णु उसे मान्यता देते हैं और वह मनुष्य भी प्रतिष्ठित योगी हो जाता है और सृष्टि और ब्रह्मांड के उस सुनहरे सिंहासन, सुनहरे कमल पर बैठकर अपार रूप का दर्शन कर सकता है।

(कबीर के दोहे का अर्थ यहीं तक सीमित है। लेकिन यह बात भी दिलचस्पी से खाली नहीं है कि ब्रह्मा के कमल को पृथ्वी का प्रारंभिक रूप भी माना जाता है बल्कि वह खुद इस पृथ्वी की देवी धरतीमाता है। हिंदु प्रतिमा-विद्या (Iconography) और पौराणिक प्रतीकों (Mythological Symbols) के अनुसार इस कमल की पंखड़ियों के उपरी धरातल पर वे लोक हैं जहाँ तक पहुँचना संभव नहीं है। पंखड़ियों के नीचे वाले धरातल पर साँपों और यक्षों की बस्तियां हैं और इस फूल के मध्य (मर्म) में वह महाद्वीप है जिसका एक भाग भारतवर्ष है।

(एक और प्रतीक—ब्रह्मांड के अनंत शून्य (Cosmic Abyss) में भरे हुए अंधकारमय जल पर पृथ्वी इस तरह तैरती है जैसे अचेतन के अंधकारमय समुद्र में चेतन का जगमगाता हुआ कमल तैर रहा हो। यह कमल सृष्टि का द्वार, सृष्टि की कोख है, सृष्टि-विधान की प्रथम उत्पति है। उसके मर्म से ब्रह्मा उत्पन्न होता है। कभी पानी औरत है और कमल प्रजनक अंग और कभी खुद कमल धरतीमाता और आर्द्रता की देवी है।

(वेदों की प्रारंभिक परम्पराओं में कमल की देवी का उल्लेख नहीं है। आर्यों ने बाद में उसे प्राचीन भारतवर्ष के अनार्य निवासियों की लोक-सभ्यता और लोक-परम्पराओं से ग्रहण किया और उसे श्री और लक्ष्मी के नाम दिये। लक्ष्मी जो धन की देवी है, उसका प्रतीक कमल है, इसीलिए उसको कमल की बेटी "पद्मसंभवा" कहा गया है। प्रागैतिहासिक काल के प्राचीन अनार्य भारत में वह चावल और धान की देवी है। अब वह भारतीय देव-माला की सबसे प्रिय, सबसे अधिक ग्राह्य और स्वीकार्य देवी है जो चित्रों में कमल के फूल पर खड़ी हुई दिखाई देती है। कभी-कभी उसकी भुजा में कमल का फूल और उसका डंठल आभूषण की तरह लिपटा होता हैं। बौद्ध कला में कमल पर बैठे हुए भगवान बुद्ध या अपने हाथ में कमल का फूल लिए बोधिसत्व–पद्मपाणि–प्रागैतिहासिक काल के प्राचीनतम भारत की परम्पराओं से अपना आध्यात्मिक संबंध जोड़ रहे हैं।)

कबीर के इस पद में जो विचार है वह फ़ारसी और उर्दू के कवियों के यहां भी प्रचलित है और सूफ़ी परम्पराओं से आया है जिन पर भक्ति और वेदांत का अच्छा खासा असर है—

ऐ तमाशागाहे–आलम रूए-तुस्त
तू कुजा बहरे तमाशा मी रवी

[भावार्थ – सारी दुनिया तेरे चेहरे का तमाशा देखती है। तू खुद कहां तमाशा देखने जा रहा है?]

–सादी

सितमस्त अगर हवसत कशद कि ब-सैरे सर्व-ओ-समन दरा
तु ज़े गुंचा कम न दमीदई, दरे दिलकुशा ब-चमन दरा

[भावार्थ – कैसे सितम की बात है कि वासना तुझे बाग़ों की सैर के लिए खींचे लिये जा रही है। तू तो खुद एक खिलता हुआ फूल है। दिल के दरवाज़े को खोलकर अपने बाग़ में दाखिल हो जा।]

–बेदिल

संसार के सभी धर्मों में इस विचार के आधारभूत साम्य की ओर डा. राधाकृष्णन् ने इन शब्दों में संकेत किया है :—

"जब हिन्दू अन्तरात्मा की बात करते हैं और बौद्ध धर्म वाले स्वयं बुद्ध की ऊँचाई तक पहुँचने की संभावना को स्वीकार करते हैं और यहूदी यह मानते हैं कि मनुष्य की आत्मा ईश्वर का दीपक है, और जब ईसाई यह घोषणा करते हैं कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे अस्तित्व के अन्दर ही है, क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि ईश्वर का उपासनागृह और ईश्वरीय आत्मा तुम्हारे सीने में है, और जब इस्लाम के पैग़म्बर यह फ़रमाते हैं कि खुदा हमारी रगे-जां से भी ज़्यादा क़रीब है, तो यह सब अलग-अलग तरीक़ों से एक ही बात कहते हैं ओर वह यही कि ईश्वर कोई बाहरी अत्याचारी शक्ति नहीं है, खुदा कोई सुल्तान नहीं है, बल्कि वह आत्मिक और आंतरिक सिद्धांत है जो अहं में निहित है, यही अंतर्ज्योति है। हम सब इसी ईश्वरीय शक्ति की चिंगारियां हैं और ईश्वर के साथ-साथ ईश्वर की भाँति सृजन की क्रिया में व्यस्त हैं और हमारा कर्तव्य है कि हम परिस्थितियों के विरुद्ध संघर्ष करें ताकि पाप और असमानता को नष्ट करके मानव-जीवन के स्तर को ऊँचा उठा सकें।"

५ **अधो** = अवधूत = शाब्दिक अर्थ में वह जिसके वधू न हो, अर्थात् सांसारिक बंधनों से मुक्त। लेकिन कबीर ने यह शब्द नाथपंथी- योगियों के लिए इस्तेमाल किया है, जिनका कबीर की विचारधारा में काफ़ी सम्मान है। सहज अवस्था प्राप्त करने पर साधक अवधूत बन जाता है। "ए मेरे चित्त, वहां चलकर विश्राम कर जहां सूरज और चाँद की भी गति नहीं है, जहाँ न आदि है न अन्त और मध्य भी नहीं, जन्म भी नहीं मरण भी नहीं, अपना भी नहीं पराया भी नहीं, जो महासुख है, जो सहज अवस्था है। (देखिये पद १४)

६ **घट**-व्यापक अर्थ में इस्तेमाल होता है। मिट्टी का बरतन = शरीर = हृदय = मन = आत्मा = चिंतन आदि। कबीर का प्रिय शब्द है। (देखिये पद ८)

७ **जामी**, ईरान के अंतिम बड़े शायर हैं जो लगभग कबीर के समकालीन कहे जा सकते हैं। उनकी शायरी सूफ़ियाना है। अगर इस पद के साथ उनकी एक ग़ज़ल पढ़ी जाये तो इसका आनंद अधिक हो जाता है :

हुस्ने-खेश अज़ रूए-खूबां आशकारा कर दई
बस ब-चश्मे-आशिक़ाँ आँ रा तमाशा कर दई
ज़ाब-ओ-गिल अक्से-जमाले-खेशतन बिन मूदई
शमए-गुल-रुख़सार-ओ-मह सर्वे-बाला कर दई
जुरए-अज़ जामे-इश्क़े-खुद ब-खाक अफ़्शुंदई
ज़ू फ़ुनूने-अक्ल रा मजनून-ओ-शैदा कर दई
गरचे माशूक़ी लिबासे-आशिक़ी पोशीदई
उगह अज़ खुद जल्वए-बरखुद तमन्ना कर दई
बर रुख अज़ ज़ुल्फ़ें-सियहे मिश्कीं सलासिल बस्तई
आलमे रा बस्तए-ज़ंजीरे-सौदा कर दई

मूकवे हुस्नत न गंजद दर ज़मीन-ओ आसमाँ
दर हरीमे-सीना हेरानम कि चूँ जा करदई
मी कुनी 'जामी' गुम अंदर इश्क़, इस्म-ओ-रस्मे खेश
आफ़रीं बादा बरीं रस्मे कि पैदा करदई

[भावार्थ : तूने अपने रूप को माशूक़ों के चेहरे में व्यक्त किया है, इसलिए आशिक़ों की आंख से उसका तमाशा देखता है। अपनी रूप-छटा का अक्स तूने पानी और मिट्टी में प्रकट किया और उसे गुल और खार (फूल ओर कांटे) शमा और ऊंचाई पर रहनेवाले चांद सुंदर मुखड़े–में बदल दिया। अपने पेम के प्याले (जामे इश्क़) से एक घूंट ज़मीन पर उँडेल दिया और हज़ारों कलाएं जाननेवाली बुद्धि को दीवाना बना दिया। हालांकि तू माशूक़ अर्थात् रूप ही रूप है लेकिन तूने आशिक़ी का लिबास पहन रखा है और उसके बाद अपनी सुंदरता को खुद ही देखने की तमन्ना कर रहा है। तूने मुश्क (कस्तूरी) की तरह महकतीं हुई काली ज़ुल्फ़ें अपने चेहरे पर बाँध ली हैं और अब एक दुनिया को दीवानगी की इन ज़ंजीरों में जकड़ लिया है। तेरे हुस्न का लश्कर ज़मीन और आसमान के व्यापक विस्तार में भी नहीं समा सकता, फिर भी मैं हैरान हूँ कि तूने सीने के अन्दर कैसे जगह बना ली। ऐ जामी, तूने इस इश्क़ में अपना नाम और अपना काम सब कुछ गुम कर दिया। उस रस्मे-आशिक़ी (प्रीत की रीत) का क्या कहना जो तूने पैदा की है।]

सत्रहवीं और अठारवीं शताब्दी के उर्दू शायर वली दकनी ने इसी विचार को एक शेर में यों कहा है—

हुस्न था परदए-तजरीद में सब सूँ आज़ाद
तालिबे-इश्क़ हुआ सूरते-इंसान में आ
[परदए-तजरीद = अमूर्तता का परदा]

८ काफ़िर की यह पहचान कि आफ़ाक़ में गुम है
मोमिन की यह पहचान कि गुम उसमें हैं आफ़ाक़
[आफ़ाक़ = सृष्टि] —इक़बाल

यहां काफ़िर और मोमिन हिंदू और मुसलमान के अर्थ में नहीं इस्तेमाल किये गये हैं। मोमिन ज्ञानी (संत) है और काफ़िर अनास्था और शंका (अ-विद्या) का शिकार।

१० सब्दन मार जगाये – शब्दों की मार या संगीत की चोट से जगाता है। अनाहत नाद से निद्रा भंग करता है। भक्ति में एक चीज़ है शब्द-साधना (देखिये पद ५७)। सृष्टि के आदिकाल में आत्मा ब्रह्म में लुप्त थी, जो महासुख महा-आनंद है। वह पूर्ण शांति की अवस्था थी (शून्य) परंतु जब आत्मा ब्रह्म से अलग होकर संसार में नीचे उतरने लगी तो इस यात्रा में उसकी शक्ति क्षीण होती गयी, जिसके कारण एक ध्वनि पैदा हुई और उस ध्वनि को वेदांत और योग में शब्द (लफ़्ज़ = नाम = कलमा = Logos) कहते हैं। नीचे उतरते

हुए आत्मा ने तरह-तरह के रंग-रूप धारण करना शुरु किया और संसार में आकर मानस और माया बन गयी। यद्यपि वह क्षीण हो चुकी है पर उसने अभी तक इश्क़ और प्रेम के संदेश को स्वीकार करने की क्षमता पूरी तरह नहीं खोयी है। इसलिये वह ब्रह्म की गुरु के मार्ग-दर्शन में दुबारा अग्रसर हो सकती है। इस तरह वह ऊँचाई की ओर यात्रा आरंभ करती है। उसको अपनी खोयी हुई शक्ति दुबारा मिलती जाती है। इस यात्रा में उसे वही ध्वनि जिसे शब्द कहते हैं फिर सुनायी देती है और इस संगीत पर वह बढ़ती चली जाती है गति के तेज़ी के साथ-साथ इस संगीत का स्वर भी ऊँचा होता जाता है। यह स्वयं आत्मा का संगीत है जिसे योगी "अनाहत नाद" कहते हैं और सूफ़ी सौंत सरमदी के नाम से याद करते हैं। ("मीराबाई", बाँके बिहारी, भारतीय विद्याभवन बंबई से उद्धृत) "जो आवाज़ बाहरी कानों से सुनी जाती है वह दो चीज़ों के टकराव से पैदा होती है। परंतु ब्रह्म की ध्वनि अनाहत नाद है, अर्थात वह ध्वनि या शब्द जो दो चीज़ों के टकराव के बिना पैदा हो। यह ओम्-ध्वनी है। (हाइनरिश ज़िमर) मीराबाई ने शब्द को नाद भी कहा है और कबीर के यहाँ भी, जो अनाहत नाद को अनहद कह देते हैं, नाम का शब्द कभी कभी इस अर्थ में इस्तेमाल होता है। कबीर के "अनहद" में एक विशेषता यह भी है कि अगर 'हद' का अर्थ 'सीमा' लगाया जाये तो इसका अर्थ 'सीमा-रहित' यानी अनन्त हो जायगा। ("हद हद सब कहैं, अनहद कहे न कोय, अनहद के मैदान में सुख से कबीरा सोय।")

फ़ारसी के महान सूफ़ी शायर मौलाना जलालुद्दिन रूमी (सन १२०७–१२७६ ई.) की मसनवी के शुरू में भी जहाँ बांसुरी को आत्मा का द्योतक माना गया है, इस कल्पना की झलक मिलती है—

बिश्नौ अज़ नय चूँ हिकायत मी कुनद
अज़ जुदाईहा शिकायत मी कुनद
कज़ नयस्ताँ ता मरा बिबुरीदा अन्द
अज़ नफ़ीरम मर्द-ओ-ज़न नालीदा अन्द
सीना ख़्वाहम शरह:–शरह: अज़ फ़िराक़
ता बिगूयम शरहे-दर्दे-इशतियाक़
हर कसे कू दूर मुन्द; अज़ असूले खेश
बाज़ जूयद रोज़गारे-वस्ले खेश

भावार्थ :- बांसुरी से सुनो, वह कैसी (करुण) कहानी सुना रही है और (किस ढंग से) अपनी विरह की शिकायत कर रही है। (वह कह रही है) जब से मुझे बाँस के जंगल से काट कर अलग किया गया है, मेरी आवाज़ सुनकर सभी नर-नारी रोने लगते हैं। मैं चाहती हूँ कि सीना ज़ख़्मी हो जाय ताकि मैं विरह-पीड़ा का हाल जी खोलकर कह सकूँ। ज़ाहिर है कि जो कोई अपने मूल से दूर जाता है वह फिर मिलन के दिनों की खोज करने लगता है। बांसुरी = आत्मा, बांस का जंगल = ब्रह्म

११ संत और भक्त कवियों ने भक्ति के उत्साह में अपनी कल्पना दुल्हन के रूप में और परमात्मा की दूल्हे के रूप में की है। यह उपमा सूफ़ियों के यहाँ भी इसी रूप में मिलती है जो

औलिया हैं वे अल्लाह की दुल्हनें हैं। दुल्हनों को सिर्फ़ महरम (आत्मीयजन) ही देख सकते हैं। मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने अपनी मसनवी में यह उपमा इस्तेमाल की है। हिन्दुस्तान में फ़क़ीरों और दरवेशों का एक सम्प्रदाय "सदा सुहागिन" के नाम से मशहूर है। कबीर ने एक पद में ईश्वर को "अबिनासी दूल्हा" कहकर सम्बोधित किया है।

यह कहना मुश्किल है कि भक्ति और सूफ़ी विचारधारा में ये प्रतीक कहाँ से आये और कब से प्रचलित हैं। कृष्ण केवल विष्णु का अवतार ही नहीं हैं बल्कि परमात्मा हैं, जिनमें जाकर मिल जाने के लिए सभी अलग अलग जीवात्माएँ बेचैन हैं। और ये बेचैन आत्माएँ प्रेम की भाषा में गोपियाँ हैं जिनकी संख्या करोड़ों बतायी जाती है। ज़ाहिर है कि वृंदावन में करोड़ों गोपियाँ नहीं हो सकतीं। इसलिए ये करोड़ों आत्माएँ अपनी मुक्ति और निर्वाण के लिए अपने पति और संतान को छोड़कर (अर्थात संसार के बंधनों को तोड़कर) बाँसुरी की धुन (अनाहत नाद) पर कृष्ण से जा मिलती हैं। यह प्रेम की भाषा है और इसका आशय आत्मा से संबंध रखता है। उस कृष्ण-लीला का तात्पर्य भी आत्मा से संबंध रखता है जिस में कृष्ण ने जमुना में नहाती हुई गोपियों के कपड़े चुरा लिये या छुपा लिये हैं। प्रेमी या प्रेमि-का के सामने लज्जा और संकोच निरर्थक है। वहाँ तो "मैं" (अहं-भाव) बाक़ी ही नहीं रहता। इसलिए सूफ़ियों ने कहा है कि अल्लाह की दुल्हनों को सिर्फ़ महरम (मित्र = दोस्त = भेद जाननेवाला) देख सकता है और कबीर भी यही कहते हैं—

जो सुख चहै तो लज्जा त्यागै, पियासे हिल-मिल लागै
घूँघट खोल अंग भर भेंटै, नैनन आरती साजै

१२ **हंस**—पवित्रता, चेतना और जीवन के वास्तविक लक्षण का प्रतीक है। कबीर ने आत्मा के अर्थों में भी इस शब्द का प्रयोग किया है। पूरबी भाषाओं में 'वा' और 'आ' की ध्वनि किसी को पुकारने या प्रेम प्रकट करने के लिए भी जोड़ दी जाती है। इसलिए कबीर ने 'हंसा' कहा है।

हिंदू प्रतिमा-विद्या (Iconography) में जंगली हंस ब्रह्मा से संबंधित है। इन्द्र का वाहन हाथी है, शिव का वाहन नंदी बैल। उसी तरह ब्रह्मा का वाहन हंस है। हाइनिश ज़िमर की व्याख्या के अनुसार प्रत्येक वाहन देवात्मा का प्रकट रूप होता है। यह निष्कलंक आत्म-बल के माध्यम से प्राप्त की हुई स्वतंत्रता का प्रतीक है। इसलिए हिन्दू योगी या संत जब आवागमन के बंधन से मुक्त हो जाता है तो हंस का पद प्राप्त कर लेता है। उसे परमहंस कहते हैं।

हर प्राणी के स्वभाव में दो परस्पर-विरोधी लक्षण होते हैं और हंस का जीवन इन दोनों लक्षणों को अभिव्यक्त करता है। वह पानी पर तैरने के बावजूद पानी के लक्षणों में जकड़ा हुआ नहीं है। पानी के धरातल को छोड़कर वह स्वच्छ निर्मल आकाश में उड़ सकता है और आकाश में मौसमों के एतबार से वह उत्तर और दक्षिण जिधर चाहे जा सकता है। वह सारे संसार में घूमने वाला है, खानाबदोश और यायावर, जो पृथ्वी की अंधकारमय नीचाइयों से लेकर आकाश की ज्योतिर्मय ऊँचाइयों तक हर जगह समान सुगमता के साथ और निश्चिंत

होकर भ्रमण कर सकता है। इसलिए हंस उस ईश्वरीय गुण (Essence) का प्रतीक है जो प्राणी-अस्तित्व के बंधनों में जकड़ा रहकर भी उनसे स्वछंद रहता है। सीमित और असीम, नश्वर और विनाशहीन, पार्थिव और पारलौकिक, जड़ और चेतन सब के साथ और किसी के साथ नहीं।

यह आत्मा सृष्टि (Cosmos) और ब्रह्मांड (Universe) के पिंड के अंदर एक गीत की तरह तैरती है। हर संत और योगी अपनी साँस के उतार-चढ़ाव में यही गीत सुनता है और मस्त हो जाता है। हर अंदर जाती हुई साँस 'हं' है और हर बाहर आती हुई साँस "स – सा" है। और होनेवाला योगी निरंतर "हं – सा", "हं – सा" सुनता रहता है और अपने अस्तित्व की पारलौकिक वास्तविकता को पहचानने लगता है।

इस आंतरिक हंस के गीत में एक रहस्य और भी है। वह "हं – सा" "हं – सा" के साथ-साथ यह भी सुनता है – "सा – हं" "सा – हं" (सा = वह, हं = मैं) और इसका मतलब है "वह मैं हूँ। जो वह है वही मैं हूँ।" अर्थात मैं आत्मा हूँ, परमात्मा हूँ–(अनलहक़)

सोहम् बास = अनलहक़ की ख़ुशबू। ब्रह्म के साथ जीव की अभिन्नता। पूर्ण में अंश का विलय। इसलिए मुस्लिम सूफ़ी मंसूर के प्रसंग से, जिन्हें अनलहक़ कहने पर सूली चढ़ा दिया गया था, मैं ने सोहं का अनुवाद अनलहक़ किया है। दूसरी जगह कबीर ने इसी को "सोहंग" लिखा है। गीत के प्रसंग में "बाजै सोहंग तूरा" अर्थात अनलहक़ का साज़ बज रहा है।

१३ अनदेखे एकमात्र ईश्वर की कल्पना बहुत पुरानी है। अगर एक तरफ़ जहाँ उपनिषदों में जिनका क्रम ईसा से कई शताब्दी पहले आरंभ होता है, यह कल्पना मौजूद है तो दूसरी तरफ़ यहूदियों के पैग़ंबरों ने इसका प्रचार किया है। इस कल्पना ने प्राचीन काल में मानव-समूहों को क़बायली देवताओं की कल्पना से मुक्त करके अधिक व्यापक मानवी एकता की नींव डाली। इस्लाम की सारी बुनियाद एक खुदा उपासना पर क़ायम है जो ला-इलाहा-इल-अल्लाह के चार शब्दों में निहित है।

इक़बाल ने अपनी मशहूर नज़्म "शिकवा" में एक बंद कहा है जो कबीर के पद के विचार के बहुत निकट आ जाता है।

हम से पहले था अजब तेरे जहाँ का मंज़र
कहीं माबूद थे पत्थर, कहीं मसजूद शजर
ख़ूगरे-पैकरे-महसूस थी इंसां की नज़र
मानता फिर कोई अनदेखे खुदा को क्यों कर
तुझ को मालूम है लेता था कोई नाम तेरा
उम्मते-अहमदे-मुर्सल ने किया काम तेरा

(माबूद = जिसकी पूजा की जाये; मसजूद = जिसके आगे सिज्दा किया जाये; शजर = पेड़; ख़ूगरे-पैकरे-महसूस = दिखायी देनेवाली प्रतिमाओं से परिचित; उम्मते-अहमदे-मुर्सल = रसूल की उम्मत यानी मुसलमान)

१४ अस्ले-शुहूद-ओ-शाहिद-ओ-मशहूद एक है
हैरां हूँ फिर मुशाहिदा है किस हिसाब में
है मुश्तमिल तुमूदे-सुवर पर वुजूदे-बहर
याँ क्या धरा है क़तर-ओ-मौज-ओ-हबाब में

भावार्थ: दृष्य, दर्शक और दर्शनीय का मूल एक ही है। मैं हैरान हूँ कि फिर दर्शन किस गिनती में है। समुद्र का अस्तित्व विभिन्न रूपों के प्रकट होने पर निर्भर है। बूँद, लहर और बुलबुले में क्या रखा है।]

—ग़ालिब

१५ सत्त लोक का वर्णन है अर्थात जो कुछ भी ब्रह्मांड में है वही पिंड में है। मनुष्य स्वयं ही अपने घट (अस्तित्व) के अंदर यह सब कुछ देख सकता है।

कृष्ण– हिंदुस्तानी देवमाला के सबसे लोकप्रिय हीरो और हिंदुओं के सबसे प्रिय देवता हैं और विष्णु का आठवाँ अवतार समझे जाते हैं। उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक है कि दिल्ली और उत्तर प्रदेश के मुसलमान घरानों में जब बच्चा पैदा होता है तो गीत कृष्णजी के गाये जाते हैं। जैसे "अलबेली जच्चा मान करे नंदलाल से, सुहागन जच्चा मान करे नंदलाल से" या "अलबेले ने मुझे दर्द दिया, साँवलिया ने मुझे दर्द दिया"। नंदलाल और सांवलिया दोनों से अभिप्राय कृष्ण ही है। (प्रमाण के लिए देखिए "रसूमे देहली", मौलाना सैयद अहमद देहलवी)। भारत के बँटवारे के बाद यह गीत पाकिस्तान भी पहुँच गये हैं। कृष्ण-भक्ति के गीत और कविताएँ उर्दू के बहुत से कवियों के यहाँ मिलती हैं जिनमें सबसे महत्वपूर्ण नाम नज़ीर अकबराबादी (१८ वीं शताब्दी) और मौलाना हसरत मोहानी (२०वीं शताब्दी) के हैं।

कृष्ण का नाम सबसे पहले ऋग्वेद में आता है। लेकिन वह कृष्ण जिनके चारों ओर भक्ति-रस की कविता और भक्ति-दर्शन का ज्योति-मंडल है, सबसे पहले छांदोग्य उपनिषद में प्रकट हुए हैं और वहाँ वह देवकी के बेटे हैं। फिर उनका संदेश भग्वदगीता में है जो अपने काव्य, दर्शन और आध्यात्मिकता की दृष्टि से अद्वितीय है। यह गीत कई शताब्दियों से भारत में लोकप्रिय है और योरप और अमरीका के विचारक और कवि भी उससे प्रभावित हुए हैं। विद्वानों का मत है कि "भग्वद्गीता" महाभारत के बाद की रचना है लेकिन अब वह महाभारत का एक अंग है। पुराणों में और खास तौर पर भागवत पुराण में कृष्णजी के जीवन का जो वृतांत है वही अब जन साधारण के लिए एक कहानी बन गया है। जिसके आधारपर शताब्दियों से हज़ारों और लाखों गीत और चित्र बनाये जा रहे हैं, जिनकी गिनती भारतीय कला की श्रेष्ठतम कृतियों में होती है। भागवत पुराण की कहानियाँ हिंदी में "प्रेम-सागर" के नाम से अनूदित होकर लोकप्रिय हो चुकी हैं। हिंदी के दो बहुत बड़े कवियों मीरा-बाई और सूरदास की महानता का सारा आधार कृष्ण-भक्ति की कविता पर है।

कृष्णजी यादव वंश के थे और इस जाति के लोग जमुना के किनारे वृंदावन और गोकुल में पशु चराते थे। इस समय मथुरा और वृंदावन में कंस का शासन था।

कृष्ण-जन्म की कहानी विवरण की कुछ भिन्नता के साथ यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों के एक महान पैगंबर हज़रत मूसा के जन्म की कहानी से बहुत मिलती- जुलती है।

कृष्णजी की माँ देवकी राजा कंस की भतीजी थी और नारद मुनि ने यह भविष्यवाणी की थी कि देवकी का बेटा कंस के अत्याचारी का अंत कर देगा। इस संकट से बचने के लिए कंस ने देवकी को अपने राजमहल में कैद कर लिया और उनकी कोख से जन्म लेनेवाले छः बेटों की हत्या करवा दी। जब वह सातवीं बार गर्भवती हुई तो वह विष्णु का अवतार था और वह देवकी के पेटसे उनकी सौत, वासुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के गर्भ में चले गये। इस बच्चे का नाम बलराम था जो विष्णु के सफ़ेद बाल से पैदा हुए थे। देवकी के आठवें बेटे कृष्ण थे। उनका रंग इसलिए काला था कि वह विष्णु के काले बाल से पैदा हुए थे। आधी रात को जब कृष्णजी ने जन्म लिया तो महल के सिपाहियों को नींद आ गयी और सारे द्वार खुल गये। कृष्ण के पिता वासुदेव बच्चे की जान बचाने के लिए उसे गोद में उठा कर मथुरा से बाहर चले गये और जमुना के पार एक अहीर नंद के घर पहुँचे जिसकी पत्नी यशोदा के यहाँ लड़की पैदा हुई थी। उन्होंने अपने बेटे को उसकी बेटी से बदल लिया। इस तरह कृष्णजी का पालन-पोषण यशोदा की गोद और नंद के घर में हुआ। और इसलिए वह नंदलाल कहलाते हैं। कंस ने अपनी घबराहट में यह आज्ञा दे दी कि जिस लड़के में शक्ति के लक्षण दिखायी दें उसका वध कर दिया जाये। नंद को जब यह खबर मिली तो वह कृष्ण और यशोदा, बलराम और रोहिणी को अपने साथ लेकर गोकुल चले गये। वहीं कृष्णजी अपने भाई बलराम के साथ हरे-भरे मैदानों में पले-बढ़े। बचपन में वह बहुत भोली शरारतें करते थे और मक्खन, चुराकर खा लेते थे। जवानी में बाँसुरी बजाते फिरते थे। और गोपियों को छेड़ते थे। उनकी सब से प्रिय गोपी और पत्नी राधा थीं और इन्हीं दोनों के आधारपर सारी प्रेम कथाओं कविताओं और चित्रों की रचना हुई है। महाभारत युद्ध में कृष्णजी पांडवों के साथ थे और अर्जुन के सारथी के रूप में युद्ध में हिस्सा ले रहे थे। उस रणक्षेत्र में पांडवों और कौरवों की सेनाओं के बीच खड़े होकर कृष्णजी ने अर्जुन को "भग्वद्गीता" का उपदेश दिया था।

हज़रत मूसा के क़िस्से में कंस की जगह मिस्र का बादशाह फ़िरऔन है जिसने अपनी जान और सल्तनत बचाने के लिए यहूदियों के पैदा होनेवाले बेटों के क़त्ल का हुक्म दे दिया था। जब मूसा पैदा हुए तो उनकी माँ ने उन्हें एक बक्स में बंद करके नील नदी में डाल दिया और फ़िरऔन की बेटी ने उस बक्स को निकाल लिया और हज़रत मूसा का पालन-पोषण फ़िरऔन के महल में हुआ। हज़रत मूसा की ज़िंदगी में भी एक युद्ध है जिसका अंत इस तरह होता है कि वह अपनी क़ौम को लेकर नील नदी पर आते हैं। नदी का पानी दोनों तरफ़ हट जाता है और बीच में रास्ता बन जाता है जिससे हज़रत मूसा अपनी क़ौम को लेकर गुज़र जाते हैं। लेकिन जब फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ उस रास्ते से गुज़रने की कोशिश करता है तो दोनों तरफ़ से पानी के धारे आकर मिल जाते हैं और फ़िरऔन अपने लश्कर समेत नील नदी में डूब जाता है।

विष्णु-त्रिमूर्ति के दूसरे देवता। ऋग्वेद में विष्णु की गणना प्रथम कोटि के दूसरे देवताओं में नहीं होती। वह सौर-शक्ति (Solar Energy) का रूप है। सारी सृष्टि उनके तीन पग के नीचे है और उनकी ज्योति से भरी हुई है। तीन पगों का अर्थ है ज्योति अर्थात अग्नि, बिजली और सूरज। यह भी कहा जाता है की इसका अर्थ सूर्योदय, मध्याह्न पर पहुँचना और सूर्यास्त है। विष्णु का काम संसारे रक्षा और रखवाली करना है।

ब्राह्मणों के लिखे हुए उन ग्रंथों में जिनमें वैदिक रीतीयों का उल्लेख किया गया है और "ब्राह्मण" कहलाते हैं, विष्णु को नयी विशेषताएँ प्रदान कर दी गयी हैं और उनका स्थान बहुत ऊँचा हो गया है। महाभारत और पुराणों में वह हिंदू त्रिमूर्ति के दूसरे देवता हैं और सत्-गुण का अवतार हैं और इसलिए संसार के रक्षक हैं। यह वह आत्मा है जो सारी सृष्टि में व्याप्त है। इसलिए उनको आद्य अनंत जल-विस्तार से संबंधित कर दिया गया है। इस रूप में विष्णु का नाम नारायण है, अर्थात जल में क्रीड़ा करनेवाला। चित्रों में उन्हें शेषनाग पर लेटा हुआ दिखाया जाता है जो इस आद्य-अनंत जल-विस्तार (मूल सिद्धांत) में तैर रहा है। यह उस समय का दृश्य है जब सृष्टि अपने जीवन का एक चक्कर पूरा करके नष्ट हो जाती है और अपने जीवन का नया चक्कर आरंभ करनेवाली होती है।

विष्णु के उपासक उनको सबसे बड़ा देवता मानते हैं जिनसे सभी वस्तुएँ जन्म लेती हैं। महाभारत और पुराणों में वह प्रजापति हैं और उनका अवतरण तीन अवस्थाओं में होता है। १–सृष्टि के रचयिता जो आद्य और अनंत जल-विस्तार पर तैरते हुए स्वप्नस्थ विष्णु की नाभी से निकलने वाले कमल के फूल से पैदा होते हैं। २–स्वयं विष्णु जो अपने अवतारों का जैसे राम और कृष्ण का रूप धारण करते हैं और इस तरह संसार की रक्षा करते हैं। ३–शिव या रुद्र या महेश जो विनाश की शक्ति हैं।

विष्णु के केवल दस अवतार हैं, लेकिन भागवत पुराण में बाइस अवतारों का उल्लेख किया गया है। और फिर अनगिनत अवतारों का भी उल्लेख किया गया है। सब से लोकप्रिय सातवें अवतार राम और आठवें अवतार कृष्ण हैं और इन दोनों में भी कृष्ण को विष्णु का पूर्ण अवतार समझा जाता है।

कहा जाता है कि पवित्र गंगा विष्णु के चरणों से निकली है।

विष्णु संसार के रक्षक के रुप में सबसे अधिक लोकप्रिय देवता हैं और उनकी पूजा उल्लास की भावना के साथ की जाती है। उनके हज़ार नाम हैं और इन नामों का जपना शुभ समझा जाता है। उनका वाहन गरुड़ है। उनका रंग गहरा नीला है और चार हाथ हैं—एक में शंख, दूसरे में चक्र, तीसरे में गदा और चौथे में कमल का फूल (पद्म) है। उनके पास एक धनुष और तलवार भी है। उनकी पत्नी लक्ष्मी (धन की देवी) हैं, जिनके साथ वह कमल के फूल पर बैठे या कमल के पत्ते पर तैरते हुए दिखायी देते हैं। (डिक्शनरी आफ हिंदू माइथालाजी, अंग्रेजी, जान डाउसन)

ब्रह्मा—त्रिमूर्ति के पहले देवता का नाम जिन्हें जगदीश्वर, उत्पादक, प्रजापति और विधाता के नामों से भी याद किया जाता है।

रामायण में दिये गये वृतांत के अनुसार पहले केवल पानी था, जिससे पृथ्वी की रचना हुई। उसी पानी से ब्रह्मा प्रकट हुए जिन्होंने सुअर (वाराह) का रूप धारण करके पृथ्वी को ऊपर उठाया और अपने बेटों, ऋषियों और मुनियों के साथ सारे संसारकी सृष्टि की। महाभारत के वृतांत के अनुसार ब्रह्मा विष्णु की नाभी से उत्पन्न हुए जहाँ से एक कमल का फूल बाहर निकला (देखिये 'सहस कँवल', पद ४)। इसलिए उनका नाम नाभिज और सरोजिन् भी है। वह अपनी कृपादृष्टि देवताओं और उनके शत्रुओं दोनों ही पर रखते हैं। शैव मत में ब्रह्मा का जनक महादेव या रुद्र (शिव) को मान जाता है, इसलिए ब्रह्मा शिवलिंग की पूजा करते हुए माने जाते हैं।

जब ब्रह्मा संसार की रचना करते हैं तो वह केवल एक दिन तक रहती है और ब्रह्मा का एक दिन दो अरब सोलह करोड़ दिन के बराबर होता है। इस लंबे दिन का अंत होने पर संसार अग्नि के प्रकोप से नष्ट हो जाता है, लेकिन ऋषि-मुनि, देवता और तत्व बाकी बच जाते हैं। फिर ब्रह्मा दुबारा संसार की सृष्टि करते हैं और प्रलय और नवसृजन का यह क्रम ब्रह्मा के जीवन के सौ वर्ष तक चलता रहता है (चूंकि ब्रह्मा का एक दिन दो अरब सोलह करोड़ साल के बराबर होता है इसलिए पहले इसे तीन सौ पैंसठ से और फिर जो गुणनफल आये उसे सौ से गुणा कीजिये तो ब्रह्मा के जीवन के सौ वर्ष का अनुमान होगा)। सौ वर्ष बाद ब्रह्मा का भी अंत हो जाता है, सारे देवताओं, ऋषियों और मुनियों का भी अंत हो जाता है और सृष्टि अपने तत्वों के रूप में छिन्न-भिन्न हो जाती है (हिंदू प्रतिमा कोष, अंग्रेजी, जान डाउसन)।

यह काल-चक्र हिंदू कल्पना है जो इस्लामी काल-चक्र की कल्पना से भिन्न है। लेकिन अनोखा संयोग है कि इससे मिलती-जुलती कल्पना ग़ालिब के यहाँ मौजूद है। अपनी फ़ारसी रचना "मेहे-नीमरोज़" (मध्याह्न का सूर्य) में उन्होंने लिखा है कि गुण ही अस्तित्व हैं और वे सूर्य के प्रतिबिंब से भिन्न नहीं। प्रलय के बाद नया मानव जन्म लेगा और एक मानव के बाद दूसरा मानव अवतार लगा (देखिये दीवान-ए-ग़ालिब की भूमिका, हिंदुस्तानी बुक ट्रस्ट, बंबई)

महेश = (शिव = विनाशक = अर्थात् संसार को नष्ट करनेवाले) त्रिमूर्ति के तीसरे देवता का नाम।

शिव का नाम वेदों में नहीं मिलता लेकिन उनके दूसरे नाम रुद्र का प्रयोग ऋग्वेद में अग्नि के लिए किया गया है। वेदों के रुद्र ने उन्नति करके कुछ समय बाद शक्तिशाली शिव का रूप धारण कर लिया। यद्यपि शिव विनाश के देवता हैं परंतु उनकी शक्तियाँ और गुण कहीं ज़्यादा हैं। रुद्र के रूप में वह महाकाल है जो ह्रास, विनाश और मृत्यु लाता है। लेकिन हिंदू मत में विनाश स्वंय सृजन का सूचक है। इसलिए शिव और शंकर के रूप में यह पवित्र देवता निर्माण और नवसृजन की शक्ति बनकर प्रकट होते हैं, जिनके कारण ही मृत्यु के बाद जीवन, हर प्रलय के बाद सृजन का निरंतर क्रम चलता रहता है। इसलिए वह ईश्वर और महादेव हैं। उनकी नवजीवन के निर्माण की शक्ति को शिवलिंग के प्रतीक से व्यक्त किया जाता है और इसलिए शिव की पूजा या तो केवल लिंग के रूप में की जाती है या

कभी-कभी लिंग के साथ योनि की भी उपासना होती है जो उनकी शक्ति (नारी-शक्ति) की प्रतीक है। शिव-शक्ति के प्राचीन मत के अनुसार इस नारी-शक्ति के बिना शिव केवल शव अर्थात निष्प्राण देह है और जब उसमें शक्ति मिल जाती है तो वह शिव बनकर जाग उठता है। (भारतीय सभ्यता के इतिहासकारों और विद्वानों का मत है कि लिंग-पूजा प्राचीन आर्यों के आने से पहले भारत में प्रचलित थी, जिसका प्रमाण हड़प्पा के खंडहरों से निकलनेवाले लिंग हैं। हिंदू धर्म में लिंग-पूजा का समावेश कदाचित ईसा की पहली शताब्दी के आस-पास हुआ।) महाकाल और महादेव के अतिरिक्त इनका तीसरा रूप एक ध्यानमग्न महायोगी का है जो अपनी तपस्या से अपार शक्ति प्राप्त कर लेता है, चमत्कार करता है, और सृष्टि की विशाल आत्मा में विलीन हो जाता है। इस भूमिका में वह एक नंगा योगी है जिसे दिगंबर कहते हैं (दिक् = दिशाएँ = शून्य जिसका अंबर या वस्त्र है)। वह धूर्जटि हैं जिनके बाल उलझे हुए हैं और शरीर पर भभूत मली हुई है। अपनी पहली भूमिका अर्थात विनाशक शक्ति की दृष्टि से वह भैरव हैं जो विनाश से आनंद प्राप्त करते हैं। साथ ही साथ वह भूतेश्वर भी हैं और भूत-प्रेतों पर शासन करते हैं। वह अपनी जटाओं में साँप लपेटकर और गले में नरमुंडों की माला पहनकर भूत-प्रेतों, पिशाचों और डाकिनियों के साथ श्मशानों में घूमते-फिरते हैं और उन्मत्त होकर महानाश का वह नृत्य करते हैं जिसे तांडव कहते हैं।

शिव शांति और शून्य के भी देवता हैं और नृत्य के देवता भी (नटराज)। तमिलनाड में नटराज की उपासना होती है और बनारस में विश्वेश्वर की। उत्तर में उनका निवासस्थान कैलाश पर्वत और दक्षिण में चिदंबरम् का मंदिर है, जहाँ उनको नाचता हुआ देवता माना जाता है। शिव १०८ प्रकार के नृत्यों के प्रवर्त्तक हैं, जिनमें से कुछ बहुत ही रसमय और सुंदर हैं और कुछ बहुत ही वीभत्स और भयानक। इनमें सबसे प्रसिद्ध तांडव है। इस नृत्य से सृष्टि नष्ट हो जाती है और काल का एक चक्र पूरा हो जाता है।

शिव के भी हज़ार से अधिक नाम हैं जो उनके विभिन्न गुणों को व्यक्त करते हैं। शिव के पाँच सर (पंचानन) और चार हाथ हैं। चित्रों में बहुधा उन्हें बैठा हुआ दिखाया जाता है, ध्यानमग्न। माथे पर तीसरी आँख है जो इतनी प्रलयकरी है कि उससे कामदेव भस्म हो गये थे। उस तीसरी आँख के ऊपर माथे पर उदीयमान चन्द्रमा सुशोभित है। उलझी हुई जटाओं की गाँठ सर पर सींग की तरह दिखायी देती है जिस पर गंगा नदी का प्रतीक है जिसकी आकाश से गिरती हुई धार को शिव ने अपने सर पर रोक लिया था। गले में मुंड माला है और साँप लिपटे हुए हैं (नाग कुंडल) और संसार को नष्ट कर देनेवाला विष पी लेने की वजह से गर्दन नीली है (नीलकंठ)। हाथों में त्रिशूल डमरु, गदा और रस्सी है शरीर पर शेर हिरन या हाथी की खाल का वस्त्र है। आम तौर से उनका वाहन नंदी बैल पास ही दिखायी देता है। प्रोफेसर कोसांबी के अनुसार लिंग पुराण के प्रमाण के आधारपर यह कहना गलत न होगा कि नंदी बैल शिव का गण चिन्ह (Totem) है और पाषाण युग की सभ्यता के अन्तिम चरण (Neolithic) से लगभग दो हज़ार वर्ष पहले जंगली जातियों में नंदी बैल की उपासना का प्रमाण मिलता है। इस प्रकार शिव का पात्र आर्य और अनार्य क़बीलों की एकता का प्रतीक बन जाता है। (१—डिक्शनरी आफ हिंदु माइथालोजी, अंग्रेजी, डाउसन

२–द वंडर दैट वाज़ इन्डिया, अंग्रेजी, बाशम ३–इन्ट्रोडक्शन टु द स्टडी आफ इन्डियन हिस्ट्री, अंग्रेजी, दामोदर धर्मानंद कोसांबी से उद्‌धृत)।

सरस्वती—विद्या, कला और कविता की देवी, वेदों में एक नदी और एक देवी दोनों रूपों में उल्लेख है। सरस्वती नदी बहुत पवित्र थी और आर्य आरंभ में भारत में आकर जिस प्रदेश में बसे, जिसे ब्रह्मावर्त कहते हैं, उसकी एक सीमा पर यह नदी बहती थी। नदी की देवी के रूप में सरस्वती उर्वरता और पवित्रता की शक्ति है। वाक की देवी के रूप में वेदों में उल्लेख नहीं मिलता लेकिन ब्राह्मणों और महाभारत में वह वाक की देवी है। हिंदु प्रतिमा-विद्या के अनुसार सरस्वती ब्रह्मा की पत्नी हैं और संस्कृत भाषा और देवनागरी अक्षरों की प्रणेता मानी जाती हैं। इनका रंग गोरा और शरीर सुडौल, माथे पर उदीयमान चंद्रमा है और वह कमल के फूल पर बैठी या खड़ी हुई दिखायी देती हैं। (हिंदु प्रतिमा-कोष, अंग्रेजी जान डाउसन)।

इन्द्र–आकाश के देवता। वेदों ने इनकी गणना प्रथम कोटि के देवताओं में की है लेकिन वह सृजनोपरि नहीं हैं, माँ और बाप का उल्लेख है। उनका रंग सुनहरा है और हाथ लंबे-लंबे हैं। लेकिन वह अपने रूप बदल सकते हैं। उनका दो घोड़ों का रथ सुनहरा है, अस्त्र वज्र है जो दाहिने हाथ में है। सोमरस उन्हें बहुत प्रिय है जिसे वह शराबियों की तरह पीते हैं और उससे मस्त हो जाने के बाद शत्रुओं से युद्ध करने निकलते हैं। वायु के देवता के रूप में वह ऋतुओं पर शासन करते हैं और वर्षा का जल बाँटते हैं। वेदों में अग्नि के सिवा सबसे ज़्यादा जिस देवता को तारीफ़ है वह इंद्र हैं। वह बहुत उदार और दानी देवता हैं जिनका नाम वर्षा, उर्वरता, बिजली और तूफ़ान से जुड़ा हुआ है और वह अकाल और अना-वृष्टि के रूप में वह असुरों के विरुद्ध निरंतर लड़ते रहते हैं। दासों और असुरों के "पत्थर के बने हुए शहरों" को नष्ट करने का श्रेय उन्हीं को है। उनकी प्रत्यक्ष रूप से उपासना नहीं की जाती लेकिन कुछ त्योहारों का संबंध उनके नाम के साथ जुड़ा हुआ है। ब्रज की चरागाहों में ग्वाले उनकी पूजा करते थे लेकिन कृष्ण ने उनका मन मोह लिया और इंद्र की पूजा बंद हो गयी। इस पर इंद्र को बहुत क्रोध आया जो ब्रजवासियों पर वर्षा का प्रकोप बन-कर उतरा। लेकिन कृष्ण ने जो विष्णु का अवतार थे गोवर्धन पर्वत को अपनी एक उँगली पर उठा लिया और उसे सात दिन तक छतरी की तरह इस्तेमाल किया। अंत में इंद्र की पराजय हुई और उन्होंने कृष्ण के प्रभुत्व को स्वीकार कर लिया।

चौरासी लक्ष जीव=चौरासी लाख योनियाँ। जैन और हिंदु मत के अनुसार हर प्राणी मुक्ति पाने से पहले चौरासी लाख बार जीवन धारण करता है।

१७ पद (१) **ग्रह**=तारा, **तपन**=सूरज (देखिये पद ८९)

पद (२) **सुरत** और **निरत** साधना के दो पक्ष हैं। एक निरत जिसका अर्थ है संसार से विरक्त हो जाना और दूसरा 'सुरत' जिसका अर्थ हैं भगवान से लौ लगाना। इसलिए इस पद में और आगे के पदों में सुरत का अनुवाद प्रेम और निरत का अर्थ वैराग लगाया गया है। कबीर ने सुरत (प्रेम) की उपमा राग से और निरत (वैराग) की वीणा के

तार से दी हैं। जिस तरह तार से राग पैदा होता है, उसी तरह वैराग से प्रेम पैदा होता है।

पद (६) **अगम** = अगम्य = निश्चल, शांत, जिसका बोध न हो सके, जिसे प्राप्त न किया जा सके, जिसमें दूसरे का प्रवेश असंभव हो, गहरा, अथाह, असीम, अनंत। बिगड़े हुए रूप '**आगम**' में इसका अर्थ है भविष्य या परलोक।

२० देखने में बहुत ही सीधा-सादा यह पद अत्यंत गूढ़ दार्शनिक विचारों से भरा हुआ है, जिस पर शून्यवाद और विज्ञानवाद (योगाचार) के दर्शन का प्रतिबिंब पड़ रहा है। इनके अनुसार एक बाह्य सृजनात्मक शक्ति जिसे "परिकल्प" कहते हैं, प्रत्यक्ष रूपों के अस्तित्व का कारण है। यह चामत्कारिक सृजनात्मक विचार है जो "आलय विज्ञान" के चिरकालीन और अक्षय भंडार से हर कल्पना और हर चित्र के लाक्षणिक गुण प्राप्त कर सकता है। यह भंडार स्वतः भाव मात्र है, वह विचार जो अपने अस्तित्व के लिए किसी वस्तु पर आश्रित नहीं (शुद्ध भाव), अर्थात ऐसा भाव जो केवल शून्य, निस्तब्धता और पूरा सन्नाटा है।

२३ आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि संध्याकाल का अंधकार कविता में बुढ़ापे का प्रतीक है परंतु इस पद में वह प्रणय का प्रतीक है। शंख, घंटे और शहनाइयाँ प्रणय का उत्सव मनाने के लिए हैं। चूंकि संध्या का अंधकार पश्चिम की ओर से बढ़ता आता है इसलिए पश्चिम की खिड़की खोलना उजाले का प्रतीक है, जिसमें पश्चिम का अभिप्राय मनुष्य की पीठ है जहां रीढ़ की हड्डी के बीच से आत्मा तक पहुँचने का वह मार्ग गुज़रता है जिसे सुषुम्ना मार्ग कहते हैं।

२५ **हरि** = विष्णु के लिए प्रयोग किया जाता है। कबीर ने बहुधा भगवान के अर्थ में लिया है।

२६ **ओंकार** = भगवान का राग-रूपी या शब्द-रूपी अंग, परमात्मा, सृष्टि का रचयिता।

२७ **अनचिन्हार** = अपरिचित

२८ **बाजे सोहं तूरा**–(देखिये पद १२) जब गुरु शिष्य के पैर छूता है तो द्वैत अद्वैत में परिवर्तित हो जाती है। इसे तसव्वुफ़ में "सिर्रे-तौहीद" (एकपन का भेद) कहते हैं (देखिये पद ४७)।

२९ **बहुचित्रा**–एकता का अनेकता में परिवर्तित होना।

ब्रह्मा–विष्णु–शिव = (देखिये पद १५)

इस पद में यह भाव हैं कि आत्मा का अस्तित्व स्वयं ब्रह्मा, विष्णु और शिव से पहले से था। आत्मा ब्रह्म में लीन थी। फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि हाफ़िज़ शीराज़ी ने इस विचार को इस प्रकार व्यक्त किया है :

माजराए-मन-ओ माशूक़े-मरा पायाँ नीस्त
हरचे आग़ाज़ नदारद न पिज़ीरद अंजाम

[भावार्थ : मेरी और मेरे माशूक़ की मुहब्बत की कहानी कभी खत्म नहीं हो सकती। जिस चीज़ का आरंभ नहीं है उसका अंत कैसे हो सकता है। "अर्थात मेरा प्रेम आदिकाल से चला आ रहा है और अंतकाल तक चलता रहेगा। वह जब से है जबसे परमात्मा है और परमात्मा का कोई आरंभ नहीं है।]

और रूमी ने कहा है :

मा खाज़िने - खज़ानए - दिलदार बूद : एम
मा सालहा मुसाहिबे - दिलदार बूद : एम
मा दर फ़ज़ाए - आलमे - असरार सालहा
बा - तायराने - क़ुदस दर अतवार बूद : एम
मा रस्ते खुद ज़े आलमे हस्ती कशीद :
वर कूए - यार बे - ग़मे - अग़यार बूद : एम
आदम हनोज़ दर अदम - आबाद बुद किमा
मस्त - खराबे - नरगिसे - आँ यार बूद : एम
पेशअज़ ज़ुहूरे - अंजुम-ओ - अफलाक-ओ - दायरात
दायर ब - गिर्दे - नुक़्ता चो परकार बूद : एम
दर गुलशने - विसाल ब - चंदीं हज़ार साल
पेश अज़ दो कौन तायरे - तय्यार बूद : एम
ग़ैर अज़ यके न बूद-ओ न - बाशेम - ओ - नीस्तेम
दर कसरते - चुनीं पये - इज़हार बूद : एम

(कुलियाते - शम्स तबरेज़ी)

[भावार्थ : मैं महबूब के खज़ाने का रखवाला हूँ, मैं बरसों उसका मुसाहिब रह चुका हूँ। मैं अज्ञानलोक के पक्षियों (फ़रिश्तों) के साथ बरसों उड़ चुका हूँ। इहलोक से मैं विरक्त हो गया और यार की गलियों में रक़ीब (प्रतिद्वंदी) के बग़ैर अकेला रह गया हूँ। जब आदम की सृष्टि भी नहीं हुई थी जब मैं अपने यार की आँखों में मस्त व खराब था। आसमानों और सितारों के अस्तित्व से पहले मैं परमात्मा के केंद्र-बिंदु के चारों ओर घूम रहा था। दोनों लोक के अस्तित्व से भी पहले मैं ही प्रणय-उद्यान में उड़ रहा था। एक के सिवा न तो कुछ था, न हो सकता है, और न है। केवल अपने आपको व्यक्त करने के लिए उसने यह अनेकता का रूप धारण किया है।]

३० पखेरू यहाँ जीवात्मा (हंस) का प्रतीक है और तरुवर शरीर का।

३१ **गगन किवाड़**–शून्य का द्वार, साधना, समाधि।

३२ सारी सृष्टि आदि सिद्धांत के चारों ओर नाच रही है। इस पद में ईश्वर की महिमा का गुणगान किया गया है। (देखिये पद ८९)

३९ इक़बाल ने कहा है :

वह हर्फ़े-राज़ कि मुझको सिखा गया है जुनूँ
खुदा मुझे नफ़से-जिब्रईल दे तो कहूँ

[भावार्थ : मेरा उन्माद मुझे वह मंत्र सिखा गया है कि खुदा मुझे जिब्रील (खुदा का पैग़ाम लानेवाला फ़रिश्ता) की साँस दे तो बताऊँ।

४० तांत्रिक साधकों ने योग और भोग को एक ही माना है। योग की साधना पारलौकिक चेतना का वह जुवा है जो संसार के अनुभव से प्राप्त की गयी सामान्य मानव चेतना की गर्दन पर रख दिया जाता है और भोग सांसारिक सुख दुख को पूरी तरह बरतने का नाम है। तांत्रिक सिद्धांतो के अनुसार भोग को योग का साधन बनाया जा सकता है। इसलिये इस मत में रूप-उपासना, काम भोग के अलावा मांस मछली, भुने हुए अनाज और मदिरा का सेवन भी शामिल है। (फ़ारसी और उर्दू शायरी में पाप के प्रचार और पाप की महानता का दर्शन जिसकी वजह से यह शायरी बेहद रंगीन रोचक हो गयी है, इन तांत्रिक विचारों से बहुत निकट है :

बंदानवाज़ियों पे खुदाए-करीम था
करता न मैं गुनह तो गुनाहे-अज़ीम था

—अमीर मीनाई

और उमर खैयाम ने तो हद कर दी, गुनाह को रहमत (कृपा) की आराइश (सजावट) ठहरा दिया :

आबाद खराबात ज़िमय खुर्दने मा
खूने दो हज़ार तोब: बर गर्दने मा
गर मन न कुनम गुनाह रहमत चे कुनद
आराइशे-रहमत ज़ि गुनह कर्दने मा

अर्थात यह दुनिया मेरी शराबनोशी से आबाद है। मेरी गर्दन पर दो हज़ार तोबाओं का खून है। अगर मैं पाप न करूँ तो वह बेचारी कृपा क्या करेगी। मेरे पाप ही तो उसकी सजावट हैं। इसी दार्शनिक विचारधारा के अनुसार शराब, जो इस्लाम में हराम थी, ईश्वर से संबंध जोड़नेवाली शराब बन गयी और ऐसे शेर कहे गये जैसे:

ज़ि मय सज्जाद: रंगीं कुन, गरत पीरे-मुग़ाँ गोयद
कि सालिक बे-खबर न बुवद ज़ि राह-ओ-रस्मे मंज़िलहा

—हाफ़िज़

अर्थात अगर पीरे मुग़ाँ (मदिरालय का बूढ़ा प्रबंधक) कहे तो जा-नमाज़ (नमाज़ पढ़ने की दरी या चटाई) को शराब से रंगीन कर लो क्योंकि आत्मा को मार्ग दिखानेवाला मंज़िल की राह-औ-रस्म से बे-खबर नहीं होता)। कबीर के यहाँ कहीं-कहीं तांत्रिक प्रभाव मिलते हैं जैसे इस पद में योग और भोग के संबंध में उनका दृष्टिकोण, लेकिन कबीर के यहाँ भोग केवल घरेलू जीवन और सामाजिक दायित्व तक सीमित है। इसमें काम-भोग और मदिरा सेवन आदि शामिल नहीं है।

४१. सहज का अर्थ है जो साथ उत्पन्न हो, अर्थात स्वभाविक। और कबीर ने इसी अर्थ में सहज समाधि का प्रयोग किया है (देखिये ऊधो, पद ५)।

बंगाल के बाउल (बाउला = उन्मत्त) भक्तों में जो "सभी परम्परागत बंधनों से मुक्त हवा की तरह मारे-मारे फिरते हैं" (के० एम० सेन) और जिन्होंने अपनी इमारत बौध मत, तांत्रिक और वैष्णव मत खंडहरों पर खड़ी की है, सहज साधना की बहुत सुंदर कल्पना मिलती है :

"मैं इसलिए बावला हो गया हूँ, मेरे भाई,
"कि किसी रीति, किसी रिवाज, किसी मालिक का पाबंद नहीं हूँ
"मनुष्य के बनाये हुए भेद-भाव मेरे लिए व्यर्थ हैं
"मैं अपने मन से पैदा होनेवाले प्रेम के सरोवर में डूबा हुआ हूँ
"प्रेम में विरह और वियोग नहीं, मिलन ही मिलन हैं
"दिल से दिल मिले रहते हैं
"मैं इस खुशी में नाचता-गाता रहता हूँ
"मैं इसलिए बावला हो गया हूँ, मेरे भाई।"

उर्दू के कवि मीर तक़ी 'मीर' ने बेहद मस्ती की इस अवस्था को ग़ज़ल के दो मिसरों में समेट लिया है :

उसका बहे हुस्न सरासर औजे-मौज-ओ-तलातुम है
शौक़ की अपने निगाह जहां तक जावे बोस-ओ-क़नार है आज

अर्थात उसके रूप-सागर में ऊँची-ऊँची लहरों की उठान और तूफ़ान के सिवा कुछ नहीं है, इसलिए अपने शौक़ (उत्कंठा) की निगाह आज जहाँ तक भी जाये उसे चुंबन और आलिंगन ही मिलेगा।

सहज पर बाउल भक्तों का आग्रह इतना ज़्यादा है कि वे अपने आंदोलन का इतिहास भी लिखने को तैयार नहीं हैं। ए० के० सेन ने अपनी अंग्रज़ी किताब "हिंदुइज़्म" में एक बहुत ही रोचक घटना का वर्णन किया है। जब उन्होंने पूर्वी बंगाल में नदी के किनारे बैठे हुए एक बाउल से पूछा कि "आप आनेवाली पीढ़ियों के लिए अपना ऐतिहासिक वृतांत क्यों नहीं रखते" तो उसने जवाब दिया की "हम तो सहज को मानते हैं और इसलिए अपने पीछे कोई पद-चिन्ह छोड़ना ज़रूरी नहीं समझते।" उस समय नदी का पानी उतरा हुआ था और कुछ माँझी अपनी नाव को कीचड़ में खींच रहे थे जिसकी वजह से कीचड़ में निशान पड़ गये थे। बाउल ने उधर इशारा करके कहा, "क्या भरे पानी में तैरती हुई नाव कोई निशान छोड़ती है; केवल वही माँझी जो अपनी मजबूरी की वजह से कीचड़ में नाव चलाते हैं निशान छोड़ जाते हैं। यह तो सहज नहीं है। असली कोशिश यह होनी चाहिये कि भक्ति की उस धारा पर तैरते रहे जो भक्तों के अपने जीवन से पैदा होती है और फिर एक धारा को दूसरी धारा से मीला दें। बाउल केवल बाउल हैं और कुछ भी नहीं। वे किसी भी वर्ग, किसी भी जाति से आयें उनका कोई और कारनामा नहीं है। सब धाराएँ गंगा में मिलकर गंगा बन जाते हैं।"

जापानी ज़ेन सम्प्रदाय की एक घटना इससे भी रोचक है। किसी सभा में बहुत से ज़ेन सम्प्रदायवाले जमा हुए। वक्ता प्रवचन के लिए खड़ा हुआ। इतने में एक चिड़िया आयी और खिड़की पर बैठकर गाने लगी। वक्ता ने अपना प्रवचन शुरु नहीं किया और चिड़िया का गीत सुनता रहा। जब चिड़िया गीत पूरा करके उड़ गयी तो वक्ता ने घोषणा की कि सभा समाप्त हो गयी और सब श्रोता चले गये।

ग़ालिब के शब्दों में इसका निचोड़ यह है कि—

है रंगे-लाल :- ओ-गुल-ओ-नसरीं जुदा-जुदा
हर रंग में बहार का इस्वात चाहिये
सर पाये-ख़ुम पे चाहिये हंगामे-खुबेदी
रू सूए-क़िब्ल: वक्ते मुनाजात चाहिये
यानी ब - हस्बे - गर्दिशे - पैमानए - सिफ़ात
आरिफ़ हमेशा मस्ते-मये-ज़ात चाहिये

[अर्थात लाल, गुलाब और सेवर्ती आदि सभी फूलों के रंग अलग-अलग होते हैं, लेकिन बहार को हर रंग में स्वीकार करना चाहिये। मस्ती के समय सर मधुघट के पैरों पर और प्रार्थना के समय मुँह काबे की ओर होना चाहिये। यानी सगुण की मदिरा का दौर के अनुसार हमेशा ज्ञानी को निर्गुण की मदिरा में लीन होना चाहिये।]

और सहज के अनायास भाव को इक़बाल ने इन शब्दों में व्यक्त किया है :

न पैवस्तम दर इन बुस्ताँ सरा दिल
ज़ि बंदे ईन-ओ-आं आज़ाद: रफ़्तम
जो बादे-सुब्ह गर्दीदम दमे - चंद
गुलाँ रा आब-ओ-रंगे दाद: रफ़्तम

[भावार्थ : मैंने इस रंग-ओ-बू से भरी हुई दुनिया से दिल नहीं लगाया। मैं ऐसे-वैसे बंधनों से सदा मुक्त रहा। सुबह की हवा की तरह मैं इस चमन में आया और फूलों को रंग और रूप देकर चला गया।]

४२ सूफ़ियों और संतों ने ज्ञान और बोध की अपेक्षा प्रेम को प्रधानता दी है। उनके यहाँ अंतर्ज्ञान ही वास्तविक उपासना है और बोध प्रत्यक्ष उपासना है और उसके रीति - रस्मों और बंधनो को बेकार कर देता है। इसका सामाजिक पक्ष यह है कि मौलवी, पुरोहित और धर्म के प्रत्यक्ष रूप ने ज्ञान और बोध पर अधिकार कर रखा था। अंतर्ज्ञान उनके इस एकाधिकार को तोड़ देता है और ईश्वर को सर्वसाधारण तक पहुँचा देता है।

४४ पद १७ के पहले तीन छंदों में भो कबीर ने चाँद, सूरज और सितारों की प्रभा को इस परम-ज्योति का प्रतीक माना है, जिससे सारी सृष्टि भरी हुई है। इस संत कवि ने बार-बार ईश्वर को एक प्रकाश अथवा ज्योति का रूप दिया है। यह विचार कबीर का इस्लामी उत्तराधिकार है जिसमें कहा गया है कि अल्लाह आस्मानों और ज़मीन का नूर है।

४६ प्रसिद्ध प्राचीन फ़ारसी शायर अबू सईद अबुल खैर ने एक रुबाई में कहा है :

पुर्सीद यके मंज़िले आँ मेह-गुसिल
गुफ़्तम कि दिलें मन अस्त ऊरा मंज़िल
गुफ़्ता कि दिलत कुजास्त, गुफ़्तम बर ऊ
पुर्सीद कि ऊ कुजास्त, गुफ़्तम दर दिल

[भावार्थ: किसी ने पूछा कि उस मेह-गुसिल (सूरज को पिघला देनेवाला) की मंज़िल कहाँ है। मैंने कहा मेरे दिल में। पूछा तेरा दिल कहाँ है। मैंने कहा उसके पास। पूछा वह कहाँ है। मैंने कहा मेरे दिल में।]

एक और फ़ारसी शेर है

खुद कूज़: ओ खुद कूज़:गर ओ खुद गिलें-कूज़: खुद दिंदे-सुबूकश
खुद बर सेरे आँ कूज़: खरीदार बर आ मद बिशकस्त ओ रवाँ शुद

[भावार्थ : वह खुद ही कूज़: (मिट्टी का प्याला) है, खुद ही उसका बनानेवाला और खुद ही वह मिट्टी है जिससे प्याला बनता है और खुद ही उस प्याले में शराब पीनेवाला। फिर वह खुद उस प्याले का खरीदार बनकर ज़ाहिर हो जाता है और प्याले को तोड़कर चल देता है।]

—रूमी

४७ यहाँ पेड़ से अभिप्राय संसार है लेकिन उसे बिना जड़ का इसलिए कहा गया है कि वह माया का उत्पन्न किया हुआ है, केवल एक कल्पना का जाल। मगर चेले (आत्मा, जीव) के साथ गुरू (ब्रह्म, परमात्मा) भी मौजूद है। जीव तो रस चखने अर्थात संसार को भोगने में लीन है और भगवान अर्थात परमात्मा निरंतर खेल में अर्थात अपनी लीला दिखाने में व्यस्त है और प्रसन्न हो रहा है। इस पद के आरम्भ में जो अलग-अलग मालूम होते हैं वे अंत में एक हो जाते हैं। निराकार (गुरू, परमात्मा) प्रत्येक साकार (जीव, व्यक्ति) के अंदर मौजूद है। इसलिए सांसारिक रूपों पर ही न्योछावर हो जाने को जी चाहता है। शेख सादी के शब्दों में "आशिक़म बर हम: आलम कि हम: आलम अज़ूस्त" अर्थात मैं सारी दुनिया पर आशिक़ हूँ क्योंकि सारी दुनिया उसी से है। सूफ़ियों की भाषा में वह उसे "सिर्रे-तौहीद" (एकपन का भेद) कहते हैं। यथार्थ का बाह्य रूप मनुष्य है और वह यथार्थ के आंतरिक रूप ईश्वर के साथ एक है। सूफ़ी अपनी खुदी (अहं) के भ्रमजाल से निकलकर परमात्मा में लीन हो जाता है, फिर उसको हर आकृति में ईश्वरीयता का रूप दिखायी देने लगता है। मौलाना रूमी ने इसे "हक़ीक़त दर हक़ीक़त ग़र्क़:" कहा है अर्थात हक़ीक़त हक़ीक़त में डूब गयी।

५१ सूफ़ी भी यही मानते हैं कि मृत्यु प्रेमी से मिलन (विसाले-महबूब) है। इस विचार का अधिक परिष्कृत रूप प्रकृति से एकाकार होना है जिसने उर्दू के क्लासिकी शायरों के यहाँ बड़ा सुंदर रूप धारण किया है। मीर कहते हैं—

रंगे-गुल-ओ-बूए-गुल होते हैं रवाँ दोनों
क्या क़ाफ़िला जाता है तू भी जो चला चाहे

फिर न कुछ देखा बजुज़ यक शोलए पुर पेच-ओ-ताब
शमअ तक तो हमने देखा था कि पर्वान: गया

५६ अद्वैत की तरह ग़ैब पर ईमान रखना भी इस्लाम की बुनियाद है। इस पद की पहली पंक्ति इस विचार के निकट है। कबीर की कविता में दूसरी जगहों पर ग़ैब का शब्द बार-बार आया है।

५७ देखिये १०।

६० मीर तकी 'मीर' कहते हैं—

सरापा आरज़ू होने ने बंदा कर दिया हमको
वगर्ना हम खुदा थे गर दिले-बे-मुद्दआ होते

[दिले-बेमुद्दआ = निष्काम हृदय]

६६ "जिसने अपने आपको पापों से मुक्त नहीं किया, जिसने संयम और सच्चाई को छोड़ दिया और गेरुए वस्त्र धारण करने की इच्छा की वह गेरुए वस्त्र धारण करने योग्य नहीं है।" (धम्मपद—मैक्स मूलर के अंग्रेजी अनुवाद से अनूदित)

भारत के राष्ट्र-ध्वज के रंगों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डा० राधाकृष्णन ने कहा है, जोगिया या गेरुआ रंग वास्तव में आग का रंग है ओर आग उस शक्ति का प्रतीक है जिसमें हर गंदी चीज़ जलकर खाक हो जाती है।

इसलिए गेरुआ वस्त्र संसार को त्याग देनेवाले योगियों का वस्त्र ठहराया गया और बौद्ध भिक्षुओं ने भी पहना। लेकिन यह वस्त्र स्वयं एक प्रकार की धार्मिक वर्दी बन गया। इसलिए सूफ़ियों और संतों ने तमाम धर्म प्रवर्तकों के इस प्रकार के वस्त्रों की तरह गेरुए वस्त्रों का भी विरोध आरंभ कर दिया और इसकी अपेक्षा मन के रंग अर्थात हृदय की शुद्धता पर ज़ोर दिया।

कबीर की तरह बंगाल के बाउल भक्तों का यह कहना है कि "अगर रंग मन में न हो तो बाहर क्या दिखायी देगा। कच्चे फल के छिल्के को रंग देने से कुछ फल पक नहीं जाता।" वह तो कच्चा ही रहता है।

फ़ारसी और उर्दू शायरी में शेख और मुल्ला के अमामे और मज़हबी लिबास का खूब मज़ाक़ उड़ाया गया है। अकसर मयखाने के लौंडे शेख का अमामा उतार ले जाते हैं:

जो पाक रखते हैं तन का जामा, रखे हैं नापाक दामने-दिल
खुदा के नज़दीक, ऐ मुसल्ली, नहीं हैं ज़िन्हार वह नमाज़ी

[मुसल्ली = नमाज़ी; ज़िन्हार = हरगिज़]

—मुहम्मद रफ़ी 'सौदा'

६९ दिल से पूछा यह मैं कि इश्क़ की राह
किस तरफ़ मेहरबान पड़ती है
कहा उन ने कि नै यह हिंदुस्तान
नै सूए-इस्फ़हान पड़ती है
यह दोराहा जो कुफ़्र-ओ-दीन का है
दोनों के दरमियान पड़ती है

—सौदा

७५. देखिये ४४।

८० पेड़, शाख और जड़ की उपमा जामी के यहाँ भी है :

दिला मनशीं दर ईं वीरान: चूँ चुग्द
सूए मुर्ग़ाने-क़ुद्सी आशियाँ बर
वुवद गेती दरख़्ते सर-बसर शाख़
वले जुम्ल: सूए यक अस्ल रहवर
ज़हर शाख़े सूए आँ अस्ल रह जू
चूँ आँ रा याफ़्ती अज़ शाख़ दुग्ज़र
न बाशद शीवए-मुर्ग़ाने-ज़ीरक
नशिस्तन हर ज़माँ बर शाख़े दीगर

[भावार्थ : ऐ दिल, वीराने में उल्लू की तरह न बैठ। उड़कर उन पक्षियों के पास पहुँच जा जिनका आशियाना सबसे ऊँचे आकाश पर है। ज़मीन एक ऐसा पेड़ है जिसमें शाखें ही शाखें हैं लेकिन वे तमाम शाखें एक असलियत यानी जड़ की तरफ़ ले जा रही हैं। हर शाख से अस्ल की तरफ़ जाने की राह तलाश कर। जब वह मिल जाये तो शाख को छोड़ दे। नयी नयी शाखों पर बैठते रहना समझदार पक्षियों का काम नहीं।]

८९. पद १७ का पहला छंद भी देखिये।

गगन राग : वास्तव में सितारों का गीत है। कबीर ने अपने कई दूसरे पदों में इस को बार-बार दोहराया है। मुस्लिम दार्शनिकों और सूफ़ी कवियों के यहाँ यह कल्पना मौजूद है। इसका सूत्रपात यूनानी विचारक पाइथागोरस (Pythagorus) के इस सिद्धांत से हुआ है कि ग्रहों की दूरी और उनकी गति का संतुलन संगीत के सिद्धांतों की बुनियाद पर क़ायम है। मुस्लिम दार्शनिकों ने इससे यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रहों और नक्षत्रों से गीत उत्पन्न होता है जो खुदा की वंदना और स्तुति के लिए है। और इस गीत को आत्माएँ सुन सकती हैं। आदि नियम के चारों ओर घूमते हुए नक्षत्रों की परिक्रमा प्रेम का परिणाम है। यही गीत आसमान से उतरकर ज़मीन पर आया है। मौलाना रूमी कहते हैं—

पस हकीमां गुफ़्तंद ईं लहनहा
अज़ दवारे चर्ख़ विगिरिफ़्तेम मा
बांगे-गर्दिशहाए-चर्ख़ अस्त इन कि ख़ल्क़
मी सरायंदश व-तंबूर ओ व-हल्क़

[भावार्थ: इसलिए ज्ञानियों का कहना है कि ये संगीतमय स्वर आकाश में नाचते हुए ज्योति-पिंडों से आते हैं और यह गीत जो लोग तंबूर से पैदा करते हैं और गले से निकालते हैं आकाश की परिक्रमा का गीत है।]

इस आधार पर सूफ़ियों ने संगीत को उचित ठहराया है जब कि इस्लाम में संगीत हराम है। इसलिए मौलाना रूमी फ़र्माते हैं कि समाअ (संगीत) दरअस्ल "सौते-बला" (ईश्वर के अस्तित्व की हामी भरना) सुनने का नाम है और इंसान बे खुद होकर विसाले-यार तक पहुँच जाता है। (मसनवी का अंग्रेज़ी अनुवाद, निकल्सन, खंड ८)

कबीर ने एक पद (३९) में मानव शरीर को तंबूरे का ठाठ कहा है जिससे हुज़ूरी का संगीत निकलता है।

९० इस पद की अंतीम पंक्ति का अर्थ कुछ अस्पष्ट है। हिंदी और उर्दू के अनुवाद दो अलग-अलग समय पर किये गये थे इसलिए उनमें बहुत बड़ा अंतर आ गया है। और वह ग़ल्ती से इसी तरह छप गये। उर्दू का अनुवाद टैगोर के किये हुए अंग्रेज़ी अनुवाद से अधिक निकट है।

९१ भारत की आधुनिक भाषाओं जैसे हिंदी, उर्दू, मराठी, बंगाली, पंजाबी आदि के विकास में सूफ़ियों और संतों का बहुत बड़ा हिस्सा है। उन्होंने संस्कृत और फ़ारसी को छोड़कर जो मौलवियों, शासकों और पंडितों की भाषाएँ थीं और जन-साधारण की पहुँच से बहुत दूर थीं, जन-साधारण की बोलियों में लिखना शुरु किया। हिंदी में कबीर, मलिक मुहम्मद जायसी, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई इसकी सबसे शानदार मिसालें हैं।

इस पद में कबीर ने संस्कृत को घमंड और दंभ की भाषा ठहराया है। एक और जगह लिखा है कि संस्कृत तो कुएँ का पानी है और भाषा बहती हुई नदी है ("संस्कृत है कूप जल, भाषा बहता नीर")। पंडित सुंदरलाल ने अपनी किताब "कबीर और इंसानियत" में लिखा है कि "काशी के पंडितों में उन दिनों संस्कृत का ज़ोर था।" ज़ाहिर है कि कबीर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहते थे जो आसानी से लोगों के दिलों में घर कर सके।

९३ ग़ालिब की कल्पना हुस्न और इश्क़ के पूर्ण मिलन के लिए तरसती रही :

मैं नामुराद दिल की तसल्ली को क्या करूँ
माना कि तेरे रुख से निगह कामयाब है
वा कर दिये हैं शौक़ ने बंदे-नक़ाबे-हुस्न
ग़ैर अज़ निगाह अब कोई हायल नहीं रहा

[अर्थात मेरी उत्कंठा ने रूप की नक़ाब के बंद खोल दिये हैं। अब निगाह के अलावा कोई बाधा नहीं रही।]

लेकिन कबीर ने निगाहों की इस दूरी को खत्म कर दिया है और उनके यहाँ मिलन ही मिलन है। एक दोहे में इस विचार ने यह रूप धारण किया है :

नैना अंतर आव तूँ, ज्यों हूँ नैन झंपेऊँ
ना हूँ देखौं और कूँ, ना तुझ देखन देऊँ

एक और दोहा :

नैनों की कर कोठरी, पुतरी पलंग बिछाय
पलकन की चिक डार के पिया को लिया रिझाय

९६ ग़ालिब ने कहा है :

किसी को दे के दिल कोई नवा संजे-फ़ुग़ाँ क्यों हो
न हो जब दिल ही सीने में तो फिर मुंह में ज़ुबा क्यों हो

[नवासंजे फ़ुगा होना = रोना, फ़रियाद करना]

९९ अंतिम दो पंक्तियों में पुनर्जन्म की ओर संकेत है। उमर खैयाम की एक रुबाई में मौत सगुण को छोड़कर निर्गुण बन जाने का नाम है, जिसे उसने 'ऐने-हयात' अर्थात शुद्ध जीवन कहा है :

मा ज़ाते-निहाद: दर सिफ़ातेम हम:
ऐने-खिरद-ओ-सुरत्रए-ए-ज़ातेम हम:
ता दर सिफ़तेम दर ममातेम हम:
चूँ रफ़्त सिफ़त, ऐने-हयातेम हम:

[भावार्थ : मैं वह निर्गुण हूँ जो सगुण में घिरा हुआ है। मैं सम्पूर्ण हूँ लेकिन चूँकि सगुण में लिपटा हुआ हूँ इसलिए निर्गुण के सामने मसखरा मालूम होता हूँ। जब तक सगुण में घिरा हूँ तब तक मृत्यु में जकड़ा हुआ हूँ। जब सगुण नष्ट हो जायेगा तो मैं सम्पूर्ण जीवन बन जाऊँगा।

१०१ **सुमेर** = सोने का एक कल्पित पहाड़; पहाड़ों का सिरमौर।

१०२ अपने आपको धर्मग्रंथों से मुक्त कर लेने का भाव भक्ति के दूसरे सम्प्रदायों में भी मिलेगा, जैसे के० एम० सेन ने अपनी अंग्रेजी किताब "हिंदुइज़्म" में बंगाल के बाउल सम्प्रदाय के एक भक्त की एक घटना लिखी है :

"जब मैं ने एक बाउल से पूछा कि वे लोग धर्मग्रंथों को क्यों नहीं मानते तो उसने कुछ क्रुद्ध होकर जवाब दिया कि क्या हम कुत्ते हैं जो दूसरों का जूठा चाटते फिरें। वीर केवल अपने सृजन और कृतित्व पर गर्व करते हैं। जो अपने बाप-दादा के कारनामों पर गर्व करते रहते हैं वे कायर और अशक्त हैं। उनमें स्वयं कोई क्षमता बाक़ी नहीं रह गयी।"

कबीर ने भी एक दोहे मे कहा है :

साखी लाये जतन करि, इत-उत अच्छर काट
कह कबीर कब लग जिये जूठी पत्तल चाट

सहज = जो साथ पैदा हुआ हो, स्वाभाविक, अनायास, नि:संकोच।
शून्य = सन्नाटा, निर्गुण परमात्मा
खलास = समाप्त, खलास।
मेरा = ऐ अमीर, ऐ पंच

१०३ हाफ़िज़ शीराज़ी ने भी संसार (माया) को एक ऐसी स्त्री से उपमा दी है जिसके हज़ारों पति हैं—"कि ई अजवज़ उरूसे हज़ार दामाद अस्त।"

कबीर के पद की अंतिम पंक्ति इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इसमें माया को अनश्वर कहा गया है। इस विचार का क्रम रामानुज के विशिष्टाद्वैत से जा मिलता है। (देखिये भूमिका, कबीर की माया के बारे में धारणा पर टिप्पणी)

१०५ **अहीरा** = अहेड़ = आखेट = शिकार।

नियरा = निकट।

मौनी = चुप रहनेवाले साधु।

बीर = शैव भक्तों का एक सम्प्रदाय।

दिगंबर = जैन साधु जो नंगे रहते हैं और दिशाओं (दिक) को अपना वस्त्र मानते हैं।

सिंगी = शृंगी, एक ऋषि जो जंगल में तपस्या करत थे और एक स्त्री पर आसक्त हो गये थे।

ब्रह्मा का सर फोड़ना = मस्तिष्क ब्रह्मा का स्थान है इसलिए इसका अर्थ है बुद्धि का हनन।

मछंदर नाथ = सिद्ध योगी थे जो लंका की स्त्रियों पर आसक्त हो गये थे।

साकट = शाक्त = शक्ति को माननेवाला। दंभ और बल से काम लेनेवाला।

१०६ इस पद का अर्थ स्पष्ट नहीं है। बाँगड़ देश और मालवे का क्या महत्व है, पता नहीं चलता। बाँगड़ उस प्रदेश का पुराना नाम है जिसे हरियाना कहते हैं। मालवा प्रदेश मध्य भारत में है जहाँ की रातें बड़ी सुहानी होती हैं। इस प्रदेश को कबीर ने "गहिर गंभीर" कहा है अर्थात विस्तृत, असीम, अथाह। इस दृष्टि से बाँगड़ देश का अर्थ होगा ऊँचे ऊँचे शुष्क पठारों का प्रदेश। कबीर चूँकि गृहस्थ थे और कपड़ा बुनकर अपनी रोज़ी कमाते थे इसलिए यह विचार उत्पन्न होता है कि बाँगड़ देश से उनका अभिप्राय संसार को त्याग देना और "गहिर गंभीर" मालवा प्रदेश से अभिप्राय संसार को भोगना है। पद ८ के अंत में कबीर ने दुनिया को एतबारी कहा है—

यह तवह्हुम का कारखाना है
याँ वही है जो एतबार किया

—मीर तक़ी 'मीर'

(तवह्हुम = भ्रम, वहम)

१०७ सुब्हदम तायराने-खुश अलहान
पढ़ते हैं कुल्लो-मन अलैहा फ़ान
जाए-इबरत सराय फ़ानी है
मूरिदे-मर्गे-नागहानी है

[भावार्थ: प्रात: काल सुरीले पक्षी कुरान की यह आयत पढ़ते हैं कि मौत सब के लिए है। यह आनी-जानी दुनिया इबरत की जगह और अचानक मौत लानेवाली है।]

—शौक़

१०९ तिरगुन फाँस = त्रिगुण का फंदा। प्राचीन हिंदू विचारधारा के अनुसार पदार्थ अथवा प्रकृति के तीन गुण हैं: (१) तमस अर्थात जड़ता, निश्चलता, शांति; (२) रजस अर्थात गति, क्रियाशीलता; (३) सत्व अर्थात तनाव या सामंजस्य और संतुलन। ये तीनों गुण मिलकर किसी पदार्थ का वास्तविक रूप बन जाते हैं। बटी हुई रस्सी की तरह ये तीनों गुण एक-दूसरे में गुँथे हुए हैं। पहले गुण की प्रधानता मनुष्य को शिथिल, आलसी और कुत्सावान बना देती है। दूसरे गुण की प्रधानता अहंकार और वीरता उत्पन्न करती है और तीसरे गुण की प्रधानता संतुलित स्वभाव और समझदारी को जन्म देती हैं। क्रमश: इनका रंग काला, लाल और सफ़ेद है।

केसो = केशव = सुंदर बालोंवाला, विष्णु का एक और नाम (वैसे यह नाम कृष्णजी के लिए भी इस्तेमाल होता है क्योंकि वह विष्णु का अवतार हैं।)

भवानी = शिव की पत्नी पार्वती या दुर्गा का एक और नाम। भवानी ठगों की रखवाली करती हैं और चेचक की भी देवी मानी जाती हैं।

कमला = लक्ष्मी का एक नाम, सर्वगुणसंपन्न स्त्री।

ब्रह्मानी = ब्रह्मा की स्त्री; कबीर की अपनी कल्पना मालूम होती है।

१११ मालूम नहीं छप्पन करोड़ और अट्ठ्यासी हज़ार की संख्याओं का क्या महत्व है, लेकिन संकेत यदुवंशियों के डूबने की ओर है। एक चंद्रवंशी राजा ययाति का बेटा यदु था। उसके वंशज यादव कहलाये, जिस वंश में कृष्ण ने जन्म लिया। कृष्णजी के जन्म के समय वे लोग ग्वाले थे लेकिन बाद में द्वारका (गुजरात) में उनका राज्य स्थापित हो गया। कृष्णजी के बाद जब द्वारका नगर समुद्र की तूफ़ानी लहरों में डूब गया तो ये लोग भी डूब गये। विष्णु पुराण में इनकी संख्या लाखों और करोड़ों बतायी गयी है।

इस पद में जिस विचार को व्यक्त किया गया है उसकी पुष्टि में दो घटनाएँ भी वर्णन की जा सकती है:

कबीर की बेटी कमाली के बारे में मशहूर है कि वह एक दिन कुएँ पर पानी भर रही थी। एक प्यासे ब्राह्मण ने उससे पानी माँगा। पानी पीकर जब उसे यह मालूम हुआ कि कमाली जुलाहे की बेटी है तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ और कहने लगा कि तूने मुझे बे धर्म कर दिया। दोनों कबीर के पास आये। कबीर ने ब्राह्मण देवता को बताया कि आखिर समझो तो पवित्र और अपवित्र क्या चीज़ हैं। सैकड़ों लाशें और मनों पत्तियाँ पानी में सड़ा करती हैं। करोड़ों आदमी ज़मीन में दफ़न हैं और उसी मिट्टी से वे बर्तन बनाये जाते हैं जिनमें तुम पानी पीते और खाना खाते हो। खाना खाते समय तुम कपड़े उतार डालते हो; सिर्फ़ एक धोती बांधे रहते हो, मगर वह धोती जुलाहे की बुनी हुई होती है। मक्खियाँ गंदगी और लाशों पर बैठतीं हैं और वहाँ से उड़कर तुम्हारे खाने पर बैठती है। क्या तुम उनको रोक सकते हो?

इसी तरह की एक और घटना का 'दबिस्ताने मज़ाहिब' में उल्लेख है:

"कहते हैं कि कुछ ब्राह्मण गंगा किनारे बैठे हुए गंगाजल का गुणगान कर रहे थे कि उससे सारे पाप धुल जाते हैं। उनमें से एकने पानी माँगा। कबीर उनकी बातें सुन रहे थे। उठकर गये और अपना प्याला पानी से भरकर ब्राह्मण के पास ले आये। चूँकि कबीर जुलाहे थे और ब्राह्मण उनके हाथ का छुआ हुआ खाते-पीते नहीं हैं, उस ब्राह्मण ने पानी नहीं पिया। कबीर ने कहा कि आप अभी फ़रमाते थे कि गंगाजल से तन और मन का सारा मैल धुल जाता है। अगर यह पानी मेरे बर्तन को भी पवित्र नहीं कर सकता तो इस प्रशंसा के योग्य नहीं।" (कबीर साहब, लेखक पं० मनोहरलाल ज़ुत्शी, प्रकाशक हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, १९३०)

११३ **नौ निध काया** = नौ निधियों से सम्पन्न शरीर। धन के देवता कुबेर की नौ निधियाँ (खज़ाने) हैं और हर निधि की रक्षक एक आत्मा है जिनकी उपासना तांत्रिक सम्प्रदाय में की जाती है। उन सबके अलग-अलग नाम हैं।

इति = सीमांत, अनंत

उहारना = परदा हटाना

व्यंद = बिंदु। ग़ालिब ने कहा है—

सुखन यकेस्त वले दर नज़र ज़ि सुरअते-सैर
कुनद चो शोलए-जव्वाल : नुक़्ता परकारी

[भावार्थ : बात एक ही है लेकिन अपनी तेज़ रफ़्तार की वजह से एक बिंदु जो परमात्मा हैं, नाचते हुए शोले की तरह निगाहों पर ज़ाहिर होता है।]

ग़ालिब की यह उपमा बौधिक और वैचारिक है। कबीर की उपमा ऐंद्रिक और पार्थिव है।

गोव्यंद = गोविंद, कृष्ण का नाम। कृष्ण विष्णु का अवतार हैं इसलिए भगवान अर्थात सृष्टि के रचयिता है।

ग्यारहवीं और बारहवीं पंक्तियों में जो चित्र कबीर ने प्रस्तुत किया है वह बड़ा ही सुंदर और विचित्र है। साँस हवा का खंभा है जिसके चारों ओर शरीर मिट्टी की बनी हुई तस्वीर है।

पवन बाति = हवा की बत्ती। यहाँ साँस दीपक की लौ है।

११६ **अंगिया** शरीर है और **दुल्हन** आत्मा।

चित अंजन = चित्त का काजल। अभिप्राय है मन की आँख में ज्ञान का काजल।

११७ **छाप** = छापा = एक प्रकार का तिलक। हिंदुओं में अलग-अलग सम्प्रदाय अलग-अलग तरह के तिलक लगाते हैं।

११८ **रोजा** = रोज़ा

निवाज = नमाज़

बिहिस्त = स्वर्ग

माल मतीन = धन-दौलत

दोजग = दोज़ख = नरक।

सत्तर काबे एक दिल भीतर : इस कल्पना से उर्दू और फ़ारसी की शायरी भरी पड़ी है--

बुतखाना तोड़ डालिये, मस्जित को ढाइये
दिल को न तोड़िये, यह खुदा का मुक़ाम है
तोड़कर बुतखाने को मस्जीद बिना की तूने शेख
बरहमन के दिल की भी कुछ फ़िक्र है तामीर को

—सौदा

टुक देख सनमखानए-इश्क़ आन के ए शेख
जूँ शमए-हरम रंग है झमकता बुताँ का

—सौदा

मय खुश-ओ-मुस्हफ़ बिसोज़-ओ-आतिश अंदर काब: ज़न
साकिने बुतखान : बाश-ओ-मर्दुमआज़ारी मकुन

[भावार्थ : शराब पियो, क़ुरान को जला दो, काबे को आग लगा दो और बुतखाने में जाकर बैठ जाओ लेकिन किसी का दिल न दुखाओ अर्थात किसी का दिल दुखाना इन सब से बड़ा पाप है।]

अंतिम दो पंक्तियाँ—माटी एक .... समाना

हक़ीक़त एक है हर शै की, ख़ाकी हो कि नूरी हो
लहू खुरशीद का टपके अगर ज़र्रे का दिल चीरें

—इक़बाल

कहैं कबीर .... मनमाना

हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन
दिल के खुश रखनेको ग़ालिब यह ख्याल अच्छा है

१२० **जुग मिलन :** चौसर के खेल में जब एक खाने में दो गोटें जमा हो जाती हैं तो वे पिट नहीं सकतीं। इसको जुग मिलना कहते हैं। सौदा का शेर है—

अम्न दो दिल को हो यकसाँ ब-बिसाते-दौराँ
चोट खाती नहीं वह नर्द जो हो नर्द के साथ
(बिसाते दौराँ = ज़माने की बिसात; नर्द = गोट)

चार बरन : चार रंग; चौसर के खेल में गोटों के चार रंग और हिंदु धर्म के चार वर्ण—यहाँ दोनों अर्थ हैं।

चौरासी : चौसर के खेल में गोट को चौरासी घर चलने पड़ते हैं तब कहीं जाकर उसकी परिक्रमा पूरी होती है। हिंदु धर्म के अनुसार निर्वाण से पहले मनुष्य को चौरासी लाख जन्म लेने पड़ते हैं।

पौ : जब गोट आखिरी घर में पहुँच जाती है तो जीतने के लिए पौ ज़रूरी है। यहाँ पौ से अभिप्राय मृत्यु और निर्वाण है। जो गोट चौरासी घर चलते और पौ पड़ने के बाद अंदर पहुँच गयी वह फिर बाहर नहीं निकलती गोया उसका निर्वाण हो गया।

१२१ **सुरत** = प्रेम, लेकिन यहाँ शायद यह 'सूरत' का बिगड़ा हुआ रूप है।

PRINTED AT ADABI PRINTING PRESS BOMBAY 8-BC
October 1965